

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_186235

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP.-552-7-7-66-10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. *H425*

Accession No. *H12173*

Author *D99R*

Title *24th year of life*

This book should be returned on or before the date
last marked below

रचनानुवाद-कौमुदी

(भाग १)

(हाई स्कूल के लिए निर्धारित संस्कृत व्याकरण,
अनुवाद और निबन्ध की पुस्तक ।)

लेखक—

डा० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य,

एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी), एम. ओ. एल., डी. फिल्. (प्रयाग),

विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य,

अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग,

सेंट एंड्रूज़ कालेज, गोरखपुर ।

प्रणेता—‘अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन’

(उ० प्र० सरकार द्वारा संमानित पुस्तक), संस्कृत-रत्नावली आदि ।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

मोतीलाल मोदी एंड संस

गोरखपुर

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रकाशक,
मोतीलाल मोदी एंड संस
गोरखपुर

प्रथम संस्करण २००० प्रति
सन् १९५२ ई०
मूल्य—तीन रुपया

मुद्रक,
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, बनारस ।

समर्पण

संस्कृत-भाषा के अनन्य भक्त, विद्वन्मूर्धन्य,
महामान्य
डा० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी,
राज्यपाल, उत्तर-प्रदेश
की सेवा में
सादर सविनय समर्पित ।

कपिलदेव द्विवेदी

विषय-सूची

अध्यास	विवरण	पृष्ठ
विषय-सूची		(५)-(८)
आत्म-निवेदन		(९)-(१६)
आवश्यक-निर्देश		१
१. वर्तमानकाल, प्रथमपुरुष		२
२. " , मध्यमपुरुष		४
३. " , उत्तमपुरुष		६
४. संख्या १-१०, कृ, अस धातु लट्, प्रत्याहार बनाना		८
५. राम शब्द, लट् लकार, प्रथमा द्वितीया विभक्ति		१०
६. गृह् " , लोट् " , द्वितीया " "		१२
७. रमा " , लृट् " , " " (द्विकर्मक)		१४
८. हरि " , लङ् " , तृतीया " "		१६
९. गुरु " , विधिलिङ् " , " " , अनुस्वारसंधि		१८
१०. ९ सर्वनाम शब्द (पुंलिङ्ग), चतुर्थी " , यण् "		२०
११. " " " (नपुं०) , " " , अयादि "		२२
१२. " " " (स्त्री०) , पंचमी " , गुण "		२४
१३. इदम्, अदम् " (पुं०) , " " , वृद्धि "		२६
१४. " " " (नपुं०) , षष्ठी " , पूर्वरूप "		२८
१५. " " " (स्त्री०) , " " , दीर्घ "		३०
१६. युष्मद् शब्द, लट् (आ०) लकार, सप्तमी विभक्ति, श्चुत्वं सन्धि		३२
१७. अस्मद् " , लोट् " " , " " , ष्टुत्व "		३४
१८. एक " , लृट् " " , एकवचनान्त शब्द, जश्त्व "		३६
१९. द्वि " , लङ् " " , द्वि " " , " "		३८
२०. त्रि " , विधिलिङ् " " , बहु " " , चत्वं "		४०
२१. चतुर् " , नी, ह् धातु, भ्वादि-गण , विसर्ग सन्धि		४२
२२. संख्या ५-१०, कृ " , अदादि " , उत्त्व "		४४
२३. " ११-१००, अद् " , जहोत्यादि " , " "		४६
२४. " महाशंख तक, असृ " , दिवादि " , यत्व "		४८
२५. सखि शब्द, ब्रू " , स्वादि " , मुलोप "		५०
२६. कर्तृ " , रुद् " , तुदादि " , कर्म-भाववाच्य		५२
२७. पितृ " , दुह् " , रुधादि " , " "		५४
२८. गो " , स्वप् " , चुरादि " , प्रेरणार्थक धातुएँ		५६
२९. भगवत् " , हन् " , तनादि " , णिच् प्रत्यय		५८
३०. भूभृत् " , इ " , क्त्वादि " , सन् "		६०

अभ्यास	विवरण	पृष्ठ
३१. करिन्	शब्द, क्त प्रत्यय, चुरादिगणी धातुएँ	६२
३२. आत्मन्	" " " " " "	६४
३३. राजन्, नदी	" " क्तवतु " " " "	६६
३४. मति, पठन्	" " शतृ " " द्वितीया विभक्ति	६८
३५. नदी	" " " " शानच् " " " "	७०
३६. धेनु	शब्द, आस् धातु, तुमुन् प्रत्यय, तृतीया विभक्ति, विद्यालय	७२
३७. वधू	" " शी " " क्त्वा " " " " प्राणिवर्ग	७४
३८. वाच्	" " हु " " ल्यप् " " चतुर्थी " " पक्षिवर्ग	७६
३९. सरित्	" " भी " " तव्य, अनीय " " " " शरीरवर्ग	७८
४०. वारि	" " दा, धा " " यत्, अच् " " पंचमी " " " "	८०
४१. दधि	" " दिव् " " घञ् " " " " जलवर्ग	८२
४२. मधु	" " नृत् " " तृच् " " पठ्ठी " "	८४
४३. पयस्	" " नश् " " ल्युट्, ण्वुल् " " " " "	८६
४४. शर्मन्	" " भ्रम् " " क, खल् " " सप्तमी " "	८८
४५. जगत्	" " युध् " " क्तिन्, अण् " " " " "	९०
४६. नामन्	" " जन् " " अव्ययीभाव समास	९२
४७. मनस् } हविप् }	" " सु " " तत्पुरुष " "	९४
४८. आप्	धातु, जातिवर्ग, कर्मधारय, द्विगु समास	९६
४९. शक्	" " " " बहुव्रीहि " "	९८
५०. मृ	" " संबन्धिवर्ग, द्वन्द्व " "	१००
५१. मुच्	" " एकशष, नञ्, अलुक् " " खाद्यवर्ग	१०२
५२. रुध्	" " तद्धित प्रत्यय भनृप्, भक्ष्यवर्ग	१०४
५३. भुज्	" " " " इनि, ठन्, इतच् " "	१०६
५४. तन्	" " " " अपत्यार्थक, फलवर्ग	१०८
५५. क्री	" " " " विभिन्न, वस्त्रवर्ग	११०
५६. ग्रह्	" " " " त्व, ता, ण्यञ्, इमनिच्, आभूषणवर्ग	११२
५७. ज्ञा	" " " " तः, त्र, था, दा, धा, मात्र	११४
५८. विशेषण शब्द,	" " " " तरप्, तमप्, ऋतुवर्ग	११६
५९. दिनवर्ग	" " " " ईयस्, इष्ट	११८
६०. स्त्रीलिङ्ग शब्द, स्त्री प्रत्यय		१२०

परिशिष्ट

व्याकरण

पृष्ठ

(१) शब्दरूप-संग्रह

१२२-१३६

१. राम, २. हरि, ३. सखि, ४. गुरु, ५. कर्तृ, ६. पितृ, ७. गो,
८. भूमृत्, ९. भगवत्, १०. करिन्, ११. आत्मन्, १२. राजन्, १३. रमा,
१४. मति, १५. नदी, १६. धेनु, १७. वधू, १८. वाच्, १९. सरित्,
२०. गृह, २१. वारि, २२. दधि, २३. मधु, २४. पयस्, २५. शर्मन्,
२६. जगत्, २७. नामन्, २८(क) मनस्, २८(ख) हविष्, २९. सर्व,
३०. पूर्व, ३१. तत्, ३२. एतत्, ३३. यत्, ३४. किम्, ३५. युष्मद्, ३६. अस्मद्,
३७. इदम्, ३८. अदस्, ३९. एक, ४०. द्वि, ४१. त्रि, ४२. चतुर,
४३. पंचन्, ४४. षष्, ४५. सप्तन्, ४६. अष्टन्, ४७. नवन्, ४८. दशन्
४९. कति, ५०. उभ ।

(२) संख्याएँ

१३७-१३८

गिनती—१ से १०० तक ।

संख्याएँ—सहस्र से महाशंख तक ।

(३) धातुरूप-संग्रह

१३९-१६५

(१) भ्वादिगण—१. भू, २. हस्, ३. पठ्, ४. रक्ष्, ५. वद्, ६ पच्,
७. नम्, ८. गम्, ९. दृश्, १०. सद्, ११. स्था, १२. स्मृ, १३. पा, १४. जि,
१५. सेव्, १६. लभ्, १७. वृध्, १८. मुद्, १९. सह्, २०. याच्, २१. नी,
२२. ह ।

(२) अदादिगण—२३. अद्, २४. अस्, २५. ब्रू, २६. रुद्, २७. दुह्,
२८. स्वप्, २९. हन्, ३०. इ, ३१. आस्, ३२. शी ।

(३) जुहोत्यादिगण—३३. हु, ३४. भी, ३५. दा, ३६ धा ।

(४) दिवादिगण—३७. दिव्, ३८. नृत्, ३९. नश्, ४०. भ्रम्,
४१. युध्, ४२. जन् ।

(५) स्वादिगण—४३. सु, ४४. आप्, ४५. शक् ।

(६) तुदादिगण—४६. तुद्, ४७. इष्, ४८. स्पृश्, ४९. प्रच्छ्,
५०. मु, ५१. मुच् ।

(७) रुधादिगण—५२. रुध्, ५३. भुज् ।

(८) तनादिगण—५४. तन्, ५५. कृ ।

(९) क्र्यादिगण—५६. क्री, ५७. ग्रह्, ५८. ज्ञा ।

(१०) चुरादिगण—५९. चुर्, ६०. चिन्त्, ६१. कथ्, ६२. कथ् ।

(४) संक्षिप्त-धातुकोष

१६६-१७६

पुस्तक में प्रयुक्त सभी धातुओं के ५ लकारों में रूप ।

(१) अकर्मक धातुएँ । (२) अनिट् धातुओं का संग्रह ।

(५) प्रत्यय-विचार

१७७-१९०

निम्नलिखित प्रत्ययों के सभी उपयोगी रूपों का संग्रह :—

१. क्त, २. क्तवत्, ३. शतृ, ४. शानच्, ५. तुमुन्, ६. तव्यत्,
७. तृच्, ८. क्त्वा, ९. ल्यप्, १०. ल्युट्, ११. अनीयर्, १२. घञ्, १३. ण्वुल्,
१४. वितन्, १५. यत् ।

(६) सन्धि-विचार

१९१-१९५

१८. मुख्य संधियों का सोदाहरण विवेचन ।

(७) पत्रादि लेखन-प्रकार

१९६-१९९

१. संस्कृत में पत्र लिखने का प्रकार । २. संस्कृत में प्रार्थना-पत्र लिखना । ३. पुस्तकादि के लिए आदेश भेजना । ४. निमन्त्रणपत्र भेजना ।
५. परिषद् की सूचना । ६. प्रस्ताव, अनुमोदनादि । ७. व्याख्यान ।

(८) निबन्ध-माला

२००-२२०

निबन्ध-लेखन का प्रकार तथा उदाहरणार्थ २० निबन्ध ।

१. विद्याविहीनः पशूः । २. सत्यमेव जयते नानृतम् ।
३. अहिंसा परमो धर्मः । ४. परोपकाराय सतां विभूतयः ।
५. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
६. धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।
७. आचारः परमो धर्मः ।
८. सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।
९. संघे शक्तिः कलौ युगे ।
१०. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
११. संस्कृतभाषाया महत्त्वम् ।
१२. आर्याणां संस्कृतिः ।
१३. गीताया उपदेशामृतम् ।
१४. स्त्रीशिक्षाया आवश्यकता ।
१५. शठे शाठ्यं समाचरेत् ।
१६. मानवजीवनस्योद्देश्यम् ।
१७. आचार्यदेवो भव ।
१८. मम महाविद्यालयः ।
१९. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ।
२०. सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।

आत्मनिवेदन

(१) **पुस्तक-लेखन का उद्देश्य:**—पुस्तक को पढ़ने के साथ ही पाठकों के हृदय में प्रश्न होगा कि अनेकों अनुवाद और व्याकरण की पुस्तकों के होते हुए इस पुस्तक की क्या आवश्यकता है। प्रश्न का संक्षेप में उत्तर यही दिया जा सकता है कि यह पुस्तक उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए लिखी गई है, जिसकी पूर्ति अबतक प्रकाशित पुस्तकों से नहीं हो सकी है। पुस्तक-लेखन का उद्देश्य है :—

(१) संस्कृत भाषा को सरल, सुबोध और सर्वप्रिय बनाना। (२) संस्कृत-व्याकरण की कठिनाइयों को दूर कर सुगम मार्ग-प्रदर्शन करना। (३) 'संस्कृत-भाषा अतिक्लिष्ट भाषा है' इस लोकापवाद का समूल खंडन करना। (४) किस प्रकार से संस्कृत-भाषा से अपरिचित एक हिन्दी-भाषा जानने वाला व्यक्ति ४ या ६ मास में सुन्दर, स्पष्ट और शुद्ध संस्कृत लिख और बोल सकता है। (५) संस्कृत भाषा के व्याकरण और अनुवाद-संबन्धी सभी अत्यावश्यक बातों को एक स्थान पर संग्रह करना तथा अनावश्यक सभी बातों का परित्याग करना। (६) अनुवाद और वाक्य-रचना द्वारा सभी व्याकरण के नियमों का पूर्ण अभ्यास कराना। व्याकरण को रटने की क्रिया को न्यूनतम करना। (७) संस्कृत के प्रत्ययों के द्वारा सैकड़ों शब्दों का स्वयं निर्माण करना सीखना, जिनका प्रयोग हिन्दी आदि भाषाओं में प्रचलित है।

इस पुस्तक के लेखन में लेखक का उद्देश्य यह भी है कि यह पुस्तक चार भागों में पूर्ण हो। यह प्रथम भाग है जो कि संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए प्रारम्भिक संस्कृत प्रेमियों को लक्ष्य में रखकर लिखा गया है। इसमें अत्यावश्यक विषयों का ही संग्रह किया गया है। सरल और शुद्ध संस्कृत किस प्रकार सरलतापूर्वक निःसंकोच लिखी और बोली जा सकती है, इसका ही इसमें ध्यान रखा गया है। अत्यावश्यक व्याकरण का ही इसमें संग्रह है जो कि प्रारम्भिकताओं के लिए जानना अनिवार्य है। अन्य ३ भागों में क्रमशः उत्तरोत्तर उच्च व्याकरण तथा प्रौढ संस्कृत के लेखन के प्रकार का संग्रह रहेगा। अभीतक बी० ए०, एम० ए० तथा शास्त्री और आचार्य के छात्रों के लिए अनुवाद और निबन्ध की उत्तम पुस्तकें नहीं हैं। अन्य भागों के द्वारा इस आवश्यकता की पूर्ति करना लेखक का लक्ष्य है।

(२) **पुस्तक की शैली:**—पुस्तक कतिपय नवीनतम विशेषताओं के साथ प्रस्तुत की गई है। हिन्दी, संस्कृत, इंग्लिश, फारसी और अरबी में

अभी तक इस पद्धति पर लिखी गई कोई पुस्तक नहीं है। जर्मन और फ्रेंच भाषाओं में इस शैली पर कुछ पुस्तकें लिखी गई हैं, विशेषरूप से प्रो० ओटो जीपमान (Otto Siepmann) की जर्मन और फ्रेंच भाषा की पुस्तकें। मुझे विशेष प्रेरणा प्रो० जीपमान की मनोरम शैली से मिली है। मैंने कतिपय और नवीनताओं का इसमें समावेश किया है, जैसे प्रत्येक अभ्यास में नवीन शब्दों की संख्या समान ही हो। इस पुस्तक में प्रत्येक अभ्यास में गिनकर २५ नए शब्द दिए गये हैं। हिन्दी और संस्कृत के अतिरिक्त इंग्लिश और रूसी भाषा में अनुवाद और निबन्ध के विषय में जो नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई है, उसका भी मैंने यथासंभव और यथाशक्ति पूर्ण उपयोग किया है।

(३) अभ्यास :—पुस्तक में केवल ६० अभ्यास दिए हैं। प्रत्येक अभ्यास दो भागों में विभक्त है। बाईं ओर प्रारम्भ में शब्दकोष है, जिसमें २५ नए शब्द हैं। तत्पश्चात् शब्दरूप, धातुरूप, कारक, समास, कृत् प्रत्यय आदि व्याकरण संबंधी अंश दिया गया है। नियमों के उदाहरण आदि भी साथ ही दिए गए हैं। दाईं ओर प्रारम्भ में संस्कृत में उदाहरण-वाक्य हैं। तत्पश्चात् संस्कृत में अनुवाद के लिए हिन्दी के वाक्य हैं। बाद में अनुवाद में होनेवाली विशेष त्रुटियों का निर्देश करके उनका शुद्धरूप दे दिया गया है। तत्पश्चात् अभ्यास के लिए कार्य दिया गया है, जैसे एकवचन को बहुवचन बनाना, वर्तमानकाल को अन्य कालों में परिवर्तित करना आदि। वाक्य-रचना, रिक्त-स्थानों की पूर्ति आदि का उसके बाद अभ्यास कराया गया है। प्रत्येक अभ्यास में दोनों ओर की पंक्तियाँ गिनकर रक्खी गई हैं। प्रत्येक अभ्यास उसी पृष्ठ पर समाप्त होता है। किसी अभ्यास की १ भी पंक्ति दूसरे पृष्ठ पर नहीं जाती है।

(४) शब्दकोष :—विद्यार्थियों की सुविधा के लिए शब्दकोष को ४ भागों में बाँटा गया है। शब्दकोष के अन्तर्गत (क) संकेत का अर्थ है कि ये 'संज्ञा या सर्वनाम शब्द' हैं। सर्वनाम शब्दों के अन्त में (सर्वनाम) यह संकेत भी किया गया है। (ख) चिह्न का अर्थ है कि ये 'धातु या क्रिया शब्द' हैं। (ग) का अर्थ है कि ये 'अव्यय' हैं, इनका रूप नहीं चलता है। (घ) का अर्थ है कि ये 'विशेषण' शब्द हैं, इनका रूप विशेष्य के तुल्य चलेगा। इन शब्दों के तीनों लिंगों में रूप चलेंगे। सुविधा के लिए प्रत्येक विभाग के अन्त में शब्दों की संख्या गिनकर रख दी गई है, अर्थात् इस अभ्यास में इतने संज्ञा शब्दों का प्रयोग सिखाया गया है, इतनी धातुओं का, इतने अव्ययों या विशेषणों का।

शब्दकोष के विषय में यह भी ध्यान रखें कि प्रयत्न किया गया है कि जिस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में सिखाया गया है, उस प्रकार के अन्य शब्द या धातु भी उसी पाठ में रखें जाएँ और उनका भी अभ्यास कराया जाय । शब्दकोष के ऊपर स्पष्टरूप से निर्देश किया गया है कि विद्यार्थी अबतक कितने शब्द सीख चुका है तथा उसका शब्दकोष कितना हो गया है । शब्दकोष के अन्त में सूचना दी गई है कि इस शब्द से लेकर इस शब्द तक के रूप इस प्रकार चलेंगे वही इतनी धातुओं के रूप इस प्रकार चलेंगे । संक्षेप के लिए सर्वत्र यह नहीं लिखा गया है कि इस शब्द से इस शब्द तक के रूप ऐसे चलेंगे, अपितु — (डैश) चिह्न का प्रयोग किया गया है । 'तुल्य रूप चलेंगे' के लिए 'वत्' का प्रयोग किया है । जैसे (क) राम-विद्यालय, रामवत् । इसका अर्थ हुआ कि (क) भाग में दिए हुए राम शब्द से विद्यालय शब्द तक के सारे शब्दों के रूप राम शब्द के तुल्य चलेंगे । इसी प्रकार (ख) भाग के लिए संकेत है ।

कई स्थानों पर शब्दकोष में (क) (ख) (ग) (घ) में से (क) (ख) (ग) या (घ) नहीं मिलेगा । इसका अभिप्राय यह है कि उस विभाग या उस श्रेणी का शब्द उस शब्दकोष में नहीं है । जैसे अभ्यास ४ का शब्दकोष (ख) से प्रारम्भ होता है, इसका अर्थ है कि यहाँ पर (क) अर्थात् कोई संज्ञा शब्द नहीं है । (ख) न होने का अर्थ है, क्रिया शब्द नहीं है । (ग) नहीं का अर्थ है कि 'अव्यय' नहीं है । (घ) नहीं का अर्थ है कि कोई विशेषण शब्द इस शब्दकोष में नहीं है । यह भी स्मरण रखें कि (क) भाग में दो तीन अभ्यासों में कुछ विशेषण शब्द भी हैं, जिनका प्रयोग संज्ञा शब्द और विशेषण शब्द दोनों के तुल्य होता है । उनका उल्लेख (क) भाग में इसलिए किया गया है कि उनके रूप उस भाग के मुख्य शब्द के तुल्य चलते हैं ।

प्रत्येक अभ्यास में २५ नए शब्द हैं अतः ६० अभ्यासों में १५०० शब्दों का शब्दकोष हो जाता है । प्रायः इतने ही शब्द कृत् प्रत्ययों आदि के द्वारा विद्यार्थी स्वयं भी बना लेता है, अतः प्रायः ३००० शब्दों का ज्ञान छात्र को हो जाता है । शब्दकोष के शब्दों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है :—

(क) अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम शब्द ८२८

(ख) अर्थात् धातु या क्रिया शब्द ३५४

(ग) अव्यय शब्द १४५

(घ) विशेषण शब्द १७३

पठित एवं अभ्यस्त शब्दों का योग १५०० (शब्दकोष)

५. पुस्तक की विशेषताएँ

संक्षेप में पुस्तक की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

(१) इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषाओं में अपनाई गई नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति इस पुस्तक में अपनाई गई है।

(२) संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए अनिवार्य सम्पूर्ण व्याकरण अनुवाद और अभ्यासों के द्वारा अति सरल और सुबोध रूप में समझाया गया है।

(३) ६० अभ्यासों में सम्पूर्ण आवश्यक व्याकरण समाप्त किया गया है। प्रत्येक अभ्यास में व्याकरण के कुछ विशेष नियमों का अभ्यास कराया गया है। नियमों को पूर्णरूप से स्पष्ट करने के लिए उदाहरण-वाक्य दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास में छात्रों से जो वृत्तियाँ संभव हैं, उनका निर्देश करके शुद्ध वाक्य बनाया गया है। साथ ही नियम भी बताया गया है।

(४) अभ्यास-प्रश्नों द्वारा सैकड़ों नए वाक्य स्वयं बनाने का अभ्यास कराया गया है। रिक्त-स्थलों की पूर्ति का अभ्यास, नए शब्दों से वाक्य-रचना का अभ्यास, अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने का अभ्यास, संधि, समास तथा कृत् प्रत्ययों से रूप बनाने आदि का विशेष अभ्यास कराया गया है।

(५) प्रत्येक अभ्यास की विशेषता यह है कि एक अभ्यास के लिए केवल दो पृष्ठ दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास की पंक्तियाँ गिनकर रक्खी गई हैं। एक भी पंक्ति एक अभ्यास की दूसरे पृष्ठ पर नहीं जाती है। प्रत्येक अभ्यास दो भागों में विभक्त है। बाई ओर :—(१) शब्दकोष, (२) व्याकरण के नियम, (३) शब्दरूप, (४) धातुरूप, (५) संधि या समास आदि, (६) कृत् प्रत्ययों से शब्द बनाने के नियम आदि हैं। दाई ओर :—(१) उदाहरण-वाक्य, (२) अनुवादार्थ हिन्दी-वाक्य, (३) अशुद्ध-वाक्यों के शुद्ध-वाक्य, (४) अभ्यास (वचन-परिवर्तन, काल-परिवर्तन आदि), (५) वाक्य-रचना, (६) रिक्त-स्थलों की पूर्ति का अभ्यास आदि।

(६) प्रत्येक अभ्यास में गिनकर २५ नए शब्द दिए गए हैं। उनका विशेष-रूप से प्रयोग सिखाया गया है।

(७) अभ्यासों के पश्चात् (१) सभी आवश्यक शब्दों तथा धातुओं के रूप दिए गए हैं। (२) १ से १०० तक की पूरी गिनती तथा महाशंख तक की संख्याएँ हैं। (३) संक्षिप्त धातुकोष है, इसमें पुस्तक में प्रयुक्त सभी धातुओं के ५ लकारों के रूप हैं। (४) कृत् प्रत्ययों से बने हुए रूपों का संग्रह। (५) आवश्यक संधि-नियमों का संग्रह।

(८) संस्कृत में पत्र लिखना, प्रस्ताव अनुमोदन आदि करना, व्याख्यान का प्रारम्भ करना, इसका प्रकार उदाहरणों द्वारा बताया गया है।

(९) पुस्तक के अन्त में संस्कृत में निबन्ध लिखने के लिए आवश्यक-निर्देश तथा उदाहरणरूप में २० निबन्ध अत्युपयोगी विषयों पर लिखे गए हैं।

(१०) पुस्तक बी० ए० और मध्यमा कक्षा तक के छात्रों के लिए संस्कृत-अनुवाद, व्याकरण और निबन्ध के लिए सर्वथा पर्याप्त है।

६. अध्यापकों से

(१) प्रत्येक अभ्यास में दिए शब्दकोष और व्याकरण के अंश को छात्रों को अच्छी प्रकार स्पष्ट कर दें और छात्रों को निर्देश दें कि वे उसको ठीक स्मरण कर लें। दूसरे दिन उदाहरण-वाक्यों का हिन्दी में अर्थ करावें और नियमों के प्रयोग को स्पष्ट कर दें। तत्पश्चात् कक्षा में ही प्रत्येक छात्र से मौखिक संस्कृत में अनुवाद करावें। एक छात्र की त्रुटि को दूसरे छात्र से शुद्ध करावें। छात्रों को अपनी त्रुटि शुद्ध करने का अधिक अवकाश दें।

(२) संस्कृत में मौखिक अनुवाद या संस्कृत-भाषण के प्रति छात्रों के संकोच को सर्वथा दूर करें। छात्र निर्भीक होकर अनुवाद करें और संस्कृत बोलें।

(३) छात्रों के उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान दें और उच्चारण की त्रुटि को प्रारम्भ से ही दूर करें।

(४) प्रत्येक अभ्यास को एक या दो बार में समाप्त करें। प्रत्येक पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास को मौखिक और लिखित दोनों प्रकार से करावें। छात्रों की लेख-संबन्धी त्रुटि को भी दूर करें।

(५) प्रत्येक अभ्यास में दिए गए नए शब्दों और धातुओं के द्वारा स्वयं भी वाक्य बनाकर उनका संस्कृत में अनुवाद करावें। छात्रों को संस्कृत-संभाषण के लिए विशेषरूप से प्रेरित करें। कक्षा में भी अधिक वार्तालाप संस्कृत में करें।

(६) पूर्व-पठित शब्दों, धातुओं और व्याकरण के नियमों को छात्र न भूलें, अतः उनका भी अभ्यास बार बार कराते रहें। निबन्ध-लेखन का भी अभ्यास करावें।

(७) छात्रों के हृदयमें संस्कृत भाषा के प्रति विशेष अनुराग उत्पन्न करें। उनके हृदय से यह भाव निकाल दें कि संस्कृत भाषा कठिन भाषा है। छात्रों से अनुवाद आदि का अभ्यास कराकर सिद्ध करें कि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक सरलता से सीखी जा सकती है और सरलता से लिखी या बोली जा सकती है।

७. विद्यार्थियों से

(१) संस्कृत भाषा को अति सरल, सुबोध और सुगम बनाने के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। अतः अदम्य उत्साह के साथ पुस्तक के पठन में प्रवृत्त हों। प्रत्येक भाषा में शुद्ध बोलना या लिखना निरन्तर अभ्यास के बाद ही आता है। मातृभाषा हिन्दी में शुद्ध बोलना या लिखना वर्षों के निरन्तर अभ्यास के बाद ही आता है। यह स्मरण रखें कि बिना अभ्यास के कोई विद्या नहीं आती है। अतः संकोच छोड़कर संस्कृत में बोलने और लिखने का अभ्यास करें।

(२) पुस्तक में ६० अभ्यास हैं। संस्कृत-भाषा से अपरिचित भी कोई हिन्दी जाननेवाला व्यक्ति १ अभ्यास को १ या २ घंटा प्रतिदिन समय देनेपर सरलता से २ दिन में पूरा कर सकता है। इस प्रकार ४ मास में यह पुस्तक सरलता से समाप्त हो सकती है। बहुत अल्प आयुवाले छात्र ४ दिन में १ अभ्यास समाप्त कर सकते हैं, इस प्रकार वे भी ८ मास में पुस्तक पूरी पढ़ सकते हैं।

(३) संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए जितने शब्दों, धातुओं और नियमों के जानने की अत्यन्त आवश्यकता होती है, वे सभी बातें इस पुस्तक में हैं। इस पुस्तक का ठीक अभ्यास हो जाने पर छात्र निःसंकोच शुद्ध संस्कृत लिख और बोल सकता है। बी०ए० कक्षा तक के लिए इतने व्याकरण का ज्ञान पर्याप्त है।

(४) **शब्दकोष** :—शब्दकोष में एक प्रकार से रूप चलने वाले शब्द या धातु प्रायः एक ही स्थान पर दिए गए हैं। अति प्रसिद्ध शब्द या धातु ही प्रायः दिए गए हैं, कठिन शब्दों को छोड़ दिया गया है। किस शब्द या धातु के रूप किस प्रकार चलेंगे, यह भी अन्त में सूचना द्वारा स्पष्ट कर दिया है। (क) (ख) (ग) (घ) संकेतों का अर्थ, संज्ञा, क्रिया आदि स्मरण रखें। आगे के अभ्यासों में पूर्व-पठित शब्दावली का निःसंकोच प्रयोग किया गया है, अतः प्रत्येक पाठ की शब्दावली को ठीक स्मरण करें।

(५) **व्याकरण** :—(क) व्याकरण में कुछ विशेष शब्दों या धातुओं का प्रयोग सिखाया गया है। उस अभ्यासमें उस शब्द और धातु को ठीक स्मरण कर लें। उसी प्रकार से रूप चलने वाले शब्द या धातु भी उसी पाठ में दिए गए हैं। उनके रूप भी उसी प्रकार चलावें। शब्दों और धातुओं के 'संक्षिप्तरूप' भी दिए गए हैं, उस प्रकार से चलने वाले सभी शब्दों या धातुओं के अन्त में वह अंश रहेगा।

(ख) नियमों के साथ पाणिनि के प्रामाणिक सूत्र भी कोष्ठ में दिए हैं। उन्हें न स्मरण करना चाहें तो छोड़ सकते हैं। हिन्दी में दिए पूरे नियम की अपेक्षा संस्कृत का छोटा सूत्र स्मरण करना सरल है। केवल २०० नियम पूरी पुस्तक में हैं।

(ग) व्याकरण के नियमों के उदाहरण भी साथ ही दिए गए हैं। कुछ नियमों के उदाहरण उदाहरण-वाक्यों में मिलेंगे। उन्हें ध्यानपूर्वक समझ लें।

(घ) संक्षेप के लिए कतिपय संकेतों का उपयोग किया गया है। उनका यथा-स्थान निर्देश किया गया है। जैसे प्रथमा, द्वितीया आदि के लिए प्र०, द्वि० आदि। चिह्न > का प्रयोग 'का रूप बनता है' इस अर्थ में किया गया है, स्मरण रखें। जैसे भू > भवति, अर्थात् भू धातु का भवति रूप बनता है।

(६) उदाहरण-वाक्य :—व्याकरण के जो नियम उस अभ्यास में दिए गए हैं, तथा जो नए शब्द दिए गए हैं, उनका प्रयोग उदाहरण वाक्यों में किया गया है। उदाहरण वाक्यों को बहुत ध्यानपूर्वक समझ लें। प्रत्येक वाक्य में किसी विशेष नियम या शब्द का प्रयोग सिखाया गया है। उदाहरण-वाक्यों को ठीक समझ लेने से अनुवाद में कठिनाई नहीं होगी।

(७) अनुवाद :—जो व्याकरण के नियम या नए शब्द उस अभ्यास में दिए गए हैं, उनका विशेषरूप से अभ्यास कराया गया है। अनुवाद बनाने में जहाँ भी कठिनाई हो, वहाँ उदाहरण-वाक्यों को देखें। उनसे आपकी कठिनाई दूर होगी। अशुद्ध-वाक्यों के शुद्ध-वाक्य जो दिए गए हैं, उनसे भी सहायता लीजिए।

(८) शुद्ध वाक्य :—अशुद्ध-वाक्यों के जो शुद्ध-वाक्य या शुद्धरूप दिए गए हैं, उनको ध्यानपूर्वक स्मरण कर लें। प्रयत्न करें कि वह त्रुटि आगे न हो। जो त्रुटियाँ एक बार बता दी हैं, उनका बार बार निर्देश नहीं किया है। शुद्धवाक्य के आगे नियम की संख्या दी है, उस नियम को व्याकरण वाले अंश में देखें।

(९) अभ्यास :—अभ्यासों में काल-परिवर्तन, वचन-परिवर्तन आदि का अभ्यास कराया गया है। अभ्यास में जितने प्रश्न दिए गए हैं, उनको पूरा करने का पूर्ण यत्न करें। तभी अनुवाद और व्याकरण का अभ्यास परिपक्व होगा। वाक्य-रचना आदि के कार्य को भी न छोड़ें। कहीं कठिनाई प्रतीत हो तो अध्यापक की सहायता लें।

(१०) अभ्यासों के अन्त में १२२ पृष्ठ से सभी आवश्यक शब्दों और धातुओं के रूप दिए गए हैं। उनको शुद्धरूप में स्मरण करें और उनका प्रयोग करें।

(११) पुस्तक में जितनी धातुओं का प्रयोग हुआ है, उन सब के पाँचों लकारों के रूप संक्षिप्त धातुकोष में हैं। उन्हें वहाँ देखें।

(१२) पत्र लिखने का प्रकार भी दिया गया है। अन्त में निबन्ध लिखने का प्रकार तथा उदाहरण रूप में २० निबन्ध हैं, तदनुसार अन्य निबन्ध स्वयं लिखें।

८. कृतज्ञता-प्रकाशन

सर्वप्रथम महामान्य डा० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, राज्यपाल उत्तर-प्रदेश का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने पुस्तक की मूलप्रति को देखने तथा पुस्तक को समर्पण करने की स्वीकृति देकर असीम अनुकम्पा की है।

इस पुस्तक के लेखन में मुझे जिन महानुभावों से विशेष आवश्यक परामर्श, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है, उनमें विशेष उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं। परामर्शों, मुझावों आदि के लिए इन सभी का कृतज्ञ हूँ।—

सर्वश्री माननीय डा० हरगोविन्द सिंह (शिक्षामंत्री, उत्तरप्रदेश), डा० सम्पूर्णानन्द (गृहमंत्री, उ०प्र०), डा० सुनीतिकुमार चटर्जी (कलकत्ता), डा० मंगलदेव शास्त्री (बनारस), डा० बाबूराम सक्सेना (प्रयाग), डा० सूर्यकान्त शास्त्री (जालंधर), डा० सिद्धेश्वर वर्मा (दिल्ली), डा० वामुदेव शरण अग्रवाल (बनारस), प्रो० धर्मेन्द्र नाथ शास्त्री (मेरठ), प्रिन्सिपल महेन्द्रप्रताप शास्त्री (लखनऊ), डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग), प्रो० भोलानाथ शर्मा (बरेली), आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री (होशियारपुर), डा० रामजी उपाध्याय (सागर वि० वि०), प्रो० हंसराज अग्रवाल (लुधियाना), आचार्य हरिदत्त शास्त्री (आगरा), आचार्य सुरेन्द्रनाथ दीक्षित (रांची), प्रिन्सिपल विद्यासागर दीक्षित (मवाना, मेरठ), बा० केदारनाथ गुप्त रईस (इलाहाबाद), डा० दीवानसिंह (रामगढ़, नैनीताल), बा० बैजनाथप्रसाद गुप्त (इलाहाबाद)।

पुस्तक की सामग्री के संकलन, लेखन, तथा प्रूफ संशोधन में इन व्यक्तियों से विशेष सहयोग मिला है, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है। श्री विजयकुमार शास्त्री (रामगढ़, नैनीताल), श्री रूपनारायण शास्त्री (हि० सा० संमेलन, प्रयाग) तथा दोनों छोटे भाई सत्यदेव एवं प्रेमनाथ।

पुस्तक के प्रकाशन एवं मुद्रण में प्रकाशक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी एम० ए०, तथा मुद्रक, भार्गवभूषण प्रेस, बनारस के अध्यक्ष ने कठोर परिश्रम किया है, जिससे पुस्तक सुन्दर, स्वच्छ और सुसंस्कृत रूप में छप सकी है, तदर्थ उन्हें विशेष धन्यवाद है।

अन्त में विद्वज्जन से निवेदन है कि वे पुस्तक के विषय में जो भी संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन का विचार भेजेंगे, वह बहुत कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जायगा। पुस्तक में छपाई संबन्धी कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे ठीक कर लें तथा उसकी सूचना मुझे दें।

सेंट एंड्रयूज कालेज, गोरखपुर }
दीपावली, २००९ वि० }

कपिलदेव द्विवेदी

आवश्यक-निर्देश

१. 'संस्कृत'—शब्द का अर्थ है—शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत । अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है—शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा ।

२. संस्कृत में ३ वचन होते हैं—एकवचन (एक०), द्विवचन (द्वि०), बहुवचन (बहु०) । तीन पुरुष होते हैं—प्रथम या अन्य पुरुष (प्र० पु०), मध्यमपुरुष (म० पु०), उत्तमपुरुष (उ० पु०) । संबोधन को लेकर आठ कारक (विभक्तियाँ) होते हैं । (विवरण के लिए देखें पृष्ठ ४) ।

३. संस्कृत में क्रिया के १० लकार (वृत्तियाँ) होते हैं । इनमेंसे पाँच लकार ही इस पुस्तक में दिए गए हैं । इनके नाम तथा अर्थ ये हैं :—(१) लट् (वर्तमानकाल), (२) लोट् (आज्ञा अर्थ), (३) लृट् (भविष्यत् काल), (४) लङ् (भूतकाल), (५) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) ।

४. धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं, अतः धातुएँ ३ प्रकार की हैं :—परस्मै-पदी (प०; ति, तः, अन्ति) । आत्मनेपदी (आ०; ते एते अन्ते) । उभयपदी (उ०; दोनों प्रकार के रूप) ।

५. संस्कृत में १० गण (धातुओं के विभाग) होते हैं । प्रत्येक धातु किसी एक गण में आती है । इनके लिए कोष्ठगत संकेत हैं । भ्वादिगण (१), अदादि० (२), जूहो-त्यादि० (३), दिवादि० (४), स्वादि० (५), तुदादि० (६), रुधादि० (७), तनादि० (८), ऋधादि० (९) चुरादि० (१०) ।

६. इंग्लिश के Tenses (लकारों) का अनुवाद कोष्ठ में दी विधि से कीजिए । १. Present Ind. (लट्), २. Pres. Cont. (लट् या धातु से शतृ प्रत्यय + अस्, लट्), ३. Pres. Perfect (लङ् या धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लट्), ४. Pres. Per. Cont. (२ के तुल्य) । ५. Past Ind. (लङ्), ६. Past Cont. (लङ् या धातु से शतृ प्रत्यय + अस्, लङ्), ७. Past Perfect (लङ् या धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लङ्), ८. Past. Per. Cont. (६ के तुल्य) । ९. Future Ind. (लृट्), १०. Future Cont. (लृट् या धातु से स्य, शतृ + अस्, लृट्), ११. Future Perfect (धातु से क्त प्रत्यय + अस्, लृट्), १२. Future Per. Cont. (१० के तुल्य) ।

७. प्रत्येक अभ्यास को प्रारम्भ करने से पूर्व बाईं ओर के शब्दकोष और व्याकरण को ठीक स्मरण कर लें । उनका ही अभ्यास कराया गया है । * चिह्न वाले नियम अत्यावश्यक हैं । शब्दकोष में (क) में सर्वनाम शब्दों का संकेत कर दिया गया है, शेष संज्ञाशब्द हैं ।

८. शब्दों और धातुओं के पूरे रूप, संक्षिप्त धातुकोष, सन्धि-नियम, प्रत्ययों का विवरण, निबन्ध आदि परिशिष्ट में दिए गए हैं, वहाँ देखें ।

शब्दकोष—२५]

अभ्यास १

(व्याकरण)

(क) सः (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब), भवान् (आप, पुरुष), भवती (आप, स्त्री) (सर्वनाम शब्द) । रामः (राम), ईश्वरः (ईश्वर या स्वामी), बालकः (बालक), मनुष्यः (मनुष्य), नरः (मनुष्य), ग्रामः (गाँव), नृपः (राजा), विद्यालयः (विद्यालय) । (१३) (ख) भू (होना), पठ् (पढ़ना), लिख् (लिखना), हस् (हँसना), गम् (जाना), आगम् (आना) । (६) (ग) अत्र (यहाँ), इह (यहाँ), यत्र (जहाँ), तत्र (वहाँ), कुत्र (कहाँ), क्व (कहाँ) । (६)

सूचना—१. शब्दकोष के लिए ये संकेत स्मरण कर लें :—

(क) = संज्ञा और सर्वनाम शब्द । (ख) = धातु या क्रिया शब्द । (ग) = अव्यय और क्रिया विशेषण । (घ) = विशेषण शब्द ।

२. (क) चित्—(अर्थात् लकीर) 'तक' अर्थ का बोधक है । जैसे, १—१० अर्थात् १ से १० तक । राम—विद्यालय, राम से विद्यालय तक के शब्द । (ख) 'वत्' अर्थात् तुल्य, सदृश । जैसे—'रामवत्' अर्थात् राम के तुल्य रूप चलेंगे । 'भवतिवत्' भवति के तुल्य रूप चलेंगे ।

३. (क) राम—विद्यालय, रामवत् अर्थात् राम शब्द से विद्यालय शब्दतक के रूप राम शब्द के तुल्य चलेंगे । (ख) भू—आगम्, भवतिवत् ।

व्याकरण (लट्, परस्मैपद, कर्तृवाच्य) ।

१. रामः रामौ रामाः प्रथम (कर्ता) | संक्षिप्तरूप अः औ आः प्र०
रामम् रामौ रामान् द्वितीया (कर्म) | (अकारान्त पुं.) अम् औ आन् द्वि०
संक्षिप्तरूप शब्द के अन्त में रहेगा । जैसे, बालकः बालकौ बालकाः, बालकम् आदि ।

२. 'भू' धातु 'लट्' लकार (वर्तमानकाल) | संक्षिप्तरूप
भवति भवतः भवन्ति प्रथमपुरुष | अति अतः अन्ति प्र० पु०
संक्षिप्त रूप अन्त में लगाकर अन्य धातुओं के रूप बनाइए, जैसे पठति, लिखति, हसति, गच्छति, आगच्छति आदि । लट् आदि में गम् को गच्छ हो जाता है । लट् = वर्तमानकाल ।

*नियम १—कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है । जैसे, सः पठति, कर्ता प्रथमपुरुष एकवचन है तो क्रिया भी प्रथमपुरुष एकवचन होगी ।

नियम २—'भवत्' (आप) शब्द के साथ सदा प्रथमपुरुष आता है ।

नियम ३—तीनों लिंगों में धातु का रूप वही रहता है ।

*नियम ४—कर्ता में प्रथमा आती है और कर्म में द्वितीया आती है ।

*नियम ५—(अपदानं प्रयुञ्जीत) बिना प्रत्यय लगाए शब्द या धातु का प्रयोग न करें ।

नियम ६—एक अर्थवाले (पर्यायवाची) शब्दों में से एक शब्द का ही प्रयोग करें ।

अभ्यास १

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़ता है—सः पठति । २. वे दो पढ़ रहे हैं—
तौ पठतः । ३. वे सब पढ़ते हैं—ते पठन्ति । ४. आप यहाँ आते हैं—भवान् अत्र आग-
च्छति । ५. आप दो हँसते हैं—भवन्तौ हसतः । ६. आप सब जाते हैं—भवन्तः गच्छन्ति ।
७. आप लिखती हैं—भवती लिखति । ८. बालक होता है (या है)—बालकः
भवति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह लिखता है । २. वह गाँव को जाता है ।
३. वह आता है । ४. बालक पढ़ता है । ५. राम लिखता है । ६. मनुष्य हँसता है ।
७. राजा यहाँ आता है । ८. राम विद्यालय को जाता है । ९. आप वहाँ जाते हैं ।
१०. वह मनुष्य कहाँ जाता है ?

(ख) ११. वे दो हँसते हैं । १२. वे दो कहाँ जाते हैं ? १३. दो आदमी यहाँ आ
रहे हैं । १४. दो राजा वहाँ जा रहे हैं । १५. वे दोनों जहाँ जाते हैं, वहाँ हँसते हैं ।
१६. आप दो आते हैं ।

(ग) १७. वे सब यहाँ आते हैं । १८. सब बालक विद्यालय को जा रहे हैं ।
१९. वे मनुष्य कहाँ जा रहे हैं ? २०. आप सब पढ़ रहे हैं ।

३. अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम संख्या (देखिए)
(१) रामं विद्यालयः गच्छति ।	रामः विद्यालयं गच्छति ।	४
(२) भवान् तत्र गच्छन्ति ।	भवान् तत्र गच्छति ।	१
(३) मनुष्यौ आगच्छन्ति ।	मनुष्यौ आगच्छतः ।	१
(४) यत्र गच्छतः तत्र हसन्ति ।	यत्र गच्छतः तत्र हसतः ।	१
(५) बालकाः विद्यालयं गच्छति ।	बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति ।	५, १

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ :—सः पठन्ति । तौ लिखति । ते आगच्छति ।
भवान् पठन्ति । भवती हसतः । ईश्वरः भवन्ति । नराः पठति । नरौ आगच्छन्ति ।
विद्यालयः गच्छति । नृप गच्छन्ति । बालक हसतः । नराः हसति ।

५. अभ्यास (संस्कृत में)—(क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और बहुवचन
में बनाओ । (ख) २ (ख) के वाक्यों को एकवचन और बहुवचन में बनाओ । (ग)
पठ्, लिख्, गम्, आगम् के प्रथमपुरुष के रूप बताओ । (घ) बालक, नर, नृप, विद्यालय
के प्रथमा (कर्ता), और द्वितीया (कर्म) विभक्ति के रूप बताओ ।

शब्दकोष—२५ + २५ = ५०] अभ्यास २

(व्याकरण)

(क) त्वम् (तू), युवाम् (तुम दोनों), यूयम् (तुम सब) (सर्वनाम) । फलम् (फल), पुस्तकम् (पुस्तक), पुष्पम् (फूल), पत्रम् (चिट्ठी, पत्ता), भोजनम् (भोजन), जलम् (जल), राज्यम् (राज्य), सत्यम् (सत्य), गृहम् (घर), वनम् (वन) (१३) ।

(ख) रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), पत् (गिरना), नम् (नमस्कार करना) । (५) (ग) अद्य (आज), सम्प्रति, इदानीम्, अधुना (तीनों का अर्थ है 'अब'), यदा (जब), तदा (तब), कदा (कब) । (७)

सूचना—(क) फल—वन, फलवत् । (ख) रक्ष्—नम्, भवतिवत् ।

व्याकरण (लट्, मध्यमपुरुष, कारक-परिचय)

१. फलम् फले फलानि प्रथमा (कर्ता) संक्षिप्तरूप अम् ए आनि प्र०
फलम् " " द्वितीया (कर्म) (अकारान्त नपुं०) " " " द्वि०
पुस्तक आदि के रूप ऐसे ही चलेंगे । यथा—पुस्तकम् पुस्तके पुस्तकानि । परन्तु
पुष्प और पत्र में आनि के स्थान पर 'आणि' लगेगा—पुष्पाणि, पत्राणि ।

२. 'भू' (लट्, मध्यमपुरुष) संक्षिप्तरूप—असि अथः अथ म० पु०
भवसि भवथः भवथ म०पु० एक० में असि, द्वि० में अथः, बहु० में
अथ लगेगा ।

रक्ष् आदि के रूप इसीप्रकार चलेंगे । जैसे रक्षसि, वदसि, पचसि, पतसि, नमसि आदि

३. संस्कृत में तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन, बहुवचन । एक के लिए एकवचन (एक०), दो के लिए द्विवचन (द्वि०), तीन या अधिक के लिए बहुवचन (बहु०) ।

४. तीन पुरुष होते हैं—(१) प्रथम (या अन्य) पुरुष (प्र० पु०) अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम । (२) मध्यमपुरुष (म० पु०) अर्थात् तू, तुम दोनों, तुम सब । (३) उत्तम पुरुष (उ० पु०) अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब । ये नाम स्मरण कर लें ।

५. संस्कृत में संबोधनसहित ८ विभक्तियाँ (कारक) होती हैं । उनके नाम और चिह्न ये हैं :—

विभक्ति	कारक	चिह्न	विभक्ति	कारक	चिह्न
(१) प्रथमा (प्र०)	कर्ता	—, ने	(५) पंचमी (प०)	अपादान	से
(२) द्वितीया (द्वि०)	कर्म	को	(६) षष्ठी (ष०)	संबन्ध	का, के, की
(३) तृतीया (तृ०)	करण	ने, से, द्वारा	(७) सप्तमी (स०)	अधिकरण	में, पर
(४) चतुर्थी (च०)	संप्रदान	के लिए	(८) संबोधन (सं०)	संबोधन	हे, अये, भोः

नियम ७. (अचहीनं परेण संयोज्यम्) हल् व्यंजन आगे के स्वर से मिल जाता है । (यह नियम ऐच्छिक है) । जैसे—त्वम् + अद्य = त्वमद्य । यूयम् + इदानीम् = यूयमिदानीम् ।

अभ्यास २

१. उदाहरण-वाक्य :—१. तू बोलता है—त्वं वदसि । २. तुम दोनों बोलते हो—युवां वदथः । ३. तुम सब बोलते हो—यूयं वदथ । ४. त्वम् ईश्वरं नमसि । ५. युवां भोजनं पचथः । ६. यूयं पुस्तकानि पठथ । ७. त्वमद्य पुस्तकं पठसि । ८. यदा यूयं गच्छथ, तदा स पत्रं लिखति । ९. त्वं राज्यं रक्षसि । १०. यूयं पुष्पाणि रक्षथ । ११. त्वं गृहं गच्छसि ।

२. संस्कृत बनाओ:—(क) १. तू पढ़ता है । २. तू पत्र लिखता है । ३. तू भोजन पकाता है । ४. तू राज्य की रक्षा करता है । ५. तू फल की रक्षा करता है । ६. तू सत्य बोलता है । ७. तू घर को जाता है । ८. तू झूठ बोलता है । ९. तू राजा को प्रणाम करता है ।

(ख) १०. तुम दोनों यहाँ आते हो । ११. तुम दोनों कब भोजन पकाते हो ? १२. तुम दोनों अब गाँव को जाते हो । १३. आप दोनों अब बोलते हो । १४. दो पत्ते गिरते हैं ।

(ग) १५. तुम सब राज्य की रक्षा करते हो । १६. तुम सब ईश्वर को प्रणाम करते हो । १७. तुम सब पुस्तक पढ़ते हो । १८. तुम सब अब हँसते हो । १९. तुम सब पुस्तकें पढ़ते हो । २०. तुम सब पत्र लिखते हो ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	त्वं राज्यस्य रक्षसि ।	त्वं राज्यं रक्षसि ।	४
(२)	युवाम् आगच्छथ ।	युवामागच्छथः ।	१, ७
(३)	भवन्तौ वदथः ।	भवन्तौ वदतः ।	२
(४)	पत्रानि पतथ ।	पत्राणि पतन्ति ।	शब्दरूप, १

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ :—त्वं पठति । युवां गच्छतः । यूयं लिखन्ति । यूयं वदसि । युवां पतथ । त्वं भोजनः पचति । भवान् सत्यः वदति । भवान् रक्षसि । यूयं राज्यः रक्षथः । त्वं राज्यस्य रक्षसि ।

५. अभ्यास (संस्कृत में) :—(क) २ (क) के वाक्यों को द्विवचन और बहुवचन में बनाओ । (ख) २ (ग) के वाक्यों को एकवचन और द्विवचन में बनाओ । (ग) रक्ष्, वद्, पच्, पत्, गम्, लिख् के म० पु० के रूप बताओ । (घ) पुस्तक, पुष्प, पत्र, जल, राज्य के प्रथमा और द्वितीया में रूप बताओ ।

६. वाक्य बनाओ :—सत्यम्, राज्यम्, इदानीम्, कदा, तदा, यदा ।

शब्दकोष—५० + २५ = ७५] अभ्यास ३

(व्याकरण)

(क) अहम् (मैं), आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब) (सर्वनाम)। रमा (लक्ष्मी), बाला (लड़की), कन्या (लड़की), लता (लता), कथा (कथा, कहानी), क्रीडा (खेल), पाठशाला (पाठशाला), विद्या (विद्या)। (११)। (ख) दृश् (देखना), स्था (रुकना), सद् (बैठना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना)। (७)। (ग) इतः (यहाँ से), ततः (वहाँ से), यतः (जहाँ से), कुतः (कहाँ से), किम् (क्या), कथम् (क्यों, कैसे), न (नहीं), (७)।

सूचना—(क) रमा—विद्या, रमावत्। (ख) दृश्—जि, भवतिवत्।

व्याकरण (लट्, उत्तमपुरुष, वर्णमाला)

१. रमा रमे रमाः प्रथमा (कर्ता) : संक्षिप्त रूप आ ए आः प्र०
रमाम् ,, ,, द्वितीया (कर्म) : आकारान्त स्त्री. आम् ,, ,, द्वि०
बाला आदि के रूप संक्षिप्तरूप लगाकर बनाइए, जैसे—बाला बाले बालाः,
बालाम् आदि।

२. 'भू' (लट्, उत्तमपुरुष) : संक्षिप्तरूप—आमि आवः आमः उ०पु०
भवामि भवावः भवामः : उ०पु० एक० में आमि, द्वि० में आवः,
बहु० में आमः लगेगा।

सूचना—(विशेष) लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इन धातुओं का यह रूप होता है—

दृश् > पश्य, पश्यति पश्यामि। स्था > तिष्ठ, तिष्ठति। सद् > सीद, सीदति।
पा > पिब, पिबति। घ्रा > जिघ्र, जिघ्रति आदि। गम् > गच्छ, आगम् > आगच्छ।
स्मृ का स्मरति आदि। जि का जयति।

३. वर्णमाला—कोष्ठ में पारिभाषिक नाम हैं, इन्हें शुद्ध स्मरण कर लें।

(क) स्वर—अ, इ, उ, ऋ, लृ, (ह्रस्व) ए, ऐ, ओ, औ (मिश्रित)
आ, ई, ऊ, ॠ, (दीर्घ)

(ख) व्यंजन—क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग) च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)
ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग) त, थ, द, ध, न (तवर्ग)
प, फ, ब, भ, म (पवर्ग) य, र, ल, व (अन्तःस्थ)
श, ष, स, ह (ऊष्म), (अनुस्वार) (अनुनासिक) : (विसर्ग)

सूचना—वर्ग के प्रथम अक्षर का अर्थ है—क च ट त प। द्वितीय—ख छ ठ
थ फ। तृतीय—ग ज ड द ब। चतुर्थ—घ झ ढ ध भ। पंचम—ङ ञ ण न म।

सन्धिनियमोंमें प्रथम आदि के स्थान पर क्रमशः १, २, ३, ४, ५ गिनती दी जायेगी।

नियम—८. 'स्मृ' धातु के साथ साधारण स्मरण अर्थ में द्वितीया होती है। विशेष स्मरण
में षष्ठी। (देखो अभ्यास १४) जैसे—पाठं स्मरति, ईश्वरं स्मरति।

अभ्यास ३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मैं पढ़ता हूँ—अहं पठामि । २. हम दोनों पढ़ते हैं—
आवां पठावः । ३. हम सब पढ़ते हैं—वयं पठामः । ४. वयं विद्यां पठामः । ५. अहं
कन्यां पश्यामि । ६. आवां क्रीडां पश्यावः । ७. अहं पुष्पं जिघ्रामि । ८. वयं जलं
पिबामः । ९. वयमत्र तिष्ठामः । १०. अहं कथां स्मरामि ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मैं लिखता हूँ । २. मैं यहाँ बैठता हूँ । ३. मैं वहाँ
से आता हूँ । ४. मैं जहाँ से आता हूँ, वहाँ जाता हूँ । ५. मैं खेल देखता हूँ । ६. मैं विद्या
पढ़ता हूँ । ७. मैं क्या देखता हूँ ? ८. मैं लड़की को देखता हूँ । ९. मैं पुस्तक स्मरण
करता हूँ । १०. मैं राज्य को जीतता हूँ । ११. मैं जल पीता हूँ । १२. मैं फूल सूँघता हूँ ।

(ख) १३. हम दोनों पाठशाला को जाते हैं । १४. हम दोनों लता को देखते हैं ।
१५. हम सब सत्य बोलते हैं । १६. हम सब यहाँ क्यों बैठे हैं ?

(ग) १७. वह क्या स्मरण करता है । १८. वे सब जल क्यों नहीं पीते हैं ?
१९. तुम कहाँ से आ रहे हो ? २०. हम वहाँ से नहीं आ रहे हैं ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं स्थामि ।	अहं तिष्ठामि ।	धातुरूप
(२) वयं दृश्याम ।	वयं पश्यामः ।	„
(३) वयं घ्रावः ।	वयं जिघ्रामः ।	„ , १
(४) अहं जलं पामि ।	अहं जलं पिबामि ।	„
(५) वयं सदामः ।	वयं सीदामः ।	„

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ :—अहं दृशामि । आवां स्थावः । वयं पामः ।
अहं सदामि । पाठशालायां गच्छामि । वयं पुष्पं घ्रामः । वयं जलं पामि ।

५. अभ्यास :—(क) २ (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाओ । (ख) २ (ख)
को एकवचन में । (ग) दृश्, सद्, स्था, पा, घ्रा के लट् के तीनों पुरुष के पूरे रूप बताओ ।
(घ) बाला, लता, विद्या, कथा, क्रीडा के प्र० और द्वि० के रूप बताओ ।

६. वाक्य बनाओ :—पश्यामि, तिष्ठामि, सीदामि, पिबामि, जिघ्रामि, इतः,
ततः, कुतः ।

७. रिक्त स्थानों में लट् उ० पु० का रूप रक्खो :—१. अहं फलं (दृश्) । २.
आवामत्र (सद्) । ३. वयं जलं (पा) । ४. आवां पुष्पाणि (घ्रा) । ५. वयमीश्वरं
(स्मृ) ।

शब्दकोष—७५ + २५ = १००] अभ्यास ४

(व्याकरण)

(ख) कृ (करना), अस् (होना)। चूर् (चूराना), चिन्त् (चिन्तन करना, सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना)। (६) (ग) इत्थम् (ऐसे), तथा (वैसे), यथा (जैसे), कथम् (कैसे), अपि (भी), एव (ही), च (और), किन्तु (कितु), परन्तु (परन्तु)। (६) (घ) एकः (एक), द्वौ (दो), त्रयः (तीन), चत्वारः (चार), पञ्च (पाँच) षट् (छः), सप्त (सात), अष्ट (आठ), नव (नौ), दश (दस) (१०)।

व्याकरण (कृ, अस्, लट्; प्रत्याहार बनाना)

१. कृ (करना) लट्

करोति कुरुतः कुर्वन्ति प्र० पु०

करोषि कुरुथः कुरुथ म० पु०

करोमि कुर्वः कुर्मः उ० पु०

२. अस् (होना) लट्

अस्ति स्तः सन्ति प्र० पु०

असि स्थः स्थ म० पु०

अस्मि स्वः स्मः उ० पु०

३. चूर् आदि धातुओं के निम्नलिखित रूप बनाकर 'भवति' के तुल्य रूप चलेगे :—
चूर् > चोरयति, चिन्त् > चिन्तयति, कथ् > कथयति, भक्ष् > भक्षयति।

४. प्रत्याहार बनाने के लिए इन १४ माहेश्वर सूत्रों को शुद्ध स्मरण कर लें :—

१. आइउण्। २. ऋलृक्। ३. एओङ्। ४. ऐऔच्। ५. ह्यवर्त्। ६. लण्।

७. जमङणनम्। ८. झभञ्। ९. घढवष्। १०. जवगङ्गदश्। ११. खफछठथ—

चटतव्। १२. कपय्। १३. शषसर्। १४. हल्।

इन सूत्रों में पूरी वर्णमाला इसप्रकार रक्खी हुई है—पहले स्वर, फिर अन्तःस्थ, फिर क्रमशः वर्ग के पंचम, चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम अक्षर, फिर अन्त में ऊष्म हैं।

५. 'प्रत्याहार' संक्षेप में कथन को कहते हैं। इन सूत्रों से प्रत्याहार बनाने के नियम ये हैं :—(क) सूत्रों के अन्तिम अक्षर (ण्, क् आदि) प्रत्याहार में नहीं गिने जाते हैं। अन्तिम अक्षर प्रत्याहार बनाने के साधन हैं। (ख) जो प्रत्याहार बनाना हो, उसके लिए प्रथम अक्षर सूत्र में जहाँ हो, वहाँ ढूँढना चाहिए। अन्तिम अक्षर सूत्र के अन्तिम अक्षरों में ढूँढिए। बीच के सारे अक्षर उस प्रत्याहार में माने जाएँगे। जैसे—'अल्' प्रत्याहार—अ से लेकर अन्त तक। प्रारम्भ में अ है, अन्तिम सूत्र में ल् है। अल् = पूरी वर्णमाला। अच् = अ से ऐऔच् के च तक, अर्थात् सारे स्वर। हल् = ह से हल् के ल् तक, अर्थात् सारे व्यंजन। अक् = अ इ उ ऋ लृ। इक् = इ उ ऋ लृ। यण् = य व र ल। शर् = श ष स।

नियम-६. 'च' (और) का प्रयोग उस शब्द के बाद कीजिए। जैसे—फल और फूल—फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पम्, अशुद्ध है।

अभ्यास ४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. एकः मनुष्यः अस्ति । २. द्वौ बालकौ स्तः । ३. त्रयः नृपाः सन्ति । ४. चत्वारः ग्रामाः । ५. पञ्च पुष्पाणि । ६. षट् फलानि । ७. सप्त पुस्तकानि । ८. अष्ट बालाः । ९. नव कथाः करोति । १०. दश ग्रामाः एव सन्ति । ११. वयं कथां क्रीडां च कुर्मः । १२. स दश पुस्तकानि चोरयति । १३. ईश्वरं चिन्तयति । १४. पुस्तकं फलं च स्तः ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. ईश्वर एक ही है । २. दो बालक फूल सूंघते हैं । ३. तीन आदमी खाना खाते हैं । ४. चार बालक क्रीड़ा करते हैं । ५. वे पाँच पुस्तकें चुराते हैं । ६. रमा छः कहानी कहती है । ७. सात बालक ईश्वर का चिन्तन करते हैं । ८. यहाँ आठ लताएँ हैं । ९. नौ आदमी भोजन करते हैं । १०. वहाँ दस पुस्तकें हैं ।

(ख) ११. वह है । १२. तू कैसे है ? १३. मैं इस प्रकार खाता हूँ । १४. वह वैसे सोचता है । १५. वह जैसी कथा है, वैसी ही कहता है । १६. तू कैसे खाता है ?

(ग) १७. वे ऐसे सोचते हैं । १८. हम कथा करते हैं । १९. हम खेल भी करते हैं और भोजन भी करते हैं । २०. तुम सब कथा ही कहते हो, परन्तु वे सोचते भी हैं ।

३.	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१)	द्वौ बालकाः ।	द्वौ बालकौ ।	१
(२)	चत्वारः नरः ।	चत्वारः नराः ।	१
(३)	अष्ट लताः अस्ति ।	अष्ट लताः सन्ति ।	१
(४)	दश पुस्तकम् अस्ति ।	दश पुस्तकानि सन्ति ।	१
(५)	च भोजनम् अपि० ।	भोजनं च अपि० ।	९

४. शुद्ध करो तथा नियम बताओ :—ईश्वरः सन्ति । वयम् अस्मि । अहं स्मः । त्वं स्थ । यूयम् अस्मि । त्वं करोति । स कुर्वन्ति । अहं कुर्मः । वयं करोमि । रामः च कृष्णः पठति । पुष्पं च फलम् । स करोषि । आवां कुरुतः । यूयं कुरुथः ।

५. अभ्यास :—(क) १ से १० तक की गिनती के १० वाक्य बनाओ । (ख) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ग) २ (ग) को एकवचन बनाओ । (घ) अस् और कृ के लट् के रूप बताओ । (ङ) ये प्रत्याहार बनाओ—अक्, अच्, अट्, एङ्, एच्, ऐच्, यण्, हश्, झश्, झल्, जश्, छव्, चर्, शर् ।

६. वाक्य बनाओ :—त्रयः, चत्वारः, दश, अस्ति, सन्ति, अस्मि, स्मः, करोति, करोमि ।

७. रिक्त स्थान भरो :—(लट् लकार)—१. अहमत्र (अस्) । २. ते तत्र (अस्) । ३. यूयमिह (अस्) । ४. ते किं (कृ) । ५. अहं भोजनं (कृ) । ६. त्वं तत्र किं (कृ) । ७. यूयं किं (कृ) ।

शब्दकोष—१०० + २५ = १२५] अभ्यास ५

(व्याकरण)

(क) जनकः (पिता), पुत्रः, (पुत्र), सूर्यः (सूर्य), चन्द्रः (चन्द्रमा), सज्जनः (सज्जन), दुर्जनः (दुर्जन), प्राज्ञः (विद्वान्), लोकः (संसार, लोग), उपाध्यायः (गुरु), शिष्यः (शिष्य), प्रश्नः (प्रश्न), क्रीडाः (कोस), धर्मः (धर्म), सागरः (समुद्र) । (१४) । (ख) तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), प्रच्छ (पूछना) । (४) । (ग) अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (दुःख, खेद), प्रति (ओर), अनु (ओर, पीछे) (७) ।

सूचना—(क) जनक—सागर, रामवत् । (ख) तुद्—पुच्छ, भवतिवत् ।

व्याकरण (राम, लट्, प्रथमा, संबोधन, द्वितीया कर्म)

१. शब्दरूप—राम शब्द के पूरे रूप ठीक स्मरण कर लें । (देखो शब्दरूप सं० १) । जनक आदि शब्दों में संक्षिप्त रूप लगाकर रूप बनावें । नियम १६ इन शब्दों में लगेंगा—राम, पुत्र, सूर्य, चन्द्र, शिष्य, धर्म, सागर । सभी अकारान्त पुलिग शब्द राम के तुल्य चलेंगे ।

२. धातुरूप—‘भू’—लट् (वर्तमान)	संक्षिप्तरूप	एक० द्व० बहु०
भवति भवतः भवन्ति प्र० पु०		अति अतः अन्ति प्र० पु०
भवसि भवथः भवथ म० पु०		असि अथः अथ म० पु०
भवामि भवावः भवामः उ० पु०		आमि आवः आमः उ० पु०

सूचना—तुद् आदि के रूप भवति के तुल्य चलेंगे । जैसे—तुदति, इच्छति, स्पृशति, पृच्छति । लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इष् > इच्छ्, प्रच्छ् > पृच्छ् हो जाता है ।

कारक (प्रथमा, संबोधन, द्वितीया, कर्म)

*नियम १०.—कर्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है । जैसे—रामः पठति ।

नियम ११.—किसी को संबोधन करने में ‘संबोधन’ विभक्ति होती है । जैसे—हे राम ! हे कृष्ण !

नियम १२.—(कर्तुरीप्सिततमं कर्म) कर्ता जिसको (व्यक्ति, वस्तु या क्रिया को) बहुत चाहता है, उसे कर्म कहते हैं ।

*नियम १३.—(कर्मणि द्वितीया) कर्म में द्वितीया होती है । जैसे—रामः विद्यालयं गच्छति । स पुस्तकं पठति । स रामं पश्यति । स फलम् इच्छति । ते प्रश्नं पृच्छन्ति ।

*नियम १४.—अभितः, परितः, समया, निकषा, हा, प्रति, अनु के साथ द्वितीया होती है । जैसे—ग्रामम् अभितः (गाँव के दोनों ओर) । वनं निकषा समया वा (वन के समीप) ।

*नियम १५.—गति (चलना, हिलना, जाना) अर्थ वाली धातुओं के साथ द्वितीया होती है । जैसे—ग्रामं गच्छति । वनं विचरति । तृप्तिं गच्छति । स्मृतिं गच्छति ।

अभ्यास ५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. राम गाँव को जाता है—रामः ग्रामं गच्छति
२. ग्रामम् अभितः (गाँव के दोनों ओर) जलम् अस्ति । ३. ग्रामं परितः (गाँव के चारों ओर) वनम् अस्ति । ४. ग्रामं समया (गाँव के पास) पाठशाला अस्ति । ५. विद्यालय निकषा (विद्यालय के पास) वनम् अस्ति । ६. दुर्जन के लिए खेद है—हा दुर्जनम् ७. विद्यालयं प्रति (विद्यालय की ओर) गच्छति । ८. रामम् अनु (राम के पीछे) गच्छति । ९. गृहं गच्छति । १०. क्रोशं गच्छति । ११. जलं पिबति । १२. पुस्तक पठति ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. बालक विद्यालय को जाता है । २. बालिका विद्यालय की ओर (प्रति) जाती है । ३. कन्या फल चाहती है । ४. गुरु प्रश्न पूछता है । ५. पुत्र फूल छूता है । ६. पिता सूर्य को देखता है । ७. पुत्र चन्द्रमा को चाहता है । ८. दुर्जन सज्जन को दुःख देता है । ९. पुत्र गाँव के पास बैठा है । १०. विद्वान् धर्म क ओर (अनु) जाता है । ११. गुरु के पास शिष्य बैठा है । १२. शिष्य समुद्र को (वे विषय में) पूछता है । १३. संसार ईश्वर को नमस्कार करता है । १४. हे पुत्र ! पित कहाँ है ? १५. हे दुर्जन ! धर्म को क्यों नहीं स्मरण करता । १६. राम घर को कब जाता है ? १७. फूल के चारों ओर जल है । १८. विद्या धर्म की ओर जाती है १९. विद्यालय के दोनों ओर फल और फूल हैं । २०. राजा दुर्जन को दुःख देता है ।

३. अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१) विद्यालये गच्छति ।	विद्यालयं गच्छति ।	१५
(२) विद्यालयस्य प्रति० ।	विद्यालयं प्रति ।	१४
(३) ग्रामस्य निकषा (समया)० ।	ग्रामं निकषा (समया)० ।	१४
(४) धर्मस्य अनुगच्छति ।	धर्मम् अनुगच्छति ।	१४
(५) पुष्पस्य परितः० ।	पुष्पं परितः० ।	१४

४. अभ्यास :—(क) २ के वाक्यों का बहुवचन बनाओ । (ख) तुद्, इष्, स्पृश्, प्रच्छ, पठ्, लिख्, गम्, आगम् के लट् के पूरे रूप लिखो । (ग) राम के तुल्य १० नये शब्दों के रूप बनाओ ।

५. वाक्य बनाओ :—अभितः, परितः, समया, निकषा, प्रति, अनु, इच्छति, पृच्छति ।

६. रिक्त स्थान भरें :—१. ग्रामम्..... जलमस्ति । २. विद्यालयं.... वनमस्ति । ३. जनकः सत्यम्.... गच्छति । ४. त्वं धनम्.... । ५. वयं प्रश्नं.... । ६. ईश्वरः लोकं..... ।

शब्दकोष—१२५ + २५ = १५०] अभ्यास ६

(व्याकरण)

(क) धनम् (धन), नगरम् (नगर), आसनम् (आसन), अध्ययनम् (पढ़ना), ज्ञानम् (ज्ञान), कार्यम् (कार्य), ओवनम् (चावल), वर्षम् (वर्ष), दिनम् (दिन) । (६) । (ख) खाद्, (खाना), धाव् (दौड़ना), क्रीड् (खेलना), चल् (चलना) । अधिशी (सोना), अधिस्था (बैठना), अध्यास् (बैठना) । (७) । (ग) उभयतः (दोनों ओर), सर्वतः (चारों ओर), धिक् (धिकार), उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), अधि (अन्दर), अन्तरा (बीचमें), अन्तरेण (बिना), विना (बिना) । (८) ।

सूचना—(क) धन—दिन, गृहवत् । (ख) खाद्—चल्, भवतिवत् ।

व्याकरण (गृह, लोट्, द्वितीया)

१. शब्दरूप—‘गृह’ शब्द के पूरे रूप स्मरण कर लें । (देखो शब्दरूप सं० २०) ।

संक्षिप्त रूप लगाकर धन आदि के रूप बनावें । सभी अकारान्त नपुंसक शब्द गृह के तुल्य चलेंगे ।

*नियम १६.—र और ष के बाद न को ण हो जाता है, यदि अट् (स्वर ह, य, व, र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न, बीच में हों तो भी । जैसे—इन शब्दों में यह नियम लगेगा—गृह, नगर, कार्य, वर्ष, पुष्प, पत्र । अतः इनमें प्र० द्वि० बहु० में ‘आणि’, तू० एक० में ‘एग’, ष० बहु० में ‘आणाम्’ लगेगा ।

२. धातुरूप—‘भू’ लोट् (आज्ञा अर्थ)	संक्षिप्तरूप एक० द्वि० बहु०
भवतु भवताम् भवन्तु प्र० पु०	अतु अताम् अन्तु प्र० पु०
भव भवतम् भवत म० पु०	अ अतम् अत म० पु०
भवानि भवाव भवाम उ० पु०	आनि आव आम उ० पु०

सूचना—खाद् आदि के रूप भवतु के तुल्य चलेंगे । जैसे, खादतु, धावतु, क्रीडतु, चलतु, कथयतु, भक्षयतु । लट् में अधिशी > अधिशेते, अधिस्था > अधितिष्ठति, अध्यास् > अध्यास्ते ।

कारक (द्वितीया)

*नियम १७.—उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अघोऽघः, अध्यधिके साथ द्वितीया होती है । जैसे—ग्रामम् उभयतः । ग्रामं सर्वतः । धिक् नास्तिकम् ।

*नियम १८.—(अन्तरान्तरेणयुक्ते) अन्तरा, अन्तरेण, विना के साथ द्वितीया होती है । जैसे—गङ्गां यमुनां च अन्तरा प्रयागः अस्ति (गंगा-यमुना के बीच में प्रयाग है) । ज्ञानमन्तरेण न सुखम् ।

*नियम १९.—(अधिशीङ्स्थाप्तां कर्म) अधिशी, अधिस्था, अध्यास् धातु के साथ द्वितीया होती है । जैसे—आसनम् अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा ।

नियम २०.—(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) समय और स्थान वाची शब्दों में द्वितीया होती है । जैसे—दश दिनानि (१० दिन तक) लिखति । पञ्च वर्षाणि (५ वर्ष तक) पठति । क्रोशं (कोसभर) गच्छति ।

अभ्यास ६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पुस्तक पढ़े—सः पुस्तकं पठतु । २. तू गाँव को जा—त्वं ग्रामं गच्छ । ३. मैं भोजन खाऊँ—अहं भोजनं खादानि । ४. आसन पर बैठता है—आसनम् अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा । ५. घर में सोता है—गृहम् अधिशेते । ६. ग्रामम् उभयतः (गाँव के दोनों ओर) जलम् अस्ति । ७. विद्यालयं सर्वतः (विद्यालय के चारों ओर) पुष्पाणि सन्ति । ८. धिक् दुर्जनम् । ९. लोकम् उपर्युपरि (संसार के ऊपर ऊपर), अधोऽधः (नीचे नीचे), अध्यधि (अन्दर अन्दर), ईश्वरः अस्ति । १०. क्रोशं चलतु ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह पुस्तक पढ़े । २. वह भोजन खावे । ३. वह दौड़े । ४. वह खेले । ५. वह यहाँ से चले । (ख) ६. तू धन चाह । ७. तू नगर को जा । ८. तू फूलों को देख । ९. तू ज्ञान को चाह । १०. तू घर के कार्य को ही देख । (ग) ११. मैं चावल पकाऊँ । १२. मैं दौड़ूँ । १३. मैं खेलूँ । १४. मैं चलूँ । १५. मैं फल खाऊँ । (घ) १६. नगर के दोनों ओर वन है । १७. घर के चारों ओर फल हैं । १८. दुर्जन को धिक्कार । १९. संसार के ऊपर सूर्य है । २०. गाँव के नीचे नीचे जल है । २१. लोक के अन्दर अन्दर राम हैं । २२. गाँव और विद्यालय के बीच में (अन्तरा) जल है । २३. धर्म के बिना (अन्तरेण, विना) सुख नहीं । २४. बालक आसन पर बैठता है । २५. पुत्र घर में सोता है । २६. दश वर्ष तक अध्ययन करता है । २७. पाँच दिन तक लिखता है । २८. कोस भर चलता है ।

३.	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१)	त्वं पुष्पाणि पश्यतु ।	त्वं पृष्पाणि पश्य ।	१६, १
(२)	नगरस्य उभयतः ० ।	नगरम् उभयतः ० ।	१७
(३)	लोकस्य उपर्युपरि ० ।	लोकम् उपर्युपरि ० ।	१७
(४)	धर्मस्य अन्तरेण (विना) ० ।	धर्मम् अन्तरेण (विना) ० ।	१८
(५)	आसने अधितिष्ठति ।	आसनम् अधितिष्ठति ।	१९

४. अभ्यास :—(क) २(क) (ख) (ग) को बहुवचन बनाओ । (ख) पूरे रूप बताओ—ज्ञान, धन, कार्य, आसन, वर्ष, दिन, फल, पुस्तक, गृह । (ग) लोट् के पूरे रूप बताओ—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, कथ्, भक्ष्, खाद्, धाव्, क्रीड्, चल् ।

५. वाक्य बनाओ :—उभयतः, सर्वतः, अन्तरा, अन्तरेण, अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते ।

६. रिक्त स्थलों को भरो :—१. उभयतः जलम् । २. सर्वतः पुष्पाणि सन्ति । ३. अन्तरेण न सुखम् । ४. च अन्तरा प्रयागः । ५. अधिशेते । ६. अध्यास्ते ।

शब्दकोष—१५० + २५ = १७५] अभ्यास ७

(व्याकरण)

(क) अजा (बकरी), वसुधा (भूमि), सुधा (अमृत), जटा (जटा), क्षमा (क्षमा) । तण्डुलः (चावल) । दुग्धम् (दूध), शतम् (सौ, या सौ ६०) । (८) ।
 (ख) भ्रम् (धूमना), रुह् (चढ़ना, उगना), त्यज् (छोड़ना), वस् (रहना), नी (ले जाना), ह् (ले जाना), कृष् (खोदना, खोचना), वह् (ले जाना, होना) । दुह् (दुहना), याच् (माँगना), दण्ड् (दंड देना), रुध् (रोकना), चि (चुनना), ब्रू (बोलना), शास् (बताना), मथ् (मथना), मूष् (चुराना) । (१७) ।

सूचना—(क) अजा—क्षमा, रमावत् । तण्डुल—रामवत् । (ख) भ्रम्—वह्, भवतिवत् ।

व्याकरण (रमा, लट्, द्वितीया द्विकर्मक)

१. शब्दरूप—‘रमा’ के पूरे रूप स्मरण कर लें । (देखो शब्दरूप सं० १३) । संक्षिप्त-रूप लगाकर अजा आदि के रूप बनाओ । नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—रमा, क्षमा । सभी आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द रमा के तुल्य चलेंगे ।

२. धातुरूप—‘भू’-लट् (भविष्यत्)	संक्षिप्त- एक० द्वि० बहु०
भविष्यति भविष्यतिः भविष्यन्ति प्र.पु.	रूप (इ)स्यति (इ)स्यतः(इ)स्यन्ति प्र.
भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ म.पु.	(इ)स्यसि (इ)स्यथः(इ)स्यथ म.
भविष्यामिभविष्यावःभविष्यामः उ.पु.	(इ)स्यामि(इ)स्यावः(इ)स्यामः उ.

* सूचना—१. (क) इन पूर्वोक्त धातुओं में ‘इष्यति’ ही लगाकर रूप बनावें—पठिष्यति, लेखिष्यति, गमिष्यति, हसिष्यति, आगमिष्यति, रक्षिष्यति, वदिष्यति, पतिष्यति, स्मृ > स्मरिष्यति, कृ > करिष्यति, अस् > भविष्यति, चूर् > चोरयिष्यति, चिन्त् > चिन्तयिष्यति, कथ् > कथयिष्यति, भक्ष् > भक्षयिष्यति, इष् > एषिष्यति, खाद् > खादिष्यति, धाविष्यति क्रीडिष्यति, चलिष्यति, भ्रमिष्यति, हृ > हरिष्यति, ज्वलिष्यति, चरिष्यति, वृष् > वर्षिष्यति ।

(ख) इनमें ‘स्यति’ लगेगा—पच् > पक्ष्यति, नम् > नंस्यति, दृश् > द्रक्ष्यति, सद् > सत्स्यति, स्था > स्थास्यति, पा > पास्यति, घ्रा > घ्रास्यति, जि > जेष्यति, तुद् > तोत्स्यति, स्पृश् > स्पृक्ष्यति, प्रच्छ् > प्रक्ष्यति, रुह् > रोक्ष्यति, त्यज् > त्यक्ष्यति, वस् > वत्स्यति, नी > नेष्यति, कृष् > कक्ष्यति, वह् > वक्ष्यति, दह् > धक्ष्यति, तप् > तप्स्यति, गै > गास्यति ।

१. ‘नी’ आदि के क्रमशः लट् में ऐसे रूप चलेंगे—नयति, हरति, कर्षति, वहति (भवतिवत्) । दोग्धि, याचते, दण्डयति, रुणद्धि, चिनोति, ब्रवीति, शास्ति, मथ्नाति, मुष्णाति ।

नियम २१—ये धातुएँ द्विकर्मक हैं । (इन अर्थों की अन्य धातुएँ भी) । इनके साथ दो कर्म होते हैं :—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मूष्, नी, ह्, कृष्, वह्.

अभ्यास ७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह पढ़ेगा—सः पठिष्यति । २. तू जाएगा—त्वं गमिष्यसि । ३. मैं आऊँगा—अहम् आगमिष्यामि । ४. सः द्रक्ष्यति । ५. बकरी से दूध दुहता है—अजां दुग्धं दोग्धि । ६. राजा से क्षमा माँगता है—नृपं क्षमां याचते । ७. चावलों से भात पकाता है—तण्डुलान् ओदनं पचति । ८. राजा दुर्जन पर सौ रुपए दण्ड लगाता है—नृपः दुर्जनं शतं दण्डयति । ९. घर में बकरी को रोकता है—गृहम् अजां रुणद्धि । १०. गुरु से धर्म पूछता है—उपाध्यायं धर्मं पृच्छति । ११. लता से फूलों को चुनता है—लतां पुष्पाणि चिनोति । १२. पुत्र को धर्म बताता है—पुत्रं धर्मं ब्रवीति, शास्ति वा । १३. राम से सौ रुपए जीतता है—रामं शतं जयति । १४. समुद्र से अमृत को मथता है—सागरं मुधां मथ्नाति । १५. राम के सौ रुपए चुराता है—रामं शतं मुष्णाति । १६. बकरी को गाँव में ले जाता है—अजां ग्रामं नयति, हरति, कर्षति, वहति वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह लिखेगा । २. वह पढ़ेगा । ३. वह हँसेगा । ४. वह ऊपर जाएगा । ५. वह नीचे आएगा । ६. वह रक्षा करेगा । ७. वह बोलेगा । ८. वह पकाएगा ।

(ख) ९. तू गिरेगा । १०. तू नमस्कार करेगा । ११. तू देखेगा । १२. तू बैठेगा (स्था, सद्) । १३. तू जल पीएगा । १४. तू फूल सूँघेगा । १५. तू स्मरण करेगा । १६. तू जीतेगा । (ग) १७. मैं धन नहीं चुराऊँगा । १८. मैं सोचूँगा । १९. मैं कथा कहूँगा (कथ्) । २०. मैं भोजन खाऊँगा (भक्ष्) । २१. मैं धन चाहूँगा । २२. मैं फूल छूँगा । २३. मैं प्रश्न पूछूँगा । २४. मैं यहाँ रहूँगा । (घ) २५. राजा से भूमि माँगता है । २६. चावलों से भोजन पकाएगा । २७. पुत्र से प्रश्न पूछेगा । २८. शिष्य को सत्य बताएगा (वद्) । २९. दुर्जन से सौ रुपए जीतेगा । नगर में बकरी को लाएगा (नी, ह्, कृष्, वह्) ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	त्वं तिष्ठिष्यसि ।	त्वं स्थास्यसि ।	धातुरूप
(२)	नृपात् वसुधां याचते ।	नृपं वसुधां याचते ।	२१
(३)	नगरे अजां नेष्यति ।	नगरम् अजां नेष्यति	”

४. अभ्यास :—(क) २ (क) (ख) (ग) को बहुवचन बनाओ । (ख) पूरे रूप लिखो—रमा, अजा, वसुधा, मुधा, गङ्गा, यमुना । (ग) लृट् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, कृ, अस्, कथ्, भक्ष्, पच्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, जि, प्रच्छ्, त्यज्, वस्, नी, वह् ।

५. वाक्य बनाओ :—पास्यामि, द्रक्ष्यामि, स्थास्यामि, स्प्रक्ष्यति, प्रक्ष्यति, वत्स्यति, घ्रास्यति, जेष्यसि, याचते, पचति, ब्रवीति, नयति ।

शब्दकोष—१७५ + २५ = २००] अभ्यास ८

(व्याकरण)

(क) हरिः (विष्णु, सूर्य, किरण, सिंह, बन्दर), कविः (कवि), यतिः (संन्यासी), भूपतिः (राजा), सेनापतिः (सेनापति), प्रजापतिः (प्रजापति, ब्रह्मा), रविः (सूर्य), कपिः (बन्दर), मुनिः (मुनि), अग्निः (आग), गिरिः (पहाड़), मरीचिः (किरण)। मेघः (बादल), दण्डः (डंडा)। कन्दुकम् (गेंद)। (१५)। (ख) दह् (जलाना), ज्वल् (जलना), तप् (तपना, तपस्या करना), चर् (चलना, घूमना), वृष् (बरसना), गै (गाना)। (६)। (ग) सह, साकम्, सार्धम्, समम् (चारों का अर्थ है, साथ) (४)।

सूचना—(क) हरि—मरीचि, हरिवत्। मेघ—दण्ड, रामवत्। कन्दुक, ज्ञानवत्। (ख) दह्—गै, भवतिवत्।

व्याकरण (हरि, लङ्, तृतीया)

१. शब्दरूप—हरि शब्द के पूरे रूप स्मरण कर लें। (देखो शब्द सं. २)। संक्षिप्त रूप लगाकर कवि आदि के रूप बनाओ। सभी इकारान्त पुलिङ्ग शब्द हरिवत्। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—हरि, रवि, गिरि। जैसे—हरिणा, हरीणाम्।

*नियम २२—(पतिः समास एव) पति शब्द किसी शब्द के अन्त में समस्त होगा तो उसका रूप हरि के तुल्य चलेगा, जैसे—भूपतिना, भूपतये, भूपतेः आदि।

२. धातुरूप—‘भू’ लङ् (भूतकाल)। संक्षिप्तरूप एक० द्वि० बहु०
अभवत् अभवताम् अभवन् प्र०पु (धातु से अत् अताम् अन् प्र०पु०
अभवः अभवतम् अभवत म०पु० पहले अ +) अः अतम् अत म०पु०
अभवम् अभवाव अभवाम उ०पु० अम् आव आम उ०पु०

सूचना—लङ् में धातु से पहले ‘अ’ लगेगा, बाद में संक्षिप्तरूप। जैसे—अपठत्, अलिखत्, अदहत्, अज्वलत्, अतपत्, अचरत्, अवर्षत्, अगायत्। यदि धातु का प्रथम अक्षर स्वर हो तो ‘आ’ लगेगा और वृद्धि होगी। जैसे—इष् > ऐच्छत्, आगम् > आगच्छत्, अस् > आसीत्।

कारक, (तृतीया, करण)

नियम २३—(साधकतमं करणम्) क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं।

*नियम २४—(कर्तृकरणयोस्तृतीया) करण में तृतीया होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता में। जैसे—कन्दुकेन क्रीडति। दण्डेन चलति। रामेण गृहं गम्यते, रामेण भूयते।

*नियम २५—(सहयुक्तेऽप्रधाने) सह, साकम्, सार्धम्, समम् (साथ अर्थ में) के साथ तृतीया ही होती है। जैसे—जनकेन सह, साकं सार्धं समं वा गृहं गच्छति।

*नियम २६—(इत्थंभूतलक्षणे) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसमें तृतीया होती है। जैसे—जटाभिः यतिः (जटा से संन्यासी ज्ञात होता है)।

*नियम २७—(हेतौ) कारणबोधक शब्दों में तृतीया होती है। अध्ययनेन वसति।

अभ्यास ८ *

१. उदाहरण-वाक्य :—१. उसने पढ़ा—सः अपठत् । २. तूने लिखा—त्वम् अलिखः । ३. मैंने कहा—अहम् अवदम् । ४. भूपतिना सह सेनापतिः चरति । ५. यतिना सार्धं कविः गायति । ६. मुनिः सत्येन लोकं जयति । ७. रविः मरीचिभिः अतपत् । ८. अग्निः ग्रामम् अदहत् । ९. अग्निः ज्वलति । १०. गिरिं निकषा कपयः चरन्ति । ११. मेघः वर्षति । १२. प्रजापतिः (हरिः) लोकं करोति । १३. अध्ययनेन (अध्ययन के उद्देश्य से) वसति । १४. विद्यया ज्ञानं भवति । १५. धर्मेण हरिमपश्यत् ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. राम गेंद से खेला । २. हरि डंडे से चला । ३. कवि ने गाया । ४. आग ने नगर को जलाया । ५. सूर्य ने किरणों से लोक को तपाया । ६. आग कब जली ? ७. संन्यासी ने वहाँ तप किया । ८. राजा कवि के साथ घूमा । ९. राजा (भूपति) के साथ सेनापति यहाँ आया । १०. जटा से संन्यासी ज्ञात होता है । ११. कवि ने किस प्रकार गाया ? १२. यति मुनि के साथ हरि के पास गया । १३. पहाड़ के ऊपर ऊपर सूर्य तपा । १४. बालक बन्दरों के साथ खेला । १५. मुनि राजा के साथ बैठा । १६. मेघ बरसा । १७. कवि और मुनि ने पुस्तकें लिखीं । १८. राजा और सेनापति ने लोक की रक्षा की । १९. यति ने सूर्य को नमस्कार किया । २०. बन्दर बालकों के साथ खेला ।

३.	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१)	कविना अगायत् ।	कविः अगायत् ।	१०
(२)	अग्निना नगरम् अदहत् ।	अग्निः नगरम् अदहत् ।	१०
(३)	भूपत्युः सह अगच्छत् ।	भूपतिना सह अगच्छत् ।	२२, २५
(४)	यतिः मुनेः सह० ।	यतिः मुनिना सह० ।	२५
(५)	सेनापतिना च लोकस्य	सेनापतिः च लोकम्	
	अरक्षत् ।	अरक्षताम् ।	१०, १३, १

४. अभ्यास :—(क) २ के वाक्यों को लट्, लोट् और लृट् में परिवर्तित करो ।
(ख) पूरे रूप लिखो—हरि, कवि, रवि, अग्नि, मुनि, भूपति, प्रजापति । (ग) लङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, दह्, ज्वल्, चर् ।

५. वाक्य बनाओ :—सह, साकम्, सार्धम्, समम् । अदहत्, अतपत्, अचरत्, अगायत् ।

६. रिक्त स्थान भरो :—(लङ् लकार) १. रामः कन्दुकेन (क्रीड्) । २. यतिः सूर्यम् (नम्) । ३. कविः कथम् (गै) । ४. गिरिं निकषा कपिः (भ्रम्) । ५. कपिभिः सह बालः (क्रीड्) ।

शब्दकोष-२०० + २५ = २२५] अभ्यास ९

(व्याकरण)

(क) गुरुः (गुरु, वि० भारी, बड़ा), भानुः (सूर्य), इन्दुः (चन्द्रमा), शत्रुः (शत्रु), शिशुः (बालक), वायुः (वायु), पशुः (पशु), तरुः (वृक्ष), साधुः (सज्जन, सरल, अच्छा, निपुण)। काणः (काणा), कर्णः (कान), बधिरः (बहरा), पादः, (पैर), खञ्जः (लंगड़ा) शब्दः (शब्द), अर्थः (१. अर्थ, २. धन, ३. प्रयोजन), विवादः (विवाद)। नेत्रम् (आँख), तृणम् (तिनका), सुखम् (सुख), दुःखम् (दुःख), प्रयोजनम् (प्रयोजन), हसितम् (हँसना)। प्रकृतिः (स्वभाव)। (२४) (ग) अलम् (१. बस, २. पर्याप्त, समर्थ, शक्त)। (१)

सूचना—(क) गुरु—साधु, गुरुवत्। काण—विवाद, रामवत्। नेत्र—हसित, गृहवत्। प्रकृति, मतिवत्।

व्याकरण (गुरु, विधिलिङ, तृतीया, अनुस्वारसंधि)

१. शब्दरूप—गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण कर लें। (देखो शब्द० सं० ४) संक्षिप्त-रूप लगाकर भानु आदि के रूप गुरुवत् बनावें। सभी उकारान्त पुलिग शब्द गुरु के तुल्य चलेंगे। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—गुरु, शत्रु, तरु। जैसे—गुरुणा, गुरूणाम्, शत्रुणा, शत्रूणाम्।

२. धातुरूप—‘भू’ विधिलिङ (आज्ञा या चाहिए अर्थ) संक्षिप्त एक० द्वि० बहु०

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	रूप एत्	एताम्	एयुः	प्र.पु.
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत	म.पु.
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम	उ.पु.

संक्षिप्तरूप लगाकर पठ् आदि के रूप बनावें। जैसे पठेत्, लिखेत्, गच्छेत्, पश्येत्।

कारक (तृतीया, अनुस्वार सन्धि)

*नियम २८.—किम्, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम् (चारों प्रयोजन अर्थ में हों तो) के साथ तृतीया होती है। जैसे मूर्खेण पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम् (मूर्ख पुत्र से क्या लाभ या क्या प्रयोजन)। तृणेन अपि कार्यं भवति।

*नियम २९.—अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। जैसे—अलं हसितेन (मत हँसो), अलं विवादेन (विवाद मत करो)।

*नियम ३०.—(येनाङ्गविकारः) शरीर के जिस अंग में विकार से विकृत दिखाई पड़े, उसमें तृतीया होती है। जैसे—नेत्रेण काणः (एक आँख से काणा), कर्णेन बधिरः। नियम ३१.—(प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्) प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया होती है। प्रकृत्या साधुः (स्वभाव से सरल)। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति। सरलतया लिखति।

*नियम ३२.—(संधि)—(मोऽनुस्वारः) पदान्त (शब्द के अन्तिम) म् के बाद कोई हल् (व्यंजन) हो तो म् को को अनुस्वार (ँ) हो जाता है, स्वर बाद में हो तो नहीं। रामम् + पश्यति = रामं पश्यति। रामम् + अपश्यत् = राममपश्यत्।

अभ्यास ९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. उसे पढ़ना चाहिए (वह पढ़े)—सः पठेत् । २. तुझे लिखना चाहिए—त्वं लिखेः । ३. मैं गुरु को नमस्कार करूँ—अहं गुरुं नमेयम् । ४. दुर्जनेन कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्, किं कार्यम् (दुर्जन से क्या लाभ) । ५. अलं भोजनेन (भोजन मत करो) । ६. पादेन खञ्जः । ७. गुरुः शिशुं प्रश्नं पृच्छेत् । ८. सूर्यः मरीचिभिः तपेत् । ९. इन्दुः सुधां वर्षेत् । १०. भूपतिः शत्रून् जयेत् । ११. साधुः पशुभिः सह चरेत् । १२. तरुः फलैः नमेत् । १३. सज्जनाः विद्यया सह नमेयुः । १४. प्रकृत्या साधुः ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. दुर्जनं शिष्यं से क्या लाभ ? २. मत हंसो । ३. मत खाओ । ४. शत्रु आँख से काणा है । ५. शिशु कान का बहरा है । ६. पशु पैर से लंगड़ा है । ७. गुरु स्वभाव से सज्जन है । ८. वायु मुख से बहती है । (ख) (विधिलिङ्) ९. शिशु गुरु को नमस्कार करे । १०. तू सूर्य को देख । ११. मैं चन्द्रमा को देखूँ । १२. वे शत्रुओं को जीतें । १३. हवा बहे (वह) । १४. शिशु पशुओं के साथ पहाड़ पर जावे । १५. साधु वृक्षों के पास बसे । १६. तू घर को जा । १७. मैं वृक्षों को देखूँ । १८. हम सूर्य को देखें । १९. साधु चावल पकावे । २०. शिशु दूध पीए ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	अलं हसितस्य ।	अलं हसितेन ।	२९
(२)	नेत्रस्य काणः ।	नेत्रेण काणः ।	३०
(३)	मुखात् वहति ।	मुखेन वहति ।	३१
(४)	गिरौ गच्छेत् ।	गिरिं गच्छेत् ।	१५
(५)	दुग्धम् पिबेत् ।	दुग्धं पिबेत् ।	३२

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट्, लट् और लृट् में बदलो । (ख) पूरे रूप लिखो—गुरु, भानु, इन्दु, शिशु, शत्रु, वायु, साधु । (ग) विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—पठ्, लिख्, गम्, वद्, दृश्, स्था, पा, प्रच्छ्, चर्, त्यज्, खाद्, धाव् ।

५. वाक्य बनाओ :—कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्, अलम्, प्रकृत्या, काणः, खञ्जः । पठेत्, लिखेत्, गच्छेत्, वदेत्, पश्येत्, तिष्ठेत्, पिबेत्, पृच्छेत्, त्यजेयम्, खादेम ।

६. रिक्त स्थान भरो :—१. अलं. . . । २. प्रकृत्या. . . । ३. . . . बधिरः । ४. . . . कोऽर्थः । ५. . . . पश्येत् । ६. . . . पठेम । ७. . . . गच्छेम । ८. . . . नमेयम् ।

७. संधि करो :—किम् + कार्यम् + करोति । अहम् + गृहम् + गच्छामि । पुस्तकम् + पठति । गुरुम् + नमति । शिशुम् + प्रश्नं + पृच्छति । जलम् + पिबति । त्वम् + पठसि । अहम् + लिखामि ।

शब्दकोष—२२५ + २५ = २५०] अभ्यास १०

(व्याकरण)

(क) तत् (वह), यत् (जो), एतत् (यह), किम् (कौन), सर्व (सब), पूर्व (पहला), विप्र (१. सब, २. संसार), अन्य (और), इतर (और) (सर्वनाम)। विप्रः (ब्राह्मण), इन्द्रः (इन्द्र), दैत्यः (राक्षस)। प्रभुः (१. स्वामी, २. समर्थ), पितृ (१. पिता, २. पितर लोग)। (१४)। (ख) दा (यच्छ) (देना), वितृ (देना), दा (देना)। (३)। (ग) नमः (नमस्कार, प्रणाम), स्वस्ति (आशीर्वाद), स्वाहा (देवताओं के लिए अग्नि में आहुति), स्वधा (पितरों के लिए अन्नादि), अलम् (पर्याप्त, समर्थ), वषट् (आहुति, साधुवाद)। (६)। (घ) शक्त (समर्थ), समर्थ (समर्थ)। (२)

सूचना—(क) तत्—इतर, सर्ववत्। (ख) दा—वितृ, भवतिवत्।

व्याकरण (सर्वनाम पुल्लिङ्ग, चतुर्थी, यण्त्वन्धि)

१. सर्व शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० २९ क)। नियम १६ इन शब्दों में लगेगा—सर्व, पूर्व, विप्र, इन्द्र, प्रभु, पितृ।

*सूचना—(क) अकारान्त सर्वनाम शब्दों में 'राम' शब्द के रूप से ये ५ अन्तर होते हैं :—१. प्र. बहु. में 'ए'। २. च. एक. में 'स्मै'। ३. पं. एक. में 'स्मात्'। ४. ष. बहु. में 'एषाम्'। ५. स. एक में 'स्मिन्' लगेगा। शेष रामवत्। (ख) तत्, यत्, एतत्, किम् को पुल्लिङ्ग में क्रमशः त, य, एत, क रूप हो जाता है, इनके ही रूप चलते हैं। केवल तत् और एतत् को प्र. एक. में क्रमशः सः, एषः हो जाता है। जैसे, तत् > सः तौ ते।

२. धातुरूप—लट् में यच्छ > यच्छति। वितृ > वितरति। दा > ददाति।

*नियम ३३—सर्वनाम शब्दों और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है। जैसे, कः नरः, कं नरम्, केन नरेण। का बाला।

नियम ३४—(कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्) दान आदि क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे संप्रदान कहते हैं।

*नियम ३५—(चतुर्थी संप्रदाने) संप्रदान कारक में चतुर्थी होती है। विप्राय धनं ददाति।

*नियम ३६—(नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थवाले अन्य शब्द), वषट् के साथ चतुर्थी होती है। जैसे, गुरुवे नमः। शिष्याय स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। इन्द्राय वषट्। हरिः वृत्येभ्यः अलम्, प्रभुः, समर्थः।

*नियम ३७—(संधि) (इको यणचि) इ, ई, को य; उ, ऊ, को व; ऋ, ॠ को र; लृ को लृ हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे, प्रति + एकः = प्रत्येकः, इ को य्। पठतु + एकः = पठत्वेकः, उ को व्। पितृ + आ = पित्रा। लृ + आकृतिः = लाकृतिः।

अभ्यास १०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह उस ब्राह्मण को धन देता है—स तस्मै विप्राय धनं ददाति, यच्छति, वितरति वा । २. गुरु को नमस्कार—गुरवे नमः । ३. पुत्राय स्वस्ति । ४. राम शत्रुओं के लिए पर्याप्त है—रामः शत्रुभ्यः अलम्, समर्थः, शक्तः, प्रभुः वा । ५. एतस्मै बालकाय फलं यच्छ, वितर वा । ६. कस्मै शिष्याय ज्ञानं वितरसि । ७. सर्वेभ्यः (विश्वेभ्यः) शिशुभ्यः भोजनं वितर, इतरेभ्यः (अन्येभ्यः) फलानि यच्छ । ८. तिष्ठत्यत्र कः ? ९. लिखत्वेकः, पठत्वन्यः । १०. आगच्छत्वह रामः ।

२. संस्कृत बनाओः—(क) १. उस बालक को दूध दो (यच्छ, वितृ) । २. इस मुनि को धन दो । ३. सूर्य को जल दो । ४. किस राजा को धन देते हो ? ५. उस कवि को भोजन दो । ६. जिस बालक को फल देते हो, उसी को फूल भी दो । ७. पिता को नमस्कार । ८. शिष्य को आशीर्वाद । ९. दुर्जन के लिए राजा पर्याप्त है । १०. ज्ञान के लिए गुरु के पास जाओ । ११. अग्नि के लिए स्वाहा । १२. पितरों के लिए स्वधा । (ख) १३. इन कवियों को फल और फूल दो । १४. जो बालक विद्यालय नहीं जाता, उसको पिता दण्ड देता है । १५. इन फलों के लिए उन वृक्षों को देखो । १६. इस प्रश्न को उस शिष्य से पूछो । १७. सारे (सर्व, विश्व) विद्वानों को बहाँ ले जाओ । १८. किस बालक को पूछते हो ? १९. किस विद्यालय में पढ़ते हो । २०. इन बालकों को पुस्तक दो और उन बालकों को गेंद दो ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) स बालकं दुग्धं वितर ।	तस्मै बालकाय दुग्धं वितर ।	३३, ३५
(२) एतं मुनिं धनं यच्छ ।	एतस्मै मुनये धनं यच्छ ।	३३, ३५
(३) जनकं नमः ।	जनकाय नमः ।	३६
(४) एतं प्रश्नं तस्मात् शिष्यात् पृच्छ । एतं प्रश्नं तं शिष्यं पृच्छ ।		२१, ३३

४. अभ्यास :—(क) २(क) को बहुवचन में परिवर्तित करो । (ख) तत्, यत्, एतत्, किम्, सर्व, विश्व के पुलिङ्ग में पूरे रूप लिखो । (ग) यच्छ, वितृ के लट्, लोट्, विधिलिङ्ग के पूरे रूप लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—नमः, स्वस्ति, अलम्, प्रभुः, कस्मै, तस्मै, एतस्मै, यस्मै, सर्वेभ्यः ।

६. संधि करो :—प्रति + एकः । इति + उवाच । इति + आह । इति + अवदत् । आगच्छतु + अत्र । पठतु + एषः । सुधी + उपास्यः । मधु + अरिः । घातृ + अंशः । लृ + आकृतिः ।

७. संधि-विच्छेद करो :—यद्यपि, प्रत्युपकारः, इत्येतत्, इत्युवाच, पठत्वत्र, गच्छत्वन्यः ।

शब्दकोष—२५० + २५ = २७५] अभ्यास ११

(व्याकरण)

(क) ब्राह्मणः (ब्राह्मण), क्षत्रियः (क्षत्रिय), वैश्यः (वैश्य), शूद्रः (शूद्र), वर्णः (वर्ण), मोक्षः (मोक्ष, मुक्ति), मूर्खः (मूर्ख), चोरः (चोर), अश्वः (घोड़ा)। मोदकम् (लड्डू), पापम् (पाप)। (११)। (ख) क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय (बुराई निकालना), धारि (धारण करना, किसी का ऋणी होना), स्पृह् (चाहना), निवेदि (कहना, निवेदन करना), उपदिश् (उपदेश देना), भज् (सेवा या भजन करना), ऋन्द् (रोना)। रुच् (१. अच्छा लगना २. चमकना)। (१२) (ग) अर्थम् (लिए), कृते (लिए) (२) सूचना—(क) ब्राह्मण—अश्व, रामवत्। मोदक—पाप, गृहवत्।

व्याकरण (सर्वनाम नपुं० चतुर्थी, अयादिसंधि)

१. शब्दरूपः—सर्व के नपुं० के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० २९ख)। संप्लिष्टरूप लगाकर तत् आदि (अभ्यास १०) के पूरे रूप बनाओ। सूचना—सर्व आदि के तृतीया से सप्तमी तक पुलिग के तुल्य रूप होंगे। प्र. द्वि. में अम्, ए, आनि लगेगा। तत् आदि के प्र. द्वि. एक. में ये रूप रहते हैं—तत्, यत्, एतत्, किम्, अन्यत्, इतरत्।

२. धातुरूपः—क्रुध् आदि के ये रूप बनाकर लट् आदि में 'भवति' के तुल्य रूप बलेंगे। क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति, धारयति, स्पृह्यति, निवेदयति, उपदिशति, भजति, ऋन्दति। रुच् का लट् में रोचते (देखो अभ्यास १६)।

*नियम ३८—(रुच्यर्थानां प्रीयमाणः) रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे, बालकाय मोदकं रोचते। पुत्राय बुध् रोचते।

*नियम ३९—(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय अर्थकी धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय; उसमें चतुर्थी होती है। रामः मूर्खाय (राम मूर्ख पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

*नियम ४०—कृप्, निवेदय, उपदिश, धारय (ऋणी होना), स्पृह्, कल्पते (होना), संपद्यते (होना) तथा हितम् (हित), सुखम् के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय (शिष्य को) कथयति। रामः देववत्ताय शतं (राम देववत्ता का शत ४०) धारयति। विद्या ज्ञानाय कल्पते, संपद्यते।

*नियम ४१—(तावर्थ्यं चतुर्थी वाच्या) जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। जैसे, मोक्षाय हरि भजति। शिशुः बुध्वाय ऋन्दति।

नियम ४२—चतुर्थी के अर्थ में 'अर्थम्' और 'कृते' अव्ययों का प्रयोग होता है। कृते के साथ षष्ठी होती है। भोजनार्थम्, भोजनस्य कृते (खाने के लिए)।

*नियम ४३—(संधि) (एचोऽयवायवः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाव में कोई स्वर हो तो। जैसे न + अनम् = नयनम्। हरे + ए = हरये। गुरो + ए = गुरवे। ग + अकः = गायकः। द्रौ + अत्र = द्रावत्र।

अभ्यास ११

१. उदाहरण-वाक्य :—१. बालक को लड्डू अच्छा लगता है—बालकाय मोदकं रोचते । २. नृपः दुर्जनेभ्यः (राजा दुर्जनों पर) क्रुध्यति, कुप्यति, दुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति । ३. गुरुः शिष्याय (शिष्य को) कथयति, निवेदयति, उपदिशति । ४. हरिः पुष्पेभ्यः (फूलों को) स्पृहयति । ५. विद्या अर्थाय कल्पते, संपद्यते, भवति (धन के लिए है) । ६. ब्राह्मणाय (ब्राह्मण का) हितम्, सुखं वा भवेत् । ७. शिशुः दुग्धाय (दुग्धार्थम्, दुग्धस्य कृते) क्रन्दति । ८. तत् पुस्तकं पठ । ९. एतत् राज्यं रक्ष । १०. किं कार्यं करोषि ? ११. सर्वाणि पुस्तकानि शिष्येभ्यः सन्ति । १२. अन्यत् (इतरत्) पुस्तकं पठ । १३. द्वावत्र आगच्छतः । १४. बालकाय क्रीडतः ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. लड़की को यह फूल अच्छा लगता है । २. उस बालक को यह पुस्तक अच्छी लगती है । ३. गुरु शिष्य पर क्रोध करता है । ४. यह दुर्जन उस सज्जन से द्रोह करता है । ५. वह मूर्ख इस विद्वान् से ईर्ष्या करता है (ईर्ष्य, असूय) । ६. वह गुरु इन शिष्यों को उपदेश देता है । ७. राजा सेनापति को कहता है । ८. शिष्य गुरु से भोजन के लिए (अर्थम्, कृते) निवेदन करता है । ९. वह मुनि मोक्ष के लिए ईश्वर को भजता है । १०. चार वर्ण हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । ११. वह गुरु इन शिष्यों को विद्या देता है । १२. राम ये फल चाहता है (स्पृह) । १३. सारे पापों को छोड़ो । १४. ये क्षत्रिय उन वैश्यों और शूद्रों की रक्षा करें । १५. यह दूसरी (अन्य, इतर) पुस्तक है । १६. वह मनुष्य राम का सौ ६० ऋणी है । १७. शिष्य का हित हो (हितम्, सुखम्) ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	बालकं पुस्तकं रोचते ।	बालकाय पुस्तकं रोचते ।	३८
(२)	शिष्ये क्रुध्यति ।	शिष्याय क्रुध्यति ।	३९
(३)	शिष्यं कथयति, उपदिशति ।	शिष्याय कथयति, उपदिशति ।	४०

४. अभ्यास :—(क) यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्वं, विश्व के नपुं० के पूरे रूप लिखो । (ख) इनके लट्, लोट्, विधिलिङ् के रूप लिखो—क्रुष्, उपदिश्, भज्, निवेदय, धारय ।

५. वाक्य बनाओ :—रोचते, क्रुध्यति, द्रुह्यति, धारयति, स्पृहयति, कथयति, भजति, अर्थम् ।

६. संधि करो :—मुने + ए, कवे + ए, जे + अति, जे + अः, शे + अनम्, गुरो + ए, पो + अनः, भो + अति, नै + अकः, कै + अः, पौ + अकः, प्रभौ + अः, द्रौ + अकः ।

७. संधि-विच्छेद करो :—सज्जनावत्र, बालावद्य, ब्राह्मणाविदानीम्, द्वावेतौ । भावकः, परिचायकः, यतये, कवये, शिशवे, साधवे, गुरवे ।

शब्दकोष—२७५ + २५ = ३००] अभ्यास १२

(व्याकरण)

(क) वृक्षः (वृक्ष), प्रासादः (महल)। शैशवम् (बाल्यकाल), उपवनम् (वाटिका)। प्रजा (प्रजा), वेला (समय)। (६)। (ख) भी (डरना), त्रे (रक्षा करना), अधि + इ (पढ़ना), आनी (लाना)। (४)। (ग) ऋते (बिना), आरात् (१. समीप, २. दूर), प्रभृति (उक्त समय से लेकर), आरभ्य (आरम्भ करके), बहिः (बाहर)। (५)। (घ) पूर्व (१. पूर्वदिशा, २. पहले), पश्चिम (पश्चिम दिशा), उत्तर (उत्तरदिशा), दक्षिण (१. दक्षिण दिशा, २. चतुर) प्राक् (१. पूर्व की ओर २. पहले), प्रत्यक् (पश्चिम की ओर), उदक् (उत्तर की ओर), दक्षिणा (दक्षिण की ओर), भिन्न (अतिरिक्त, अलावा), अतिरिक्त (भिन्न)। (१०)।

सूचना—(क) वृक्ष—प्रासाद, रामवत्। शैशव—उपवन, गृहवत्। प्रजा—वेला, रमावत्।

व्याकरण (सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग, कारक-पंचमी, गुणसंधि)

१. सर्व शब्द के स्त्रीलिङ्ग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं. २९ ग) संक्षिप्त-रूप लगाकर विद्व आदि (अभ्यास १०) के रूप बनाओ। सूचना—रमा शब्द से सर्व आदि के स्त्रीलिङ्ग में ५ स्थानों पर अन्तर होंगे। १. च. एक. अस्या। २. ३. प. और ष. एक. अस्याः। ४. ष. बहु. आसाम्। ५. स. एक. अस्याम्। तत् आदि का प्रथमा एक. में सा, या, एषा, का होता है, आगे ता, या, एता का रूप रमावत् चलावें।

२. भी आदि के लट् में क्रमशः ये रूप होंगे—बिभेति, त्रायते (सेवतेवत्) अधीते, आनयति (भवतिवत्)।

नियम ४४.—(ध्रुवमपायेऽपादानम्) जिससे कोई वस्तु आदि अलग हो, उसे अपादान कहते हैं।

*नियम ४५—(अपादाने पञ्चमी) अपादान में पंचमी होती है। जैसे, वृक्षात् पत्रं पतति।

*नियम ४६—(अन्यारादितरत्वे) अन्य, आरात्, इतर (तथा अन्य अर्थ वाले और भी शब्द), ऋते, पूर्व आदि दिशावाची शब्द (इनका देश, काल अर्थ हो तो भी), प्रभृति, बहिः, शब्दों के साथ पंचमी होती है। जैसे—ज्ञानाद् ऋते न मोक्षः। ग्रामात् पूर्वः पश्चिमः उत्तरः दक्षिणः प्राक् आदि (गाँव से पूर्व आदि की ओर)। शैशवात् प्रभृति (बचपन से लेकर)। ग्रामाद् बहिः।

*नियम ४७—(भीत्रार्थानां भयहेतुः) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते।

*नियम ४८—(आख्यातोपयोगे) जिससे विद्या आदि पढ़ी जाए, उसमें पंचमी होती है। उपाध्यायादधीते। गुरोः पठति।

नियम ४९—(अदेङ् गुणः)। अ, ए, ओ, को गुण कहते हैं।

*नियम ५०—(संधि) (आद्गुणः) अ या आ के बाद इ या ई को ए, उ या ऊ को ओ; ऋ या ॠ को अर्, लृ को अल् होता है। जैसे, रमा + ईशः = रमेशः, पर + उप-कारः = परोपकारः, महा = ऋषिः + मर्हषिः, तब + लृकारः = तबलृकारः।

अभ्यास १२

१. उदाहरण-वाक्यः—१. उस वृक्ष से यह पत्ता गिरता है—तस्माद् वृक्षाद् एतत् पत्रं पतति । २. तस्माद् अश्वात् स नरः पतति । ३. प्रासादाद् बालः अपतत् । ४. तस्माद् गुरोः अधीते, पठति वा । ५. चोराद् बिभेति । ६. चोरात् त्रायते । ७. रामाद् अन्यः (इतरः, भिन्नः, अतिरिक्तः) कः सत्यं वदेत् । ८. धनाद् ऋते न सुखम् । ९. एषा बालिकेच्छति लतामेताम् । १०. एताः सर्वाः (विश्वाः) प्रजाः धर्मं रक्षन्ति । ११. प्रजेच्छति नृपम् । १२. पश्येदानीम् । १३. नेदानीं गच्छ । १४. पश्योपरि । १५. केदानीं वेला ।

२. संस्कृत बनाओः—१. इस वृक्ष से ये फूल गिरे । २. उस महल से वह लड़की गिरी । ३. किस घोड़े से वह सेनापति गिरा ? ४. जिस नगर से वह राजा इस गाँव में आया, उसी नगर को अब गया । ५. उस पाठशाला से वह लड़की यहाँ आई । ६. उस गुरु से वह शिष्य पढ़ता है (अधि + इ) । ७. वह गुरु से पढ़ा । ८. यह लड़की चोर से डरती है । ९. वह ब्राह्मण इस कन्या को उस राक्षस से बचाता है । १०. प्रजा से राजा के लिए धन लाओ । ११. क्षत्रिय के अतिरिक्त (अन्यः, इतरः, भिन्नः, अतिरिक्तः) कौन इस प्रजा को दुःख से बचाता है ? १२. धर्म के बिना (ऋते) सुख नहीं । १३. गाँव के पास (आरात्) सारी प्रजा है । १४. गाँव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर कौन रहते हैं ? १५. बाल्यकाल से लेकर यहाँ ही रहता हूँ । १६. गाँव से बाहर जाओ । १७. इस समय क्या समय है ? १८. वाटिका से फूल लाओ । १९. वृक्ष से फल गिरे । २०. उस गुरु से विद्या पढ़ो ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) इदं वृक्षात् एते फलानि० ।	एतस्माद् वृक्षाद् एतानि फलानि०	३३
(२) तं नगरम् अगच्छत् ।	तद् नगरम् अगच्छत् ।	३३
(३) तेन गुरुणा अधीते ।	तस्माद् गुरोः अधीते ।	४८
(४) चोरेण बिभेति ।	चोराद् बिभेति ।	४७
(५) ग्रामस्य पूर्वः, प्राक्० ।	ग्रामात् पूर्वः, प्राक्० ।	४६

४. अभ्यासः—यत्, तत्, एतत्, किम्, सर्वं, पूर्वं के स्त्रीलिङ्ग के पूरे रूप लिखो ।

५. वाक्य बनाओः—बिभेति, त्रायते, अधीते, आनयति, ऋते, आरात्, प्रभृति, बहिः, पूर्वः, भिन्नः ।

६. सन्धि करोः—का + इदानीम् । एषा + इच्छति । न + इदम् । पर + उपकारः । महा + उदयः । मह + उत्सवः । वीर + इन्द्रः । महा + ऋषिः । राज + ऋषिः । पश्य + उपरि ।

७. सन्धि-विच्छेद करोः—नेच्छति, गच्छोपरि, ब्रह्मर्षिः, सप्तर्षिः, केह, तस्योपरि, सूर्योदयः ।

शब्दकोष—३०० + २५ = ३२५] अभ्यास १३

(व्याकरण)

(क) इदम् (यह), अदस् (वह) (सर्वनाम) । अङ्कुरः (अंकुर), तिलः (तिल), माषः (उड़द), यवः (जौ) । बीजम् (बीज) । (७) । (ख) विरम् (रुकना), प्रमद् (प्रमाद करना), निवृ (हटाना), प्रभू (१. उत्पन्न होना, २. समर्थ होना), उद्भू (निकलना), प्रतिदा (बदले में देना) । जुगुप्स (घृणा करना), जन् (उत्पन्न होना), निली (छिपना) । (६) । (ग) पृथक् (अलग) । (१) । (घ) दूर, अन्तिक, समीप, निकट, पादर्व, सकाश (इन ६ का अर्थ है, समीप) । पटु (पटुतर) (१. चतुर, २. उससे चतुर), गुरु (गुरुतर) (१. भारी या श्रेष्ठ, २. उससे भारी या अच्छा) । (८)

सूचना—(क) अंकुर—यव, रामवत् । बीज, गृहवत् ।

व्याकरण (इदम्, अदस्, (पुं०), पञ्चमी, वृद्धिसन्धि)

१. इदम्, अदस् के पुंलिंग के रूप स्मरण करो । (देखो शब्द सं. ३७, ३८ क) ।

२. 'विरम्' आदि धातुओं के लट् में क्रमशः ये रूप होंगे, विरमति, प्रमाद्यति, निवारयति, प्रभवति, उद्भवति, प्रतियच्छति (उक्त रूप बनाकर भवतिवत्) । जुगुप्सते, जायते, निलीयते (उक्त रूप बनाकर सेवतेवत्, देखो अभ्यास १६) ।

नियम ५१—(जुगुप्साविराम०) जुगुप्सते, विरमति, प्रमाद्यति के साथ पंचमी होती है । पापात् जुगुप्सते, विरमति । धर्मात् प्रमाद्यति ।

*नियम ५२—(वारणार्थानामीप्सितः) जिस वस्तुसे किसी को हटाया जाए, उसमें पंचमी होती है । यवेभ्यः पशुं वारयति । पुत्रं पापाद् वारयति, निवारयति वा ।

*नियम ५३—जायते, उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति, (उत्पन्न या निकलना अर्थ में), निलीयते, प्रतियच्छति के साथ पंचमी होती है । प्रजापतेः लोकः जायते । हिमालयाद् गङ्गा प्रभवति, उद्भवति । नृपात् चोरः निलीयते । तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति ।

*नियम ५४—तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है । रामात् कृष्णः पटुतरः । धनात् ज्ञानं गुरुतरम् ।

नियम ५५—(पृथग्विना०) पृथक् और विना के साथ पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों होती हैं । रामात्, रामेण, रामं विना, पृथक् वा ।

नियम ५६—(दूरान्तिकार्थेभ्यो०) दूर और निकटवाची शब्दों में पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों होती हैं । ग्रामस्य दूरात्, दूरेण, दूरम् ।

नियम ५७—(वृद्धिरादेच्) आ, ऐ, औ को वृद्धि कहते हैं ।

*नियम ५८—(द्विरेचि) अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो 'ऐ', ओ या औ हो तो 'औ' होता है । तदा + एकः = तदेकः । तस्य + ऐश्वर्यम् = तस्यैश्वर्यम् । तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलोदनम् । महा + औषधिः = महौषधिः ।

अभ्यास १३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. यह बालक पाप से घृणा करता है—अयं बालः पापाद् जुगुप्सते, विरमति वा । २. यवेभ्यः इमान् पशून् निवारयति । ३. अमुं पुत्रं पापाद् निवारय । ४. एभ्यः तिलेभ्यः माषान् प्रतियच्छति । ५. अमुष्माद् बालकाद् अयं बालकः पटुतरः । ६. विद्यायाः (विद्यां, विद्यया) विना न ज्ञानम् । ७. अस्माद् ग्रामात् पृथक् वस । ८. जनकस्य समीमात् (अन्तिकात्, पार्श्वात्, निकटात्, सकाशात्) आगच्छामि । ९. बालिकैषा आगच्छति । १०. तदैकः नरः आगच्छत् । ११. पश्येतां लताम् । १२. निवारयैतस्मात् पापात् पुत्रम् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(इदम्, अदस् का प्रयोग करो) १. यह बालक सत्य से प्रमाद करता है । २. वह शिष्य इस पाप से रुकता है । ३. वह पुत्र पाप से घृणा करता है । ४. यह गुरु उस शिष्य को इस पाप से हटाता है । ५. जौ से इन पशुओं को हटाओ । ६. प्रजापति से यह लोक उत्पन्न होता है । ७. गङ्गा हिमालय से निकलती है । ८. बीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं । ९. वह बालक पिता से छिपता है । १०. वह वैश्य इन चावलों से उड़द को बदलता है । ११. उस यति से यह कवि अधिक चतुर है । १२. धन से ज्ञान अधिक बढ़ा है । १३. इस कवि के बिना कौन कथा करेगा । १४. उस गुरु के पास से इस ग्राम में आया हूँ । १५. नगर से दूर वह विद्यालय है । १६. उस गुरु से विद्या पढो ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	अनेन पापेन निवारयति ।	अस्मात् पापाद् निवारयति ।	५२
(२)	एभिः तण्डुलैः ...प्रतियच्छति ।	एभ्यः तण्डुलेभ्यः ० ।	५३
(३)	धनेन ज्ञानं गुरुतरः ।	धनात् ज्ञानं गुरुतरम् ।	५४, ३३
(४)	अस्मिन् ग्रामे आगच्छम् ।	इमं ग्रामम् आगच्छम् ।	१५

४. अभ्यास :—(क) इदम् और अदस् के पुंलिंग के पूरे रूप लिखो । (ख) पंचमी किन किन स्थानों पर होती है, उदाहरण सहित बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—जुगुप्सते, विरमति, प्रमादयति, जायते, उद्भवति, प्रभवति, प्रतियच्छति, निलीयते, पटुतरः, गुरुतरः, पृथक्, विना, दूरात्, अन्तिकात् ।

६. संधि करो :—विद्या + एषा । पश्य + एतम् । देव + ऐश्वर्यम् । यदा + एकः । कदा + एकेन । तस्य + एव । सर्वदा + एव । अत्र + एकः । सा + एव । महा + औषधम् । महा + ओषधिः । सदा + एषा । न + एषः । का + एषा । अद्य + एव । अथ + एकः ।

७. सन्धि-विच्छेद करो :—पश्येताम् । आनयैतस्याः । निवारयैतस्मात् । सैषा । नैतत् । नैव ।

शब्दकोष—३२५ + २५ = ३५०] अभ्यास १४

(व्याकरण)

(क) छात्रः (विद्यार्थी), अन्नम् (अन्न) । (२) । (ख) निन्द् (निन्दा करना), अर्च (पूजा करना), शूच (शोक करना), जप् (जप करना), आलप् (बात करना), आह्व (बुलाना), तृ (तेरना), ध्यं (ध्यान करना), अभिलष (चाहना), जीव (जीना), खन् (खोदना) । (११) । (ग) निमित्तम्, कारणम्, हेतुः (तीनों का अर्थ है 'कारण'), उत्तरतः (उत्तर की ओर), दक्षिणतः (१. दक्षिण की ओर, २. दाहिनी ओर), पुरः (सामने), पुरस्तात् (सामने), उपरिष्ठात् (ऊपर की ओर), अधस्तात् (नीचे की ओर), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे) । (११) । (घ) श्रेष्ठः (श्रेष्ठ), पटुतमः (सबसे अधिक चतुर)] (१) ।

सूचना—(क) छात्र, रामवत् । अन्न, गृहवत् । (ख) निन्द्—खन्, भवतिवत् ।

व्याकरण (इदम्, अदस् (नपुं०) षष्ठी, पूर्वरूपसन्धि)

१. इदम्, अदस् के नपुंसक लिंग के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० ३७, ३८ ख)

२. संक्षिप्तरूप लगाकर, भवतिवत् निन्द् आदि के पाँचों लकारों में रूप चलाओ ।

जैसे, निन्दति, शोचति, आह्वयति, तरति, ध्यायति, अभिलषति, जीवति, खनति ।

सूचना—षष्ठी दो या अधिक शब्दों का केवल संबन्ध बताती है, उसका क्रिया से साक्षात् संबन्ध नहीं है, अतः संस्कृत में षष्ठी को कारक नहीं मानते हैं ।

*नियम ५६—(षष्ठी शेषे) संबंध का बोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति होती है ।

जैसे, गङ्गायाः जलम् । रामस्य पुस्तकम् । देवदत्तस्य धनम् । रामायणस्य कथा ।

*नियम ६०—(षष्ठी हेतुप्रयोगे) हेतु शब्द के साथ षष्ठी होती है । अन्नस्य हेतोः वसति ।

*नियम ६१—(निमित्तपर्यायप्रयोग सर्वासां प्रायदर्शनम्) निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, कारण, हेतु, प्रयोजन) के साथ प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं । किं निमित्तं वसति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय । कस्य हेतोः, कस्मात् कारणात्, केन प्रयोजनेन ।

*नियम ६२—(अयोग्यार्थव्येक्षां कर्मणि) स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ कर्म में षष्ठी होती है । मातुः स्मरति (खेदपूर्वक माता का स्मरण करता है) ।

*नियम ६३—(षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन) उपरि, उपरिष्ठात्, अधः, अधस्तात्, पुरः, पुरस्तात्, पश्चात्, अग्रे, दक्षिणतः, उत्तरतः के साथ षष्ठी होती है । ग्रामस्य दक्षिणतः, उत्तरतः आदि ।

*नियम ६४—(यतश्च निर्धारणम्) बहुतों में से एक छांटने अर्थ में, जिससे छाँटा जाए, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं । छात्राणां छात्रेषु रामः श्रेष्ठः, पटुतमः ।

*नियम ६५—(एङः पदान्तादति) पद (सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो, अ को पूर्वरूप (ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है । (इस संधि के निर्देश के लिए ए ओ के बाद ५ चिह्न लगता है) । हरे + अव = हरेऽव । विष्णो + अव = विष्णोऽव ।

अभ्यास १४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. यह देवदत्त की पुस्तक है—इदं देवदत्तस्य पुस्तकम् अस्ति । २. रामस्य पुत्रम् आह्वय । ३. स गृहस्य कार्यं ध्यायति । ४. अजायाः दुग्धम् अभिलषति । ५. अध्ययनस्य हेतोः (पढ़ाई के लिए) जीवति । ६. त्वं कस्य हेतोः (कस्मात् कारणात्) शोचसि । ७. मातुः स्मरति । ८. ग्रामस्य पुरः, पुरस्तात्, अग्रे, पश्चाद् वनम् अस्ति । ९. गृहस्याग्रे वसुधां खनति । १०. शिष्याणां शिष्येषु वा कृष्णः श्रेष्ठः, पटुतमः । ११. नराणां नरेषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः । १२. अधीतेऽत्र शिष्यः । १३. त्रायते—ऽधुना नृपः । १४. दुर्जनः ब्राह्मणं निन्दति । १५. प्राज्ञः ईश्वरमर्चति, जपति वा । १६. छात्रः गुरुमालपति । १७. बालः गङ्गां तरति (गङ्गायाः जले वा तरति) ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. गंगा का जल । २. इस वृक्ष के ये फूल । ३. बालक की यह पुस्तक है । ४. यह धन किसका है ? ५. तुम यहाँ पर किसलिए रहते हो ? ६. राम पिता को स्मरण करता है । ७. धन के निमित्त जीता हूँ । ८. इस नगर के उत्तर और दक्षिण की ओर वृक्ष हैं । ९. घर के ऊपर, नीचे, आगे और पीछे की ओर आग जल रही है । १०. पुस्तकों में गीता श्रेष्ठ है । (ख) ११. मूर्ख गुरु की निन्दा करता है । १२. राम सज्जन की पूजा करता है । १३. कृष्ण शोक करता है । १४. यति प्रभु को जपता है । १५. यह बालक बालिका से बात करता है । १६. राम श्याम को बुलाता है । १७. यह फूल यमुना के जल में तैर रहा है । १८. तू ईश्वर का ध्यान करता है । १९. वह धन चाहता है (अभिलष) । २०. मूर्ख धन के निमित्त ही जीते हैं ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	जनकं स्मरति ।	जनकस्य स्मरति ।	६२
(२)	वृक्षस्य एते पुष्पानि ।	वृक्षस्य एतानि पुष्पाणि ।	३३, १६
(३)	गुरोः निन्दति ।	गुरुं निन्दति ।	१३

४. अभ्यास :—(क) २(ख) की लोट्, लङ्, विधिलिङ् में परिवर्तित करो । (ख) इदम्, अदस् के नपुंसक लिंग के पूरे रूप लिखो । (ग) इन धातुओं के लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—निन्द्, जप्, अर्चं, आह्वे, तृ, जीव्, खन्, शुच् ।

५. वाक्य बनाओ :—हेतोः, निमित्तेन, स्मरति, श्रेष्ठः, पुरः, अग्रे, पश्चात्, दक्षिणतः ।

६. सन्धि करो :—याचते+अधुना । हरे+अव । विष्णो+अव । अधीते+अधुना । रोचते+अग्निः । पुस्तके+अस्मिन् । विद्यालये+अस्मिन् । याचते+अमुम् ।

७. सन्धि-विच्छेद करो :—अधीतेऽत्र । त्रायतेऽधुना । लोकेऽस्मिन् । केऽत्र । तेऽस्मिन् ।

शब्दकोष—३५० + २५ = ३७५] अभ्यास १५

(व्याकरण)

(क) पाकः (पचना), उपदेशः (उपदेश) । शयनम् (सोना), गमनम् (जाना), पठनम् (पढ़ना), दानम् (दान), वस्त्रम् (वस्त्र) । (७) । (ख) गर्ज् (गरजना), मूर्छ् (मूर्छित होना), श्रि (१. आश्रय लेना, २. सेवा करना), भृ (पालन करना), सृ (चलना), वे (बुनना), भूयात् (होवे, आशीर्वाद) । (७) । (ग) समक्षम् (सामने), मध्ये (बीचमें), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर), तुल्यः, सदृशः, समः (तीनों का अर्थ है, समान), आयुष्यम्, कुशलम्, भद्रम्, शम् (चारों आशीर्वाद अर्थ में आते हैं, कुशल हो) । (११)

सूचना—(क) पाक—उपदेश, रामवत् । शयन—वस्त्र, गृहवत् । (ख) गर्ज्—वे, भवतिवत् ।

व्याकरण (इदम् अदस् (स्त्री०), षष्ठी, दीर्घसंधि)

१. इदम्, अदस् के स्त्रीलिङ्ग के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० ३७, ३८ ग)

२. गर्ज् आदि के रूप भवतिवत् । जैसे, गर्जति, श्रयति, भरति, सरति, वयति ।

* नियम ६६—(कर्त्तृ कर्मणोः कृति) कृदन्त शब्द [जिनके अन्त में कृत् प्रत्यय अर्थात् तृच् (तृ), क्तिन् (ति), अच् (अ), घञ् (अ), ल्युट् (अन्) आदि हों] के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है । जैसे शिशोः शयनम् (बच्चे का सोना), रामस्य गमनम् । सूचना—पुस्तक पढ़ना है, इस प्रकार के वाक्यों का दो प्रकार से अनुवाद होता है, पुस्तकं पठति या पुस्तकस्य पठनं करोति । स्मरण रखें कि धातु का कृदन्तरूप बनने पर उसके साथ षष्ठी होगी और शुद्ध धातु के साथ द्वितीया ।

* नियम ६७—कृते (लिए), समक्षम्, मध्ये, अन्तः, अन्तरे के साथ षष्ठी होती है । भोजनस्य कृते । गुरोः समक्षम् । छात्राणां मध्ये । गृहस्य अन्तः, अन्तरे वा ।

* नियम ६८—(दूरान्तिकार्थः षष्ठी०) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं । ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरं, समीपं, पार्श्वं, सकाशम् ।

* नियम ६९—(तुल्यार्थः०) तुल्यवाची शब्दों (तुल्य, सदृश, सम), के साथ षष्ठी और तृतीया दोनों होती हैं । कृष्णस्य कृष्णन वा तुल्यः, सदृशः, समः ।

* नियम ७०—(चतुर्थी चाशिष्यायुष्य०) आशीर्वादसूचक शब्दों (आयुष्यम्, भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, हितम्, अर्थः, प्रयोजनम्, शम्, पथ्यम् आदि) के साथ षष्ठी और चतुर्थी दोनों होती हैं । कृष्णस्य कृष्णाय वा भद्रम्, कुशलम्, शम्, भूयात् ।

* नियम ७१—(अकः सवर्ण दीर्घः) अक् (अ इ उ ऋ) के बाद सवर्ण अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर दीर्घ अक्षर हो जाता है । अ या आ + अ या आ = आ । इ या ई + इ या ई = ई । उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ । ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = ॠ । विद्या + आलयः = विद्यालयः । करोति + इदम् = करोतीदम् । गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः ।

अभ्यास १५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. बच्चे का सोना—शिशोः शयनम् । २. पुस्तकस्य पठनम् । ३. धनस्य दानम् । ४. भोजनस्य कृते (लिए) । ५. गृहस्य मध्ये, अन्तः, अन्तरे वा । ६. अस्याः समक्षम् । ७. ग्रामस्य दूरात् । ८. जनकस्य समीपात्, पार्श्वत्, सकाशाद् वा । ९. शिष्यस्य आयुष्यं भद्रं कुशलं शं वा भूयात् । १०. पठतीयं बाला । ११. पठतूपदेशम् । १२. वसतीहासौ बाला (यह लड़की यहाँ रहती है) । १३. मेघाः गर्जन्ति । १४. वस्त्रं वयति । १५. शिशुः मूर्च्छति । १६. शिष्यः गुरुं श्रयति । १७. जनकः पुत्रं भरति । १८. वायुः सरति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. इस लड़की का पढ़ना उसे अच्छा लगता है । २. उस कन्या का भोजन पकाना इसे अच्छा लगता है । ३. इस लड़की का जाना देखो । ४. उस बालिका का सोना देखो । ५. इस गुरु का उपदेश कैसा है ? ६. यह कन्या धन का दान करना चाहती है । ७. अध्ययन के लिए (कृते) गुरु के सामने जाओ । ८. भोजन के लिए घर के अन्दर आओ । ९. गाँव के समीप या दूर से इस लड़की के लिए फूल लाओ । १०. राम के तुल्य कोई नहीं है । ११. इस बालक का कुशल हो । १२. इस लड़की की ये पुस्तकें हैं । (ख) १३. यह बादल गरजता है । १४. वह पुत्र मूर्च्छित होता है । १५. यह बालक पिता का आश्रय लेता है । १६. राजा प्रजा का पालन करता है । १७. वायु चलती है । १८. वह वस्त्र बुनता है । १९. तू खाता है, पीता है, बात करता है और जीता है । २०. मैं ध्यान करता हूँ, तैरता हूँ, आता हूँ और जाता हूँ ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अस्य बालिकां पठनम्० ।	अस्याः बालिकायाः पठनम्० ।	६६, ३३
(२) भोजनस्य पाकः अमुं रोचते ।	भोजनस्य पाकः अस्मै रोचते ।	३८
(३) इमे पुस्तकानि० ।	इमानि पुस्तकानि० ।	३३

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट् और लङ् में बदलो । (ख) इदम्, अदस् के स्त्रीलिंग के पूरे रूप लिखो । (ग) इन धातुओं के लट्, लोट् लङ्, विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—गर्ज्, मूर्च्छ्, श्रि, भृ, सृ, वे । (घ) षष्ठी विभक्ति किन किन स्थानों पर होती है । सोदाहरण लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—गमनम्, पाकः, उपदेशः, समक्षम्, मध्ये, अन्तः, कुशलम्, शम् ।

६. संधि करो :—हिम + आलयः । दैत्य + अरिः । शिष्ट + आचारः । तदा + अगच्छत् । रत्न + आकरः । श्री + ईशः । पठति + इदम् । गच्छति + इयम् । विष्णु + उदयः । होतृ + ऋकारः ।

७. सन्धि-विच्छेद करो :—लिखतीदम् । वसतीहासौ । हसतीयम् । इतीह । भानू-दयः । इहायम् ।

शब्दकोष—३७५ + २५ = ४००] अभ्यास १६

(व्याकरण)

(क) युष्मद् (तू) (सर्वनाम) । सिंहः (सिंह), प्रातःकालः (प्रातःकाल), मध्याह्नः (दोपहर), सायंकालः (सायंकाल), मार्गः (मार्ग) । निशा (रात्रि) । (७) । (ख) सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुव् (प्रसन्न होना), सह् (सहना), [याच् (माँगना)] वृत् (होना), ईक्ष् (देखना), निरीक्ष् (१. देखना, २. निरीक्षण), वन्द् (प्रणाम करना), भाष् (कहना), कव् (कवना), यत् (यत्न करना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (कांपना), भिक्ष् (माँगना), ईह् (चाहना), शुभ् (शोभित होना), रम् (१. लगना, २. रमण करना) । (१८) ।

सूचना—(क) सिंह—मार्ग, रामवत् । (ख) सेव्—रम्, सेवतेवत् ।

व्याकरण (युष्मद्, लट् (आ०), सप्तमी, श्चुत्प्रसंघि)

१. युष्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ३५) ।

२. सेव्, लट् (आत्मनेपद)	संक्षिप्त-	एक०	द्वि०	बहु०
सेवते सेवेते सेवन्ते प्र०पु०	रूप	अते	एते	अन्ते प्र०पु०
सेवसे सेवेथे सेवध्वे म०पु०		असे	एथे	अध्वे म०पु०
सेवे सेवावहे सेवामहे उ०पु०		ए	आवहे	आमहे उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर लभ् आदि के रूप बनाओ । जैसे, लभते, वर्धते, मोदते, वर्तते, ईक्षते, वन्दते, भाषते, कूदते, यतते, शिक्षते, भिक्षते, ईहते, शोभते, रमते । सूचना—भ्वादिगण (१) की सभी आत्मनेपदी धातुओं के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे । पूर्वोक्त रुच, त्रै आदि आत्मनेपदी धातुओं के भी रूप सेव् के तुल्य चलेंगे ।

नियम ७२—(आधारोऽधिकरणम्) । किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं, जहाँ पर या जिसमें वह कार्य किया जाता है ।

*नियम ७३—(सप्तम्यधिकरणे च) अधिकरण कारक में सप्तमी होती है । विद्यालये पठति । पाठशालायाम् उपाध्यायाः सन्ति । (नियम ६४ भी देखो) ।

*नियम ७४—‘विषय में, बारे में’ अर्थ में तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है । मोक्षे इच्छास्ति (मोक्ष के विषय में इच्छा है) । विने, दिवसे, प्रातःकाले, मध्याह्ने, सायंकाले कार्यं करोति । शशवे, यौवने, वार्धके (बाल्य, यौवन, वृद्धत्व समय में) ।

*नियम ७५—(स्तोःश्चुनाश्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाव में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः श् और चवर्ग हो जाता है । जैसे, रामस् + च = रामश्च । कस् + वित् = कश्चित् । सत् + चित् = सच्चित् । शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय । याच् + ना—याच्ना । सूचना—स्मरण रखें कि रामः, बासः, कः आदि पुलिग एकवचन में विसर्ग स् के स्थान पर ही रहता है, अतः सन्धि के कार्यों में स् रक्खा जाता है । आगे भी स् = ही सन्धिनियमों में समझें ।

अभ्यास १६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. घर में बालक है—गृहे बालकः वर्तते । २. विद्यालये छात्राः बालिकाश्च वर्तन्ते । ३. स बालः तच्च फलम् आसने वर्तते । ४. विद्या धर्मेण शोभते । ५. सिंहः वने निशायां भ्रमति । ६. यतिः धर्मे रमते । ७. सायंकाले मार्गे बालाः कूर्दन्ते । ८. त्वं गुरुं सेवसे, सुखं लभसे, मोदसे, वर्धसे च । ९. कविः नृपं धनं याचते, तं भाषते वन्दते च । १०. यः दुःखं सहते, विद्यां शिक्षते, अन्नं भिक्षते, ज्ञानमीहते, सः लोके मोदते । ११. त्वया सहायं कः अस्ति ? १२. तुभ्यं किं रोचते ? १३. तव पुस्तकमहमीक्षे । १४. त्वयि सत्यं वर्तते । १५. वन्दे मातरम् ।

२. संस्कृत बनाओः—(क) १. तू राजा की सेवा करता है, सुख पाता है और सुखपूर्वक रहता है । २. नगर में मनुष्य हैं । ३. बालक मार्ग में संन्यासी को देखता है (ईक्ष) । ४. मोक्ष के विषय में तुम यत्न करते हो । ५. तुम दुःख सहते हो, गुरु की सेवा करते हो, और संसार में शोभित होते हो । ६. वह धन में रमता है । ७. वृक्ष हिलता है (कम्प) । ८. साधु राजा से अन्न माँगता है (भिक्ष) । ९. बालक पिता को प्रणाम करता है, घर में कूदता है और सत्य ही बोलता है (भाष्) । १०. विद्या सत्य से शोभित होती है । ११. तुम क्या चाहते हो (ईद्) ? १२. पशुओं में सिंह श्रेष्ठ है । (ख) १३. मध्याह्न में तू यहाँ आना । १४. तुमको बुलाता हूँ । १५. तेरे साथ कौन है ? १६. तुझे फल अच्छा लगता है । १७. तेरी पुस्तक कहाँ है ? १८. तुझमें ज्ञान है । १९. तू बाल्यकाल में विद्या सीखता है । २०. तू धन, सुख और ज्ञान पाता है ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) त्वं नृपस्य सेवसे ।	त्वं नृपं सेवसे ।	१३
(२) साधुः नृपात् अन्नं भिक्षते ।	साधुः नृपम् अन्नं भिक्षते ।	२१
(३) विद्या सत्यात् शोभते ।	विद्या सत्येन शोभते ।	२४

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो । (ग) इनके लट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्, यत्, शिक्ष्, भिक्ष्, शुभ्, रम् । (घ) परस्मैपद और आत्मनेपद की पहचान बताओ ।

५. वाक्य बनाओः—श्रेष्ठः, दिने, शैशवे, सायंकाले, सेवते, लभते, वर्तते, ईक्षे यतसे ।

६. संधि करो :—रामस् + च । हरिस् + च । बालस् + चलति । सिंहास् + चरन्ति । तत् + च । उत् + चयः । सन् + जयः । हरिस् + शेते । सत् + जनः । उत् + चारणम् । सत् + चरित्रम् । कस् + चन ।

७. सन्धि-विच्छेद करो :—बालिकाश्च । हरिश्च । तच्च । इतश्च । उच्चरति । सच्चरित्रः । दुश्चरित्रः ।

शब्दकोष—४०० + २५=४२५] अभ्यास १७

(व्याकरण)

(क) अस्मद् (में) (सर्वनाम)। स्नेहः (स्नेह), विश्वासः (विश्वास), मृगः (हरिण), शरः (बाण)। शास्त्रम् (शास्त्र)। अभिलाषा (इच्छा), श्रद्धा (श्रद्धा), निष्ठा (विश्वास), रतिः (१. प्रेम, २. कामदेव की स्त्री)। (१०)। (ख) स्निह (स्नेह करना), क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना), अस् (फकना), विश्वस् (विश्वास करना), आदृ (आदर करना), कृतः (किया), सति (होने पर)। (८)। (घ) आसक्त (१. अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्त (लगा हुआ), लग्न (लगा हुआ), अनुरक्त (प्रेमयुक्त), प्रवीण, कुशल, निपुण (तीनों का अर्थ है चतुर)। (७)

सूचना—(क) स्नेह—शर, रामवत्। शास्त्र, गृहवत्।

व्याकरण (अस्मद्, लोट् (आ०), सप्तमी, ष्टुत्वसन्धि)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ३६)

२. सेव—लोट् (आत्मनेपद)

सेवताम् सेवेताम् सेवन्ताम् प्र०पु०
सेवस्व सेवेथाम् सेवध्वम् म०पु०
सेवै सेवावहै सेवामहै उ०पु०

संक्षिप्त- एक० द्वि० बहु०

रूप अताम् एताम् अन्ताम् प्र०पु०
अस्व एथाम् अध्वम् म०पु०
ए आवहै आमहै उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर पूर्वोक्त (अभ्यास १६) लभ् आदि के रूप बनाओ।

३. स्निह आदि के लट् में क्रमशः वे रूप होंगे—स्निहति, क्षिपति, मुञ्चति, अस्पति, विश्वसिति, आद्रियते। उपयुक्त रूप बनाकर प्रथम चार के रूप भवतिवत्।

*नियम ७६—प्रेम, आसक्ति या आदरसूचक धातुओं और शब्दों (स्निह, अभिलष, अनुरञ्ज, आदृ, रति, आसक्त आदि) के साथ सप्तमी होती है। मयि स्नेहः।

*नियम ७७—(यस्य च भावेन भावलक्षणम्) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रियामें सप्तमी होती है। रामे वनं गते दशरथः मृतः।

*नियम ७८—(आयुक्तकुशलाभ्याम्० साधुनिपुणाभ्याम्०) संलग्न अर्थ वाले शब्दों (व्यापृतः, लग्नः, आसक्तः, युक्तः, व्यग्रः, तत्परः) और चतुर अर्थवाले शब्दों (कुशलः, निपुणः, साधुः, पटुः, प्रवीणः, दक्षः, चतुरः) के साथ सप्तमी होती है। कार्यं लग्नः, तत्परः। शास्त्रे कुशलः, निपुणः, दक्षः।

*नियम ७९—क्षिप्, मुच्, अस् (फेंकना अर्थ की) धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थ वाली धातुओं और शब्दों (विश्वसिति, विश्वासः, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था) के साथ सप्तमी होती है। मृगे बाणं क्षिपति। न विश्वसेदविश्वस्ते।

*नियम ८०—(ष्टुना ष्टुः) स या तवर्ग के बाद में या पहले ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग हो जाते हैं। जैसे—रामस् + षष्ठः = राम-ष्वष्ठः। तत् + टीकाः = तट्टीका। इष् + तम् = इष्टम्। राष् + त्रम् = राष्ट्रम्।

अभ्यास १७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. वह बालक पर स्नेह करता है—सः बालके स्निह्यति ।
२. तस्य मम पुत्रे स्नेहः वर्तते । ३. अस्माकं धर्मोऽभिलाषा वर्तताम् । ४. नृपः प्रजामु
आद्रियते । ५. धर्मो रतिः वर्तताम् । ६. सत्ये मम श्रद्धा, निष्ठा, विश्वासः वा वर्तते ।
७. जनकः पुत्रे विश्वसिति । ८. कार्ये कृते सति अहं वनमागच्छम् । ९. भोजने कृते सति
सः विद्यालयमगच्छत् । १०. रामः तस्यां कन्यायाम् अनुरक्तः अस्ति । ११. कृष्णः
शास्त्रेषु निपुणः, कुशलः, प्रवीणः अस्ति । १२. अहं कार्ये लग्नः, युक्तः, आसक्तः अस्मि ।
१३. सेनापतिः मृगे शरान् मुञ्चति, क्षिपति, अस्यति वा । १४. छात्रः गुरुं सेवताम्,
विद्यां लभताम्, दुःखं सहताम्, ज्ञानेन वर्धतां मोदतां च । १५. त्वं मोदस्व, अहं शिक्षे ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. पिता पुत्र पर स्नेह करता है । २. वह सत्य में
विश्वास करता है । ३. गुरु शिष्यों में आदर पाता है । ४. हरि कन्या पर अनुरक्त है ।
५. हमारी धर्म में रति है । ६. मेरी ईश्वर में श्रद्धा और निष्ठा है । ७. मेरी सत्य में
अभिलाषा है । ८. मेरे भोजन कर लेने पर बालक आया । ९. बालक के सोने पर पिता
घर से बाहर आया । १०. मैं इस समय अध्ययन में लगा हुआ हूँ । ११. हरि शास्त्रों में
निपुण और कुशल है । १२. राजा ने मृगों पर बाण चलाए (मुच्, क्षिप्) । (ख) १३.
साधु भिक्षा माँगे (भिक्ष्) । १४. वृक्ष काँपे । १५. मैं सत्य में रमण करूँ (रम्) । १६.
तू प्रसन्न हो (मुद्) । १७. तू बढ़े । १८. मैं कूदूँ । १९. मैं सेवा करूँ । २०. मैं देखूँ
(ईक्ष्) ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१)	मम भोजनं कृते सति० ।	मयि भोजने कृते सति ।	७७, ३३
(२)	पुत्रस्य शयनं कृते सति० ।	पुत्रे शयने कृते सति ।	७७, ३३
(३)	नृपेण मृगेषु शराः अक्षिपत् ।	नृपः मृगेषु शरान् अक्षिपत् ।	४

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) अस्मद् शब्द के पूरे
रूप लिखो । (ग) सप्तमी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो । (घ) लोट्
(आ०) के संक्षिप्तरूप बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—स्निह्यति, आद्रियते, विश्वसिति, क्षिपति, मुञ्चति,
अस्यति, आसक्तः, लग्नः, निपुणः, साधुः, मह्यम्, अस्माकम्, मयि, सेवस्व, वर्तताम् ।

६. सन्धि करो :—हरिस् + षष्ठः । एतत् + टीका । इष् + तः । आकृष् + तः ।
इष् + तिः । उत् + डीनः । उत् + टंकनम् । पृष् + तम् । सृष् + तिः । स्रष् + ता ।
कृष् + नः । विष् + नुः ।

७. सन्धि-विच्छेद करो :—रामष्णष्ठः । उड्डयनम् । तट्टीका । विसृष्टिः । विष्णुः ।

८. शुद्ध करो :—अहं सेवताम् । त्वं मोदे । सः रमतु । सः लभतु । त्वम् ईक्षताम् ।
ते वर्तताम् । त्वं लभताम् । अहं यतताम् । ते सहन्तु । त्वं भाषे । अहं वर्धताम् ।

शब्दकोष—४२५ + २५ = ४५०] अभ्यास १८

(व्याकरण)

(क) पात्रम्, भाजनम् (दोनों का अर्थ है १. स्थान, २. बर्तन), आस्पदम्, स्थानम्, पदम् (तीनों का अर्थ है, स्थान), प्रमाणम् (प्रमाण) । एकदेशः (एक स्थान) । एकता (एकत्व) । (८) । (ख) स्पर्ध् (स्पर्धा करना), शङ्कु (शंका करना), चेष्ट् (चेष्टा करना), कृप् (होना), परा + अय् (भागना), द्युत् (चमकना), वेप् (काँपना), त्रप् (लज्जित होना) । (८) । (ग) एकदा (एकबार), सदा (सर्वदा), एकतः (एक ओर से), एकधा (एक प्रकार से), एकमात्रम् (एकमात्र), एकवारम्, -रे (एकवार, एकबार में) । (६) । (घ) एकाकिन् (अकेला), एकान्तः (एकान्त), एकविधः (एक प्रकार का) । (३)

सूचना—(क) पात्र—प्रमाण, नित्य एकवचन, नपुं० । (ख) स्पर्ध्—त्रप्, सेवते-वत् व्याकरण (एक शब्द, एकवचनान्त शब्द, लृट्, जश्त्वसंधि)

१. एक शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करें । (देखो शब्द० सं० ३९) । एक शब्द का संख्या अर्थ में केवल एकवचन में ही रूप चलेगा, 'अन्य' अर्थ में बहुवचन में भी ।

२. सेव्, लृट् (आत्मनेपद) संक्षिप्त रूप एक० द्वि० बहु०
 सेविष्यते सेविष्येते सेविष्यन्ते प्र. पु. | (इ)स्यते (इ)स्येते (इ)स्यन्ते प्र. पु.
 सेविष्यसे सेविष्येथे सेविष्यध्वे म. पु. | (इ)स्यसे (इ)स्येथे (इ)स्यध्वे म. पु.
 सेविष्ये सेविष्यावहे सेविष्यामहे उ. पु. | (इ)स्ये (इ)स्यावहे (इ)स्यामहे उ. पु.
 संक्षिप्तरूप लगाकर स्पर्ध् आदि के लृट् में रूप बनाओ । लृट् में स्पर्धते, कल्पते ।

*सूचना—(क) इन धातुओं में 'इष्यते' आदि लगेंगे :—सेविष्यते, वर्धिष्यते, मोदिष्यते, सहिष्यते, याचिष्यते, वतिष्यते, ईक्षिष्यते, वन्दिष्यते, भाषिष्यते, कूदिष्यते, यतिष्यते, शिक्षिष्यते, कम्पिष्यते, भिक्षिष्यते, शोभिष्यते, स्पर्धिष्यते, शङ्किष्यते, चेष्टिष्यते, कल्पिष्यते, पलायिष्यते, द्योतिष्यते, वेपिष्यते, त्रपिष्यते, शयिष्यते, रोचिष्यते, । (ख) इनमें 'स्यते' आदि लगेंगे :—लप्स्यते, रंस्यते, त्रास्यते, अधोष्यते ।

*नियम ८१—पात्र, आस्पद, स्थान, पद, भाजन, प्रमाण शब्द जब विधेय के रूप में प्रयुक्त होंगे तो इनमें नपुंसक लिंग एक० ही रहेगा । उद्देश्यरूप में होंगे तो अन्य वचन भी होंगे । जैसे, गुणाः पूजास्थानं सन्ति । यूयं मम कृपापात्रं स्थ । भदन्तः प्रमाणं सन्ति । अत्र सप्त पात्राणि सन्ति ।

*नियम ८२—(संख्याया विधार्थे धा) सभी संख्यावाचक शब्दों से 'प्रकार से' अर्थ में 'धा' लगता है । 'प्रकार का' अर्थ में 'विध', 'गुना' अर्थ में 'गुण' तथा 'बार' अर्थ में 'वारम्' लगता है । जैसे, एकधा, द्विधा, त्रिधा, बहुधा । एकविधः, द्विविधः ।

*नियम ८३—(झलों जशोऽन्ते) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग के तृतीय अक्षर) होते हैं, झल् यदि पद के अन्त में हों तो । (पद अर्थात् सुबन्त और तिङन्त) । जगत् + ईशः = जगदीशः । षट् + दर्शनम् = षड्दर्शनम् ।

अभ्यास १८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. एक बालक—एकः बालकः । २. एका बालिका । ३. एकं फलम् । ४. एकं बालकम्, एकां बालिकाम्, एकं फलं चात्रानय । ५. एकस्मै बालकाय, एकस्यै बालायै च फलानि वितर । ६. त्वं धनानां पात्रम्, आस्पदं, स्थानं, पदं, भाजनं वा असि । ७. पात्रेषु भाजनेषु वा जलं वर्तते । ८. आस्पदेषु स्थानेषु वा ते तिष्ठन्ति । ९. भवन्तः प्रमाणं सन्ति । १०. सः एकाकी अध्ययनात् पलायिष्यते । ११. सूर्यः प्रातःकाले द्योतिष्यते । १२. सः गुरुं सेविष्यते, दुःखं सहिष्यते, मोदिष्यते, वर्धिष्यते च । १३. एकै एवं वदन्ति, अन्ये एवं कथयन्ति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. यहाँ एक बालक है । २. वहाँ एक बालिका है । ३. वहाँ एक बर्तन है । ४. एक शिष्य और एक लड़की को ये पुस्तकें दो । ५. एक बालक और एक बालिका की पुस्तकें यहाँ हैं । ६. एक विद्यालय में मैं पढ़ता हूँ और एक पाठशाला में वह पढ़ती है । (ख) ७. तुम सारी विद्याओं के एकमात्र पात्र हो । (पात्र, आस्पद, स्थान, पद, भाजन) । ८. तुम सारे ज्ञानों के स्थान हो । ९. आप विद्या में प्रमाण हैं । १०. यहाँ पर दस बर्तन हैं । (ग) ११. वह स्पर्धा करेगा । १२. वह शंका करेगा । १३. तू चेष्टा करेगा । १४. विद्या धर्म के लिए होगी (कृप्) । १५. चोर भाग जाएगा । १६. सूर्य एकबार फिर चमकेगा । १७. शिष्य काँपेगा । १८. लड़की लज्जित होगी । १९. वह सेवा करेगा, विद्या सीखेगा, वन्दना करेगा, यत्न करेगा, भिक्षा माँगेगा, प्रसन्न रहेगा और बढ़ेगा । २०. मैं धन पाऊँगा (लभ्), पढ़ूँगा (अधि + इ) और आनन्द करूँगा (रम्) । (घ) २१. इन छात्रों में एकता है, ये एक प्रकार से ही सब कार्य करते हैं । २२. एक स्थान पर एक बार मैं अकेला एकान्त में बैठा था, वहाँ एक ओर से एक सिंह आ गया ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) सर्वेषां विद्यानां पात्राणि० । सर्वासां विद्यानां पात्रम्० । ८१, ३३

(२) भवन्तः विद्यायां प्रमाणाः सन्ति । भवन्तः विद्यायां प्रमाणं सन्ति । ८१

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को बहुवचन बनाओ । (ख) एक शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो । (ग) इन धातुओं के लृट् के पूरे रूप लिखो :—सेव्, लभ्, वृष्, मुद, सह्, याच्, वृत्, भाष्, यत्, शिक्ष्, शुभ्, शी, त्रै, रम्, अधि + इ, कृप्, ईक्ष् ।

५. वाक्य बनाओ :—पात्रम्, आस्पदम्, स्थानम्, पदम्, भाजनम्, प्रमाणम् । एकस्यै, एकस्मात्, एकस्याः, एकस्मिन्, सेविष्यते, लप्स्यसे, वर्धिष्ये, वर्तिष्ये, अध्येष्ये, रंस्ये ।

६. संधि करो :—अच् + अन्तः । इक् + अन्तः । दिक् + अम्बरः । वाक् + ईशः । दिक् + ईशः । सत् + आचारः । सत् + उपदेशः । षट् + दर्शनम् । उत् + देश्यम् ।

७. संधि-बिच्छेद करो :—सच्चिदानन्दः । सदानन्दः । जगदीशः । दिगन्तः । तदेकम् । दिग्गजः ।

शब्दकोष—४५० + २५ = ४७५] अभ्यास १९

(व्याकरण)

(क) द्वि (दो), उभ (दोनों), उभय (दोनों (सर्वनाम) । द्विजः (१. ब्राह्मण, २. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ३. पक्षी, ४. दाँत), द्विरेफः (भौरा) । बलम् (बल) । दम्पती (माता-पिता) पितरौ (माता-पिता), अश्विनौ (दोनों अश्विनीकुमार) । (६) । (ख) दीक्ष् (दीक्षा देना), भास् (चमकना), आ + लम्ब् (१. सहारा देना, २. सहारा लेना), खंस् (गिरना), ध्वंस् (नष्ट होना), व्यथ् (दुःखित होना) । (८) । (ग) द्विषा (दो प्रकार से), द्विवारम् (दो बार) । (२) । (घ) द्वयम् (द्वयो) (दो), द्विविधः (दो प्रकार का), द्विगुणः (दुगुना), युगल, युग, द्वन्द्व (जोड़ा) । (६) ।

सूचना—(क) दम्पती—अश्विनौ, नित्य द्विवचनान्त । (ख) दीक्ष्—व्यथ्, सेवतेवत् ।

व्याकरण (द्विशब्द, द्विवचनान्तशब्द, लङ् (आ०), जश्वसंधि)

१. द्विशब्द के तीनों लिंगों के रूप (केवल द्विवचन में) स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ४०) ।

२. सेव्—लङ् (आत्मनेपद)

संक्षिप्तरूप एक० द्वि० बहु०

असेवत असेवेताम् असेवन्त प्र.पु. धातुसे पहले } अत एताम् अन्त प्र.पु.
असेवथाः असेवेथाम् असेवध्वम् म.पु. अ + } अथाः एथाम् अध्वम् म.पु.
असेवे असेवावहि असेवामहि उ.पु. ए आवहि आमहि उ.पु.
संक्षिप्तरूप लगाकर दीक्ष् आदि के रूप चलावो । अदीक्षत, अभासत, आलम्बत, अक्षमत ।

*नियम ८४—द्वि और उभ शब्द सदा द्विवचन में ही आते हैं । उभय (दोनों) शब्द तीनों वचनों में आता है । (उभ और उभय के रूप तीनों लिंगों में सर्ववत् चलेंगे) ।

*नियम ८५—(क) दम्पती, पितरौ, अश्विनौ, इनके रूप द्विवचन में ही चलते हैं । इनके साथ क्रिया द्विवचन में आती है । दम्पती, पितरौ, अश्विनौ वा गच्छतः, हसतः, मोदते । (ख) द्वय, युगल, युग, द्वन्द्व, ये चारों 'दो' अर्थ के बोधक हैं । ये शब्द के अन्त में जुड़ते हैं, और नपुंसक लिंग एकवचन रहते हैं । इसके साथ क्रिया एक० में रहती है । जैसे, छात्रद्वयम्, छात्रयुगलम्, छात्रयुगं पुस्तकानि पठति ।

*नियम ८६—(सापेक्ष सर्वनाम) यत् और तत् शब्द सापेक्ष सर्वनाम हैं (जो...वह) । अतः यत् शब्द में जो लिंग, विभक्ति और वचन होगा, वही तत् शब्द में भी होगा । बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ।

*नियम ८७—'यत्' शब्द 'कि' अर्थ में भी आता है, तब वहनपुंसक लिंग एक० ही रहता है । उसने कहा कि मैं अब जाऊँगा—सः अभाषत यत् अहमधुना गमिष्यामि ।

*नियम ८८—(झलां जश् झशि) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग का तृतीय अक्षर होता है, बाद में झश् (३, ४) हो तो । (यह नियम पद के बीच में लगता है) । जैसे, सिध् + धिः = सिद्धिः, ध् को द् । दध् + धः = दग्धः । क्षुम् + धः = क्षुब्धः । ऋध् + धः = ऋद्धः ।

अभ्यास १९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. दो बालक—द्वौ बालकौ । २. द्वे बालिके । ३. द्वे पुस्तके । ४. द्वाभ्यां बालकाभ्यां, द्वाभ्यां बालिकाभ्यां च पुस्तकानि वितर । ५. एतयोः द्वयोः छात्रयोः रामः पटुतरः । ६. दम्पती भ्रमतः । ७. पितरौ आगच्छतः । ८. अश्विनौ बलं वितरताम् । ९. उभौ बालकौ उभयं पुस्तकं (उभयानि पुस्तकानि) पठतः । १०. पशुयुगलं, पशुयुगं, पशुद्वन्द्वं, पशुद्वयं, पशुद्वयी वा अत्र चरति । ११. द्विजः शिष्यम् अदीक्षत, आलम्बत; शिष्यश्च, अवधत्, अमोदत च । १२. नगरम् अध्वंसत, नराः अव्यथन्त च । १३. सिंहः वनं गाहते, छात्रश्च जलं गाहते ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. दो शिष्य दो बार दो पुस्तक पढ़ते हैं । २. दो कन्याएँ दो प्रकार से दो पत्र लिखती हैं । ३. दोनों (उभ, उभय) बालक दुगुना खाना खाते हैं । ४. दो छात्र (युगल, युग, द्वयम्, द्वयी) वहाँ खेलते हैं । ५. दो प्रकार से भौरे घूम रहे हैं । ६. दम्पती ने पुत्र को आलम्बन दिया । ७. अश्विनीकुमार ज्ञान दें । ८. जो लड़की यहाँ आई थी, वह गई । ९. जिस मनुष्य में विद्या है, उसमें बल है । १०. माता-पिता ने बालक को कहा कि जल लाओ । (ख) ११. गुरु ने दीक्षा दी । १२. सूर्य चमका । १३. भौरे ने वृक्ष का सहारा लिया । १४. राजा ने चोर को क्षमा किया । १५. बालक जल में घुसा (गाह्) । १६. बालिका का वस्त्र पैर से हटा (संस) । १७. घर गिर गया और बालक दुःखित हुआ (व्यथ्) । १८. चोर को शंका हुई (शक्), वह डरा, काँपा और भागा । १९. मैंने गुरु की सेवा की, सुख पाया (लभ्), बढ़ा और प्रसन्न हुआ । २०. बालक ने सीखा, यत्न किया, भिक्षा माँगी, खेला, कूदा और सुखपूर्वक रमा (रम्) ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) छात्रद्वयं क्रीडतः ।

छात्रद्वयं क्रीडति ।

८५ (ख)

(२) दम्पती पुत्रम् अभाषत ।

दम्पती पुत्रम् अभाषताम् ।

८५ (क)

(३) या बाला आगच्छत्, सः ० ।

या बाला आगच्छत्, सा ० ।

८६

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) द्वि और उभ शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो । (ग) नित्य द्विवचान्त शब्द कौनसे हैं ? लिखो । (घ) इनके लङ् के पूरे रूप लिखो :—सेव्, लभ्, वृध्, मुद, सह्, याच्, वृत्, भाष्, यत्, शिक्ष, रम्, स्पर्ध्, चेष्ट् ।

५. वाक्य बनाओ :—द्वौ, द्वे, उभौ, उभयम्, दम्पती, पितरौ, द्वयम्, यत्, अवधत्, अमोदत, अयाचत, अशिक्षत, अचेष्टत, अद्योतत, आलम्बत, अक्षमत, अगाहत ।

६. सन्धि करो :—सिध् + धिः । बुध् + धिः । शुध् + धिः । रुध् + धः । लुभ् + धः । लभ् + धः । आरभ् + धः । बध् + धः । वृध् + धिः । बुध् + धः । विध् + धः । दुध् + धम् । युध् + धः ।

७. संधि-विच्छेद करो :—शुद्धः । समृद्धः । वृद्धः । क्रुद्धः । लुब्धः । प्रारब्धः । सिद्धः । बुद्धिः । दग्धः ।

शब्दकोष—४७५ + २५ = ५००] अभ्यास २०

(व्याकरण)

(क) त्रिवर्गः (धर्म, अर्थ, काम, तीनों), त्र्यम्बक. (शिव), त्रिपुरारिः (शिव) । त्रिपथगा (गंगा), त्रिवेणी (गंगा-यमुना का संगमस्थान), त्रिभुवनम् (तीनों लोक) । दार (स्त्री), अक्षत (अक्षत चावल), लाज (खील), असु (प्राण), प्राण (प्राण) । वर्षा (वर्षा), सिकता (रेत), समा (वर्ष), अप् (जल), अप्सरस् (अप्सरा), सुमनस् (फूल) । (१७) । (ग) त्रिधा (तीन प्रकार से), त्रिवारम् (तीन बार) । (२) (घ) त्रि (तीन), कति (कितने), त्रयम् (तीन), त्रयी (१. तीन, २. तीन वेद ऋक्, यजुः, साम), त्रिगुणः (तिगुना), त्रिविधः (तीन प्रकार का) । (६)

व्याकरण (त्रि, बहुवचनान्तशब्द, विधिलिङ्, चतुर्वसंधि)

१. त्रिशब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ४१) ।

२. सेव्, त्रिविलिङ् (आत्मनेपद) संक्षिप्त-एक० द्वि० बहु०
 सेवेत सेवेयाताम् सेवेरन् प्र०पु० रूप एत एयाताम् एरन् प्र०पु०
 सेवेथाः सेवेयाथाम् सेवेध्वम् म०पु० एथाः एयाथाम् एध्वम् म०पु०
 सेवेय सेवेवहि सेवेमहि उ०पु० एय एवहि एमहि उ०पु०

संक्षिप्तरूप लगाकर लभ्, स्पर्ध्, दीक्ष् आदि पूर्वोक्त के रूप चलाओ ।

*नियम ८६—(क) दार, अक्षत, लाज (लाजा), असु, प्राण, इनके रूप पुंलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं । (ख) अप्, अप्सरस्, वर्षा, सिकता, समा, सुमनस्, इनके रूप स्त्रीलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं । (अप्सरस्, वर्षा, समा, सुमनस् इनका कहीं कहीं एकवचन में भी प्रयोग मिलता है) । दाराः, अक्षताः, लाजाः, असवः, प्रागाः, आपः, अपः, अप्सरसः, वर्षाः, आदि ।

*नियम ६०—त्रि से अष्टादशन् (३ से १८) तक के सारे शब्द तथा कति शब्द सदा बहुवचन में ही आते हैं । कति के रूप हैं :—कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु ।

*नियम ६१—(क) (आदरार्थं बहुवचनम्) आदर प्रकट करने में एक के लिए भी बहु० हो जाता है । गुरवः पूज्याः । (ख) (अस्मदो द्वयोश्च) अहम् और आवाम् के स्थान पर 'वयम्' का प्रयोग होता है, यदि वक्ता विशिष्ट व्यक्ति हो तो । (ग) (जात्याख्यायाम्) जातिवाचक शब्दों में एक० और बहु० दोनों होते हैं । ब्राह्मणः पूज्यः, ब्राह्मणाः पूज्याः । (घ) देशवाचक शब्दों में बहु० का प्रयोग होता है । नगरनाम, या 'देश' अन्त में होने पर एक० होगा । अहम् अङ्गान् बङ्गान् कालिगान् विदर्भान् गौडान् अगच्छम् । पाटलिपुत्रम्, अङ्गदेशं वा अगच्छम् ।

नियम ६२—(खरिच) क्षलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को चर् (१, उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) होता है, बाद में खर् (१, २, श, ष, स) हो तो । सद् + कारः = सत्कारः । उद् + पन्नः = उत्पन्नः ।

अभ्यास २०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. त्रयः छात्राः, तिस्रः कन्याः, त्रीणि पुस्तकानि चात्र सन्ति । २. त्रयाणां छात्राणां, तिसृणां कन्यानाम् एतानि त्रीणि वस्त्राणि सन्ति । ३. कति छात्राः अत्र क्रीडन्ति ? ४. छात्रत्रयमत्र क्रीडति । ५. छात्रत्रयी वेदत्रयीं पठति । ६. त्र्यम्बकः त्रिपुरारिः वा त्रिभुवनं भयात् त्रायते । ७. त्रिवर्गः मनुष्यस्य धनमस्ति । ८. त्रिवेण्यां त्रिपथगायाः अपः शिष्यः पिबति । ९. सः प्राणान् असून् वा अत्यजत् । १०. इमे दाराः, अमी अक्षताः, एते लाजाः सुखाय भवन्तु । ११. वर्षासु सिकतासु अप्सु च सुमनसः तरन्ति । १२. एताः अप्सरसः त्रिभुवने मोदन्, वर्धन् । १३. एताः पञ्च समाः स गुरुं सेवेत, मोदेत च ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. तीन गुरु, तीन लड़कियाँ, तीन वस्त्र वहाँ हैं । २. तीन छात्रों को, तीन छात्राओं को तीन पुस्तकें तीन बार दो । ३. ये तीन छात्र त्रिवर्ग के लिए त्र्यम्बक की सेवा करें । ४. त्रिवेणी में त्रिपथगा का जल शोभित होता है । ५. तीन कन्याएँ वेदत्रयी को तीन बार तीन प्रकार से पढ़ें । ६. न दुगुना खाओ और न तिगुना काम करो । ७. कितने वर्ष (समा) हुए जब उसने प्राण छोड़े थे ? ८. उस स्त्री (दार), इस अक्षत और इस खील को यहाँ लाओ । ९. वर्षा में रेतपर जल (आप्) और फूलों (सुमनस्) को देखो । १०. ये अप्सरा हैं । (ख) (विधिलिङ) ११. वह गुरु की सेवा करे । १२. मैं धन पाऊँ (लभ्) । १३. वह बड़े और प्रसन्न हो । १४. यहाँ सुख होवे (वृत्) । १५. बालक खेले और कूदे । १६. मैं देखूँ (ईक्ष्), बोलूँ (भाष्), यत्न करूँ, सीखूँ, दुःख सहूँ और आनन्द करूँ (रम्) । १७. चोर तिगुनी चेष्टा करे और भाग जाए । १८. वह तीन बार स्पर्धा करे । १९. वह तीन प्रकार से शंका करे । २०. वह भिक्षा माँगे ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) तं दारम्, इमम् अक्षतम्, इमं लाजम्० तान् दारान्, इमान् अक्षतान् ८९, ३३
एतान् लाजान्० ।

(२) वर्षायां सिकतायाम् आपम्० । वर्षासु सिकतासु अपः सुमनसश्च० । ८९ (ख)

(३) कतिः समा अगच्छन्, स प्राणम्० । कति समाः अगच्छन्, स प्राणान्० ८९, ९०

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) २ (ख) को लट्, लोट्, लङ् में बदलो । (ग) त्रिशब्द के तीनों लिंगों के रूप लिखो । (घ) नित्य बहुवचनान्त शब्दों के नाम और उनके लिंग बनाओ । (ङ) किन स्थानों पर एक० के स्थान पर बहु० होता है, सोदाहरण लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—त्रयः, तिस्रः, त्रीणि, कति, दाराः, असून्, प्राणान्, आपः, वर्षासु ।

६. संधि करो :—सद् + कर्म । उद् + पथः । तद् + परः । उद् + साहः ।

७. संधि-विच्छेद करो :—सत्क्रिया । सत्पथः । तत्कर्म । उत्कृष्टम् । उत्पन्नः ।

शब्दकोष—५०० + २५ = ५२५] अभ्यास २१

(व्याकरण)

(क) गुणः (१. गुण, २. रस्सी, धागा, ३. गुना), चतुर्वर्गः (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों), चतुर्भुजः (विष्णु)। (३)। (ख) [नी, ह (ले जाना), आनी (लाना)], अनुनी (मनाना), अभिनी (अभिनय करना), अपनी (हटाना), उपनी (यज्ञोपवीत देना), परिणी (विवाह करना), प्रणी (ग्रन्थ लिखना), निर्णी (निर्णय करना)। प्रह (प्रहार करना), आह (१. लाना, २. संग्रह करना), संह (१. नष्ट करना, २. शोकना), विह (विहार करना), परिह (छोड़ना), अपह (चुराना), उपह (भेंट में देना), उद्ध (उद्धार करना), उदाह (बोलना), व्यवह (व्यवहार करना), व्याह (बोलना)। (१८)। (ग) चतुर्धा (चार प्रकार से), चतुर्वारम् (चार बार)। (२)। (घ) चतुर् (चार), चतुर्गणः (चौगुना)। (२)।

सूचना—(क) गुण—चतुर्भुज, रामवत्। (ख) नी—व्याह, भवतिवत्।

व्याकरण (चतुर्, नी, ह (उभय०), उपसर्ग, भ्वादिगण, विसर्गसंधि)

१. चतुर् शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ४२)।

२. नी और ह धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० २१, २२)।

*नियम ६३—(उपसर्ग-परिचय) (उपसर्गाः क्रियायोगे) (क) धातु से पहले लगने वाले प्र, परा, आदि को उपसर्ग कहते हैं। ये धातुओं और कृवन्त शब्दों के पहले ही लगते हैं। इनके लगाने से धातु का अर्थ प्रायः बदल जाता है। (देखो ऊपर शब्दकोष ख)। उपसर्गों के साथ धातुओं के अर्थ जहाँ दिए गए हैं, वहाँ उन्हें शुद्ध स्मरण कर लें। कहा भी है :—उपसर्गण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्॥ (ख) ये २२ उपसर्ग हैं :—प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर्, वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अभि प्रति परि उप। इसके लिए यह श्लोक स्मरण कर लें :—प्रपरापसमन्ववर्निनिसो, दुरतिदुष्प्रतिसूदधिपर्यपि। (तदनु) व्याङ्घ्रिनी उप विशतिद्विसहितेत्युपसर्गसमाह्वयाः॥

*नियम ६४—(गण-परिचय, भ्वादिगण) भ्वादिगण की धातुओं की ये विशेषताएँ हैं। इनसे गण पहचानें। (१) (कर्तरि शप्) धातु और प्रत्यय (ति, तः आदि) के बीच में लट्, लोट् लङ्, विधिलिङ् में 'अ' लगता है। जैसे, अति, अतः आदि। (सूचना—धातु और प्रत्यय के बीच में आनेवाले को 'विकरण' कहते हैं।) (२) धातु को गुण होता है, अर्थात् अन्तिम स्वर या अन्तिम स्वर से पूर्व इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है। (भ्वादि० की धातुएँ अभ्यास १, २, ३, ६, ७, ८ में हैं।) (३) लट् में गण के कारण कोई अन्तर नहीं होता।

*नियम ६५—(विसर्जनोपस्य सः) विसर्ग के बाद खर् (१, २, श, ष, स) हो तो विसर्ग को स हो जाता है। (चवर्ग बाद में हो तो द्वात्वसंधि भी)। जैसे, हरिः + प्रायते = हरिस्त्रायते। रामः + तरति = रामस्तरति। निः + चलः = निश्चलः।

अभ्यास २१

१. उदाहरण-वाक्य :—१. चत्वारः छात्राः, चतस्रः कन्याः, चत्वारि पुस्तकानि अत्र वर्तन्ते । २. चतुर्णां छात्राणां, चतसृणां कन्यानाम् एतानि चत्वारि वस्त्राणि सन्ति । ३. चतुर्भुजं चतुर्वर्गार्थं सेवते । ४. सः अजां हरति, शत्रुषु प्रहरति, जलम् आहरति, शत्रुं संहरिष्यति, वने विहरिष्यति, असत्यं परिहरति, धनम् अपहरति, देवेभ्यः बलिमुपहरति, वेदम् उद्धरति, वचनम् उदाहरति, धर्मं व्यवहरति, सत्यं च व्याहरति । ५. सः गुरुम् अनुनयति, कृष्णम् अभिनयति, जलम् आनयति, शत्रून् अपनयति, शिष्यम् उपनयति, कन्यां च परिणेष्यति, पुस्तकं प्रणेष्यति, विवादस्य कारणं निर्णेष्यति ।

२. संस्कृत बनाओः—(क) १. चार शिष्य, चार कन्याएँ, चार फल और चार पुस्तकें यहाँ हैं । २. चार बालकों को और चार बालिकाओं को ये चार फल दो । ३. चार शिष्य चतुर्वर्ग के लिए चतुर्भुज की चार बार वन्दना करते हैं । ४. चार छात्रों को ये फल चार बार चार प्रकार से दो । (ख) ५. राजा शत्रुपर प्रहार करता है । ६. वह धन संग्रह करता है । ७. वह धन चुराता है । ८. मैं शत्रुओं का संहार करूँगा । ९. मैं जलमें विहार करूँगा । १०. मैं दुःखों का परिहार करूँगा । ११. दुर्जन कन्या का अपहरण करता है । १२. वह कन्या को फूल उपहार देता है । १३. वह धर्म का उद्धार करे । १४. वह कथा कहे (उदाह) । १५. वह सत्य व्यवहार करे । १६. वह असत्य न बोले (व्याह) । १७. वह पिता को मनाता है । १८. वह राम का अभिनय करता है । १९. तू दुःखों को दूर करता है (अपनी) । २०. तू फल ला । २१. गुरु शिष्य का उपनयन करे (उपनी) । २२. राम सीता से विवाह करे । २३. कवि पुस्तक रचे (प्रणी) । २४. राजा विवाद का निर्णय करेगा ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) चत्वारः कन्याः चत्वारः फलानि० । चतस्रः कन्याः, चत्वारि फलानि० ३३

(२) दुर्जनः कन्यायाः अपहरति । दुर्जनः कन्याम् अपहरति । १३

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) चतुर् शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो । (ग) नी और ह धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों में पूरे रूप लिखो । (घ) उपसर्गों के पूरे नाम बताओ । (ङ) भ्वादिगण की मुख्य विशेषताएँ बताओ । (च) उपसर्ग लगने से अर्थ-परिवर्तन के १० उदाहरण दो ।

५. वाक्य बनाओ :—चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि, प्रहरति, आहरेत्, उपाहरत्, परिणेष्यति, प्रणयेत् ।

६. संधि करो :—कः+तत्र । बालः+चलति । बालाः+तरन्ति । गुरुः+तिष्ठति । रामः+तत्र । हरिः+तथा । रामः+त्रायते । निः+सारः ।

७. संधि-विच्छेद करो :—कस्तिष्ठति । शिवस्त्रायते । हरिश्चलति । रामस्तिष्ठति । रामस्तथा ।

शब्दकोष—५२५ + २५ = ५५०] अभ्यास २२

(व्याकरण)

(क) शरीरम् (शरीर), मुखम् (मूँह), विमानम् (विमान), धूम्रयानम् (रेलगाड़ी) । (४) । (ख) [कृ (करना)], अनुकृ (अनुकरण करना), अधिकृ (अधिकार करना), अपकृ (बुराई करना), अलंकृ (सजाना), आविष्कृ (आविष्कार करना), उपकृ (उपकार करना), तिरस्कृ (अपमान करना), नमस्कृ (नमस्कार करना), संस्कृ (शुद्ध करना), स्वीकृ (स्वीकार करना), प्रतिकृ (प्रतिकार करना) । (११) । (घ) (पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्) प्रथमः (पहला), द्वितीयः (दूसरा) तृतीयः (तीसरा), चतुर्थः (चौथा), पञ्चमः (पाँचवाँ), षष्ठः (छठा), सप्तमः (सातवाँ), अष्टमः, (आठवाँ), नवमः (नवाँ), दशमः (दसवाँ) । (१०)

व्याकरण (पंचन् से दशन्, कृ, अदादिगण उत्त्वसंधि)

१. पञ्चन् से दशन् शब्द तक के पूरे रूप (बहुवचन में) स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ४३ से ४८) । सूचना—पञ्चन् से अष्टादशन् (५ से १८) तक संख्याओं के रूप केवल बहु० में चलते हैं । तीनों लिंगों में वही रूप होंगे । अभ्यास ४ में दिए हुए 'पञ्च' आदि के मूल शब्द पञ्चन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् हैं । २. एक से दश तक की संख्याओं के संख्येय (व्यक्ति या वस्तु बोधक क्रमवाचक विशेषण) शब्द क्रमशः प्रथम आदि ऊपर दिए गए हैं । जैसे एक का प्रथम, द्वि का द्वितीय आदि । ३. प्रथम आदि के रूप पु० में रामवत्, स्त्री० में रमा या नदीवत्, नपुं० में गृहवत् चलेंगे । प्रथम आदि से स्त्रीलिंग प्रत्यय (आ या ई) लगने पर इनका तिथि अर्थ भी हो जाता है । ४. कृ धातु के दोनों पदों में रूप स्मरण करो । (देखो धातु सं० ५५) ।

*नियम ६६—लङ् लकार में 'अ' शुद्ध धातु से ही पहले लगता है, उपसर्ग से पहले कभी नहीं । अतः उपसर्गयुक्त धातुओं में लङ् में धातु से पहले 'अ' लगाकर उपसर्ग मिलावें । (संधिकार्य प्राप्त हो तो उसे भी करें) । जैसे हृ = अहरत् । संह = सम-हरत् । व्यवहरत्, प्राहरत् । उपानयत् । अन्वकरोत् ।

*नियम ६७—(अदादिगण) अदादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में कोई विकरण धातु और प्रत्यय के बीच में नहीं लगता है । केवल ति, तः आदि लगते हैं । धातु में लट् आदि में एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं ।

*नियम ६८—(ससजुषो रुः) पद के अन्तिम स् और सजुषको रु (र् या ः) होता है ।

*नियम ६९—(अतो रोरप्लुतादप्लुते) । ह्रस्व अ के बाद रु को उ हो जाता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो । [इस उ को पहले अ के साथ गुण करके ओ हो जाता है और बाद के अ को पूर्वरूपसंधि । अर्थात् अस् (अः) + अ = ओऽ ।] जैसे रामः + अस्ति = रामोऽस्ति । कः + अत्र = कोऽत्र । सः + अयम् = सोऽयम् । (स्मरण रखें कि रामः, कः आदि में स् का ही विसर्ग है । जहाँ अन्य नियम नहीं लगाए, वहाँ नियम ६८ से र रह जाएगा । हरिः + अवदत् = हरिरवदत् ।

अभ्यास २२

१. उदाहरण-वाक्य :—१. पञ्च बालकाः, षड् बालिकाः, सप्त पुस्तकानि, अष्ट जनाः, नव वस्त्राणि, दश फलानि चात्र सन्ति । २. प्रथमः छात्रः, द्वितीया बाला, तृतीयं पुस्तकं, चतुर्थं पुस्तकं, पञ्चमः पुत्रः, षष्ठः कविः, सप्तमं दिनम्, अष्टमं वर्षं, नवमी तिथिः, दशमः क्रोशः । ३. शिष्यः गुरुमनुकरोति । ४. नृपः राज्यम् अधिकरोति । ५. दुर्जनः सज्जनस्य अपकरोति । ६. नृपः चोरं तिरस्करोति । ७. शिष्यः मुनित्रयं नमस्करोति । ८. नरः दुःखं प्रतिकुर्यात् । ९. नृपः सज्जनस्य उपकरिष्यति । १०. विद्या ज्ञानं संस्करोति । ११. कन्या शरीरम् अलंकरोति । १२. प्राज्ञः विमानं धूम्रयानं चाविष्करोति । १३. यतिरेतद् धनं स्वीकरोति । १४. स गुरुम् अन्वकरोत् । १५. गुरुः शिष्यस्य उपाकरोत्, उपकारं वाक्करोत् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. पाँच पुस्तकें, छः छात्र, सात लड़कियाँ, आठ आसन, नौ गुरु, दस राजा यहाँ हैं । २. पाँचवीं पुस्तक, छठा छात्र, सातवीं लड़की, आठवाँ आसन, नवें गुरु, दसवें राजा भी यहाँ पर ही हैं । (ख) ३. पिता का अनुकरण करता है । ४. शत्रु नगर पर अधिकार करता है । ५. चोर मेरा अपकार करता है । ६. विद्वान् मूर्ख का तिरस्कार करता है । ७. मैं गुरु को नमस्कार करता हूँ (नमस्कृ) । ८. तूने शत्रुओं का प्रतिकार किया (प्रतिकृ) । ९. मैंने छात्रों का उपकार किया (उपकृ) । १०. बालिका ने अपने शरीर और मुख को अलंकृत किया । ११. गुरु आसन को अलंकृत करता है । १२. विद्वान् विमान और रेलगाड़ी का आविष्कार करते हैं । १३. शिष्य इस पुस्तक को स्वीकार करता है । १४. मैं शरीर को शुद्ध करता हूँ । १५. संस्कृत भाषा ज्ञान को संस्कृत करती है (संस्कृ) ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) जनकस्य अनुकरोति।नगरेऽधिकरोति जनकमनुकरोति । नगरमधिकरोति १३

(२) अप्रतिकरोः।ओपकरवम्।आलंकरोत् प्रत्यकरोः । उपाकरवम् । अलम- ९६
करोत् ।

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, विधिलिङ् और लृट् में बदलो । (ख) पञ्चन् से दशन् तक के पूरे रूप लिखो । (ग) कृ धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों में रूप लिखो । (घ) उपसर्गयुक्त धातुओं के लङ् में 'अ' प्रारम्भ में किस प्रकार लगता है, नी, ह्, कृ के १० उदाहरण देकर बताओ । (ङ) अदादिगण की धातुओं की विशेषता बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—प्रथमः, षष्ठः, अनुकरोति, संस्करोति, उपकरिष्यति ।

६. सन्धि बनाओ :—सः+अगच्छत् । एषः+अत्र । कः+अयम् । रामः+अवदत् । देवः+अधुना । नृपः+अकरोत् । छात्रः+अपठत् । सः+अयम् । हरिः+असौ । भानुः+अस्ति । कविः+अत्र ।

७. संधि-विच्छेद करो :—कोऽस्ति । रामोऽहसत् । देवोऽयम् । सोऽपि । कोऽपि ।

शब्दकोष—५५० + २५ = ५७५] अभ्यास २३

(व्याकरण)

(क) राहुः (राहु), केतुः (१. केतु ग्रह, २. ध्वजा), कक्षा (भेगी) । (३) ।
 (ख) अद् (खाना) । ग्रस् (निगलना), राज् (शोभित होना), बाष् (दुःख देना),
 लब् (लाघना) । (५) । (घ) एकादशन् (ग्यारह), द्वादशन् (बारह), त्रयोदशन्
 (तेरह), चतुर्दशन् (चौदह), पञ्चदशन् (पंद्रह), षोडशन् (सोलह), सप्तदशन्
 (सतहर), अष्टादशन् (अठारह), एकोनविंशतिः (उन्नीस), विंशतिः (बीस),
 त्रिंशत् (तीस), चत्वारिंशत् (चालीस), पञ्चाशत् (पचास), षष्टिः (साठ),
 सप्ततिः (सत्तर), अशीतिः (अस्सी), नवतिः (नब्बे), [शतम् (सौ)] । (१७) ।

सूचना—(क) राहु—केतु, भानुवत् । कक्षा, रमावत् । (ख) ग्रस्—लंघ, सेवतेवत्
 व्याकरण (संख्या ११ से १००, अद्, जुहोत्यादि०, उत्वसधि)

१. अद् धातु के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो । (देखो धातु० सं० २३) ।

*नियम १००—(क) विंशति (२०) से बाद के सभी संख्यावाची शब्द केवल एकवचन में आते हैं :—विंशत्याद्याः सदकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः । (ख) एकादशन् से अष्टादशन् (११व १८) तक के रूप दशन् के तुल्य बहु० में ही चलेंगे । (ग) एकोनविंशतिः (१९) से नवनवतिः (९९) तक सारे शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग एक० में ही चलते हैं । जिनके अन्त में 'इ' है (जैसे, विंशति, षष्टि आदि), उनके रूप एक० में ही मति (देखो शब्द० सं० १४) के तुल्य चलेंगे । जिनके अन्त में 'तु' है (जैसे, त्रिंशत् आदि), उनके रूप स्त्रीलिङ्ग एक० में सरित् (देखो शब्द० सं० १९) के तुल्य चलेंगे । (घ) संख्येय (क्रमवाचकविशेषण) बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें :—(१) एक से दश तक के संख्येय प्रथम, द्वितीय आदि हैं । (देखो अभ्यास २२) । (२) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों में अन्त में 'अ' लग जाता है । जैसे, एकादशः (११ वाँ) । (३) १९ से आगे संख्येय शब्दों में अन्त में 'तम' लगता है । जैसे, विंशतितमः (२० वाँ) । (४) संख्येय शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं :—पुंलिङ्ग में रामवत्, नपुंसक में गृहवत् । स्त्रीलिङ्ग में अन्त में 'ई' लगाकर 'नदीवत्' । स्त्रीलिङ्ग में केवल प्रथमा, द्वितीया, तृतीया रमावत् होते हैं ।

*नियम १०१—(जुहोत्यादिगण) जुहोत्यादिगण की विशेषता यह है कि इसमें धातु और प्रत्यय के बीच में विकरण नहीं लगता है, जैसे अदादि० में । परन्तु धातु की द्वित्व (दो बार पढ़ना) होता है । एक० में धातु की गुण होता है । (देखो अभ्यास ३८-४०) । हु = जुहोति, दा = ददाति, धा = दधाति ।

*नियम १०२—(हशि च) ह्रस्व अ के बाद र (स् याः) (नियम ९८) को 'उ' हो जाता है, बाद में हश् (३, ४, ५, ह, य, व, र, ल) हों तो । (नियम ९९ बाद में अ हो तब लगता है, यह बाद में हश् हो तो) उ करने पर अ + उ को ओ गुण हो जाता है । अर्थात् अः (अस्) + हश् = ओ + हश् । जैसे, रामः वदति = रामो वदति । ऐसे ही रामो वन्द्यः, मघो वर्धति, नरो हसति, बालो लिखति ।

अभ्यास २३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. एकादश छात्राः, द्वादश बालिकाः, त्रयोदश पुस्तकानि, चतुर्दश फलानि, एकोनविंशतिः पुष्पाणि चात्र सन्ति । २. प्रथमायां कक्षायां विंशतिः, द्वितीयायां त्रिंशत्, तृतीयायां चत्वारिंशत्, चतुर्थ्यां पञ्चाशच्च छात्राः सन्ति । ३. बालो भोजनम् अत्ति, अत्तु, अत्स्यति, अद्यात्, आदत् वा । ४. राहुः सूर्यं ग्रसते । ५. दुःखं मां बाधते । ६. सूर्यः मरीचिभिः राजते । ७. शिष्यः गिरिं लंघते । ८. तृतीयायाः कक्षायाः एकादशः, चतुर्थ्याः द्वादशश्च छात्रः । ९. नवम्याः कक्षायाः विंशतितमो दशम्याश्च त्रिंशत्तमोऽत्र छात्रोऽस्ति । १०. काऽद्य तिथिरस्ति ? पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. प्रथम कक्षा में १९, द्वितीय में २०, तृतीय में ३०, चतुर्थ में ४०, पंचम में ५०, षष्ठ में ६०, सप्तम में ७०, अष्टम में ८०, नवम में ९० और दशम में १०० छात्र हैं । २. प्रथम कक्षा के ११वें, द्वितीय के १५वें, तृतीय के १६वें, चतुर्थ के २०वें, पंचम के ४०वें, षष्ठ के ५०वें, सप्तम के ६०वें, अष्टम के ७०वें, नवम के ८०वें और दशम के ९० वें छात्र को गुरु जी (गुरुवः) बुला रहे हैं । (ख) ३. पुत्र भोजन खाता है (अद्) । ४. बालक फल खावे । ५. बालिका भात खाएगी । ६. शिष्य ने भोजन खाया । ७. राम को फल खाना चाहिए । (ग) ८. राहु सूर्य को निगलता है (ग्रस्) । ९. केतु चन्द्रमा को ग्रसता है । १०. राजा शोभित होता है (राज्) । ११. पाप मुझको दुःख देता है (बाध्) । १२. सेनापति पर्वत को लांघता है ।

३. अशुद्ध वाक्य शुद्ध वाक्य नियम
(१) दशमे कक्षायां शतानि छात्राः । दशम्यां कक्षायां शतं छात्राः । ३३, १०० (क)
(२) सप्तमस्य कक्षायाः षष्टिः ०। सप्तम्याः कक्षायाः षष्टितमः ०। ३३, १०० (घ.)
(३) बालकः फलम् अदत्तु, अदेत् वा । बालकः फलम् अत्तु, अद्यात् वा । ९७, धातुरूपा
४. अभ्यास :—(क) २(ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) २(ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ग) इनके संख्या और संख्येय वाचक शब्द बताओ :—११ से २० तक, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, ८०, ९०, १०० । (घ) अद् धातु के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ङ) जुहोत्यादिगण की विशेषताएँ लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—एकादश, एकादशः, विंशतिः, विंशतितमः, शतम्, अत्ति, आदत्, अत्स्यति ।

६. संधि करो :—रामः + गच्छति । बालकः + वदति । नरः + हसति । देवः + याति । कृष्णः + जयति । छात्रः + वा । शिष्यः + भोजनम् । पुत्रः + दुग्धम् । कः + वा । कः + न ।

७. संधि-विच्छेद करो :—बालो वदति । नृपो वा । पुत्रो याति । शिष्यो भाषते ।

शब्दकोष—५७५ + २५ = ६००] अभ्यास २४

(व्याकरण)

(क) संख्या (गिनती), कीर्ति: (यश) । (२) । (ख) [अस् (होना)], प्रथ् (फैलना, यश आदि का) त्वर् (शीघ्रता करना), क्षुभ् (क्षुब्ध होना), स्पन्द् (फड़कना, हिलना), भ्रंश् (गिरना), भ्राज् (चमकना) । (६) । (ग) अद्यत्वे (आजकल) अतः (इसलिए), शनैः (धीरे), प्रायः (अकसर), मुहुः (बारबार) । (५) । (घ) सहस्रम् (हजार), अयुतम् (१० हजार), लक्षम् (लाख), प्रयुतम् (१० लाख), नियुतम् (१० लाख), कोटिः (करोड़), अर्बुदम् (अरब), खर्वम् (१ खरब), नीलम् (१ नील), पद्मम् (१ पद्म), शंखम् (१ शंख), महाशंखम् (१ महाशंख) । (१२) ।

सूचना—(क) संख्या, रमावत् । कीर्ति, मतिवत् । (ख) प्रथ्—भ्राज्, सेवतेवत् ।

व्याकरण (संख्याएँ, अस्, दिवादि०, यत्वसंधि)

१. अस् धातु के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो । (देखो धातु० २४) ।

*नियम १०३—(क) शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, आदि एक० में ही आते हैं । कोटि स्त्रीलिंग हैं, शेष सब नपुंसक० । जैसे, शतं सहस्रं वा छात्राः, नराः, नार्यः, गृहाणि । संख्यावाचक शब्द पहले होनपर या विशेष्यरूप में प्रयुक्त होनेपर ये शब्द द्वि०, बहु० में भी आते हैं । (ख) शतम् आदि के रूप एक० में गृह्यत् चलेंगे । कोटि के मतिवत् । (ग) २१, ३१, ४१ आदि संख्याशब्द बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें । (देखो परिशिष्ट, संख्याशब्द) (१) विंशतिः, त्रिंशत् आदि के पूर्व एक, द्वि, त्रि आदि शब्द लगाकर क्रमशः ये संख्याएँ बनती हैं । (२) 'एक' शब्द सब स्थानों पर 'एक' ही रहता है । केवल एकादश में दीर्घ होता है । एकविंशतिः । (३) द्वि, त्रि और 'अष्टन्' शब्दों को 'विंशति' आदि से पूर्व क्रमशः द्वा, त्रयस्, अष्टा हो जाता है, केवल अशीति को छोड़कर । (बाद में संधि नियम भी लगेंगे) । द्वाविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत्, अष्टादश । परन्तु द्वयशीतिः, त्रयशीतिः, अष्टाशीतिः, हो होंगे । (४) चतुर पंच, षट् (६), सप्त, नव, ये ऐसे ही रहते हैं । केवल संधिनियम लगेंगे । १६ के लिए षोडश है । (५) २६, ३६ में ६ के लिए 'नव' लगता है या अगली संख्या से पूर्व एकोन या ऊन लगाकर रूप बनते हैं ।

नियम १०४—(दिवादिगण) (दिवादिभ्यः श्यन्) दिवादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'य' लगता है । धातु को गुण नहीं होता ।

*नियम १०५—(भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि) भोः, भगोः, अघोः शब्द और अ या आ के बाद (नियम ६८) को य होता है, बाद में अश् (स्वर, ३, ४, ५, य व र ल) हों तो । (यदि बाद में व्यंजन हो तो य का लोप हो जाता है, स्वर बाद में हो तो लोप ऐच्छिक है । य का लोप होनेपर संधि कार्य नहीं होता । अःया आः + अश् = अ या आ + अश्, अर्थात् स् या विसर्ग नहीं रहता । देवाः + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति । ऐसे ही बाला हसन्ति, नरा आगच्छन्ति । राम इच्छति । क एषः ।

अभ्यास २४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. एताः संख्याः सन्ति, शतं सहस्रं लक्षं प्रयुतं कोटिः पद्मं शंखं महाशंखं च । २. अद्यत्वे यस्य समीपे धनमस्ति, तस्य कीर्तिः प्रथते । ३. सेना-पतिः त्वरते । ४. दुर्जनः प्रायः क्षोभते । ५. मम नेत्रं मुहुः स्पन्दते । ६. सूर्यो भ्राजते । ७. एकविंशतिः, द्वाविंशतिः, त्रयस्त्रिंशत्, चतुश्चत्वारिंशत्, पञ्चपञ्चाशत्, षट्षष्टिः, सप्तसप्ततिः, अष्टाशीतिः, नवनवतिः, (एकोनशतम्) वा मनुष्याः । ८. रामः अस्ति, अस्तु, आसीत्, भविष्यति वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १.२१ मनुष्य, ३१ कन्याएँ, ४२ पुस्तकें, ५३ फल, ६४ फूल, ७५ वस्त्र, ८६ विद्यालय और ९७ पाठशालाएँ हैं । २. २३ फल, ३४ फूल, ४५ पुस्त-कें, ५६ वस्त्र, ६७ कन्याएँ, ७८ मनुष्य, ८९ दिन, ९८ वर्ष । ३. २ सौ, ३ सहस्र, १ हजार, १० हजार, १ लाख, १० लाख, १ करोड़, १० करोड़, १ अरब, १० अरब, १ खरब, १० खरब, १ नील, १० नील, १ पद्म, १० पद्म, १ शंख, १० शंख, १ महाशंख । (ख) ४. आजकल धन ही धर्म और सत्य है । ५. राम की कीर्ति फैलती है । ६. इसकी आँख धीरे-धीरे फड़क रही है । ७. वह प्रायः क्षुब्ध हो जाता है । ८. कृष्ण बारबार शीघ्रता करता है । ९. बालक घर के ऊपर है, अतः वहाँ से गिरता है (भ्रंश) । १०. सूर्य की किरणें चमकती हैं (भ्राज) । (ग) ११. वह है । १२. मैं हूँ । १३. तू भी ह । १४. वह था । १५. तू भी था । १६. मैं ही था । १७. वह वहाँ होगा । १८. तू भी वहाँ होगा । १९. मैं यहाँ ही हूँगा । २०. वह यहाँ होवे । २१. तू वहाँ हो । २२. मैं यहीं होऊँ ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहम् आसीत्, आसीः, आस्म ।	अहम् आसम् ।	धातुरूप
(२) अहम् असिष्यामि, भविष्यति ।	अहं भविष्यामि ।	"
(३) त्वम् अस, असेः, अस्तु वा ।	त्वम् एधि, स्याः वा ।	"

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) २ (ग) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो । (ग) अस् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (घ) १ से १०० तक पूरी गिनती संस्कृत में बताओ । (ङ) दिवादिगण की विशेषता बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—अस्ति, स्मः, अस्तु, एधि, आसीत्, आसन्, आसीः, आसम्, स्यात्, स्युः, स्याः, स्याम । प्रथताम्, स्पन्देत, अभ्रंशत, भ्राजिष्यते, त्वरते ।

६. संधि करो :—देवाः + हसन्ति । नराः + गच्छन्ति । छात्राः + लिखन्ति । कन्याः + आगच्छन्ति । रामः + ऐच्छत् । पुत्राः + इच्छन्ति । शिष्याः + वदन्ति । बालः + इच्छति । सः + आगच्छत् ।

७. संधि-विच्छेद करो :—छात्रा हसन्ति । राम इच्छति । स एव । पुत्र आगच्छति । राम इव । कन्या इच्छन्ति । बाला एते । शिष्या अमी । नरा इमे । क एष । राम इति ।

शब्दकोष—६०० + २५ = ६२५] अभ्यास २५

(व्याकरण)

(क) सखि (मित्र), शाटिका (साड़ी) । (२) । [(ख) ब्रू (बोलना) ।] (ग) उच्चैः (१. ऊपर, २. ऊँचा, ३. ऊँचे स्वर से) नीचैः (१. नीचे, २. नीचा, ३. धीरे स्वर से), तारस्वरेण (उच्च स्वर से) । (३) । (घ) सुन्दरम् (सुन्दर) समीचीनम् । (सुन्दर, अच्छा), शोभनम् (सुन्दर), मधुरम् (मीठा), शीतलम् (ठंडा), उष्णम् (गर्म), कोमलम् (कोमल), तीक्ष्णम् (१. तेज, २. तीखा) । स्वकीय (अपना), परकीय (पराया), त्वदीय (तेरा), मदीय (मेरा), भवदीय (आपका), तदीय (उसका), श्वेत (१. सफेद, २. स्वच्छ), हरित (हरा), नील (नीला), पीत (पीला), रक्त (लाल), कृष्ण (काला) । (२०) ।

व्याकरण (सखि, ब्रू, स्वादि०, गुण, वृद्धि, संप्रसारण, सुलोपसंधि)

१. सखि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ३) ।

२. ब्रू धातु के परस्मैपद के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० २५) । लट् में ब्रू को वच् हो जाता है, अतः वक्ष्यति, वक्ष्यतः, आदि रूप बनेंगे ।

*नियम १०६—दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण, आदि के लिए यह विवरण-पत्र ठीक स्मरण कर लें । ऊपर मूल स्वर दिए गए हैं, उनके स्थान पर गुण, वृद्धि आदि कहने पर ऊपर के मूल स्वर के नीचे गुण आदि के सामने जो स्वर आदि दिए गए हैं, वे होंगे । आगे जहाँ भी गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि कहा जाए, वहाँ इस विवरण-पत्र के अनुसार कार्य करें । (रिक्त स्थानों पर वह कार्य नहीं होता) ।

१. स्वर	अ, आ	इ, ई	उ, ऊ	ऋ, ॠ	लृ	ए	ऐ	ओ	औ
२. दीर्घ	आ	ई	ऊ	ऋ	—	—	—	—	—
३. गुण	अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	—	ओ	—
४. वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	ऐ	औ	औ
५. यण् (संधि)	—	य्	व्	र्	ल्	—	—	—	—
६. अयादि (,,)	—	—	—	—	—	अय्	आय्	अव्	आव्
७. संप्रसारण	य् को इ, व् को उ, र् को ऋ, ल् को लृ ।	(यण् संधि का उलटा कार्य) ।							

नियम १०७—(स्वादिगण) (स्वादिभ्यः इतुः) स्वादिगण की धातुओं की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'नु' विकरण लगता है । धातु को गुण नहीं होता । 'नु' को एक० परस्मै० में गुण होता है । (देखो अभ्यास ४७ से ४९) ।

*नियम १०८—(एतत्तदोः सुलोपोः) एवः और सः के स् अर्थात् विसर्ग (:) का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो । (बाद में अ हो तो 'ओऽ' होता है, नियम ९९ । और कोई स्वर हो तो भी विसर्ग का लोप हो जाता है, नियम १०५) । सः + करोति = स करोति । इसी प्रकार स पठति, स लिखति । एष करोति ।

अभ्यास २५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. स मदीयः त्वदीयश्च सखा अस्ति । २. स्वकीयं सखायं पश्य । ३. स्वकीयस्य सख्युः सुन्दरं मुखं पश्य । ४. सख्यौ विश्वासं कुरु । ५. स शोभनं, मधुरं च ब्रवीति, ब्रवीतु, ब्रूयात्, अब्रवीत्, वक्ष्यति वा । ६. अहम् उच्चः तारस्वरेण च ब्रवीमि, अब्रवम्, वक्ष्यामि वा । ७. त्वं शनैः नीचैः वा ब्रवीषि, अब्रवीः, वक्ष्यसि वा । ८. स धर्मं ब्रूयात् । ९. अहं सत्यं ब्रवीमि, त्वमपि सत्यं ब्रूहि । १०. स्वकीयं श्वेतं वस्त्रमानय, परकीयां रक्तां शाटिकां न आनय । ११. त्वदीयमेतत् कृष्णं पुस्तकम्, मदीयमेतत् पीतं वस्त्रम्, तदीयमिदं नीलं पुष्पम्, भवदीयमदो हरितं वस्त्रम् । १२. उष्णं शीतलं च जलमानय । १३. कोमलं शोभनं च ब्रूहि, न तु तीक्ष्णम् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह उसका मित्र है । २. अपने मित्र को यहाँ लाओ । ३. उसके मित्र को धन दो । ४. मेरे मित्र का यह कार्य कर दो (कृ) । ५. पराए मित्र पर विश्वास न करो । ६. उस मनुष्य का वस्त्र श्वेत है । ७. उस कन्या की साड़ी हरी है और इसकी लाल । ८. उसके नीले वस्त्र को लाओ । ९. मेरे पीले वस्त्र को न ले जाओ । १०. अग्नि उष्ण है और जल शीतल । ११. फूल कोमल और सुन्दर है । १२. फल मीठा और अच्छा है । (ख) (ब्रू धातु) १३. वह ऊँचे स्वर से बोलता है । १४. मैं धीरे बोलता हूँ । १५. तू तीखा बोलता है । १६. वह बोले । १७. तू बोल । १८. मैं बोलूँ । १९. वह बोला । २०. तू बोला । २१. मैं बोला । २२. वह बोलेगा । २३. तू बोलेगा । २४. मैं बोलूँगा ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) तदीयं सखायं धनं वितर ।	तदीयाय सख्ये धनं वितर ।	३३, ३४
(२) तस्य कन्यायाः शाटिका हरितम्० ।	तस्याः कन्यायाः शाटिका हरिता० ।	३३
(३) त्वं ब्रवसि, अब्रवः ब्रव ।	त्वं ब्रवीषि, अब्रवीः, ब्रूहि ।	धातुरूप
(४) स ब्रूष्यति, अब्रवत्, ब्रवेत् ।	स वक्ष्यति, अब्रवीत्, ब्रूयात् ।	„

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) सखि शब्द के पूरे रूप लिखो । (ग) ब्रू धातु (परस्मैपद) के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (घ) स्वादिगण की विशेषताएँ बताओ । (ङ) किन स्वरों को दीर्घ, गुण, वृद्धि करने पर क्या होता है, बताओ । (च) संप्रसारण कहने से किसके स्थान पर क्या होगा, बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—शोभनम्, कोमलम्, त्वदीयम्, भवदीयः, मदीयः, तदीया, श्वेतम्, रक्ता, ब्रवीति, ब्रवीमि, ब्रवीतु, ब्रूहि, वक्ष्यति, अब्रवीत्, अब्रवम्, ब्रूयात्, तारस्वरेण ।

६. संधि करो :—सः + गच्छति । सः + पठति । सः + ब्रवीति । एषः + हसति । एषः + वदति ।

७. संधि-विरुद्ध करो :—स हरिः । स शिवः । स रुद्रः । स करोति । एष गच्छति । एष रामः ।

शब्दकोष—६२५ + २५ = ६५०] अभ्यास २६

(व्याकरण)

(क) कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (१. चुराने वाला, २. नाशक) धर्तृ (धारक); श्रोतृ (सुननेवाला), वक्तृ (बोलने वाला), नप्तृ (नाती), सवितृ (१. सूर्य, २. प्रेरक) अध्येतृ (पढ़ने वाला), गन्तृ (जानेवाला), द्रष्टृ (दर्शक), त्वष्टृ (बढ़ई), धातृ (१. ब्रह्मा, २. धारक), विधातृ (१. ईश्वर, २. कर्ता), नेतृ (१. नेता, २. ले जाने वाला), निर्मातृ (बनाने वाला), दातृ (देने वाला), द्वेष्टृ (द्वेष कर्ता), स्तोतृ (स्तुति कर्ता), ज्ञातृ (जानने वाला), भोक्तृ (१. खाने वाला, २. उपभोग कर्ता)। पाठः (पाठ), लेखः (लेख), ग्रन्थः (ग्रन्थ), भारः (बोझ)। (२४)। (ख) रुद् (रोना)। (१)

सूचना—(क) कर्तृ—भोक्तृ, कर्तृवत्। पाठ—भार, रामवत्।

व्याकरण (कर्तृ, रुद्, कर्मवाच्य, भाववाच्य, तुवादि०)

१. कर्तृशब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ५)।

२. रुद् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० २६)।

नियम १०६—(तुवादिभ्यः शः) तुवादिगण की धातुओं की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' (भ्वादि० के तुल्य) लगता है। भ्वादि० में धातु को गुण होता है, परन्तु तुवादि० में धातु को गुण सर्वथा नहीं होता। (देखो अभ्यास ५, ५०, ५१)। जैसे, लिखति, तुदति, मिलति, क्षिपति, दिशति।

कर्मवाच्य और भाववाच्य

*नियम ११०—(क) संस्कृत में ३ वाच्य होते हैं :—१. कर्तृवाच्य, २. कर्मवाच्य, ३. भाववाच्य। सकर्मक (कर्मयुक्त) धातुओं के दो वाच्यों में रूप होते हैं, १. कर्तृवाच्य, २. कर्मवाच्य। अकर्मक (कर्म-रहित) धातुओं के रूप कर्तृवाच्य और भाववाच्य में ही होते हैं, कर्मवाच्य में नहीं। अकर्मक की साधारणतया पहचान यह है कि जिसमें किम् (किसको, क्या) का प्रश्न नहीं उठता। १. कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है, क्रिया कर्ता के ही अनुसार चलती है। कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया। २. कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरुष, वचन और लिंग होगा। कर्ता के अनुसार कुछ नहीं। कर्मवाच्य की पहचान है, कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, क्रिया कर्म के अनुसार। ३. भाववाच्य में कर्ता में तृतीया, कर्म होगा ही नहीं, क्रिया में प्रथमपुरुष का एकवचन ही। (ख) (सार्वधातुक यक्) कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (अर्थात्, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच में 'य' लग जाता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है, धातु चाहे किसी पद की हो। लट् में य नहीं लगेगा। धातु के साथ य लगाकर धातु के रूप 'सेब् धातु के तुल्य होंगे, या युष् के तुल्य (धातु० सं० ४१)। लट् में इष्यते या स्यते आदि।। गम् > गम्यते, गम्यताम्, अगम्यत, गम्येत, गमिष्यते।

अभ्यास २६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है—मया पुस्तकं पठ्यते । २. मया, त्वया, युष्माभिः, अस्माभिः, तेन, तैः, वा गृहं गम्यते । ३. मया फलं खाद्यते, मया फले खाद्यते, मया फलानि खाद्यन्ते । ४. जनकं बालः दृश्यते, बालौ दृश्येते, बालाः दृश्यन्ते । ५. तेन अन्नं भूयते । ६. पुस्तकस्य कर्त्रा लेखो लिख्यते, श्रोत्रा हस्यते, गन्त्रा ग्रामो गम्यते, अध्येतृभिः पाठाः पठ्यन्ते, नष्ट्रा भोजनं पच्यते, सवित्रा भास्यते, द्रष्टृभिः छात्राः दृश्यन्ते, त्वष्ट्रा धाता विधाता च नम्यते, नेत्रा जनाः नीयन्ताम्, स्तोतृभिः ज्ञातृभिश्च दाता सेव्यते, द्वेष्टा त्यज्यते, भोक्तृभिः भोजनं पच्यते खाद्यते च । ७. बालकः उच्चैः, रोदिति, अरोदीत्, रोदितु, रुद्यात्, रोदिष्यति वा । ८. बालकेन रुद्येत उच्चैः रुद्यते, अरुद्यत, रुद्यताम्, रोदिष्यते वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. तेरे द्वारा, मेरे द्वारा और उनके द्वारा हँसा जाता है । २. पुस्तक के कर्ता द्वारा ग्रन्थ लिखा जाता है । ३. धन के हर्ता द्वारा धन ले जाया जाता है । ४. भार के धारणकर्ता द्वारा भार यहाँ लाया जाता है । ५. श्रोताओं के द्वारा हँसा जाता है । ६. वक्ता के द्वारा भाषण दिया जाता है (भाष्) । (ख) ७. नाती के द्वारा गुरु की सेवा की जावे । ८. सूर्य के द्वारा तपा जाए (तप्) । ९. अध्येता के द्वारा तीन ग्रन्थ पढ़े जाएँ । १०. गाँवों को जाने वालों के द्वारा गाँवों को जाया जावे । ११. दर्शक के द्वारा दो छात्र देखे जावें । (ग) १२. नगर में बड़ई, नेता, दानी, दर्शक, श्रोता, द्वेषकर्ता, निर्माता, स्तुतिकर्ता, उपभोगकर्ता, ज्ञाता और पढ़ने वाले सारे ही रहते हैं । (घ) १३. बालक रोता है । १४. तू रोता है । १५. मैं रोता हूँ । १६. वह रोवे । १७. तू रो । १८. मैं भी रोऊँ । १९. वह रोया । २०. तू रोया । २१. मैं रोया । २२. वह रोएगा । २३. तू भी रोएगा । २४. मैं नहीं रोऊँगा ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

- (१) त्वया मया तैः हस्यन्ते । त्वया मया तैः हस्यते । ११० (क)
 (२) पुस्तकस्य कर्ता ग्रन्थं लिख्यन्ते । पुस्तकस्य कर्त्रा ग्रन्थः लिख्यते । ११० (क)
 (३) ग्रामान् गन्त्रा ग्रामं गच्छेयुः । ग्रामान् गन्तुभिः ग्रामाः गम्येरन् ११० (क, ख)
 (४) रोदति, रोदामि, रोदेत्, रोद । रोदिति, रोदिमि, रुद्यात्, रुदिहि धातुरूप ।

४. अभ्यास :—(क) २ (क) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) २ (ख) को लोट्, लङ्, लृट् में बदलो । (ग) २ (घ) को बहुवचन बनाओ । (घ) रुद् धातु के पाँचों लकारों में रूप बताओ । (ङ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—कर्तृ, हर्तृ, धर्तृ, श्रोतृ, वक्तृ, अध्येतृ, गन्तृ, नेतृ, दातृ, ज्ञातृ, भोक्तृ । (च) तुदादिगण की विशेषता बताओ । (छ) कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्तृवाच्य से क्या अन्तर होता है, १० उदाहरण देकर समझाओ । (ज) इन धातुओं के कर्मवाच्य में पाँचों लकारों में रूप बनाओ :—पठ्, सेव्, नम्, गम्, नी, भाष् ।

५. वाक्य बनाओ :—पठ्यते, सेव्यते, गम्यते, नंस्यते, नीयते, नेष्यते, भाष्यते ।

शब्दकोष-६५० + २५ = ६७५] अभ्यास २७

(व्याकरण)

(क) पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई), जामातृ (जवाई), श्वशुरः (श्वसुर), गानम् (गाना), वचनम् (वचन) । (६) । (ख) [दुह् (दुहना)], धा (१. धारण करना, २. रखना), मा (१. नापना, २. तोलना), हा (छोड़ना), अव + सा (१. नष्ट होना, २. नष्ट करना), नि + गृ (निगलना), उद् + गृ (१. उगलना, २. बोलना), जृ (वृद्ध होना), शृ (१. नष्ट होना, २. नष्ट करना), पू (१. पालन करना, २. पूर्ण करना), वृ (चुनना, छांटना), स्तु (स्तुति करना), हृ (हवन करना), मन्थ् (मथना), बन्ध् (बाँधना), भज् (१. भजन करना, २. सेवा करना), यज् (यज्ञ करना), वप् (१. बीज बोना, २. काटना), शप् (शाप देना), ग्रह् (लेना) । (१६) ।

व्याकरण (पितृ, दुह्, कर्मवाच्य, भाववाच्य, रुधादि०)

१. पितृ शब्द के रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० ६) । पितृवत् भ्रातृ, जामातृ ।

२. दुह् धातु (परस्मैपद) के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो (देखो धातु ० सं० २७)

नियम १११. (रुधादिगण) (रुधादिभ्यः इनम्) रुधादि० की विशेषता यह है कि धातु के प्रथम अक्षर के बाद न या न् विकरण जुड़ता है । धातु को गुण नहीं होता ।

* नियम ११२—धातु से कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें । सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में ही ये नियम लगते हैं । (क) धातु के साथ य लगता है । आत्मनेपद ही होता है । साधारणतया धातु में अन्तर नहीं होता । जैसे भूयते, पठ्यते, लिख्यते, रक्ष्यते । (ख) धातु को गुण नहीं होता । धातु मूलरूप में रहती है । गच्छ, पिब्, जिघ्र आदि नहीं होता । (ग) (धुमास्थागापा०) आकारान्त धातुओं में से इनके ही आ को ई हो जाता है :—दा, धा, मा, स्था, गा, पा (पीना), हा (छोड़ना), सा । अन्यो को कुछ नहीं । जैसे, दीयते, धीयते, मीयते, स्थीयते, गीयते, पीयते, हीयते, सीयते । अन्यत्र ज्ञायते, स्नायते आदि । (घ) (रिङ्शयण०) ह्रस्व ऋ अन्तवाली धातुओं को ऋ के स्थान पर 'रि' हो जाता है । जैसे कृ, हृ, घृ, भृ, के क्रियते, ह्रियते, ध्रियते, भ्रियते । परन्तु स्मृ स्मर्यते । (ङ) दीर्घ ऋ अन्तवाली धातुओं को ईर् होता है । पवर्ग प्रारम्भ में हो तो ऊर् । गृ > गीर्यते । जृ > जीर्यते । शृ > शीर्यते । तृ > तीर्यते । परन्तु पू का पूर्यते । (च) (वचिस्वपि० ग्रहिण्या०) वच् आदि धातुओं को संप्रसारण होता है । (ञ) वच् > उच्यते । यज् > इच्यते । वप् > उच्यते । स्वप् > मुच्यते । बह् > उह्यते । बद् > उच्यते । ग्रह् > गृह्यते । प्रच्छ् > पृच्छ्यते । वस् > उच्यते । (छ) ह्रस्व इ, उ को ई, ऊ हो जाता है । हु > हूयते, जि > जीयते, चि > चीयते । (ज) (अनिदितां हल०) धातु के बीच के न् का प्रायः लोप होता है । मन्थ् > मथ्यते, बन्ध् > बध्यते, भ्रंश् > भ्रश्यते, खंस् > खस्यते । इनमें न रहेगा, बन्ध्यते, चिन्त्यते, निन्ध्यते । (झ) चुरादि० और णिच् वाली धातुओं के इ (अय) का लोप होता है । चोर्यते, कथ्यते, भक्ष्यते ।

अभ्यास २७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. पित्रा पुत्रः उच्यते । २. भ्रात्रा भ्राता वन्द्यते । ३. जामात्रा श्वशुरः स्तूयते । ४. मया दुग्धं दुह्यते, दुह्यताम्, दुह्येत, अदुह्यत वा । ५. मया त्वया तेन तैः वा ग्रन्थः पठ्यते, लेखः लिख्यते, नगरं रक्ष्यते, कन्या दृश्यते, धनं लभ्यते, अजा नीयते, धनं याच्यते । ६. अस्माभिः युष्माभिश्च दानं दीयते, वस्त्राणि धीयन्ते, तण्डुलाः माषाः यवाश्च मीयन्ते, गृहे स्थीयते, गानं गीयते, जलं पीयते, कार्यं हीयते, शत्रुः अवसीयते । ७. तैः कार्याणि क्रियन्ताम्, धनानि ह्रियन्ताम्, वस्त्राणि ध्रियन्ताम्, बालाश्च भ्रियन्ताम्, पाठाश्च स्मर्यन्ताम् । ८. तेन भोजनं गीर्यते, शब्दः उद्गीर्यते, जलं तीर्यते, कार्यं पूर्यते, सखा व्रियते । ९. तेन वचनम् उच्यते, प्रातः इज्यते, बीजानि उप्यन्ते, भारः उह्यते, पुष्पं गृह्यते, छात्रः पृच्छ्यते । १०. मया रिपुः जीयते, अग्नी हूयते, फलानि चीयन्ते, दुग्धं मध्यते, दुर्जनः बध्यते, गुरुः कथ्यते, भोजनं भक्ष्यते ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मेरे द्वारा पाठ पढ़ा जाता है । २. तेरे द्वारा लेख लिखे जाते हैं । ३. राम के द्वारा दूध दुहा जाता है । ४. राजा के द्वारा नगर की रक्षा की जाती है । ५. शिष्य के द्वारा भार ले जाया जाता है । ६. मेरे, तेरे और राम के द्वारा दान दिया जाता है, जल पिया जाता है, पुस्तकें रक्खी जाती हैं, वस्त्र नापा जाता है, गाने गाए जाते हैं, विद्यालय में रहा जाता है (स्था), घर छोड़ा जाता है, पाप नष्ट किए जाते हैं । (ख) ७. मेरे द्वारा भोजन निगला जाए, वचन कहा जाए (उद्गृ), अध्ययन पूर्ण किया जाए, तैरा जाए, कन्या छाँटी जाए । ८. उसके द्वारा कार्य किया जाय, वस्त्र हरण किए जाएँ, वचन कहा जाए । (ग) ९. तेरे द्वारा वस्त्र धारण किया गया, पाठ पूछा गया, शत्रु जीता गया, गुरु स्तुति किया गया, समुद्र मथा गया, प्रातः काल हवन किया गया, फूल चुने गए, भोजन खाया गया, ईश्वर का चिन्तन किया गया (चिन्त), गुरु की वन्दना की गई । १०. पिता के द्वारा वृद्ध हुआ जाता है, हरि का भजन किया जाता है (भज), दुर्जन को शाप दिया जाता है, बीज बोया जाता है, बालक लिया जाता है (ग्रह्) । ११. भाई और जवाँई के द्वारा भोजन किया जाता है । (घ) १२. वह दूध दुहता है । १३. तू भी दूध दुहता है । १४. मैं दूध नहीं दुहता । १५. वह दूध दुहे । १६. तू दूध दुह । १७. आज मैं ही दूध दुहूँ । १८. उसने दूध दुहा । १९. मैंने दूध दुहा । २०. वह दूध दुहेगा, तू भी दुहेगा ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

(१) दायते, पायते, कृयते, त्रियते, वच्यते । दीयते, पीयते, क्रियते, तीर्यते, उच्यते । ११२
(२) दोहति, अदोहत्, दोहिष्यति, दोहेत् । दोग्धि, अधोक्, धोक्ष्यति, दुह्यात् । धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(क) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) २(ख) को लट् और लङ् में तथा २(ग) को लोट् में बदलो । (ग) २(घ) को बहुवचन बनाओ । (घ) पितृ, भ्रातृ के पूरे रूप लिखो । (ङ) दुह् धातु के पाँचों लकारों में रूप लिखो । (च) रुधादिगण की विशेषता बताओ ।

शब्दकोष-६७५ + २५ = ७००] अभ्यास २८

(व्याकरण)

(क) गौः (१. गाय, २. बैल), भृत्यः (नौकर), जनः (मनुष्य), खलः (दुष्ट), दुष्टः (दुष्ट), वेदः (वेद), ऋग्वेदः (ऋग्वेद), यजुर्वेदः (यजुर्वेद), सामवेदः (सामवेद), अथर्ववेदः (अथर्ववेद), देवः (देवता) । मित्रम् (मित्र), आभूषणम् (आभूषण) । शिला (पत्थर), गोता (भगवद्गीता), वार्ता (१. बात. २. समाचार) । (१६) । (ख) स्वप् (सोना), आस् (१. बैठना, २. होना) । अव + गम् (जानना), श्रु (सुनना), प्र + विश् (प्रविष्ट होना), आ + रुह् (१. चढ़ना, २. उगना), उत् + तृ (१. पार होना, २. उत्तीर्ण होना), प्र + आप् (१. प्राप्त करना, २. प्राप्त होना) भुज् (१. खाना, २. रक्षा करना) । (६) ।

व्याकरण (गो, स्वप्, प्रेरणार्थक धातुएँ (णिच् प्रत्यय, चुरादि०)

१. गो शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ७) ।

२. स्वप् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० सं० २८)

नियम ११३. (०चुरादिभ्यो णिच्) चुरादिगणी धातु की विशेषता यह है कि धातु के अन्त में णिच् (अय) लग जाता है । धातु में नियम ११४ के तुल्य वृद्धि या गुण होता है । धातु में अय लगाकर परस्मै० में रूप भवतिवत्, आत्मने० में सेवतेवत् ।

*नियम ११४. (हेतुमति च) प्रेरणार्थक धातु उसे कहते हैं, जहाँ कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे से काम कराता है । जैसे पढ़ना > पढ़वाना, लिखना > लिखवाना, जाना > भेजना । प्रेरणार्थक धातु में शुद्ध धातु के अन्त में णिच् (अर्थात् अय) लग जाता है । धातु के अन्त में अय लगाकर परस्मै० में रूप भवतिवत् और आत्मने० में सेवतेवत् चलेंगे । धातु के अन्तिम इ, उ, ऋ को वृद्धि (अर्थात् क्रमशः ऐ, औ, आर्) हो जाता है, बाद में अयादिसंघि भी । उपधा (अर्थात् अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर) में अ को आ तथा इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् गुण हो जाता है । जैसे, कृ > कारयति, पठ् > पाठयति, लिख् > लेखयति । गम् का गमयति ।

*नियम ११५. प्रेरणार्थक धातुओं के साथ मूल धातु के कर्ता में तृतीया होती है, और कर्म में पूर्ववत् द्वितीया ही रहती है, क्रिया कर्ता के अनुसार होती है । जैसे, शिष्यः पुस्तकं पठति > गुरुः शिष्येण पुस्तकं पाठयति । नृपः भृत्येन कार्यं कारयति ।

*नियम ११६. (गतिवृद्धिप्रत्यवसानार्थ०) इन अर्थों वाली धातुओं के प्रेरणार्थक रूप के साथ मूलधातु के कर्ता में तृतीया न होकर द्वितीया होती है :—जाना, जानना, समझना, खाना (अद्, खाद्, भक्ष को छोड़कर), पढ़ना, अकर्मक धातुएँ, बोलना, देखना (दृश्), सुनना (श्रु), प्रवेश (प्रविश्), चढ़ना (आरुह), तरण (उत्तृ), ग्रहण (ग्रह्), प्राप्ति (प्राप्), पीना, ले जाना (हृ), (नी, वह् को छोड़कर) । जैसे बालः गृहं गच्छति > बालं गृहं गमयति । शिष्यान् वेदम् अवगमयति । माता पुत्रमन्नं भोजयति । गुरुः छात्रं शास्त्रं पाठयति ।

अभ्यास २८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. गुरुः बालकेन लेखं लेखयति । २. खलः दुष्टो वा भृत्येन धनं चोरयति । ३. बालिका बालं स्वापयति । ४. हरिः देवान् अमृतं भोजयति । ५. आभूषणं शिलायाम् आसयत्, अस्थापयत् वा । ६. पुत्रं सत्यं भाषयति । ७. पिता पुत्रं चन्द्रं दर्शयति । ८. मित्रं वार्तां श्रावयति । ९. गुरुं गृहं प्रवेशयति । १०. भृत्यं वृक्षम् आरोहयेत् । ११. रामं गङ्गाम् उत्तारयतु । १२. सज्जनम् अन्नं ग्राहयिष्यति । १३. मित्रं नगरं प्रापयति । १४. भृत्येन भारं ग्राममहारयत् । १५. चत्वारो वेदाः, ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्च । १६. गौः स्वपिति, स्वपितु, स्वप्यात्, अस्व-पत्, स्वप्स्यति वा । १७. गामानय । १८. गोः दुग्धमेतत् । १९. गवि शिलां न पातय ।

२. संस्कृत बनाओः—(क) १. राम नौकर से काम कराता है । २. पिता पुत्र से लेख लिखवाता है । ३. गुरु शिष्य को गाँव में भेजता है (गमय) । ४. दुष्ट धन चोरी करवाता है । ५. पुत्र को गीता समझाता है (अवगमय) । ६. मित्र को भोजन खिलाता है (भोजय) । ७. गुरु शिष्य को चारों वेद पढ़ाता है । ८. पुत्र को शिला पर बैठाता है (आसय) । ९. भाई बालक को सुलाता है (स्वाप) । (ख) १०. मित्र से धर्म कहवावे (भाषय) । ११. पिता पुत्र को सूर्य दिखावे (दर्शय) । १२. पिता को समाचार सुनावे (श्रावय) । १३. मित्र को घर में प्रविष्ट करावे (प्रवेश) । १४. दुष्ट को पेड़ पर चढ़ावे (आरोहय) । १५. कृष्ण को यमुना पार करावे (उत्तारय) । १६. बालक को पुस्तक पकड़ावे (ग्राहय) । १७. नौकर पुत्र को गाँव पहुँचावे (प्रापय) । १८. नौकर से बोझा लिवा जावे (हारय) । (ग) १९. गाय सोती है । २०. गाय को देखो । २१. गाय का दूध दुहता है । २२. गाय के लिए जल लाओ । २३. यह गाय का बच्चा (वत्सः) है । २४. गाय पर बोझ न रखो (स्थापय) । (घ) २५. वह सोता है । २६. तू सोता है । २७. मैं सोता हूँ, २८. वह सोवे । २९. तू सो । ३०. मैं सोऊँ । ३१. वह सोया । ३२. तू सोया । ३३. मैं सोया । ३४. वह सोएगा ।

३.	अशुद्धवाक्य	शुद्धवाक्य	नियम
(१)	रामः भृत्यं कार्यं करोति ।	रामः भृत्येन कार्यं कारयति ।	११४, ११५
(२)	शिष्येन ग्रामे गमयति ।	शिष्यं ग्रामं गमयति ।	११६, १५
(३)	स्वपति, स्वपामि, स्वपेत् ।	स्वपिति, स्वपिमि, स्वप्यात् ।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(क) को लट्, विधिलिङ्, लङ् में बदलो । (ख) २(ख) को लट्, लृट्, लङ् में बदलो । (ग) २(घ) को बहुवचन बनाओ । (घ) गो शब्द के पूरे रूप लिखो । (ङ) स्वप् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (च) प्रेरणार्थक धातुओं में से किन धातुओं के साथ मूलधातु के कर्ता में तृतीया नहीं होती, सोदाहरण लिखो । (छ) चुरादि की विशेषता लिखो ।

५. इन धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाओः—पठ्, लिख्, गम्, दृश्, दुह्, स्वप्, प्र + आप्, चर्, कथ्, भुज्, आस्, श्रु, भाष्, आरुह्, प्रविश्, उत् + तृ, ग्रह्, ह्, कृ, धृ, पत् ।

शब्दकोष—७०० + २५ = ७२५] अभ्यास २९

(व्याकरण)

(क) भगवत् (भगवान्), भवत् (आप), (सर्वनाम), श्रीमत् (श्रीमान्), धीमत् (बुद्धिमान्), बुद्धिमत् (विद्वान्), बलवत् (बलवान्), धनवत् (धनवान्), हिमवत् (हिमालय) । कालः (१. समय, २. मृत्यु), समयः (समय) । (१०) ।
(ख) हन् (१. मारना, २. हत्या करना) । विद् (जानना), या (जाना), वा (हवा चलना), भा (चमकना), स्ना (नहाना), पा (रक्षा करना) । यापि (समय बिताना) बुध् (जानना), शम् (शान्त होना), जन् (पंदा होना), दम्, (दमन करना), घट् (काम में लगना), क्रम् (चलना), गतवत् (गया) । (१५) ।

सूचना—(क) भगवत्—हिमवत् तथा गतवत्, भगवत् के तुल्य ।

व्याकरण (भगवत्, हन्, णिच् प्रत्यय, तनादि०)

१. भगवत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ९) । सूचना—जिन शब्दों के अन्त में मनुप् (मत् या वत्) प्रत्यय लगता है, और जिन धातुओं के अन्त में क्तवतु (तवत्) प्रत्यय लगता है, उनके रूप पुर्लिङ्ग में भगवत् के तुल्य ही चलेंगे ।

२. हन् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० सं० २९) ।

३. विद् और या के रूप परिशिष्ट में देखो । या के तुल्य ही वा आदि ।

नियम ११७. (तनादिक्कृञ्भ्य उः) तनादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीचमें 'उ' विकरण लगता है । धातु को गुण होता है । उ को परस्मै० एक० में गुण होता है । (देखो अभ्यास २४, ५४) । जैसे, तनोति, तनुते ।

*नियम ११८. मूलधातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें ।

(क) धातु से णिच् (अय) प्रत्यय लगता है । नियम ११४ के अनुसार वृद्धि या गुण ।

(ख) (मितां ह्रस्वः) इन धातुओं के उपधा (अर्थात् उपान्त्य स्वर) के अ को आ नहीं होता । गम्, रम्, क्रम्, नम्, शम्, दम्, जन्, त्वर्, घट्, व्यथ् । गमयति, रमयति, क्रमयति, नमयति, शमयति, दमयति, जनयति, त्वरयति, घटयति, व्यथयति । अन्यत्र अ को आ होता है । पाठयति, कामयते । (ग) (० आतां पुङ्गणौ) आकारान्त धातुओं के अन्त में णिच् से पहले 'प' और लग जाता है ।

जैसे, दा > दापयति, धा > धापयति, स्था > स्थापयति, या > यापयति, स्ना + स्नापयति । किन्तु पा (पीना) का पाययति होता है । पा और पाल् (रक्षा करना) का पालयति होता है । (घ) इन धातुओं के णिच् में ये रूप होते हैं :—

ब्रू > वाचयति, अधि > इ > अध्यापयति, (पढ़ाना), हन् > घातयति (वध कराना), दूष् > दूषयति (दोष देना), रुह् > रोहयति, रोपयति (उगाना) ।

(ङ) चुरादिगण की धातुओं के रूप णिच् में वैसे ही रहते हैं । (च) कर्मवाच्य और भाववाच्य में णिजन्त धातु के अन्तिम इ (अय) का लोप हो जाता है ।

जैसे, पाठयते, कार्यते । ऐसे ही हार्यते, धार्यते, बोध्यते, भक्ष्यते, चोर्यते ।

अभ्यास २९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. गुरुः शिष्यं नगरं गमयति, बालकं कथाभिः रमयति, शत्रून् शमयति दमयते च, कस्यापि दुःखं न जनयति, अध्ययनार्थं त्वरयति, कार्यं घटयति, कमपि न व्यथयति च । २. सज्जनः नृपेण दानं दापयति, धनं धापयति । ३. धीमान् पुस्तकं स्थापयति । ४. बुद्धिमान् पठने कालं समयं वा यापयति । ५. धनवान् भृत्येन पुत्रं स्नापयति । ६. भवन्तः शिष्यान् जलं पाययन्ति । ७. भगवान् संसारं पालयन्तु । ८. गुरुः छात्रं वेदं वाचयति, अध्यापयति । ९. खलः पशून् घातयिष्यति, सज्जनान् दूषयिष्यति च । १०. धीमद्भिः श्रीमद्भिश्च बालः पाठयते, भारः हार्यते, जनों बोध्यते, न च कदापि कस्यापि धनं चोर्यते, कार्यं क्रियते कार्यते च । ११. सिंहः पशून् हन्ति, हन्तु, हन्यात्, अहन्, हनिष्यति वा । १२. स हिमवन्तं गतवान् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. पिता पुत्रको गाँव में भेजता है (गमय) । २. कवि गान से सब को प्रसन्न करता है (रमय) । ३. यति पापों को दमन करता है (दमय) । ४. राजा नौकर को काम में लगाता है (घटय) और शीघ्रता कराता है (त्वरय) । ५. बुद्धिमान् विवाद शान्त कराता है (शमय), सब को सुख देता है (जनय) । ६. बलवान् धनवान् से धीमान् को धन दिलाता है । ७. गुरु शिष्य से पुस्तक यहाँ रखवाता है (धापय), शिष्य उन्हें रखता है (स्थापय) (ख) ८. धीमान् अध्ययन में समय बितावे । ९. पुत्र को जल पिलाओ । १०. राज्य का पालन कराओ । ११. बालक को स्नान कराओ । १२. शिष्य को पढ़ाओ । १३. पाठ बँचवाओ (वाचय) । १४. शत्रु का वध कराओ । १५. वृक्षों को लगाओ (रोपय) । (ग) १६. वह शत्रु को मारता है (हन्), तू भी मारता है, मैं भी मारता हूँ । १७. उसने शत्रु को मारा, तूने मारा, मैंने मारा । १८. वह चोर को मारेगा, तू मारेगा, मैं मारूँगा । १९. वह दुष्ट का वध करे । (घ) २०. वह मुझको जानता है (विद्), मैं उसे जानता हूँ । २१. वह हिमालय को जाता है (या) । २२. वायु बहती है (वा) । २३. सूर्य चमकता है (भा) । २४. आप नहाते हैं । २५. राजा रक्षा करता है (पा) ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. गामयति, रामयति, दामयति, जानयति । गमयति, रमयति, दमयते, जनयति ११८ (ख)
२. ब्रावयति, पापयति, हानयति । वाचयति, पाययति, घातयति । ११८ (ग, घ)
३. हनति, हनामि, अहन्तु, हंस्यति । हन्ति, हन्मि, अहन्, हनिष्यति । धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २ (क) को लोट्, लङ्, लृट् में बदलो । (ख) २ (ख) को लट्, लङ्, लृट् में बदलो । (ग) २ (ग) को बहुवचन बनाओ । (घ) २ (घ) को लोट्, लृट् में बदलो । (ङ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—भगवत्, भवत्, श्रीमत्, धीमत्, धनवत्, गतवत् । (च) हन् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (छ) तन्नादिगण की विशेषता बताओ । (ज) मूलधातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए मुख्य नियम कौन से हैं, सोदाहरण बताओ ।

शब्दकोष ७२५ + २५ = ७५०] अभ्यास ३०

(व्याकरण)

(क) भूभृत् (१. राजा, २. पर्वत), महीक्षित् (राजा), विपठित् (विद्वान्), मरुत् (वायु) । शुश्रूषा (१. सुनने की इच्छा, २. सेवा), चिकित्सा (इलाज), मीमांसा (१. गम्भीर विचार, २. मीमांसा दर्शन) । (७) । (ख) इ (जाना), उत् + इ (उदय होना), आ + इ (आना), अप + इ (वृत्त होना) । (४) । (ग) चित्, चन (दोनों किम् शब्द के साथ मिलकर अनिश्चय बोधक अव्यय), ह्यः (विगत दिन), परह्यः (विगत परसों), इवः (आगामी दिन), परइवः (आगामी परसों) । (६) । (घ) शुश्रूषुः (सुनने का इच्छुक), चिकीर्षुः (करने का इच्छुक), जिज्ञासुः (जानने का इच्छुक), विवक्षुः (बोलने का इच्छुक), जिघांसुः (मारने का इच्छुक), दिदक्षुः (देखने का इच्छुक), पिपासुः (प्यासा), तितीर्षुः (तेरने का इच्छुक), (८) ।

सूचना—(क) भूभृत्—मरुत्, भूभृत्वत् । शुश्रूषा—मीमांसा, रमावत् ।

व्याकरण (भूभृत्, इ, सन् प्रत्यय, कथादि०)

१. भूभृत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ८) ।

२. इ धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० सं० ३०)

३. ह्यः, इवः के अन्तर के लिए यह स्मरण कर लें, 'ह्यो गतेऽज्ञागतेऽज्ञे इवः' ।

*नियम ११६—(कथादिभ्यः इना) कथादिगण की विशेषता यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच में 'ना' विकरण लगता है । उसको 'नी' भी हो जाता है । धातु को गुण नहीं होता । (देखो अभ्यास ५५ से ५७) । जैसे क्रीणाति, क्रीणीते ।

*नियम १२०—(धातोः कर्मणः०) इच्छा करना या चाहना अर्थ में धातु से सन् (स) प्रत्यय लगता है, यदि इच्छा करने वाला वही व्यक्ति हो तो । सन् लगने पर धातु को द्वित्व हो जाता है । धातु के स्वरूप में कुछ अन्तर भी हो जाता है । सन् प्रत्यय लगने पर परस्मैपदी धातु के रूप भवतिवत् और आत्मनेपदी के सेवतेवत् । जैसे, गम् > जिगमिषति, जिगमिषतु, जिगमिषते, अजिगमिषत्, जिगमिषिष्यति । सन्नन्त प्रयोग वाची प्रचलित धातुएँ ये हैं :— भू > बुभूषति । ब्रू > विवक्षति । श्रू > शुश्रूषते । कृ > चिकीर्षति । हृ > जिहृषति । तृ > तितीर्षति । मृ > मुमूर्षति । ज्ञा > जिज्ञासते । पा > पिपासति । दा > दित्सति । धा > धित्सति । लभ् > लिप्सते । हन् > जिघांसति । दृश् > दिदक्षते । पठ् > पिपठिषति । स्वप् > सुषप्सति । ग्रह् > जिघृक्षति । जि > जिगीषते । कित् > चिकित्सति । भुज् > बुभुक्षति । मान् > मीमांसते । मुच् > मुमुक्षति । बध् > बीभत्सते ।

*नियम १२१—(सनाशंसिभक्ष उः, अ प्रत्ययात्) सभी सन् प्रत्ययवाची धातुओं के अन्त में उ या आ लगा देने से विशेषण और संज्ञा शब्द बन जाते हैं । उकारान्त के रूप गृहवत् और आकारान्त के रूप रमावत् चलेंगे । उ लगाने से 'वाला' अर्थ हो जाता है । 'आ' लगने से भाववाचक संज्ञा । उदाहरण ऊपर है ।

अभ्यास ३०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. भूभृत् कस्यचित् महीक्षितो राज्यं जिगीषति । २. विवक्षुः विपश्चित् किंचिद् विवक्षति । ३. मरुद् वाति, इतः एति च । ४. विपश्चित् एति, सूर्यं उदेति, शत्रुः अपेति । ५. जिज्ञासुः भूभृत् परह्योऽत्र ऐत्, ह्योऽगच्छच्च । ६. शुश्रूषुः विपश्चित् श्वः एष्यति, परश्वो गमिष्यति च । ७. शुश्रूषुः गुरोः शुश्रूषां कुर्यात् । ८. चिकित्सको जिघांसुमपि चिकित्सति । ९. विपश्चित् धर्मं मीमांसिष्यते । १०. चिकीर्षुः कार्यं चिकीर्षतु । ११. जिज्ञासुः धर्मं जिज्ञासेत । १२. दिदृक्षुः महीक्षितं दिदृक्षति । १३. पिपासुः जलं पिपासति । १४. तितीर्षुः गङ्गां तितीर्षति । १५. विपश्चित् तत्र एति, एतु, इयात्, ऐत्, एष्यति वा । १६. कस्मैचित् शुश्रूषा रोचते ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. बालक पढ़ना चाहता है, बोलना चाहता है, सेवा करना चाहता है, कार्य करना चाहता है । २. शिष्य तैरना चाहता है, धर्म को जानना चाहता है, जल पीना चाहता है, दान देना चाहता है, वस्त्र धारण करना चाहता है, धन पाना चाहता है (लभ्) । ३. राजा (भूभृत्) शत्रु को मारना चाहता है (हन्), मरणासन्न (मुमूर्षु) को देखना चाहता है, धन लेना चाहता है (ग्रह्), राज्य जीतना चाहता है । ४. चिकित्सक मरणासन्न को चिकित्सा करना चाहता है (चिकित्स), भोजन खाना चाहता है (भुज्), सत्य पर विचार करना चाहता है (मीमांस), पापों को छोड़ना चाहता है (मुच्) । (ख) ५. किसी को शुश्रूषा, किसी को चिकित्सा, किसी को धर्म की मीमांसा, किसी को सत्य की जिज्ञासा अच्छी लगती है (रुच्) । ६. वह परसों आया था, कल गया । ७. मैं कल जाऊँगा, परसों पुनः आऊँगा । ८. सुनने का इच्छुक सुनने की इच्छा करे, प्यासा जल पीना चाहे, जिज्ञासु जानना चाहे, तैरने का इच्छुक तैरना चाहे । (ग) (इ धातु) ९. सूर्य उदय होता है । १०. वह आता है । ११. वह दूर हटता है । १२. वह जाता है । १३. मैं जाता हूँ । १४. वह जावे । १५. तू जा । १६. मैं जाऊँ । १७. वह गया । १८. मैं गया । १९. तू गया ।

३. अशुद्ध शुद्ध नियम

- (१) जिज्ञासति, शुश्रूषति, दिदृक्षति । जिज्ञासते, शुश्रूषते, दिदृक्षते । १२०
(२) बुब्रूषति, दिदासति, लिलप्सति । विवक्षति, दित्सति, लिप्सति । १२०

४. अभ्यास :—(क) २(क) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) २(ग) को बहुवचन बनाओ । (ग) इनके पूरे रूप लिखो—भूभृत्, महीक्षित्, विपश्चित्, मरुत् । (घ) इ धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप लिखो । (ङ) ऋयादिगण की विशेषता बताओ । (च) सन् प्रत्यय लगाकर इन धातुओं के पाँचों लकारों के रूप लिखो :—ब्रू, श्रू, कृ, ह्रू, मृ, तृ, पा, दा, धा, ज्ञा, पठ्, लभ्, दृश्, हन्, स्वप्, ग्रह्, जि, कित्, भुज् ।

५. वाक्य बनाओ :—४(च) की उपर्युक्त धातुओं के सन्नत रूप बनाकर उनमें अन्त में उ और आ लगाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो, जैसे विवक्षुः, विवक्षा ।

शब्दकोष ७५० + २५ = ७७५] अभ्यास ३१

(व्याकरण)

(क) करिन् (हाथी), दण्डिन् (१. संन्यासी, २. दण्डधारी), विद्यार्थिन् (छात्र), शशिन् (चन्द्रमा), पक्षिन् (पक्षी), स्वामिन् (स्वामी), मन्त्रिन् (मंत्री), साक्षिन् (साक्षी), ज्ञानिन् (ज्ञानी), योगिन् (योगी), त्यागिन् (त्यागी), वाग्मिन् (चतुर वक्ता)। (१२)। (ख) पीड् (पीड़ा देना), प्र + क्षाल् (धोना), पाल् (पालन करना), युज् (लगाना), प्र + ईर् (प्रेरणा देना), गण् (गिनना), मन्त्र् (मंत्रणा करना), रच् (बनाना), पूज् (पूजा करना)। आ + श्लिष् (आलिगन करना), [चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना)]। (१०)। (ग) पश्चात् (बाद में, पीछे), पुनः (फिर), शीघ्रम् (शीघ्र)। (३)।

सूचना—(क) करिन्—वाग्मिन्, करिन् के तुल्या। (ख) पीड्—पूज्, चोरयतिवत्।

व्याकरण (करिन्, क्त प्रत्यय)

१. करिन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दसंख्या १०)।

२. पीड आदि धातुओं के रूप चुर् धातु (देखो धातु० संख्या ५९) के तुल्य दोनों पदों में चलेंगे। जैसे, पीडयति, प्रक्षालयति, पालयति, योजयति, प्रेरयति, गणयति, रचयति, पूजयति। आत्मनेपद में 'अय' लगाकर सेवतेवत् रूप होंगे। मन्त्रयते।

*नियम १२२—(क्तवत्त्वं निष्ठा, निष्ठा) भूतकाल अर्थ में क्त (त), क्तवत् (तवत्) कृत् प्रत्यय होते हैं। दोनों का क्रमशः त, तवत् शेष रहता है। 'त' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। 'तवत्' प्रत्यय कर्तृवाच्य में। सेट् (' ' वाली) धातुओं में बीच में लगता है, अनिट् (इ-नहीं वाली) धातुओं में इ नहीं लगता है। धातु को गुग या वृद्धि नहीं होती। संप्रसारण होता है।

*नियम १२३—(क) क्त (त) प्रत्यय जब सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में होगा तो कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया और क्रिया का लिंग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होंगे, कर्ता के अनुसार नहीं। (ख) अकर्मक धातु से क्त (त) प्रत्यय होगा तो कर्ता में तृतीया होगी। क्रिया में नपुंसकलिंग एकवचन ही रहेगा। (ग) 'त' प्रत्ययान्त क्रियाशब्द कर्म के अनुसार पुलिङ्ग होगा तो उसके रूप 'रामवत्' चलेंगे, स्त्रीलिङ्ग होगा तो रमावत्, नपुंसकलिंग होगा तो गृहवत्। जैसे, अहं पुस्तकम् अपठम् के स्थान पर मया पुस्तकं पठितम्। मया द्वे पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि। मया ग्रन्थः पठितः, ग्रन्थौ पठितौ, ग्रन्थाः पठिताः। मया बाला दृष्टा, बालाः दृष्टाः। तेन हसितम्, तेन रुदितम्।

*नियम १२४—(गत्यर्थकर्मक०) जाना, चलना अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्, शी, स्था, आस्, वस्, जन्, रह्, जृ (वृद्ध होना) धातु से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है। अतः कर्ता में प्रथमा ही रहेगी, तृतीया नहीं होगी। जैसे, स गृहं गतः। स ग्रामं प्राप्तः। स भूतः। हरिः रमामाश्लिष्टः।

अभ्यास ३१

१. उदाहरण-वाक्य :—१. त्वया मया तेन युष्माभिः अस्माभिः वा पुस्तकं पठितम्, पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि । २. मया लेखो लिखितः, विद्या पठिता, कथा श्रुता, पत्रं पठितम्, भोजनं खादितम् । ३. मया अस्माभिः वा लेखा लिखिताः, विद्याः पठिताः, कथाः श्रुताः, पत्राणि पठितानि, भोजनानि खादितानि । ४. स ग्रामं गतः, स आगतः, सोऽत्र स्थितः, सः सुप्तः, स मृतः, राजा मित्रमाश्लिष्टः, स आसनम् अधिशयितः, स आसितः, सोऽत्र उषितः, स जातः, स वृक्षमारूढः, स जीर्णः । ५. सिंहः करिणं पीडयति । ६. स्वामी पादौ प्रक्षालयति, ज्ञानिनः पालयति, कार्ये योजयति प्रेरयति च, पुस्तकं रचयति च । ७. कथयताम्, चिन्तयताम्, भोजनं भक्षयतां च भवान् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मैंने एक पुस्तक पढ़ी, दो पुस्तकें पढ़ीं, तीन पुस्तकें पढ़ीं । २. उसने खाना खाया । ३. मैंने लेख लिखा । ४. मैं हँसा । ५. वह रोया । ६. उसने पुस्तकें चुराईं । ७. मैंने विद्या पढ़ी । ८. उसने कन्या देखी । ९. वह विद्यालय को गया । १०. वह बाद में गाँव में आया । ११. वह शीघ्र सोया । १२. पुत्र हुआ । १३. मैं बैठा (आस) । १४. राजा ने अपनी पत्नी को आलिंगन किया (श्लिष) । १५. मैं वहाँ रहा (वस्) । १६. वह आसन पर सोया (शी) । १७. बालक उत्पन्न हुआ (जन्) । १८. मैं पर्वत पर चढ़ा (रूह) । १९. वह वृद्ध हुआ (जृ) । २०. वह आया और मैं गया । (ख) २१. विद्यार्थी योगी और त्यागी की पूजा करता है । २२. मन्त्री मंत्रणा करता है । २३. हाथी दण्डधारियों को दुःख दे रहा है । २४. वह वस्त्रों को धोता है । २५. पिता पुत्रों का पालन करता है । २६. ज्ञानी वाग्मी को प्रेरणा देता है । २७. वह पक्षियों को फिर गिनता है । २८. विधि शशी को बनाता है । २९. योगी सोचता है । ३०. वाग्मी कह रहा है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

(१) मया त्रीणि पुस्तकानि पठितम् । मया त्रीणि पुस्तकानि पठितानि । १२३

(२) तेन सुप्तम्, तेन गतम्, तेन आगतम् । स सुप्तः, स गतः, स आगतः । १२४

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् और लट् में बदलो ।

(ख) इन धातुओं के पाँचों लकारों में रूप लिखो :—पीड्, प्रक्षाल्, पाल्, युज्, प्रेर, गण्, मन्त्र्, रच्, पूज् । (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—करिन्, दण्डिन्, विद्या-थिन्, स्वामिन्, मन्त्रिन्, ज्ञानिन्, योगिन् । (घ) क्त प्रत्यय लगाने पर कर्ता, कर्म और क्रिया में कौन सी विभक्ति और वचन होते हैं, १० उदाहरण देकर बताओ । (ङ) किन धातुओं के साथ क्त प्रत्यय होने पर कर्ता में प्रथमा ही रहती है, सोदाहरण बताओ ।

शब्दकोष ७७५ + २५ = ८००] अभ्यास ३२

(व्याकरण)

(क) आत्मन् (आत्मा), जीवात्मन् (जीवात्मा), परमात्मन् (परमात्मा), ब्रह्मन् (ब्रह्मा), द्विजन्मन् (१. ब्राह्मण, २. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य), अश्मन् (पत्थर), अध्वन् (मार्ग), यज्वन् (यज्ञकर्ता), अवन् (घोड़ा), पाप्मन् (पाप, पापी) । कथनम् (कहना), काष्ठम् (लकड़ी) । (१२) । (ख) सान्त्व् (सान्त्वना देना), खण्ड् (खंडन करना), मण्ड् (मण्डन करना), तुल् (तोलना), घुष् (घोषणा करना), पुष् (पोषण करना), आ+लोक (देखना), आ+लोच् (आलोचना करना), तृप् (तृप्त करना), तड् (मारना) । (१०) (ग) ध्रुवम् (अवश्य), वरम् (अच्छा, श्रेष्ठ), तर्हि (तो) । (३) । सूचना—(क) आत्मन्—पाप्मन्, आत्मन् के तुल्य ।

व्याकरण (आत्मन्, क्तप्रत्यय)

१. आत्मन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० सं० ११) ।

२. सान्त्व् आदि के रूप चोरयति के तुल्य । जैसे, सान्त्वयति, खण्डयति, मण्डयति, तोलयति, घोषयति, पोषयति, आलोकयति, आलोचयति, तर्पयति, ताडयति ।

नियम १२५—धातु से त और तवत् (तथा क्तिन्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें । (देखो परिशिष्ट में क्त प्रत्यय से बने रूप) ।

(१) धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती । सेट् में इ लगता है, अनिट् में नहीं । संधिकार्य होगा । जैसे, कृ > कृतः । हतः, धृतः, भृतः । पठितम्, लिखितम् ।

(२) (रदाभ्यां निष्ठातो नः ०) र् या द् के बाद के त को न होता है, धातु के द् को भो न् । अर्थात् र् + त = ण् । द् + त = झ । दीर्घ ऋ को ईर् या ऊर् होगा । श् > शोर्ण, त् > तोर्ण, ग् > गोर्ण, क् > कीर्ण, संकीर्ण, प्रकीर्ण, प् > पूर्ण । भिद् > भिन्न, छिद् > छिन्न, सद् > सन्न, प्रसन्न ।

(३) (द्यतिस्यति०) दो (दा), सा, मा, स्था इनके आ को इ होगा । दित, अवसित, परिसित, स्थित । गा, पा, हा के आ को ई होगा । गीत, पीत, हीन ।

(४) (अनुदात्तोपदेश०) यम्, रम्, नम्, गम्, हन्, मन्, बन् और तनादिगणी धातुओं के म् और न् का लोप होता है । धातुओं के उपधा के न् का भी प्रायः लोप होता है । गम् > गत, यम् > यत, संयत, रम् > रत, नम् > नत, प्रणत, हन् > हत, मन् > मत, समत, तन् > तत, वितत । जन्, सन्, खन् के न् को आ होगा । जात, सात, खात । बन्ध् > बद्ध, ध्वंस् > ध्वस्त, खंस् > खस्त, दंश् > दष्ट ।

(५) (वचिस्वपि० ग्रहिज्या०) वच् आदि को संप्रसारण होता है । ब्र या वच् > उक्त, स्वप् > सुप्त, यज् > इष्ट, वप् > उप्त, ग्रह् > गृहीत, व्यध् > विद्ध, प्रच्छ् > पृष्ट, आह्व् > आहृत, वह् > ऊढ, वध् > उदित, वस् > उषित ।

(६) इन धातुओं के ये रूप होते हैं :—धा > हित, विहित, निहित । दा > दत्त, अस् > भूत, शुष् > शुष्क, पच् > पक्व । सह् > सोढ, अद् > जग्ध, क्षं > ज्ञाम ।

अभ्यास ३२

१. उदाहरण वाक्य :—१. मया कार्यं कृतम्, मया गुरुः सेवितः, मया वस्त्रं याचितम्, मया धनं लब्धम्, मया कार्यम् आरब्धम्, मया मार्गः रुद्धः, मया भोजनं भुक्तम् । २. मया काष्ठं भिन्नं छिन्नं च, नदी तीर्णा, परीक्षा उत्तीर्णा, अन्नं कीर्णम्, कार्यं पूर्णम् । ३. मया गानं गीतम्, जलं पीतम् । ४. मया दुष्टः हतः, गुरुः नतः, नगरं ध्वस्तम् । ५. स ग्रामं गतः, पुत्रः शयितः, नरः उत्थितः, शिष्य आसितः, मुनिः उषितः, पुत्रो जातः, नृपः अश्वमारूढः, वृक्षः जीर्णः । ६. मया सुप्तम्, बीजम् उप्तम्, पुस्तकं गृहीतम्, प्रश्नः पृष्टः, छात्र आहूतः, भार ऊढः, कार्यं विहितम्, भोजनं पक्वम्, दुःखं सोढम् । ७. द्विजन्मा आत्मानं पोषयति, तर्पयति, आलोचयति च । ८. स तस्य कथनं खण्डयति मण्डयति च ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम ने पुस्तक पढ़ी । २. ब्रह्मा ने संसार का पालन किया और उसको धारण किया । ३. यज्ञकर्ता ने वृक्ष काटा (खण्ड) । ४. कृष्ण ने फूल बिखेरे (कू), कार्यं पूर्ण किया । ५. बालक उठा, शिष्य वहाँ रहा, पुत्र उत्पन्न हुआ, राम सोया (शी), गुरु वृद्ध हुआ, लड़की पर्वत पर चढ़ी । ६. ब्राह्मण ने पत्थर फोड़ा । ७. घोड़े ने अन्न खाया । ८. पाप नष्ट हुए । ९. मैंने पुस्तक पढ़ी, लेख लिखा, भोजन खाया, धन पाया, गंगा पार की, परीक्षा उत्तीर्ण की । १०. तूने गाना गाया, जल पिया, शत्रु को मारा, गुरु को प्रणाम किया, दुष्ट को बांधा । ११. उसने भूमि खोदी, यज्ञ किया, बीज बोया, पुस्तक ली, प्रश्न पूछा, भार ढोया और मुझे बुलाया । १२. मैंने दान दिया, भोजन खाया । १३. पुत्र हुआ, फल पका, वृक्ष सूखा, गह उठा । (ख) १४. वह अवश्य शिष्य को सान्त्वना देता है । १५. वह ठीक ढंग से (वरम्) मेरे कथन का मंडन करता है और यह खंडन करता है । १६. वह अन्न तोलता है । १७. वह घोषणा करता है । १८. वह पुत्र का पालन करता है और उसे देखता है । १९. द्विजन्मा अपनी आत्मा की आलोचना करता है । २०. अन्न संसार को तृप्त करता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

- | | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|-----|
| १. बालकेन उत्थितम्, पुत्रेण जातम् । | बालक उत्थितः, पुत्रः जातः । | १२४ |
| २. वप्तम्, यष्टम्, कीर्तम्, पूर्तम् । | उप्तम्, इष्टम्, कीर्णम्, पूर्णम् । | १२५ |

४. अभ्यास :—(क) २(क) को बहु० में बदलो । (ख) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—आत्मन्, ब्रह्मन्, द्विजन्मन्, अध्वन्, यज्वन् । (घ) इन धातुओं के पाँचों लकारों में रूप लिखो : खण्ड्, तुल्, घुष्, पुष्, आलोक्, तड् । (ङ) इन धातुओं के क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ :—कृ, लभ्, रुध्, भुज्, कू, तृ, पृ, भिद्, छिद्, सद्, गा, पा, गम्, नम्, बन्ध्, वच्, वह्, ग्रह्, प्रच्छ्, धा, अस्, सह्, पच् ।

शब्दकोष ८०० + २५ = ८२५) अभ्यास ३३

(व्याकरण)

(क) राजन् (राजा), पूषन् (सूर्य), मूर्धन् (मस्तक), ग्रावन् (पत्थर), तक्षन् (बढ़ई), उक्षन् (बैल), नदी (नदी), नारी (स्त्री), पत्नी (स्त्री), जन्नी (माता), पृथ्वी (पृथ्वी), पुत्री (लड़की) । १२ । (ख) कृत् (वर्णन करना), मन्त्र् (मन्त्रणा करना), तज् (डराना), तक् (तर्क करना), आस्वद् (स्वाद लेना) गह् (निंदा करना), गवेष् (ढूँढ़ना) । ७ । (ग) सुष्ठु (अच्छा), स्वयम् (स्वयम्), मिथः (परस्पर), परस्परम् (परस्पर) जातु (कभी), कदापि (कभी) । ६ ।

सूचना—(क) राजन्-उक्षन्, राजन् के तुल्य । नदी-पुत्री, नदीवत् ।

व्याकरण (राजन्, नदी, क्तवतु, चुरादिगणी धातुएँ)

१. राजन् और नदी शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द०, १२, १५)

२. कृत् आदि के रूप चोरयति के तुल्य । कीर्तयति, मन्त्रयति, तजयति, तर्कयति, आस्वादयति, गहयति, गवेषयति ।

सूचना—लट् के रूप के साथ 'स्म' लगाने से भी भूतकाल का अर्थ होता है ।

नियम १२६—क्तवतु प्रत्यय भूतकालमें होता है । कर्तृवाच्यमें होता है, अतः कर्तृके तुल्य क्रियाशब्दके लिंग, विभक्ति और वचन होंगे । कर्तामें प्रथमा होगी, कर्ममें द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य । धातु के रूप क्त प्रत्यय के तुल्य ही बनेंगे । (नियम १२५ लगेगा) । क्त प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसीमें 'वत्' और जोड़ दें । जैसे कृ > कृतः, तवत् में कृतवत् । तवत् प्रत्ययान्तके रूप पुल्लिङ्गमें भगवत्के तुल्य चलेंगे, स्त्रीलिङ्गमें ई लगाकर नदीके तुल्य और नपुंसकलिङ्गमें जगत् (देखो शब्द० २६) के तुल्य । भूतकालमें त या तवत् प्रत्यय लगाकर अनुवाद बनाना सरल होता है, अतः इन उदाहरणों से नियमों की व्याख्या समझें । क्त प्रत्यय लगाने पर कर्मके लिंग, वचन, और विभक्ति पर ध्यान दिया जायगा । कर्तृके लिंग आदि पर नहीं । क्तवतु प्रत्यय लगाने पर कर्तृके लिंगादि पर ध्यान होगा, कर्मपर नहीं ।

भूतकाल-गणरूप

क्त प्रत्यय

क्तवतु प्रत्यय

- | | | | |
|-----------|---------------------------|------------------------|-----------------------|
| १. स | पुस्तकम् अपठत् । तेन | पुस्तकं पठितम् । स | पुस्तकं पठितवान् । |
| २. त्वं | „ अपठः । त्वया | „ „ | त्वम् „ „ । |
| ३. अहं | „ अपठम् । मया | „ „ | अहं „ „ । |
| ४. तौ | पुस्तके अपठताम् । ताभ्यां | पुस्तके पठिते । तौ | पुस्तके पठितवन्तौ । |
| ५. युवाम् | „ अपठतम् । युवाभ्यां | „ „ | युवाम् „ „ । |
| ६. आवाम् | „ अपठाव । आवाभ्यां | „ „ | आवाम् „ „ । |
| ७. ते | पुस्तकानि अपठन् । तैः | पुस्तकानि पठितानि । ते | पुस्तकानि पठितवन्तः । |
| ८. यूयं | „ अपठत । युष्माभिः | „ „ | यूयं „ „ । |
| ९. वयं | „ अपठाम । अस्माभिः | „ „ | वयं „ „ । |

अभ्यास ३३

१. उदाहरण वाक्य :—१. राजा गृहं गतवान्, राजानौ गृहं गतवन्तौ, राजानः गृहं गतवन्तः । २. बालिका भोजनं भुक्तवती, बालिके भुक्तवत्यौ, बालिकाः भुक्तवत्यः । ३. पत्रं पृथिव्यां पतितवत्, पत्रे पतितवती, पत्राणि पतितवन्ति । ४. राजा मन्त्रयति, पूषा पोषयति, पुत्री तर्कयति । ५. नायौ मिथः मन्त्रयतः । ६. पुत्री जननीं गवेषयति । ७. भुक्तवन्तं तं पश्य । ८. भुक्तवता तेन कार्यं कृतम् । ९. भुक्तवते तस्मै वस्त्रं देहि । १०. भुक्तवति तस्मिन् स आगतवान् । ११. स पठति स्म, गच्छति स्म ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क्तवतु प्रत्यय) (क) १. वह घर गया, वे दोनों घर गये, वे सब घर गये । २. वह लड़की यहाँ आई, वे दोनों आई, वे सब आई । ३. एक पत्ता पृथ्वी पर गिरा, दो फूल गिरे, तीन फल गिरे । ४. वह आया, वह हँसा, वह पढ़ा, उसने लिखा, वह सोया, उसने देखा, उसने किया । ५. तू उठा, तू ठीक दौड़ा, तूने स्वयं सेवा की, तूने खाया । ६. सोए हुए बालक को देखो, पढ़े हुए पाठ को फिर स्वयं पढ़ो । ७. खाना खाए हुए उस ब्राह्मण को एक फल दो । ८. जब वह खाना खा चुका तब (भुक्तवति तस्मिन्) मैं उसके पास गया । ९. उसके चले जाने पर (गतवति तस्मिन्) मैं यहाँ आया । १०. सूर्य (पूषन्) चमका । ११. शिर झुका । १२. पत्थर गिरा । १३. बढ़ई आया । १४. बैल उठा । १५. नारी ने नदी देखी । १६. पुत्री जननी मे बोली । (ख) १७. कवि राजा के गुणों का वर्णन करता है । १८. पति पत्नी के साथ परस्पर मंत्रणा करता है । १९. राजा शत्रु को डराता है । २०. पुत्री तर्क करती है । २१. वह भोजन का स्वाद लेता है । २२. दुर्जन सज्जन की निन्दा करता है । २३. सज्जन सत्य को ढूँढ़ता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. भोजनं खादन् ब्राह्मणं फलं देहि । भुक्तवते ब्राह्मणाय फलं देहि । १२६, ३३, ३५
२. स भोजनस्य आस्वादयति । स भोजनम् आस्वादयति । ४

४. अभ्यास :—(क) २(क) को क्त प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाओ । (ख) २(ख) को लोट्, लङ् विधिलिङ् और लृट् में बदलो । (ग) इन शब्दों के रूप लिखो :— राजन्, पूषन्, मूर्धन्, ग्रावन्, तक्षन् । नदी, नारी, पत्नी, जननी, पुत्री, पृथ्वी । (घ) इन धातुओं के पाँचों लकारों में रूप लिखो :—कृत्, मन्त्र्, तर्ज्, आस्वद्, गर्ह् ।

शब्दकोष ८२५+२५=८५०) अभ्यास ३४

(व्याकरण)

(क) मति (बुद्धि), श्रुति (वेद), स्मृति (स्मृति), भूमि (भूमि), पंडित (पंडित) ओषधि (दवा), श्रेणि (कक्षा), अंगुलि (अंगुली) प्रीति (प्रेम), अनुरधित (अनुराग) कान्ति (चमक), शान्ति (शान्ति), प्रकृति (स्वभाव, प्रकृति), भक्ति (भक्ति), शक्ति (शक्ति), मूर्ति (मूर्ति), पद्धति (मार्ग, विधि), समृद्धि (वृद्धि), समिति (सभा), सूक्ति (सुभाषित), नियति (भाग्य), व्यक्ति (मनुष्य), रात्रि (रात्रि), तिथि (तिथि) । २४। (ख) पठत् (पढ़ता हुआ) । १।

सूचना—(क) मति—तिथि, मतिवत् ।

व्याकरण (मति, पठत्, शतृ प्रत्यय, द्वितीया)

१. मति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० १४) ।

२. पठत् शब्द के रूप स्मरण करो । शतृ प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुं० में पठत् के तुल्य चलेंगे । प्रथमा एक० में अन्त में अन् रहेगा, जैसे पठन्, गच्छन्, आदि । शेष रूप भगवत् के तुल्य । (देखो परिशिष्ट में शतृ प्रत्यय के रूप) ।

३. अभ्यास ५ में दिए गए द्वितीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो ।

नियम १२७—(क) (लटः शतृशानच्ची०) लट् के स्थानपर परस्मैपदमे शतृ और आत्मनेपदमे शानच् होता है । शतृ का अत् और शानच् का आन् शेष रहता है । शतृ प्रत्ययान्तके लिंग, वचन, कारक कर्ताके तुल्य होते हैं । शतृप्रत्ययान्त शब्द के रूप पुं० में पठत् के तुल्य होंगे । जुहोत्यादि की धातुओं में न् नहीं लगेगा । जैसे ददत्, ददती, ददतः । स्त्रीलिंगमें ई लगाकर नदीके तुल्य । नपुं० में जगत् के तुल्य चलेंगे । शतृ और शानच् क्रिया की वर्तमानता का बोध कराते हैं । जैसे वह जा रहा है, वह जा रहा था, वह खा रहा था, स गच्छन् अस्ति आदि । (ख) शतृ प्रत्यय में भी विकरण आदि होते हैं, अतः शतृ प्रत्यय लगाकर रूप बनानेका अति सरल प्रकार यह है कि उस धातुके लट् के प्रथमपुरुष बहु० के रूपमें से अन्तिम इ और बीचके न् को हटा दें । इस प्रकार प्रायः शतृ प्रत्यय वाला रूप बच जाता है । जैसे भू-भवन्ति, शतृ-भवत् । अस्-सन्ति, सत् । गम्-गच्छन्ति, गच्छत् । पा-पिबन्ति, पिबत् । (ग) शतृ प्रत्ययान्तके बादमें अर्थके अनुसार अस् धातुका प्रयोग करो । जैसे वर्तमानमें लट्, भूतमें लङ्, भविष्यतमें लृट् । यथा—स गच्छन् अस्ति (वह जा रहा है) । तौ गच्छन्तौ स्तः । अहं गच्छन् अस्मि । स गच्छन् आसीत्, भविष्यति वा । (घ) शतृ प्रत्ययान्त का स्त्रीलिंग बनाना :—(शपथ्यनोन्त्यम्) भ्वादि० दिवादि० चुरादि० तुदादि० की धातुके लट् प्र० पु० बहु० के रूपमें अन्तमें ई जोड़ दो । जैसे गच्छन्ति से गच्छन्ती (जाती हुई), पठन्ती, पिबन्ती, दीव्यन्ती, तुदन्ती । (२) अदादि०, स्वादि०, ऋयादि०, तनादि०, जुहोत्यादि० की धातुमें लट् प्र० पु० बहु० के रूपमें ई लगेगा, न् नहीं रहेगा । जैसे रुदती, शृण्वती, क्रीणती, कुर्वती, ददती ।

अभ्यास ३४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. स गृहं गच्छन् अस्ति, आसीत्, भविष्यति वा । २. तौ गृहं गच्छन्तौ स्तः, आस्ताम् वा । ३. ते गृहं गच्छन्तः सन्ति, आसन् वा । ४. त्वं गच्छन् असि, आसीः वा । ५. अहं गच्छन् अस्मि, आसम् वा । ६. बालिका गच्छन्ती अस्ति । ७. बालिके गच्छन्त्यौ स्तः । ८. बालिकाः गच्छन्त्यः सन्ति । ९. फलं पतद् अस्ति । १०. फलानि पतन्ति सन्ति । ११. पठन्तं बालकं, लिखन्तीं बालिकां च पश्य । १२. पठता मया सर्पः दृष्टः । १३. खादते ब्राह्मणाय फलं देहि । १४. धावतः अश्वात् नरः पतितः । १५. पठतः रामस्य मुखं पश्य । १६. मयि पठति सति (जब मैं पढ़ रहा था तब) गुरुः आगतः ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम आ रहा है । २. वे दोनों पढ़ रहे हैं । ३. वे सब लिख रहे हैं । ४. तू हँस रहा है । ५. तुम सब बैठ रहे हो । ६. मैं देख रहा हूँ । ७. हम सब खेल रहे हैं । ८. रमा आ रही है । ९. प्रभा गा रही है । १०. पत्ता गिर रहा है । (ख) ११. राम सोच रहा था । १२. कृष्ण पूछ रहा था । १३. वे सब जल पी रहे थे । १४. तू फूल सूँघ रहा था । १५. मैं काम कर रहा था । १६. हम हँस रहे थे । (ग) १७. लिखते हुए बालक को देखो । १८. काम करते हुए मैंने एक सुन्दर फल पाया । १९. पढ़ती हुई बालिका को फूल दो । २०. दौड़ते हुए घोड़े से शिष्य गिरा । २१. गाती हुई कमला का मुँह देखो । २२. जब मैं लिख रहा था तब एक व्यक्ति मेरे पास आया । (घ) २३. श्रुति के पीछे स्मृति चलती है । २४. शक्ति, भक्ति, अनुरक्ति और प्रीति को शान्ति और समृद्धि के लिए चाहो । २५. सूक्ति को पढ़ो, मूर्ति को देखो, समिति में जाओ, ओषधि लाओ । २६. श्रेणि के पास दो पंक्ति में दस व्यक्ति हैं । २७. सुन्दर पद्धति को अपनाओ (सेव्) ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. गमन्, पान्, घ्रान्, दृशन् ।

गच्छन्, पिबन्, जिघ्रन्, पश्यन् ।

१२७ ख

२. आगच्छती, गायती ।

आगच्छन्ती, गायन्ती ।

१२७ घ

४. अभ्यास :—(क) २(क) को भूतकालमें बदलो । (ख) २ (ख) को वर्तमान में बदलो । (ग) इन धातुओं के शतृ प्रत्यय के रूप तीनों लिंगों में बनाओ :—पठ्, लिख्, गम्, आगम्, दृश्, हस्, पा, घ्रा, स्था, कृ, जि, दा, अस्, वद्, पच्, इष्, प्रच्छ, कथ् । (घ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—मति, श्रुति, भूमि, प्रकृति, शक्ति, रात्रि, पठत्, गच्छत्, लिखत्, पश्यत् ।

शब्दकोष ८५० + २५ = ८७५) अभ्यास ३५

(व्याकरण)

(क) कुमारी (कुमारी), गौरी (पार्वती), मही (पृथ्वी), रजनी (रात्रि), कौमुदी (चाँदनी), प्राची (पूर्व), प्रतीची (पश्चिम), उदीची (उत्तर), महिषी (१. रानी, २. भैल) सखी (सखी), पुत्रो (पुत्री), दासी (दासी), वापी (तालाब), कमलिनी (कमलिनी), पुरा (नगर), नगरो (नगर), वाणी (वाणी), सरस्वती (सरस्वती) । १८ । [पार्वती, भागोरथी, जानकी, अष्टाध्यायी ।] (ग) यदि (यदि), चेत् (१. यदि, २. तो) नो चेत् (नहीं तो), अन्यथा (नहीं तो), यतो हि (क्योंकि), सकृत्, (एकबार), असकृत्, (अनेक बार) । ७ ।

सूचना—(क) कुमारी—सरस्वती, नदीवत् ।

व्याकरण (नदी, शतृ, शानच्, द्वितीया)

१. नदी शब्द के तुल्य कुमारी आदि के रूप चलाओ । (देखो शब्द० १५) ।

२. अभ्यास ७-६ में दिए द्वितीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो ।

नियम १२८—(क) (लटः शतृशानच्) आत्मनेपदी धातुओंके लट् के स्थानपर शानच् (आन) हो जाता है । शानच् प्रत्यय होनेपर शब्द के रूप पुलिग में रामवत् चलेंगे । स्त्रीलिङ्ग में अन्त में आ लगाकर रमावत्, और नपुं० में गृहवत् रूप चलेंगे । शानच् का आन शेष रहता है । शानच् प्रत्ययान्त शब्दों का लिङ्ग, वचन और कारक कर्ता के तुल्य हो रहेगा । (देखो परिशिष्ट में शानच् प्रत्यय) । (ख) शानच् प्रत्ययान्त के बाद अर्थ के अनुसार अस् धातु का प्रयोग करो, अर्थात् वर्तमान में लट् लकार, भूत में लङ् और भविष्यत् में लृट् । (ग) (आने मुक्) जिन धातुओंके अन्तमें अ विकरण लगता है, वहाँ पर अ और आनके बीच में म् लग जाएगा । अर्थात् अ + आन = मान । जैसे यजते > यजमानः । वर्तते > वर्तमानः । वर्धते > वर्धमानः । (घ) (ईदासः) आस् धातु का शानच् होने पर आसीन रूप होता है ।

सूचना—हिन्दी में रहा वाले प्रयोगों (जा रहा है, जा रहा था, गढ़ रही थी) का अनुवाद शतृ या शानच् प्रत्यय लगाकर होता है, बादमें अस् धातु का रूप । जैसे स पठन् अस्ति, स याचमाना अस्ति, स पचमानः आसीत्, भविष्यति वा ।

नियम १२९—(लृटः सद् वा) लृट् लकार को भी परस्मै० में शतृ और आत्मने० में शानच् होता है । लृट् का रूप बनाकर अन्त में शतृ या शानच् लगावें । जैसे, स गमिष्यन् भविष्यति, पठिष्यन् भविष्यति । (वह जाता हुआ होगा, पढ़ता हुआ होगा) ।

नियम १३०—शतृ और शानच् प्रत्ययान्त का सप्तमी में समय-सूचक अर्थ हो जाता है । जिस समय में पढ़ रहा था—मयि पठति सति । जब में रो रहा था—मयि रुदति सति ।

अभ्यास ३५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. छात्रः वर्तमानोऽस्ति, आसीद् वा । २. कुमारी कार्यं कुर्वाणा अस्ति, आसीद् वा । ३. गौरी भोजनं पचमाना अस्ति । ४. शिष्यः अधीयानः (पढ़ रहा) अस्ति । ५. पुत्री आसीना (बैठी हुई) अस्ति । ६. दासी भुंजाना (भोजन खाती हुई) अस्ति । ७. अहं श्वः प्रातः पठिष्यन्, कार्यं करिष्यन् भविष्यामि । ८. रुदन्तं पुत्रं त्यक्त्वा पिता गतः । ९. मयि गच्छति सति (जब मैं जा रहा था तब) पिता आगतः । १०. कुमार्यः महिष्यश्च सखीभिः दासीभिश्च सह वापीं निकषा महीम् अधितिष्ठन्ति । ११. सखी शयाना (सोती हुई) अस्ति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. वह छात्र एक बार पाठ पढ़ रहा है । २. वह पुत्री नदी के पास जा रही है । ३. कमलिनी वापी में अनेक बार शोभित हो रही है (शुभ्) । ४. रानी सखियों के साथ गौरी और सरस्वती की वन्दना कर रही है (वन्दमाना) । ५. नगरी के चारों ओर रजनी में प्राची, प्रतीची, उदीची और दक्षिण दिशा में कौमुदी फैल रही है (प्रसृ) । ६. गौरी की वाणी शिव को अच्छी लग रही है (रुच्) । ७. पार्वती और जानकी पृथ्वी पर बैठी हुई (आसीन) अष्टाध्यायी पढ़ रही हैं (अधि + इ) । (ख) ८. मैं बैठा हुआ था ९. तू पढ़ रहा था (अधि + इ) । १०. वह माँग रहा था । ११. कुमारी सो रही थी (शी) । १२. गौरी भोजन खा रही थी (भुज्) । १३. प्रभा हँस रही थी । १४. रानी हँसती हुई सखी को देख रही थी (ईक्षमाणा) । (ग) १५. मैं जब लिख रहा था तब गौरी आई । १६. बालक जब रो रहा था, वह दासी आई । १७. कुमारी गाय का दूध दुहती है (दोग्धि) । १८. दासी रानी से धन माँग रही है । १९. सरस्वती पार्वती से प्रश्न पूछ रही है । २०. दासी बकरी को गाँव में ले जा रही है । २१. वह कल प्रातः लिख रहा होगा । २२. तू कल घर जा रहा होगा । २३. पाप मत कर, नहीं तो रोएगा, क्योंकि पाप से दुःख होता है ।

३. अशुद्ध-वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. अधीयती, शयन्ती, भुंजती, आसन् । अधीयाना, शयाना, भुंजाना, आसीना । १२८
२. महिष्याः धनं याचते । महिषीं धनं याचमाना अस्ति । २१
३. दासी अजां ग्रामे नयन् अस्ति । दासी अजां ग्रामं नयन्ती अस्ति । २१, १२८

४. अभ्यास :—(क) २(क) को भूतकाल में बदलो । (ख) २(ख) को वर्तमान में बदलो । (ग) इन धातुओं के शानच् प्रत्यय के रूप तीनों लिंगों में बनाओ :—वृत्, पच्, भुज्, कृ, शी, ईक्ष्, वन्द्, रुच्, शुभ्, अधि + इ, आस् । (घ) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो :—नदी, कुमारी, पृथ्वी, गौरी, सखी, पुरी, पुत्री, वाणी ।

शब्दकोष ८७५+२५=९००) अभ्यास ३६

(व्याकरण)

(क) धेनुः (गाय), रेणुः (घूल), चञ्चुः (चोंच), रज्जुः (रस्सी), हनुः (ठोड़ी)। सुलेखः (सुलेख), परिणामः (परिणाम), क्रीडकः (खिलाड़ी), अंकः (अंक), अवकाशः (छुट्टी), परीक्षा (परीक्षा), क्रीडा (खेल), संचिका (कापी), मसी (स्याही), लेखनी (कलम), श्रेणी (कक्षा), मसीपात्रम् (दावात), वादनम् (दजे), पृष्ठम् (पृष्ठ), उत्तरम् (उत्तर), क्रीडाक्षेत्रम् (क्रीडाक्षेत्र), अनुशासनम् (अनुशासन)। २२। (ख) आस् (बैठना), उत्तोरणं (उत्तोरण), उपस्थित (उपस्थित)। ३।

सूचना—(क) धेनु—हनु, धेनुवत्।

व्याकरण (धेनु शब्द, तुमुन्, प्रत्यय, द्वितीया)

१. धेनु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १६)।
२. आस् धातु के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० ३१)।
३. अभ्यास ८ में दिए हुए तृतीया के नियमों का पुनः अभ्यास करें।

नियम १३१—(१) (तुमुन्ध्वलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्) को, के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसका रूप नहीं चलगा। जैसे पठितुम् (पढ़नेको), लेखितुम् (लिखने को), स्नातुम् (नहाने को)। (२) इच्छार्थक धातुओं, शक् आदि धातुओं तथा पर्याप्त अर्थके शब्दों और समय वाचक शब्दों के साथ भी तुमुन् होता है।

नियम १३२—तुमुन् (तुम्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। ये नियम तृच् (तृ), तव्यत् (तव्य), में भी लगेंगे। (१) धातु को गुण होता है, अर्थात् अन्तिम इ या ई को ए, उ या ऊ को ओ, ऋया ऋको अर् तथा उपधा (उपान्त्य) के इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् होता है। जैसे जि—जेतुम्, भू—भवितुम्, कृ—कर्तुम्। इसी प्रकार हर्तुम्, धर्तुम्, लेखितुम्, रोदितुम्, शोचितुम्। (२) सेट धातुओं के बीच में इ आता है, अन्टि के नहीं। उदाहरण उपर्युक्त हैं। (३) धातु के अन्तिम च् और ज् को क् होता है, द् को त्, भ् को ब्, घ् को द्। जैसे पच्—पक्तुम्, भुज्—भोक्तुम्, छिद्—छेत्तुम्, रुध्—रोदुम्, लभ्—लब्धुम्। (४) धातु के अन्तिम च्छ् और श् तथा भस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज्, के ज् के स्थान पर ष् होकर ष्टुम् हो जाता है। जैसे प्रच्छ्—प्रष्टुम्। प्रविश्—प्रवेष्टुम्। स्वष्टुम्, यष्टुम्। (५) ए और ऐ अन्त वाली धातुओं को आ हो जाता है। गे—गातुम्, त्रे—त्रातुम्, आह्वे—आह्वातुम्। (६) धातु के अन्तिम म को न् हो जाता है। गम्—गन्तुम्, रम्—रन्तुम्। (७) इन धातुओं के ये रूप होते हैं :—सह्—सोदुम्, वज्—वोदुम्, सृज्—स्रष्टुम्, दश्—द्रष्टुम्, आरुह्—आरोदुम्, दह्—दग्धुम्।

नियम १३३—(तुं काममनसोरपि) तुम् के म् का लोप हो जाता है, बाद में काम या मनस् (इच्छार्थक) शब्द हों तो। जैसे वक्तुकामः, वक्तुमनाः (बोलने का इच्छुक)

अभ्यास ३६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. अहं कार्यं कर्तुमिच्छामि । २. स लेखं लेखितुम्, पुस्तकं पठितुम्, गृहं गन्तुं, शत्रुं हन्तुं, गुरुं वन्दितुं, भोजनं खादितुम् इच्छति । ३. अहं कार्यं कर्तुं शक्नोमि, पठितुं च जानामि । ४. एष समयः कालो वा पठितुम् । ५. स वक्तु-कामः वक्तुमनाः वा अस्ति । ६. रामः अत्र आस्ते, आस्ताम्, आसीत, आस्त, आसिष्यते वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. खाने को घर जाओ । २. पढ़ने को विद्यालय जाओ । ३. बालक कौवे की चोंच को छूना और अपनी ठोड़ी पकड़ना चाहता है । ४. यह भोजन का समय है । ५. रमा लिख और पढ़ सकती है । ६. कृष्ण भोजन खाने को, पाठ पढ़ने को, लेख लिखने को, काम करने को, गाय दुहने को, भार ढोने को, गाय (धेनु) लाने को, रस्सी जलाने को वहाँ जाता है । ७. वृक्ष पर चढ़ने को, दुःख सहने को, गाय देखने को, प्रश्न पूछने को, यज्ञ करने को, पुत्र की रक्षा करने को, गाना गाने को, शत्रु को जीतने को तुम यहाँ आना । ८. वह पढ़ने का इच्छुक है, खाने का इच्छुक है और गाने का भी इच्छुक है (कामः या मनाः) (ख) ९. इस कक्षामें २० छात्र और ८ छात्राएँ उपस्थित हैं और ४ छात्र अनुपस्थित हैं । १०. विद्यालय में गुरु छात्रों और छात्राओं से प्रश्न पूछते हैं, वे उत्तर देते हैं । ११. दस बजे विद्यालय की पढ़ाई आरम्भ होती है । १२. छात्र अपने मित्रों के साथ कक्षा में बैठते हैं, लेख लिखते हैं और पुस्तक पढ़ते हैं । १३. कुछ छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं और कुछ अनुत्तीर्ण । १४. कुछ खिलाड़ी क्रीडाक्षेत्र में गेंद खेल रहे हैं । १५. दवातमें स्याही है । १६. अपनी लेखनी से चार पृष्ठ लिखो । १७. अनुशासन का पालन करो । (ग) १८. वह धूलिपर बैठता है । १९. तू बैठता है । २०. मैं बैठता हूँ । २१. वह बैठा । २२. तू बैठा । २३. मैं बैठा । २४. वह बैठेगा । २५. वह बैठे ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. लिखितुम्, दुग्धुम्, सहितुम्, प्रच्छितुम् । लिखितुम्, दोग्धुम्, सोढुम्, प्रष्टुम् । १३१
२. पठितुमनाः, पठितुकामः । पठितुमनाः, पठितुकामः । १३३

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को बहुवचन में बदलो । (ख) आस् धातु के पाँचों लकारों में रूप लिखो (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—धेनु, रेणु, रज्जु । (घ) तुमुन् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमों को सोदाहरण बताओ । (ङ) इन धातुओं के तुमुन् प्रत्यय के रूप बनाओ :—कृ, हृ, घृ, पठ्, लिख्, गम्, भुज्, सह्, वह्, सृज्, दृश्, रुह्, दह्, प्रच्छ्, लभ्, हन्, गै, आ ह्वे ।

शब्दकोष ६०० + २५ = ६२५) अभ्यास ३७

(व्याकरण)

(क) वधूः (बहू), चमूः (सेना), तनूः (शरीर), जम्बूः (जामून), श्वश्रूः (सास) व्याघ्रः (बाघ), ऋक्षः (रीछ), शूकरः (सूअर), वृकः (भेड़िया), शृगालः (गीदड़), शशः (खरगोश), वानरः (बन्दर), मृगः (हिरन), नकुलः, (ग्योला), अश्वः (घोड़ा) वृषभः (बैल), उष्ट्रः (ऊँट), गर्दभः (गधा), महिषः (भैंसा), कुक्कुरः (कुत्ता), मार्जारः (बिल्ला), अजः (बकरा), मूषकः (चूहा)। एडका (भेड़)। २४। (ख) शी (सोना)। १। सूचना—(क) वधू-श्वश्रू, वधूवत्।

व्याकरण (वधू, शी, क्त्वा प्रत्यय, तृतीया)

१. वधू शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द सं० १७)।
२. शी धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३२)।
३. अभ्यास ९ में दिए तृतीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १३४—(१) (समानकर्तृकयोः पूर्वकाले) 'पढ़कर' 'लिखकर' आदि 'कर' या 'करके' के अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय होता है। क्त्वा का 'त्वा' शेष रहता है। क्रिया का कर्ता एक ही होना चाहिए। त्वा अव्यय होता है, अतः इसका रूप नहीं चलता। जैसे, भोजनं खादित्वा विद्यालयं गच्छति। (२) (अलंखत्वोः०) निषेधार्थक अलम् या खलु बाद में हो तो धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे अलं कृत्वा, कृत्वा खलु (मत करो)। अलं हसित्वा (मत हँसो)। (देखो अभ्यास ३८ भी)।

नियम १३५—क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। (१) धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती। सेट् धातुओं में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। जैसे, पठित्वा, हसित्वा, कृत्वा, हृत्वा, घृत्वा, लिखित्वा, रुदित्वा, जित्वा, चित्वा, भूत्वा। (२) नियम १२५ के (१) (३) (४) (५) यहाँ पर भी लगेंगे। जैसे (१) हृत्वा, लब्ध्वा, रुद्ध्वा। (३) दित्वा, सित्वा, मित्वा, स्थित्वा। (४) गत्वा, रत्वा, यत्वा, नत्वा, मत्वा, हृत्वा, वद्ध्वा। जन् आदि में 'इ' भी लगता है—जनित्वा, सात्वा—सनित्वा, खात्वा—खनित्वा। (५) उक्त्वा, सुप्त्वा, इष्ट्वा, उप्त्वा, गृहीत्वा, विद्ध्वा, पृष्ट्वा, हृत्वा, ऊढ्वा, उदित्वा, उषित्वा। (३) नियम १३२ के (३), (४) यहाँ भी लगते हैं। (३) पक्त्वा, भूक्त्वा। (४) पृष्ट्वा, दृष्ट्वा, इष्ट्वा, सृष्ट्वा। (४) गा, पा के आ को ई हो जाता है—गीत्वा, पीत्वा, अन्यत्र आ रहता है। ज्ञात्वा, त्रात्वा। (५) दीर्घ ऋ को ईर होता है, तृ > तीर्त्वा, कृ > कीर्त्वा, पू में ऊर् होता है > पूर्त्वा। (६) कम्, क्रम्, चम्, दम्, भ्रम्, श्रम् के दो दो रूप होते हैं। एक इ बोचम लगाकर, दूसरा अम् को 'आन्' बनाकर। जैसे कमित्वा—कान्त्वा, क्रमित्वा—क्रान्त्वा, शमित्वा—शान्त्वा आदि। (७) इन धातुओं के ये रूप होते हैं। दा > दत्त्वा, धा > हित्वा, हा (छोड़कर) > हित्वा, अद् > जग्ध्वा, दह् > दग्ध्वा।

अभ्यास ३७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. रामः स्नात्वा, पाठं पठित्वा, लेखं लिखित्वा, भोजनं भुक्त्वा, विद्यालयं गच्छति । २. कृष्णः आसने स्थित्वा, मित्रं दृष्ट्वा, तं प्रश्नं पृष्ठ्वा, स्वयं च किञ्चिद् उक्त्वा लिखति । ३. शिष्यः आसने शेते, शेताम्, शयीत, अशेत, शयिष्यते वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. कृष्ण स्नान करके, पुस्तक पढ़कर, लेख लिखकर, पाठ स्मरण कर, भोजन करके प्रतिदिन पाठशाला जाता है । २. राजा की सेना शत्रुओं को जीतकर, उन्हें बाँधकर राजा के पास लाती है । ३. बहू काम करके, भोजन पकाकर, सास को खिलाकर स्वयं खाती है । ४. गुरु सत्य बोलकर, धर्म करके, यज्ञ करके, दूध पीकर, छात्रों को पढ़ाकर दिन बिताता है । ५. सास दान देकर, मन्त्र जपकर, गाना गाकर, अधर्म को छोड़कर, सत्य को जानकर मुख पूर्वक रहती है । ६. बालक रोककर, भूमि खोदकर, डंडा लेकर दौड़ता है । ७. भृत्य नदी पार करके, भार सिर पर ढोकर ले जाता है । (ख) ८. रामने वन में एक व्याघ्र, दो रीछ, तीन सूअर, चार भेड़िए, पाँच गीदड़ और छः मृग देखे । ९. नगर में बहुत से घोड़े, बैल, ऊँट, भैंसें, कुत्ते, बिल्ली तथा गधे रहते हैं । १०. मत हँसो, मत रोओ, विवाद मत करो । ११. कुत्ता आँख से काणा है । १२. घोड़ा पैर से लंगड़ा है । १३. खरगोश स्वभाव से सरल होता है । १४. ऐसे कुत्ते से क्या लाभ जो रक्षा न करे । (ग) (शी धातु) १५. वह सोता है । १६. मैं सोता हूँ । १७. वह सोवे । १८. तू सो । १९. मैं सोऊँ । २०. वह सोया । २१. तू सोया । २२. मैं सोया । २३. वह सोएगा । २४. तू सोएगा । २५. मैं सोऊँगा ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. बन्ध्वा, यजित्वा, वक्त्वा, दुहित्वा । बद्ध्वा, इष्ट्वा, उक्त्वा, दुग्ध्वा । १२५
२. दात्वा, ग्रहीत्वा, तरित्वा, वहित्वा । दत्त्वा, गृहीत्वा, तीर्त्वा, ऊढ्वा । १२५

४. अभ्यास :—(क) २(ग)को बहुवचन बनाओ । (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—वधू, चमू, तनू । (ग) शी धातु के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (घ) क्त्वा प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमों को सोदाहरण लिखो । (ङ) इन धातुओं के क्त्वा प्रत्यय के रूप लिखो—कृ, गम्, पठ्, लिख्, खन्, वच्, स्वप्, ग्रह्, वह्, दृश्, प्रच्छ्, गा, तृ पृ, दा, धा, क्रम्, भ्रम् ।

शब्दकोष ६२५ + २५ = ६५०) अभ्यास ३८

(व्याकरण)

(क) वाच् (वाणी), शुच् (शोक), त्वच् (त्वचा), ऋच् (वेद की ऋचा) ।
कोकिलः (कोयल), मयूरः (मोर), हंसः (हंस), शुकः (तोता), चातकः (चातक),
चक्रवाकः (चक्रवा), खंजनः (खंजन), कपोतः (कबूतर), टिट्ठिभः (टिट्ठहरी),
चिल्लः (चोल), काकः (कोआ), वायसः (कोआ), कुक्कुटः (मुर्गा), गृध्रः (गीघ),
बकः (बगुला), उलूकः (उल्लू), श्येनः (बाज) । सारिका (मंता), वर्तिका (१.
बत्तख, २. बत्तो) चटका (विड़िया) । २४ । (घ) स्वच्छ । १ ।

व्याकरण (वाच्, हु, ल्यप् चतुर्थी)

१. वाच् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द सं० १८) ।
२. हु धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० ३३) ।
३. अभ्यास १० में दिए चतुर्थी के नियमों का पुनः अध्ययन करो ।

नियम १३६—(समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्) धातु से पूर्व कोई अव्यय, उपसर्ग या च्विप्रत्यय हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) हो जाता है । धातु से पहले नञ् (अ) हो तो नहीं । ल्यप् का 'य' शेष रहता है । ल्यप् अव्यय होता है अतः इनके रूप नहीं चलते । जैसे, प्रलिख्य, प्रगम्य, स्वीकृत्य । परन्तु अकृत्वा, अगत्वा । ल्यप् प्रत्यय का वही अर्थ है जो क्त्वा का है अर्थात् करके ।

नियम १३७—ल्यप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें :—
(१) साधारणतया धातु अपने मूल रूप में रहती है । गुण या वृद्धि नहीं होती है । इ भो बीच में नहीं लगता । जैसे—आलिख्य, सपठ्य, आनीय । (२) धातु के अन्त में आ, ई, ऊ हो तो वह उसी रूप में रहता है । जैसे प्रदाय, उत्थाय, निधाय, निलीय, विक्रीय, आनीय, अनुभूय, स्थिरीभूय । (३) (ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्) ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ के बाद ल्यप् से पहले 'त्' और लग जाता है, अर्थात् 'त्य' होता है । जैसे आगत्य, अधीत्य, विजित्य, संश्रूय, प्रस्तुत्य, प्रकृत्य, प्रहृत्य । (४) दीर्घ ऋ को ईर् हो जाता है और ए में ऊर् । जैसे उत्तीर्य, अवतीर्य, विकीर्य, प्रपूर्य । (५) (वचित्त्वपि०) वच् आदि को संप्रसारण होता है । वच् > प्रोच्य, वद् > अनूद्य, वस् > अणुष्य, स्वप् > प्रमुष्य, ह्वे > आहूय, ग्रह् > संगृह्य, प्रवृञ् > आपृञ्च्य । (६) णिजन्त धातुओं के 'इ' का लोप हो जाता है, विचारि > विचार्य । प्रहाय, उत्तार्य, उत्थाप्य, प्रदर्श्य, संवित्त्य । (७) (ल्यपि लघुपूर्वात्) उपधा में ह्रस्व हो तो इ को अय होता है, विगणय्य, प्रणमय्य, विरचय्य । (८) (वा ल्यपि) गम् आदि के म का लोप विकल्प से होता है और हन् आदि के न का लोप नित्य होता है । (लोप होनेपर बीच में त्) । आगम्य—आगत्य, प्रगम्य—प्रगत्य । हन्—आहत्य, तन्—वितत्य, मन् > अनुमत्य ।

अभ्यास ३८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. पाठं संपठ्य, लेखम् उल्लिख्य, सुखम् अनुभूय, परीक्षाम् उत्तीर्य रामोऽत्रागतः । २. रामम् आहूय, सम्यग् विचार्य गुरुः पृष्ठवान् । ३. वाचम् उच्चार्य, शुचं संत्यज्य, वेदम् अधीत्य, ऋचं प्रोच्य, गुरुः प्राप्तः । ४. छात्रः अग्नौ जुहोति, जुहोतु, जुहुयात्, अजुहोत्, होप्यति वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) (ल्यप्) १. गुरु के लिए जल लाकर दो । २. श्रम से पढ़कर, परीक्षा उत्तीर्ण कर अग्रिम श्रेणी में पढ़ो । ३. राजा शत्रु का संहार करके, दुष्ट पर प्रहार कर, गुणियों का उपकार कर, पापियों का अपकार कर, मुख का अनुभव कर ब्राह्मणों को दान देता है । ४. वणिक् अन्न और पुस्तक बेचकर, धन संग्रह कर, दान देकर, अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण कर मुख से सोता है । ५. बालक उठकर, गुरु को प्रणाम कर, सुन्दर वचन उच्चारण कर, विद्यालय में आकर ऋचा पढ़ता है । ६. शिष्य रात्रि में सोकर, प्रातः उठकर, अन्य छात्रों को उठाकर, स्नानकर, हवन कर, भोजन कर, पुस्तक लेकर पढ़ने के लिए जाता है । ७. सायंकाल खेलकर और घूमकर, पूजा कर, भोजन कर, ऋचा पढ़कर सोता है । ८. शोक को छोड़कर वाणी कहो । (ख) ९. कोयल और कौए की त्वचा काली होती है । १०. मोर नाचकर, हंस चलकर, तोता बोलकर, चातक मेघ की ओर देखकर, खंजन उड़कर (उड़ुडुय), कबूतर, चील, बगुला और बाज अपनी क्रीड़ा से मन को हरते हैं । ११. मैना बोलती है, बत्तक इधर आती है, चिड़िया उड़ती है (उड़ुडुयते), उल्लू चिल्लाता है (ऋन्द), गीघ देगता है, मुर्गा भागता है, चकवा रात्रि में रोता है, टिटिहरी उड़ती है । (ग) १२. वह अग्नि में हवन करता है । १३. तू हवन करता है । १४. मैं हवन करता हूँ । १५. वह हवन करे । १६. तू हवन कर । १७. उसने हवन किया । १८. मैंने हवन किया । १९. वह हवन करेगा । २०. मैं हवन करूँगा ।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. आदत्य, अधीय, उत्तीर्वा ।	आदाय, अधीत्य, उत्तीर्य ।	१३६
२. आह्वाय, संहय, उपकृत्य ।	आहूय, संहत्य, उपकृत्य ।	१३६

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को बहुवचन बनाओ । (ख) हु धातु के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) वाच्, शुच्, त्वच्, ऋच् के पूरे रूप लिखो । (घ) इन धातुओं के ल्यप् प्रत्यय के रूप बनाओ—अनुभू, उपकृ, संस्कृ, संह, आहृ, प्रहृ, अधि + इ, आनी, उत्तृ, अवत्तृ, संगम्, आदा, उत्था, अनुवद्, अधिवस्, आह्वे, आहन्, विचारि, उत्थापि ।

शब्दकोष ६५० + २५ = ६७५) अभ्यास ३९

(व्याकरण)

(क) सरित् (नदी), योषित् (स्त्री), तडित् (बिजली), विद्युत् (बिजली) ।
दन्तः (दाँत), ओष्ठः (ओष्ठ), अधरः (नीचे का ओष्ठ), स्कन्धः (कन्धा), कण्ठः
(गला), स्तनः (स्तन), करः (हाथ), नखः (नाखून) । नासिका (नाक), ग्रीवा
(गर्दन), जिह्वा (जीभ), नाभिः (नाभि), बुद्धिः (बुद्धि), मुष्टिः (मुट्ठी) । बाहुः
(भुजा, हाथ) । शीर्षम् (शिर), ललाटम् (माथा), उरःस्थलम् (छाती), हृदयम्
(हृदय), उदरम् (पेट), अङ्गम् (अंग) । २५ ।

व्याकरण (सरित्, भी, तव्यत्, अनीयर्, चतुर्थी)

१. सरित् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० १९) ।
२. भी धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३४) ।
३. अभ्यास ११ में दिए चतुर्थी के नियमों का पुनः अभ्यास करो ।

नियम १३८—(तव्यत्तव्यानीयरः) 'चाहिए' अर्थ में तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं । इनका क्रमशः तव्य और अनीय शेष रहता है । तव्य और अनीय भाववाच्य और कर्मवाच्य में होते हैं । (१) जब ये कर्मवाच्य में होंगे तो कर्म के अनुसार इनका लिंग, वचन और कारक होगा, कर्ता में तृतीया होगी और कर्म में प्रथमा । जैसे तेन त्वया मया अस्माभिः वा पुस्तकानि पठितव्यानि, पठनीयानि वा । (२) जब भाववाच्य में तव्य और अनीय होंगे तो इनमें नपुंसक० एकवचन ही रहेगा, कर्ता में तृतीया होगी । जैसे तेन हसितव्यम् । तव्य और अनीय प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुं० में रामवत्, स्त्रीलिंग में रमावत् और नपुं० में गृहवत् होंगे ।

नियम १३९—'तव्य' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए देखो नियम १३२ । जैसे पठितव्य, लेखितव्य, कर्तव्य, हर्तव्य । रूप बनाने का सरल उपाय यह भी है कि तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो ।

नियम १४०—'अनीय' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लो ।
ल्युट् (अन), अच् (अ), अप् (अ), में भी ये नियम लगेंगे । (१) साधारणतया धातुओं में कोई अन्तर नहीं होता । धातु मूल रूप में रहती है । बीच में इ नहीं लगता । गम् > गमनीय, हसनीय, यजनीय, वचनीय । पा > पानीय, दानीय, स्थानीय आदि । (२) धातु के अन्तिम और उपधा के इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है और अन्तिम ई, ऊ, ऋ को भी क्रमशः ए, ओ, अर् होते हैं । जैसे जि > जयनीय, चयनीय, हवनीय, स्तवनीय, करणीय, हरणीय, स्मरणीय, लेखनीय, शोचनीय, कर्षणीय । (३) धातु के अन्तिम ए और ऐ को आ होता है । ग > गानीय, आह्वे > आह्वानीय ।

अभ्यास ३९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मया पाठः पठनीयः पठितव्यो वा । २. मया अस्माभिः वा पाठौ पठनीयौ, पाठाः पठनीयाः । ३. मया त्वया अस्माभिः वा कार्यं कर्तव्यं करणीयं वा, कार्याणि करणीयानि । ४. त्वया हसनीयम् । ५. मया सरित् योषिद् वा दर्शनीया, द्रष्टव्या वा । ६. शिष्यः गुरोः विभेति, विभेत्, अविभेत्, विभीयात्, भेष्यति वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) (तव्यत्, अनीयर्) १. मुझे लेख लिखना चाहिए । २. मुझे हँसना चाहिए । ३. तुम्हें काम करना चाहिए । ४. मुझे पाठ स्मरण करना चाहिए । ५. तुम्हें गाना गाना चाहिए । ६. स्त्री को पढ़ना चाहिए, गाना गाना चाहिए, दान देना चाहिए और हवन करना चाहिए । ७. नदी में स्नान करना चाहिए । ८. विद्युत् से डरना चाहिए । (ख) ९. उस स्त्री की नाक, ओष्ठ, दांत और अधर मुझे अच्छे लगते हैं (रुच्) । १०. हृदय की शुद्धि से बुद्धि शुद्ध होती है । ११. हाथ दान से जीभ सत्यभाषण से, बुद्धि सुविचार से, बाहु बल से, हृदय दया से, कण्ठ सुन्दरस्वर से शोभित होता है । १२. उन्नत कंधा, उन्नत वक्षःस्थल, उन्नत ललाट और उन्नत स्तन शोभित होते हैं । १३. इस पुरुष की नाभि, नाखून, उदर, और शिर सुन्दर हैं । (ग) १४. पिता को नमस्कार । १५. बालक को स्वस्ति । १६. मैं इस कार्य के लिए समर्थ और पर्याप्त हूँ । १७. स्त्री को आभूषण अच्छा लगता है । १८. राम दुष्ट पर क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या और असूया करता है । १९. सुख और शान्ति के लिए स्त्री को प्रसन्न रखो (प्रसादय) । (घ) २०. वह पिता से डरता है, डरे, डरा या डरेगा । २१. मैं सिंह से डरता हूँ, डरा या डरूँगा । २२. तू चोर से डरता है, डरा या डरेगा ।

३.	अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१.	अहं लेखं लेखनीयम् ।	मया लेखः लेखनीयः ।	१३८
२.	विद्युता भेतव्यः ।	विद्युतः भेतव्यम् ।	१३८, ४७

४. अभ्यास :—(क) २(क) को बहुवचन बनाओ । (ख) २(घ) को बहु० बनाओ । (ग) भी धातु के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (घ) सरित्, योषिद् विद्युत्, तडित् के पूरे रूप लिखो । (ङ) इन धातुओं के तव्यत् और अनीयर् लगाकर रूप बनाओ—कृ, पठ्, लिख्, गम्, हृ, पा, दा, गै, जि, चि, (च) चतुर्थी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो ।

शब्दकोष ६७५ + २५ = १०००) अभ्यास ४०

(व्याकरण)

(क) वारि (जल) । हस्तः (हाथ), अङ्गुष्ठः (अंगुठा), केशः (बाल), मलम् (शौच), मूत्रम् (लघुशंका), रक्तम् (खून), मांसम् (मांस), आननम् (मुंह) पृष्ठम् (पीठ) । शिखा (चाँटे), जंवा (जंघा) । अंगुलिः (अंगुली), कटिः (कमर) । १४। (ख) आदा (लेना), प्रदा (देना) । अभिधा (कहना), अपिधा (ढकना), विधा (करना), परिधा (पहनना), निधा (रखना), श्रद्धा (श्रद्धा करना) । ८। (घ) सुरभि (सुगन्धित), शुचि (स्वच्छ, पवित्र), मनोहारिन् (मनोहर) । ३।

सूचना—वारि, सुरभि, शुचि, मनोहारिन्, वारि के तुल्य ।

व्याकरण (वारि, दा, धा, यत्, अच्, अप्, पंचमी)

१. वारि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० २१) ।
२. दा, धा धातु के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो । (देखो धातु० ३५, ३६) ।
३. अभ्यास १२ में दिए पंचमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो ।

नियम १४१—(अचो यत्) 'चाहिए' या 'योग्य' अर्थ में आ, इ, ई, उ, ऊ अन्त वाली धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् का 'य' शेष रहता है। यत् प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। लिंग, वचन आदि के लिए देखो नियम १३८। अर्थात् कर्मवाच्य में कर्म के तुल्य लिंग, वचन, विभक्ति। कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया, क्रिया में नपुं० एकवचन। मया त्वया अस्माभिः वा जलं पेयम्, दानं देयम्। पुस्तकानि देयानि। मया स्थेयम् !

नियम १४२—(ईदृशति) यत् (य) प्रत्यय लगाने पर (१) आ को ए हो जाता है, दा > देयम्, गा > गेयम्, स्था > स्थेयम्, मा > मेयम्, पा > पेयम्, हा > हेयम्। (२) इ ई को ए हो जाता है, चि > चेयम्, जि > जेयम्, नी > नेयम्। (३) उ, ऊ को ओ होकर अव् हो जाता है। श्रु > श्रव्यम्, हु > हव्यम्, भू > भव्यम्, सु > सव्यम्।

नियम १४३—(१) (पचाद्यच्) पच् आदि प्रायः सभी धातुओं से अच् प्रत्यय होता है। अच् का अ शेष रहता है। अच् प्रत्यय लगाने से संज्ञा शब्द बन जाते हैं। धातु को गुण होता है। पुलिङ्ग रहता है। रामवत् रूप होंगे। पच् > पचः, दिव् > देवः, कृ > करः (हाथ), नद् > नदः (बड़ी नदी), चूर् > चोरः, युव् > योधः। (२) (एरच्) इ अन्तवाली धातुओं से अच् (अ) प्रत्यय होता है। गुण होकर अय् हो जाएगा। चि > चयः। जि > जयः। नी > नयः। आश्रि > आश्रयः। ऐसे ही प्रश्रयः, विनयः, प्रणयः।

नियम १४४—(ऋदोरप्) ऋ, उ या ऊ अन्तवाली धातुओं से अप् (अ) प्रत्यय होता है। गुण होता है; पुलिङ्ग होगा। कृ > करः, गृ > गरः, यु > यवः, भू > भवः। स्तु > स्तवः, पू > पवः।

अभ्यास ४०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मया त्वया अस्माभिः वा सुरभि वारि पेयम्, दानं देयम्, गानं गेयम्, शत्रुः जेयः, यशः श्रव्यम्, कीर्तिः श्रव्या । २. मया त्वया वा पुस्तकानि देयानि, पापानि दुःखानि च हेयानि । ३. तेन मया वा विद्या अध्येया, शिक्षा देया, कीर्तिः गेया । ४. स धनं ददाति प्रददाति वा, विद्याम् आददाति च । ५. स शिष्येभ्यः धनं ददाति, ददातु, दद्यात्, अददात्, दास्यति वा । ६. स पुस्तकं दधाति, वाचम् अभि-दधाति, कर्णौ अपदधाति पिदधाति वा, कार्यं विदधाति, शुचि वस्त्रं परिदधाति, पुस्तकम् आसने निदधाति, धर्मं श्रद्धधाति च ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) (यत् प्रत्यय) १. मुझे स्वच्छ जल पीना चाहिए । २. तुझे दान देना चाहिए । ३. उसे यहाँ रहना चाहिए (स्था) । ४. हम सबको गाना गाना चाहिए, शत्रु जीतना चाहिए, गुरु से विद्या पढ़नी चाहिए, पाप छोड़ने चाहिए । (ख) ५. अपने शरीर के सभी अंगों को स्वच्छ रखो (स्थापि) । ६. अपने हाथ, पाँव, मुँह, बाल, नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा, अंगुलि, अंगूठा, नाखून, नाभि, पेट, कमर, जीभ और जंघा को स्वच्छ और सुन्दर रखो । ७. शरीर में रक्त, मांस और अस्थियाँ होती हैं । ८. शिक्षा कल्याण और कीर्ति के लिए होती है । (ग) ९. वह गाँव से आता हुआ सुगन्धित फूल वृक्ष से तोड़ता है (आदा) १०. स्वच्छ जल देता है (प्रदा) । ११. मनोहर वचन कहता है (अभिधा) । १२. स्वच्छ वस्त्र से नाक बंद करता है (अपिधा) । १३. गाँव से आकर यहाँ काम करता है (विधा) । १४. स्वच्छ वस्त्रों को पहनता है (परिधा) । १५. पत्ते पर फूल रखता है (निधा) । १६. गुरु पर श्रद्धा करता है । (घ) १७. बालक चोर से डरता है । १८. योधा शत्रु से मित्र को बचाता है । १९. राम गुरु से विद्या पढ़ता है । २०. ज्ञान के बिना (ऋते) मुक्ति नहीं होती ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. अहं शुचिः जलं पेयम् । मया शुचि जलं पेयम् । १४१, ३३
२. चोरेण बिभेति । गुरुणा अधीते । चोराद् बिभेति । गुरोः अधीते । ४७, ४८

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो ।
(ख) वारि, सुरभि, शुचि के नपुं० के पूरे रूप लिखो । (ग) दा, धा, के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (घ) इनके यत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—दा, धा, गै, हा, स्था, चि, जि, नी, श्रु, हु, भू । (ङ) अच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—जि, नी, थि, चि ।
(च) अप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, गृ, यु, भू, स्तु, पू, रु, द्रु ।

शब्दकोष १०००+२५=१०२५) अभ्यास ४१

(व्याकरण)

(क) दधि (दही), अस्थि (हड्डी), अक्षि (आँख), अक्षाः (पासा, जुए की गिट्टी) तरङ्गः (तरंग), पङ्कः (कोचड़), नाविकः (मल्लाह), धीवरः (धीवर, मछुआ), मत्स्यः (मछली), मकरः (मगर), कच्छपः (कछुआ), दर्दुरः (मैंदक), तडागः (तालाब), कूपः (कुआ)। बिन्दुः (बूद)। नौका (नाव)। तटम् (तट, किनारा), सैकतम् (नदी का रेतीला किनारा), जालम् (जाल), कमलम् (कमल)। २०। (ख) दिव् (१. जुआ खेलना, २. चमकना), सिव् (सीना), अस् (फेंकना), अभ्यस् (अभ्यास करना), निरस् (छोड़ना, निकालना)। ५।

सूचना—(क) दधि—अक्षि, दधिवत्। (ख) दिव्—निरस्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (दधि, दिव्, घञ्, पंचमी)

१. दधि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २२)।
२. दिव् धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३७)।
३. अभ्यास १३ में दिए पंचमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १४५—(भावे, अकर्तरि च कारके०) धातु का अर्थ या कर्ता को छोड़कर अन्य कारक का अर्थ बताने के लिए घञ् प्रत्यय होता है। घञ् का 'अ' शेष रहता है। घञन्त शब्द पुलिङ्ग होता है। जैसे हस् > हासः (हँसो), पाकः (पकना)। घञन्त के साथ कर्म में बँधी होती है, जैसे भोजनस्य पाकः, रामस्य हासः।

नियम १४६—घञ् (अ) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें:—

- (१) धातु के अन्तिम और उपधा के अ, इ, उ, ऋ को क्रमशः आ, ऐ, औ, आर् वृद्धि हो जाती है। धातु के अन्तिम ई, ऊ, ऋ को भी क्रमशः ऐ, औ, आर् होता है। जैसे पठ् > पाठः, लिख् > लेखः, रुध् > रोधः, श्रि > श्रायः, भू > भावः। हस् > हासः। कृ > कारः, प्रकारः, विकारः, उपकारः, अपकारः, हृ > हारः, प्रहारः, आहारः, संहारः, विहारः, उपहारः आदि। अध्यायः, उपाध्यायः, संस्कारः।
- (२) (चजोः कुः घिष्ण्यतोः) च् को क् और ज् को ग् हो जाता है। पच् > पाकः, शुच् > शोकः भज् > भागः, यज् > यागः, भुज् > भोगः, रुज् > रोगः। त्यज् > त्यागः।
- (३) इन धातुओं के रूप होते हैं:—रुञ्ज् > रागः, अनुराग, विराग, उरराग। मृज् > मार्गः, अपामार्गः। चि > कायः, निकायः। नि + इ न्यायः। हन् > घात, आघात, उपघात। घञ् के कुछ अन्य रूपः—१. युज् > योग, वियोग, संयोग, प्रयोग, उपयोग। २. चर् > चारः, आचारः, विचार, प्रचार, संचार, ३. वद् > वादः, विवाद, आशीर्वाद, संवाद, प्रवाद, अपवाद, अनुवाद। ४. नम् > प्रणाम, परिणाम। ५. भुज् > भोग, उपभोग, संभोग, आभोगः। ६. दिश् > देश, विदेश, उपदेश, सन्देश, निर्देश, आदेश, उद्देश, प्रदेश। (देखो परिशिष्ट)

अभ्यास ४१

१. उदाहरण-वाक्य — १. शुचि भक्षयति । २. दध्नः घृतं भवति । ३. अक्षणा पश्यति । ४. अस्थिषु त्वग् भवति । ५. अक्षैः दीव्यति, दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत्, देविष्यति । ६. वस्त्रार्णि सीव्यति । ७. शत्रौ इषुम् अस्यति, शास्त्रम् अभ्यस्यति, पापिनं निरस्यति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. दही अच्छी है । २. दही लाओ, दही से घी होता है । ३. आँख से देखो । ४. आँख में जल है । ५. आँख से काणा है । ६. हड्डी पर त्वचा है । ७. हड्डियों में शक्ति है । (ख) ८. नदीमें मछलियाँ, कछुए, मगर हैं । ९. नदी के तट पर रेत और कीचड़ हैं । १०. तालाब में धीवर जाल डालकर (प्रक्षिप्य) मछलियाँ पकड़ता है (आदा) । ११. गंगा की तरङ्गें सुन्दर हैं । १२. कुएँ में मेंढक हैं । १३. जल की बूँदें गिर रही हैं । १४. नाविक नौका से नदी को पार कर रहा है (त) । १५. नदी के सैकत प्रदेश में छात्र खेल रहे हैं । १६. जल में कमल शोभित हो रहे हैं । (ग) १७. वह पाशों से जुआ खेल रहा है । १८. तू जूआ खेलता है । १९. वह जूआ खेला । २०. मैं जूआ नहीं खेला । २१. तू जूआ न खेला । २२. वह जूआ नहीं खेलेगा । २३. वह वस्त्र सीता है । २४. मैं बाण फेंकता हूँ । २५. वह धनुर्विद्या का अभ्यास करता है (अभ्यस्) । २६. वह शत्रु को नगर से निकालता है (निरस्) । (घ) २७. पाप से दुःख होता है । २८. अधर्म से बचो (विरम्) । २९. पाप से पुत्र को हटाता है । ३०. राम से अन्य कोई आ रहा है । ३१. बल से बुद्धि ही श्रेष्ठ है (गरीयसी) । ३२. गुरु के पास से शिष्य आता है । ३३. धन से धान्य को बदलता है । ३४. चोर राजा से छिप रहा है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. दधिनः, अक्षिणा, अक्षिणि ।

दध्नः, अक्षणा, अक्षिण ।

शब्दरूप

२. मतिः बलेन गरीयसी ।

मतिरेव बलाद् गरीयसी ।

५४

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को बहुवचन बनाओ । () दधि, अस्थि, अक्षि, के पूरे रूप लिखो । (ग) दिव्, सिव्, अस् के पाँचों लकारों में रूप लिखो । (घ) पंचमी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो । (ङ) इन धातुओं के घञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ :—पठ्, लिख्, विक्, आह्, आधृ. भृ, पच्, शुच्, भज्, भुज्, युज्, रुज्, त्यज्, उपदिश्, वस्, हस्, हन्, वद्, अधि + इ, प्रणम् ।

५. वाक्य बनाओ :—पाठः, प्रहारः, भागः, भोगः, संयोगः, त्यागः, आघातः, ऋते, त्रायते, निवारयति, जायते, प्रतियच्छति, अवीते, विरमति ।

शब्दकोष १०२५ + २५ = १०५०) अभ्यास ४२

(व्याकरण)

(क) मधु (१. शहद, २. मीठा), दारु (लकड़ी), जानु (घुटना), अम्बु (जल), वस्तु (वस्तु), वसु (धन), अश्रु (आँसू), जनु (लाख), श्मश्रु (दाढ़ी), त्रपु (राँगा), शानु (पर्वत की चोटी), तालु (तालु) । १२ । (ख) नृत् (नाचना), व्यध् (बीधना, मारना), पुष् (पुष्ट करना), शुष् (सूखना), तुष् (संतुष्ट होना), श्लिष् (१. चिपकना, २. आलिंगन करना), तृप् (तृप्त होना), रञ्ज् (१. प्रसन्न होना, २. लगना), शुध् (शुद्ध होना) । ६ । (घ) स्वादु (स्वादिष्ट), बहु (बहुत), होतृ (हवन करनेवाला), क्षितृ (रक्षार्कर्ता) । ४ ।

सूचना—(क) मधु—तालु, मधुवत् । (ख) नृत्—शुध्, दिव् के तुल्य ।

व्याकरण (मधु, नृत्, तृच् षष्ठी)

१. मधु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० २३) ।

२. नृत् धातु के पूरे पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० ३८) ।

३. अभ्यास १४ में दिए षष्ठी के नियम का पुनः अभ्यास करो ।

४. कर्तृ शब्द नपु० के प्रथमा द्वितीया में ये रूप होंगे :—शेष पुलिग कर्तृवत् ।

कर्तृ कर्तृणी कर्तृणि प्र० संक्षिप्तरूप ऋ ऋणी ऋणि प्र०

” ” ” द्वि० ” ” ” द्वि०

नियम १४७—(ध्वलृच्) धातु से 'वाला' (कर्ता) अर्थ में तृच् प्रत्यय होता है ।

तृच् का 'तृ' शेष रहता है । जैसे कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (हरनेवाला), इसी प्रकार संहर्ता, धर्ता उपकर्ता आदि । कर्ता के अनुसार इसका लिग, विभक्ति और वचन होता है । पुलिग में इसके रूप कर्तृ शब्द (शब्द रूप सं० ५) के तुल्य चलेंगे । स्त्रीलिग में अन्त में 'ई' लगाकर नदी के तुल्य । नपु० में उपर्युक्त रूप से रूप चलेंगे । प्रायः सभी धातुओं से तृच् प्रत्यय लगता है । तृच् प्रत्यान्त के साथ कर्म में षष्ठी होती है—जैसे पुस्तकस्थ कर्ता, हर्ता, धर्ता वा । धातु को गुण होता है ।

नियम १४८—तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिये ये नियम स्मरण कर लें :—

(१) नियम १३२ (१) से (७) पूरा लगेगा । रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् के स्थान पर तृ लगाने से तृच् प्रत्ययान्त रूप बन जाता है ।

(१) (२) धातु को गुण होता है । जैसे कृ > कर्तृम् > कर्तृ, हृ > हर्तृम् > हर्तृ ।

इसी प्रकार भर्तृ, धर्तृ, लेखितृ, पठितृ, रोदितृ आदि । (३) भोक्तृ, पक्त्, छेत्तृ ।

(४) यष्टृ, प्रष्टृ, स्रष्टृ, प्रवेष्टृ । (५) गातृ, दातृ, धातृ, विधातृ, जातृ, आह्वातृ,

(६) गन्तृ, रन्तृ, यन्तृ, उपयन्तृ । (७) सोढृ, वोढृ, स्रष्टृ, द्रष्टृ ।

अभ्यास ४२

१. उदाहरण वाक्य :—१. स्वादु मधु भक्षय । २. इदं दारु इहानय । ३. पर्वतस्य सानुनि सानौ वा वृक्षोऽस्ति । ४. ईश्वरः जगतः कर्ता, धर्ता, संहर्ता चास्ति । ५. ईश्वरस्य प्रकृतिः जगतः कर्त्री, धर्त्री, संहर्त्री चास्ति । ६. ब्रह्म जगतः कर्तृ धर्तृ संहर्तृ चास्ति । ७. कन्या नृत्यति, नृत्यतु, अनृत्यत्, नृत्येत्, नर्तिष्यति वा । ८. नृपः शत्रुं शरैः विध्यति, पिता पुत्रं पुष्यति, रोगिणः शरीरं शुष्यति, मम मनः तुष्यति तृष्यति च, पत्नी पतिं श्लिष्यति, मम मनः कार्ये रज्यति, मनः सत्येन शुध्यति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. स्वादु मधु खाओ । २. इस लकड़ी को लाओ । ३. घुटना पृथ्वीपर रखो । ४. बहुत जल न पिओ । ५. उस वस्तु को उठाओ । ६. बहुत धन चाहो । ७. तुम्हारे आँसू गिर रहे हैं । ८. लाख यहाँ लाओ । ९. दाढ़ी स्वच्छ करो । १०. रांगा चिपकता है (श्लिष्) । ११. पर्वत की चोटी पर चढ़ो । १२. तालु में बाण लगा (विद्धः) । (ख) १३. ईश्वर संसार का कर्ता धर्ता हर्ता है । १४. ब्रह्म सृष्टि का कर्ता धर्ता हर्ता है । १५. पुस्तक का कर्ता पुस्तक बनाता है (रच्) । १६. जेता शत्रुओं को जीतता है । १७. रक्षिता रक्षा करता है । १८. धन का लेने वाला धन लेता है । १९. हर्ता धन चुराता है । २०. भर्ता पत्नी का पालन करता है । (ग) २१. नटी नाचती है । २२. कन्या नाची । २३. गोर नाचेगा । २४. भूपति मृग को बाणों से वींघता है । २५. माता पुत्र को पालती है । २६. वृक्ष सूख रहा है । २७. ब्राह्मण स्वादु भोजन से तृप्त होता है । २८. राम सीता का आलिंगन करता है । २९. मनुष्य धन से तृप्त होता है । ३०. मेरा मन पढ़ने में लगता है (रज्ज्) । (घ) ३१. लकड़ी के हेतु वृक्ष के ऊपर जाता है । ३२. बालक माता का स्मरण करता है । ३३. कमल के ऊपर, नीचे, आगे पीछे भीरें हैं (भ्रमर) । ३४. कालिदास कवियों में सर्वश्रेष्ठ है ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. दारुम्, अम्बुम्, वस्तुम्, अश्रुम् । दारु, अम्बु, वस्तु, अश्रूणि ।

शब्दरूप

२. बालकः मातरं स्मरति ।

बालकः मातुः स्मरति ।

६२

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख)

इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—मधु, दारु, वस्तु, वसु, स्वादु (नपुं०), बहु (नपुं०) ।

(ग) इन धातुओं के पाँचों लकारों में पूरे रूप लिखो—नृत्, पुष्, शुष्, तुप्, तृप् । (घ)

इन धातुओं के तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, ह, धृ, गम्, पठ्, जि, चि, हन्, मन्, पच्, भुज्, युज्, छिद्, भिद्, प्रच्छ्, सृज्, गा, दा, सह्, वह्, दृश् ।

शब्दकोष १०५० + २५ = १०७५) अभ्यास ४३ (व्याकरण)

(क) पयस् (१. जल, २. दूध), यशस् (यश), वचस् (वचन), तपस् (तपस्या), शिरस् (शिर), वासस् (वस्त्र), सरस् (तालाब), नभस् (आकाश), अम्भस् (जल), सदस् (सभा), वक्षस् (छाती), स्रोतस् (स्रोत) । यानम् (सवारी), स्थानम् (स्थान), उपकरणम् (साधन), आवरणम् (आवरण, ढक्कन), संस्करणम् (१. शुद्धि, २. पुस्तकादि का संस्करण), प्रकरणम् (प्रकरण) । १८ । (ख) नश् (नष्ट होना), मुह् (मोहित होना), करणम् (करना), हरणम् (हरना), मरणम् (मरना), भजनम् (भजन करना), पानम् (पीना) । ७ ।

सूचना—(क) पयस्—स्रोतस्, पयस् के तुल्य । (ख) नश्—मुह्, दिव् के तुल्य ।

व्याकरण (पयस्, नश्, ल्युट्, ण्वुल्, षष्ठी)

१. पयस् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० २४) ।

२. नश् धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३९) ।

३. अभ्यास १५ में दिए षष्ठी के नियमों का पुनः अभ्यास करो ।

नियम १४६—(१) (ल्युट् च) भाववाचक शब्द बनाने के लिये धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है । ल्युट् के यु को 'अन' हो जाता है । अनप्रत्यायान्त शब्द नपुंसक लिंग होते हैं । धातु को गुण होता है । ल्युट् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए नियम १४० देखें । गम् > गमनम् (जाना) । इसी प्रकार पठनम् (पढ़ना), यजनम्, भजनम् । कृ > करणम्, हरणम्, भरणम्, मरणम्, रोदनम्, शोचनम् । (२) (करणाधिकरणयोश्च) करण और अधिकरण अर्थ में भी ल्युट् (अन) होता है । यानम् (जिससे जाते हैं, सवारी) । स्थानम् (जिसपर या जहाँ बैठते हैं) उपकरणम् (जिससे काम करते हैं, साधन), आवरणम् (जिससे ढकते हैं) ।

नियम १५०—(ण्वुलतृचौ) 'करने वाला' या 'वाला' अर्थ में ण्वुल् प्रत्यय होता है । ण्वुल् के वु को 'अक' हो जाता है । नियम १४६ (१) के तुल्य धातु को वृद्धि होगी । कर्ता के अनुसार इसके लिंग होंगे । पुलिङ्ग में रामवत्, स्त्रीलिंग में 'इका' अन्त में होगा, रमावत् रूप होंगे । नपुं० में ज्ञानवत् । जैसे कृ > कारकः (करने वाला), कारिका, कारकम् । पाठकः, लेखकः, हारकः, संहारकः, धारकः, मारकः, उपकारकः, अपकारकः, सेवकः । (१) आकारान्त धातु में 'य' लग जाएगा । दा > दायकः, सुखदायकः । धा > धायकः, विधायकः । पा > पायकः । इनके ये रूप होंगे—हन् > घातकः, जन् > जनकः, शम् > शमकः, गम् > गमकः, यम् > यमकः, वध् > वधकः ।

अभ्यास ४३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. बालः पयः पिबति । २. जगत् नश्यति । ३. मूर्खस्य मनः मुह्यति । ४. पिता पुत्रे स्निह्यति । ५. पयसः पानं, वचसः कथनं, तपस आचरणं, शिरसः प्रक्षालनम्, वाससः धारणम्, नभसः दर्शनम्, सदसि भाषणं, स्रोतसि स्नानं कुरु । ६. ईश्वरः जगतः कारकः धारकः हारकश्चास्ति । ७. ईश्वरस्य प्रकृतिः जगतः कारिका, धारिका, हारिका चास्ति । ८. ब्रह्म जगतः कारकं, धारकं, हारकं चास्ति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. जल पीओ । २. यश चाहो । ३. वचन बोलो । ४. तप करो । ५. सिर छूओ । ६. कपड़े पहनो । ७. तालाब में स्नान करो । ८. आकाश को देखो । ९. सभा में शान्त बैठो । १०. दूध का पीना, वचन का कहना, तप का करना, शिर का धोना, वस्त्रों का पहनना, नभ का देखना, जल का लाना, वक्षःस्थल का उठना (उत्थान), सोते का बहना । ११. लेख का लिखना, पुस्तक का पढ़ना, भोजन का खाना, ईश्वर का स्मरण, कार्य का करना, धन का हरण, मनुष्य का मरना, बालक का उठना, कन्या का सोना, चोर का रात्रि में जागना । १२. यश में रुचि, तालाब में नहाना, सभा में बैठना अच्छा है । १३. यान पर चढ़ो । १४. स्थान पर बैठो । १५. भोजन के उपकरण लाओ । १६. शय्या पर आवरण डालो (स्थापय) । (ख) १७. ईश्वर संसार का कारक, धारक, हारक है । १८. नियति जगत् की कर्त्री, धर्त्री, हर्त्री है । १९. पाचक भोजन पकाता है । २०. रक्षक रक्षा करता है । २१. गायिका गाती है । २२. राम के समीप, गाँव से दूर, मनुष्य है । २३. राम के तुल्य श्याम है । २४. बालक का कुशल हो । (ग) २५. संसार नष्ट होता है । २६. वृक्ष नष्ट हुआ । २७. दुष्ट नष्ट हो । २८. मूर्ख मोहित होता है । २९. गुरु शिष्यपर स्नेह करता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. पिबनम्, पश्यनम्, उत्तिष्ठनम् । पानम्, दर्शनम्, उत्थानम् । १४९

२. यशसम्, तपसम् । यशे, सरे । यशः, तपः । यशसि, सरसि । शब्दरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ग) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—पयस्, यशस्, वचस्, तपस्, शिरस्, वासस्, सरस्, नभस्, सदस् । (ग) नश् और मुह् के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (घ) इन धातुओं के ल्युट् और ण्वुल् प्रत्यय के रूप बनाओ :—कृ, हृ, धृ, भृ, पठ्, लिख्, गम्, दृश्, पा, स्था, दा, या, स्ना, ज्ञा, शी, भज्, भुज्, मुच्, रुद्, रुह्, वद्, खन् । (ङ) षष्ठी किन स्थानों पर होती है सोदाहरण लिखो ।

शब्दकोष १०७५ + २५ = ११००) अभ्यास ४४

(व्याकरण)

(क) शर्मन् (मुख), वर्मन् (कवच), ब्रह्मन् (१. ब्रह्म, २. वेद), वेदमन् (घर), सद्यन् (घर), पर्वन् (१. पर्व, त्योहार, २. गांठ), भस्मन् (भस्म, राख), जन्मन् (जन्म), लक्ष्मन्, (चिह्न), वर्तमन् (मार्ग), चर्मन् (चमड़ा)। बुधः (विद्वान्), आतपत्रम् (छाता)। १३। (ख) भ्रम् (घूमना), शम् (शान्त होना), दम् (१. दमन करना, २. संयम करना), क्लम् (थकना), हृष् (प्रसन्न होना), लुभ (लोभ करना)। ६। (घ) प्रिय (प्रिय), कृश (दुबला, पतला), सुकर (सरल), दुष्कर (कठिन), सुलभ (सुलभ), दुर्लभ (दुर्लभ)। ६।

सूचना—शर्मन्—चर्मन्, शर्मन् के तुल्य। (ख) भ्रम्—शुभ्, दिव् के तुल्य।

व्याकरण (शर्मन्, भ्रम्, क, खल्, सप्तमी)

१. शर्मन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० २५)।

२. भ्रम् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४०)।

३. अभ्यास १६ में दिए सप्तमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १५१—(१) (इगुपवज्ञाप्रोकिरः कः) जिन धातुओं की उपधा में इ, उ, या ऋ हो उनसे तथा ज्ञा, प्री और कृ धातु से क प्रत्यय होता है। क प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है। धातु को गुण नहीं होगा। धातु के अन्तिम 'आ' का लोप होता है। 'वाला' अर्थ में क प्रत्यय होता है। जैसे, बुध् > बुधः (जानने वाला, विद्वान्) लिख् > लिखः (लेखक), कृश् > (कृशः) (निर्बल), ज्ञा > ज्ञः (ज्ञाता), प्री > प्रियः (प्रिय), कृ > किरः (बखेरने वाला)। (२) (आतश्चोपसर्ग) उपसर्ग पहले हो तो आकारान्त धातु से क प्रत्यय होता है। आ का लोप हो जाएगा। जैसे प्र + ज्ञा > प्रज्ञः, प्राज्ञ, विज्ञः, सुज्ञः, अभिज्ञः, आ + ह्वा > आह्वः, प्रह्वः। (३) (आतोऽनुपसर्ग कः, सुपि स्थः) उपसर्ग भिन्न कोई शब्द पहले हो तो भी आकारान्त से क प्रत्यय होता है। आ का लोप हो जाएगा—जैसे सुख + दा > सुखदः, दुःखदः, त्रा > आतपत्रम्, गोत्रम्, पुत्रः। पा > द्विपः, गोपः, महीपः, पादपः। स्या > समस्थः, विषमस्थः, द्विष्टः, आसनस्थः, वृक्षस्थः।

नियम १५२—(ईषद्दुःसुषु०) ईषत्, दुः, या सु पहले हो तो धातु से खल् (अ) प्रत्यय ही होता है, कठिन या सरल अर्थ में। जैसे ईषत्करः, दुष्करः, सुकरः, दुर्लभः, सुलभः, दुर्गमः, सुगमः, दुर्जयः, सुजयः, दुःसहः।

अभ्यास ४४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. प्रियाय प्राज्ञाय शर्म । २. वर्म धारय । ३. स्वकीये वेश्मनि सद्मनि वा निवसामि । ४. सतां वर्त्मना गच्छामि । ५. भस्मनि बालः पतितः । ६. मम पुत्रस्य जन्म रविवारेऽभवत् । ७. बुधः भ्राम्यति, पुत्रः शाम्यति, प्राज्ञः इन्द्रियाणि दाम्यति, पथिकः क्लाम्यति, सज्जनः हृष्यति, बालः मोदकाय लुभ्यति । ८. दुःखं सुलभम्, सुखम् दुर्लभम् ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. अपना कल्याण चाहो । २. सुलभ कवच पहनो । ३. ब्रह्म संसार को बनाता है । ४. घर में सुख से रहो । ५. रास्ते में मत खेलो । ६. सज्जनों के मार्ग से चलो । ७. आज अमावस्या का पर्व है । ८. भस्म में यति रमता है । ९. तुम्हारा जन्म कब हुआ था । १०. शत्रु के दुःसह बाणों का चिह्न मेरे शरीर पर है । ११. यति मृग के चर्म पर बैठता है । १२. मेरी धर्म में श्रद्धा है । १३. वसन्त में बहुत फूल और फल होते हैं । १४. सार्यकाल घूमने के लिए जाऊँगा । १५. कुश मनुष्य पर दया करो । १६. वर्षा में छाता वर्षा से बचाता है । १७. प्राज्ञ सुकर और दुष्कर सभी कर्मों को करता है । (ख) १८. बुद्धिमान् जन प्रियजनों के साथ घूमते हैं । १९. वह भ्रमण करता है । २०. तूने भ्रमण किया । २१. मैं भ्रमण करूँ । २२. वह शान्त होता है । २३. बुद्धिमान् इन्द्रियों का दमन करता है । २४. तू थूकता है । २५. मैं प्रसन्न होना हूँ । २६. मूर्ख लोभ करते हैं ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. शर्माणम्, वर्माणम्, सद्मनि ।

शर्म, वर्म, सद्मनि ।

शब्दरूप

२. वर्षायां आतपत्रं वर्षया त्रायते ।

वर्षासु आतपत्रं वर्षाभ्यः त्रायते । ४७, ८९

३. इन्द्रियाणां दाम्यति ।

इन्द्रियाणि दाम्यति ।

४

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) इनके पूरे रूप लिखो—शर्मन्, वर्मन्, ब्रह्मन्, वर्त्मन्, जन्मन्, चर्मन् । (ग) इन धातुओं के पाँचों लकारों में पूरे रूप लिखो—भ्रम्, शम्, दम्, हृष्, लुभ् । (घ) इन धातुओं के क प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—लिख्, बुध्, कुश्, ज्ञा, प्री, कृ । (ङ) इनके खल् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—मुगम्, सुकृ, दुष्कृ, मुजि, दुर्जि, सुलभ्, दुर्लभ् ।

५. वाक्य बनाओ :—शर्मणे, पर्वणि, जन्मना, भ्राम्यति, हृष्यति, सुकरः, दुर्लभः ।

शब्दकोष ११०० + २५ = ११२५) अभ्यास ४५

(व्याकरण)

(क) जगत् (संसार), वियत् (आकाश)। गतिः (गति), बुद्धिः (बुद्धि), धृतिः (धैर्य), कृतिः (कार्य), नतिः (१. नमस्कार २. झुकना) भूतिः (ऐश्वर्य), उक्तिः (कथन), इष्टिः (१. यज्ञ, २. इच्छित), वृत्तिः (१. व्यवहार, २. आजीविका) प्रवृत्तिः (१. झुकाव, २. लगना), मुक्तिः (मोक्ष), युक्तिः (युक्ति), संसृतिः (संसार) पण्डितमन्यः (अपनेको पंडित मानने वाला), शाकाहारिन् (शाकाहारी), निरामिष-भोजिन् (शाकाहारी), मांसाहारिन् (मांसाहारी)। १६। (ख) युध् (लड़ना), उद् + डी (उड़ना), दीप् (१. जलना, २. दीप्त होना), क्लिश् (दुःखित होना)। ४। (घ) पचत् (पकाता हुआ), पतत् (गिरता हुआ)। २।

सूचना—(क) जगत्—वियत्, जगत् के तुल्य। (ख) युध्—क्लिश्, युध् के तुल्य।

व्याकरण (जगत्, युध्, कितन्, अण्, णिनि, सप्तमी)

१. जगत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २६)।

२. युध् धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४१)।

३. अभ्यास १७ में दिए सप्तमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

नियम १५३—(स्त्रियां कितन्) धातुओं से कितन् प्रत्यय होता है। कितन् का 'ति' शेष रहता है। 'ति' प्रत्यान्त शब्द स्त्रीलिंग हो होते हैं। इनसे भाववाचक संज्ञा बनती हैं। जैसे कृ > कृतिः (करना), धृतिः, स्तुतिः, भूतिः। गुण या वृद्धि नहीं होगी। संप्रसारण होगा। 'ति' प्रत्यय लगाकर धातुओं से रूप बनाने के लिए नियम १३५ (१) से (६) देखें। (१) कृति, हृति, धृति, चिति, भूति। (२) स्थिति, भिति, गति, मति, यति, रति, नति, उक्ति, मुक्ति, इष्टि। (३) पक्ति, भुक्ति, मुक्ति। (४) गीति, पीति, (५) कीर्ति, पूति। (६) कान्ति, क्रान्ति, भ्रान्ति, शान्ति, श्रान्ति।

नियम १५४—(कर्मण्यण्) कोई कर्म वाचक पद पहले हो तो धातु से अण् (अ) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होती है। जैसे कुम्भं करोतीति—कुम्भकारः। भाष्यकारः, सूत्रधारः, तन्तुवायः।

नियम १५५—(१) (नन्दिग्रहि०) 'वाला' अर्थ में धातु से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होगी। करिन् के तुल्य रूप चलेंगे। जैसे निवसतीति > निवासी, प्रवासी, स्था > स्थायी, कृ > उपकारी, अपकारी, अधिकारी। इसी प्रकार, द्वेषी, अभिलाषी, संचारी। (२) (मुष्यजातौ०) कोई शब्द पहले हो तो धातु से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है, स्वभाव अर्थ में। भुज् > उष्णभोजी (गर्म खाने के स्वभाव वाला), आमिषभोजी, निरामिषभोजी, मिथ्यावादी, मनोहारी, अप्रयायी, अनुगामी, मित्रद्वेषी, शाकाहारी, मांसाहारी। (३) (आत्ममाने खश्च) अपने आपको समझने अर्थ में णिनि और खश् (अ) दोनों प्रत्यय होते हैं। म् भी शब्द के बाद लगता है। जैसे पण्डितमानी, पण्डितमन्यः।

अभ्यास ४५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. ब्रह्मणः जगत् उद्भवति, जगतः कर्ता ब्रह्म वा ।
 २. वियति पक्षिणः उड्डीयन्ते । ३. पुष्पाणि पतन्ति सन्ति (गिर रहे हैं) । ४. ओदनं पचत् अस्ति (भात पक रहा है) । ५. योधः युध्यते, पक्षी उड्डीयते, उदडीयत वा, अग्निः दीप्यते, दुष्टः क्लिश्यते । ६. मम धर्मे बुद्धिः, कर्मणि प्रवृत्तिः अस्ति । ७. स पंडितमन्यः पंडितमानी वा अस्ति । ८. अहं शाकाहारी, निर्गमिषभोजी वा अस्मि ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. जगत् सुन्दर है । २. जगत् में बहुत से मनुष्य मूर्ख और पापी हैं । ३. आकाश में बहुत से पक्षी हैं । ४. आकाश स्वच्छ है । ५. फल पक रहा है । ६. पत्ता गिर रहा है । ७. गुरु की गति, मनुष्य की मति, धीर की धृति, कवि की कृति, भद्र की भूति, उदार की उक्ति, इष्ट की इष्टि, वीर की वृत्ति, पुरुष की प्रवृत्ति, योग की युक्ति, मुमुक्षु की मुक्ति । ८. संसृति में धर्म में प्रवृत्ति, विद्या में गति, मुक्ति के विषय में मति, विपत्ति में धृति सब में नहीं होती । ९. पति पत्नी पर स्नेह करता है । १०. छात्र का कन्या पर स्नेह है । ११. गुरु के जाने पर शिष्य आया । १२. धर्मों में आर्य-धर्म श्रेष्ठ है । १३. पर्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है । १४. अर्जुन धनुर्विद्या में कुशल, पटु, निपुण, और दक्ष है । १५. राजा शत्रुओं पर बाण फेंकता है । (ख) १६. वीर युद्ध करता है । १७. मैं युद्ध करता हूँ । १८. तूने युद्ध किया । १९. हंस आकाश में उड़ता है । २०. अग्नि दीप्त होती है । २१. मूर्ख दुःखित होता है । (ग) २२. वह अपने आपको पंडित समझता है । २३. मैं शाकाहारी हूँ । २४. वह मांसाहारी है ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
१. गुरोः गते सति ।	गुरौ गते सति ।	७७, ३३
२. हंसः वियते उड्डयति ।	हंसः वियति उड्डीयते, उड्डयते वा ।	शब्दरूप, धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) इन शब्दों के रूप लिखो—जगत्, वियत्, पचत् (नपुं०) पतत् (नपुं०) । मति, बुद्धि, धृति, कृति, उक्ति, वृत्ति । (ग) इन धातुओं के पाँचों लकारों में रूप लिखो—युध्, डी, दीप्, क्लिश् । (घ) इन धातुओं के कितन् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, हृ, धृ, गम्, रम् नम्, स्था, गा, पा, स्वप्, यज्, कम्, शम् । (ङ) सप्तमी किन स्थानों पर होती है, सोदाहरण लिखो ।

५. वाक्य बनाओ :—जगति, जगताम्, वियति, युक्तिः । युध्यते, योत्स्यते, उड्डीयते, उदडीयत, उड्डियिष्यते, अदीप्यत, दीपिष्यते, क्लिश्यते, क्लेशिष्यते ।

शब्दकोष ११२५ + २५ = ११५०) अभ्यास ४६

(व्याकरण)

(क) नामन् (नाम), प्रेमन् (प्रेम), धामन् (धाम, घर), व्योमन् (आकाश), सामन् (सामवेद), हेमन् (सीना), दामन् (रस्सी), लोमन् (बाल) । ८ । (ख) जन् (पैदा होना), संपद् (होना, पूर्ण होना), उत्पद् (उत्पन्न होना), विद् (होना), मन् (मानना) । ५ । (ग) निर्विघ्नम् (निर्विघ्न), निष्कारणम् (बिना कारण के), यथाशक्ति (शक्तिभर), अःबालवृद्धम् (बालक से बृद्ध तक) । ४ । (घ) यावत् (१. जितना, २. जबतक), तावत् (१. उतना, २. तबतक), कियत् (कितना), इयत् (इतना), अनुकूल (अनुकूल), प्रतिकूल (विपरीत), निर्द्वन्द्व (निर्विघ्न), निर्जन (जनरहित) । ८ ।

सूचना—(क) नामन्—लोमन्, नामन् के तुल्य । (ख) जन्—मन्, युध् के तुल्य ।

व्याकरण (नामन्, जन्, अव्ययीभाव समास)

१. नामन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० २७) ।

२. जन् धातु के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४२) ।

नियम १५६—(समास) (१) एक या अधिक शब्दों को मिलाने या जोड़ने को समास कहते हैं । समास का अर्थ है संक्षेप । समास करने पर समास हुए शब्दों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती । समस्त (समासयुक्त) शब्द एक शब्द हो जाता है ; अन्त में विभक्ति लगती है । समास के तोड़ने को 'विग्रह' कहते हैं । जैसे राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष) विग्रह है, राजपुरुषः (राजपुरुष) समस्तपद है, बीच के कारक षष्ठी का लोप हुआ है । (२) समास के छः भेद हैं :—१. अव्ययीभाव, २. तत्पुरुष, ३. कर्मधारय, ४. द्विगु, ५. बहुव्रीहि, ६. द्वन्द्व ।

नियम १५७—(अव्ययीभाव) (अव्ययं विभक्तिसमीप०) अव्ययीभाव समास की पहचान यह है कि इसमें पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होगा । बाद का शब्द कोई संज्ञा शब्द होगा । अव्ययीभाव समास वाले शब्द नपुं० एक० में ही रहते हैं, उनके रूप नहीं चलते । अव्ययीभाव समास के समस्तपद और विग्रह पद में अन्तर होता है, क्योंकि किसी विशेष अर्थ में अव्यय शब्द आता है । १. सप्तमी के अर्थ में 'अधि'—हरौ > अधिहरि । २. समीप अर्थ में 'उप' कृष्णस्य समीपे > उपकृष्णम् । ऐसे ही उपकूलम्, उपगंगम्, उपयमुनम् । ३. अभाव अर्थ में 'निर्' । जनानामावो > निर्जनम् । निर्विघ्नम्, निर्द्वन्द्वम् । निर्मक्षिकम् । ४. पीछे अर्थ में अनु, रथस्य पश्चात् > अनुरथम् । अनुहरि । ५. प्रत्येक अर्थ में 'प्रति' गृहं गृहं प्रति > प्रतिगृहम् । ६. अनुसार अर्थ में 'यथा,' शक्तिमनतिक्रम्य > यथाशक्ति । यथेच्छम्, यथाकामम् । ७. साथ और सदृश अर्थ में सह का 'स', सक्कम् । ८. तक अर्थ में 'आ' आसमुद्रम् । आबालवृद्धम् । ९. बाहर अर्थ में 'बहिः' बहिर्वनम्, बहिर्ग्रामम् । १०. समीप या ओर अर्थ में 'अनु' अनुकूलम् । ११. विपरीत अर्थ में 'प्रति', प्रतिकूलम् । अपने रूढ़ अर्थ में अनुकूल प्रतिकूल विशेषण होते हैं ।

अभ्यास ४६

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मम नाम देवदत्तोऽस्ति । २. गुरुः शिष्ये प्रेम करोति । ३. व्योम्नि पक्षिणः विद्यन्ते । ४. हेमन्तः आभूषणं संपद्यते । ५. मातुः पुत्रः जायते, जायेत, अजायत, जनिष्यते, उत्पत्स्यते वा । ६. स आत्मानं प्राज्ञं मन्यते, अमन्यत, मंस्यते वा । ७. स यथाशक्ति साम अगायत् । ८. निष्कारणं प्रतिकूलं न आचर । ९. निर्जने निर्द्वन्द्वः निर्विघ्नं तावत् पठ, यावत् इयत् कार्यं न संपद्यते । १०. यावन्तो जनाः ग्रामे सन्ति, तावन्तः सर्वेऽपि आबालवृद्धम् इत्यकालं यावत् मुखिनः सन्ति ।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. तुम्हारा नाम क्या है ? २. मेरा नाम कृष्ण है । ३. सज्जन सब पर प्रेम करता है । ४. प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है । ५. मेरे घर में आबाल-वृद्ध सब यथाशक्ति कार्य करते हैं । ६. हमारे विद्यालय में जितने छात्र हैं, उतनी ही छात्राएँ हैं । ७. वहाँ कितने छात्र, कितनी छात्राएँ, कितने फल और कितनी पुस्तकें हैं । ८. जितने फल, जितने फूल वहाँ हैं, उतने ही फल और फूल यहाँ भी हैं । ९. तब तक काम करो, जब तक गुरु जी आवें । १०. उतने समय तक वहाँ मत रहो । ११. निष्कारण विवाद न करो । १२. निर्जन में भी अनुकूल और प्रतिकूल प्राणी मिल जाते हैं । १३. राम मेरे अनुकूल है । १४. रावण मेरे प्रतिकूल है । १५. आकाश में पक्षी हैं । १६. श्याम साम गाता है । १७. यह सोने का आभूषण है । १८. रस्सी लाओ । १९. बाल धोओ । (ख) २०. बालक उत्पन्न होता है । २१. पुत्र उत्पन्न हुआ । २२. गिर्या से ज्ञान होता है (संपद्) । २३. वह वहाँ है । २४. वह अपने आपको मूर्ख समझता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. प्रेमात् प्रेमः जायते ।

प्रेम्णः प्रेम जायते ।

शब्दरूप

२. यावान् छात्राः, तावन्तः बालिकाः ।

यावन्तः छात्राः, तावत्यः बालिकाः । ,,

३. अनुकूलं प्रतिकूलं प्राणिनः ।

अनुकूलाः प्रतिकूलाः प्राणिनः ।

३३

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) इन शब्दों के रूप लिखो—नामन्, प्रेमन्, व्योमन्, हेमन् । (ग) इन धातुओं के पाँचों लकारों में रूप लिखो—जन्, संपद्, विद्, मन् । (घ) समास किसको कहते हैं ? कितने समास हैं । नाम लिखो । (ङ) अव्ययीभाव समास की पहचान सोदाहरण लिखो ।

५. समास करो :—कृष्णस्य समीपे । जनानाम् अभावः । रथस्य पश्चात् । द्वारं द्वारं प्रति । शक्तिम् अनतिक्रम्य । चक्रेण सहितम् । गंगायाः समीपम् ।

शब्दकोष ११५० + २५ = ११७५) अभ्यास ४७

(व्याकरण)

(क) मनस् (मन), चेतस् (चित्त), तमस् (अन्धकार), उरस् (छाती), तेजस् (तेज), रजस् (१. धूल, २. रजोगुण), वयस् (आयु), रक्षस् (राक्षस), ओजस् (तेज), छन्दस् (वेद के छन्द), रहस् (एकान्त), एनस् (पाप), अंहस् (पाप), हविष् (हविष), सर्पिष् (घो), ज्योतिष् (१. ज्योति, २ तारे) रोचिष् (तेज), धनुष् (धनुष), चक्षुष् (आँख) राजपुरुषः (राजकर्मचारी), सोमः (१. चन्द्रमा, २. सोमरस), मूर्तिपूजा (मूर्तिपूजा) । २२ । (ख) सु (१. नहाना, २. नहवाना, ३. रस निकालना) । १ । (घ) ईश्वरभक्त (ईश्वर का भक्त), विद्याहीन (मूर्ख) । २ ।

सूचना—(क) मनस्—अंहस्, मनस् के तुल्य । हविष्—रोचिष्, हविष् के तुल्य ।

व्याकरण (मनस्, हविष्, सु, तत्पुरुष)

१. मनस् और हविष् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो । (देखो शब्द० २८ क, ख) ।

२. सु धातु के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो । (देखो धातु० ४३) ।

नियम १५८—(तत्पुरुष) तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जहाँ पर दो या अधिक शब्दों के बीच से द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का लोप होता है। समास होनेपर बीच की विभक्ति का लोप हो जाएगा। जिस विभक्ति का लोप होगा, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष समास कहा जाएगा, जैसे द्वितीया तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष समास आदि। (उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः) इसमें बाद वाले पद का अर्थ मुख्य होता है। जैसे, (१) द्वितीया—कृष्णम् आश्रितः—कृष्णाश्रितः। दुःखमतीतः—दुःखातीतः। भयं प्राप्तः—भयप्राप्तः। (२) तृतीया—बाणेन आहतः—बाणाहतः। खड्गेन हतः—खड्गहतः। नखैः भिन्नः—नखभिन्नः। हरिणा त्रातः—हरित्रातः। विद्यया हीनः—विद्याहीनः। ज्ञानेन शून्यः—ज्ञानशून्यः। मात्रा सद्दशः—मातृसद्दशः। पित्रा तुल्यः—पितृतुल्यः। एकेन ऊनम्—एकोनम्, आदि। (३) चतुर्थी—यूपाय दारु—यूपदारु। गवे हितम्—गोहितम्। भूताय बलिः—भूतबलिः। द्विजाय इदम्—द्विजार्थम्। स्तानाय इदम्—स्तानार्थम्। भोजनार्थम्। (४) पंचमी—चोराद् भयम्—चोरभयम्। पापाद् मुक्तः—पापमुक्तः। प्रासादात् पतितः—प्रासादपतितः। वृक्षपतितः, अश्वपतितः, रोगमुक्तः, शत्रुभयम्, राजभयम्। (५) षष्ठी—राज्ञः पुरुषः—राजपुरुषः। ईश्वरस्य भक्तः—ईश्वरभक्तः। शिवभक्तः, विष्णुभक्तः, देवपूजकः। मूर्त्याः पूजा—मूर्तिपूजा। देवपूजा। सुवर्णकुण्डलम्, विद्यालयः, देवालयः, देवमन्दिरम्। (६) सप्तमी—शास्त्रे निपुणः—शास्त्र-निपुणः। विद्यानिपुणः, युद्धनिपुणः। जले लीनः—जललीनः। जलमग्नः। कार्यं चतुरः—कार्यचतुरः। कार्यदक्षः।

अभ्यास ४७

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मनसि ईश्वरं चिन्तय । २. चेतसा रहसि अपि अहांसि एनांसि न कुरु । ३. रक्षांसि तमसि विचरन्ति । ४. नभसि रविः तेजोभिः ज्योतिभिः च प्रकाशते । ५. यौवने छन्दांसि पठ, हविश्च अग्नौ जुहुधि, बाल्ये वयसि सर्पिः भक्षय । ६. ईश्वरभक्तः राजपुरुषः मूर्तिपूजां करोति । ७. रामः यज्ञार्थं सोमं सोमस्य रसं वा मुनोति, मुनोतु, अमुनोत्, मुनूयात्, सोप्यति । ८. कृष्णः प्रातः मुनुते, मुनुताम्, अमुनुत, मुन्वीत, सोप्यते वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मन सत्य से शुद्ध होता है । २. चित्त में ईश्वर का ध्यान करो । ३. रात्रि में अंधकार सर्वत्र फैल जाता है । ४. हृदय में पाप न रखो । ५. घूल में बालक खेलते हैं । ६. तुम्हारी आयु क्या है ? ७. राक्षस अंधेरे में घूमते हैं । ८. ब्रह्मचारी का ओज, सूर्य का तेज, चन्द्रमा की ज्योति, वीर का तेज (रोचिष्) शोभित हो रहा है । ९. वेद के छन्दों को प्रतिदिन पढ़ो, अग्नि में हवि और घी डालो । १०. ईश्वरभक्त पापों से डरता है । ११. एकान्त में भी पाप न करो । १२. विद्या से हीन मनुष्य पाप से युक्त होता है (युज्) । १३. दोनों आँखों से देखो । १४. राजपुरुष धनुष उठाता है और राक्षसोंको मारता है (हन्) । १५. विष्णु का भक्त मूर्तिपूजा करता है । (ख) १६. वह रस निकालता है । १७. तू सोम का रस निकाल । १८. मैं रस निकालूँ । १९. वह रस निकालेगा । २०. वह प्रातःसवन करे (मु) ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. मनः सत्यात् शुध्यति ।

मनः सत्येन शुध्यति ।

२४

२. मने चेते वा ईश्वरस्य चिन्तयति । मनसि चेतसि वा ईश्वरं चिन्तयति । शब्द०, १३

३. रक्षसाः, छन्दसाः, एनसाः ।

रक्षांसि, छन्दांसि, एनांसि ।

शब्दरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—मनस्, तेजस्, नभस्, उरस्, छन्दस्, हविष्, ज्योतिष्, धनुष्, चक्षुष् । (ग) सु धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों में रूप लिखो । (घ) तत्पुरुष समास किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखो ।

५. समास करो :—राज्ञः पुरुषः । ईश्वरस्य भक्तः । विद्यायाः आलयः । भयं प्राप्तः । ज्ञानेन शून्यः । विद्यया हीनः । एकेन ऊतम् । द्विजाय इदम् । रोगात् मुक्तः । विद्यायां निपुणः ।

६. विग्रह करो :—राजपुरुषः । दुःखातीतः । खङ्गहतः । पितृतुल्यः । भूतबलिः । वृक्षपतितः । युद्धनिपुणः । जलमग्नः ।

शब्दकोष ११७५ + २५ = १२००) अभ्यास ४८ (व्याकरण)

(क) स्वर्णकारः (सुनार), लौहकारः (लोहार), चर्मकारः (चमार), घटः (घड़ा), कुम्भकारः (कुम्हार), मालाकारः (माली), कर्णधारः (मल्लाह), चित्रकारः (चित्रकार), तैलिकः (तेली), महत्तरः (मेहतर), रजकः (धोबी), तन्तुवायः (जुलाहा), भारवाहः (मजदूर), शिल्पिन् (कारीगर), स्वर्णम् (सोना), लौहम् (लोहा), चक्रम् (१. चक्र, २. चाक) चित्रम् (चित्र), तैलम् (तेल), पादत्राणम् (१. जूता, २. चप्पल), समार्जनी (झाड़ू) । २१ । (ख) आप् (पाना), प्राप् (पाना), समाप् (१. पाना, २. समाप्त करना), व्याप् (व्याप्त होना) । ४ ।

व्याकरण (आप्, कर्मधारय, द्विगु समास)

१. आप् धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो । (देखो धातु० ४४) ।

नियम १५६—(तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः) विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं । विशेषण शब्द पहले रहेगा, विशेष्य बाद में । कर्मधारय में दोनों पदों में एक ही विभक्ति रहती है । जैसे नीलं कमलम्—नीलकमलम् । नीलम् उत्पलम्—नीलोत्पलम् । कृष्णः सर्पः—कृष्णसर्पः । महान् चासौ देवः—महादेवः । महान् चासौ आत्मा—महात्मा । (१) एव (ही) के अर्थ में—मुखमेव कमलम्—मुखकमलम् । चरणः एव कमलम्—चरणकमलम् । इसी प्रकार मुखचन्द्रः, करकमलम्, पादपद्मम्, नयनकमलम् । (२) सुन्दर के अर्थ में 'सु' और कुत्सित के अर्थ में 'कु' लगता है । सुन्दरः पुरुषः—सुपुरुषः । कुत्सितः पुरुषः—कुपुरुषः । कुपुत्रः, कुनारी, कुदेशः । (३) इव (तरह) के अर्थ में—घन इव श्यामः—घनश्यामः । पुरुषः व्याघ्र इव—पुरुषव्याघ्रः । नरसिंहः, नृसिंहः । चन्द्रसदृशं मुखम्—चन्द्रमुखम् । चन्द्रमुखी ।

नियम १६०—(संख्यापूर्वा द्विगुः) कर्मधारय का ही उपभेद द्विगु समास है । जब कर्मधारय समास में प्रथम शब्द संख्या वाचक हो तो वह द्विगु समास होता है । अधिकतर यह समाहार (एकत्र या समूह) अर्थ में होता है । जैसे त्रयाणां लोकानां समाहारः—त्रिलोकम् (तीनों लोकों का समूह) । इसी प्रकार त्रिभुवनम् । चतुर्णां युगानां समाहारः—चतुर्युगम् । पञ्चानां पात्राणां समाहारः—पञ्चपात्रम् । समाहार अर्थ में समास में एकवचन ही रहता है और वचन नहीं । समास होने पर, नपुंसक लिंग या स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं—जैसे त्रिलोकम्, त्रिलोकी, चतुर्युगम्, चतुर्युगी, शतानां अब्दानां समाहारः—शताब्दी, दशवर्षम्, दशाब्दी ।

अभ्यास ४८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. स्वर्णकारः स्वर्णेन आभूषणानि रचयति । २. लौह-कारः लोहेन पात्राणि रचयति । ३. चर्मकारः चर्मणा पादत्राणं (जूता), कुम्भकारः घटं, मालाकारः मालां, चित्रकारः चित्रं, महत्तरः समार्जन्या स्वच्छतां, तन्तुवायः वस्त्रं शिल्पी खट्वाम् (खाट), रजकः वस्त्राणां स्वच्छतां करोति । ४. नरः धर्मेण यशः, आप्नोति, आप्नोतु, आनोत्, आप्नुयात्, आप्स्यति वा । ५. प्राज्ञः सत्येन सुखं प्राप्नोति । ६. छात्रः कार्यं समाप्नोति, फलं च समाप्नोति । ७. ईश्वरः त्रिलोकं व्याप्नोति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. सुनार सोने से सुन्दर और बहुमूल्य आभूषण बनाता है । २. लोहार लोहे को पीटता है (ताडयति) । ३. चमार चमड़े से एक जूता बनाता है । ४. कुम्हार चाकपर मिट्टी से (मृत्तिका) घड़ा बनाता है । ५. माली फूलों से माला बनाता है । ६. कर्णधार नौका को नदी के पार ले जाता है । ७. चित्रकार एक नारी का सुन्दर चित्र बनाता है । ८. तेली तिलों से तेल निकाल रहा है (निष्कासयति) । ९. धोबी वस्त्रों को धोता है (प्रक्षालयति) । १०. जुलाहा वस्त्रों को बनाता है । ११. भारवाहक भार को ढोता है (नी, वह्) । १२. महादेव काले साँप को धारण करते हैं । १३. तालाब में नीलकमल खिल रहा है । १४. संसार में मुपुरुष न्यून और कुपुरुष अधिक हैं । १५. नारी के मुखकमल को देखो । (ख) १६. वह धन पाता है । १७. मैं यश पाता हूँ । १८. तू पुस्तक पाता है । १९. वह विद्या पावे । २०. मैं धन पाऊँ । २१. तू सुख पा । २२. वह शान्ति पावेगा । २३. मैं ज्ञान पाऊँगा । २४. तूने यश पाया । २५. मैंने सुख पाया । २६. मैं कार्य को समाप्त करता हूँ । २७. ईश्वर त्रिलोक, त्रिभुवन और चतुर्युगों में व्याप्त है ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. अप्राप्नोः, अप्राप्नुवम् ।

प्राप्नोः, प्राप्नवम् ।

९६

२. त्रिलोकेषु, त्रिभुवनेषु, चतुर्युगेषु ।

त्रिलोके, त्रिभुवने, चतुर्युगे ।

१६०

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख)

आप्, प्राप्, समाप् के परस्मैपद के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (ग) कर्मधारय और द्विगु समास किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखो ।

५. समास करो :—नीलं कमलम् । महान् चासौ देवः । धीरः पुरुषः । घन इव श्यामः । पादः एव पद्मम् । कुत्सितः पुरुषः । त्रयाणां लोकानां समाहारः । शतानाम् अब्दानां समाहारः ।

६. विग्रह बताओ :—कृष्णसर्पः, करकमलम्, नीलोत्पलम्, मुपुरुषः, पुरुषव्याघ्रः । चन्द्रमुखम् । त्रिभुवनम्, पंचपात्रम्, चतुर्युगी, पंचयोजनम् ।

शब्दकोष १२०० + २५ = १२२५) अभ्यास ४९

(व्याकरण)

(क) नापितः (नाई), तक्षकः (बढ़ई), क्षुरः (उस्तरा), सौचिकः (दर्जी)
 रंजक (रंगरेज), व्याधः (शिकारी), प्रतिहारः (द्वारपाल), कहारः (कहार),
 वधकः (कसाई), वामनः (बौना), बंचकः (ठग), तुन्दिलः (पेटू), ऐन्द्रजालिकः
 (मदारी), सुधाजीविन् (पुताई करनेवाला), द्वारम् (द्वार), सौधम् (महल), सुधा
 (१. अमृत, २. सफेदी), सूचिका (सूई), खट्वा (खाट), आसन्दिका (कुर्सी) ।
 पीताम्बरः (कृष्ण) । २० । (ख) शक् (सकना), श्रु (सुनना), वप् (१. बोना,
 २. काटना) । ३ । (ग) सविनयम् (सविनय), सादरम् (सादर) । २ ।

व्याकरण (शक्, बहुव्रीहि समास)

१. शक् (प०) धातु के पाँचों लकारों में पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ४५) ।

*नियम १६१—(अनेकमन्यपदार्थे) (अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः) जिस समास में
 अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं । बहुव्रीहि
 समास होने पर समासयुक्त पद स्वतन्त्ररूप से अपना अर्थ नहीं बताते, अपितु
 वे विशेषण के रूप में काम करते हैं और किसी अन्य वस्तु का बोध विशेष्यरूप में
 कराते हैं । बहुव्रीहि की पहचान है कि अर्थ करने पर जहाँ जिसको, जिसने,
 जिसका, जिसमें आदि अर्थ निकलें । बहुव्रीहि के साधारणतया तीन भेद होते हैं
 (१) समानाधिकरण (२) सहायक (३) व्यधिकरण । (१) समानाधिकरण,
 —दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति ही रहती है । अन्य पदार्थ कर्ता को छोड़कर कर्म
 करण आदि कोई भी हो सकता है । जैसे (क) कर्म—प्राप्तम् उदकं यं सः = प्राप्तो-
 दकः । (ख) करण—हताः शत्रवः येन सः = हतशत्रुः (राजा) । इसी प्रकार उत्तीर्ण-
 परीक्षः (छात्र), कृतकृत्यः (मनुष्य) । (ग) संप्रदान—दत्तं भोजनं यस्मै सः =
 दत्तभोजनः (भिक्षुकः) । (घ) अपादान—पतितं पर्णं यस्मात् सः = पतित-
 पर्णः (वृक्ष) । (ङ) संबन्ध—पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (कृष्ण) ।
 इसी प्रकार दशाननः (रावण), चतुराननः (ब्रह्मा), चतुर्मुखः, पद्मयोनिः । (च)
 अधिकरण—वीरा पुरुषाः यस्मिन् सः = वीरपुरुषः (ग्राम) (२) (तेन सहेति
 तुल्ययोगे) साथ अर्थ में बहुव्रीहि । जैसे—पुत्रेण सहितः—सपुत्रः (पुत्र के साथ) ।
 इसी प्रकार सानुजः, साग्रजः, सबान्धवः, सविनयम्, सादरम्, सानुरोधम् ।
 सह या सहित के अर्थ में स पहले लगेगा । (३) व्यधिकरण—दोनों पदों में
 भिन्न विभक्ति होने पर भी बहुव्रीहि । जैसे धनुः पाणौ यस्य सः—धनुष्पाणिः ।

अभ्यास ४९

१. उदाहरण वाक्य :—१. नापितः क्षुरेण केशान् वपति । २. तक्षकः खट्वाम् आसन्दिकां च रचयति । ३. सौचिकः सूचिकया वस्त्राणि सीव्यति । ४. रंजकः वस्त्राणि रंजयति (रंगता है) । ५. धनुष्पाणिः व्याधः मृगान् हन्ति । ६. प्रतिहारः सौधस्य द्वारं रक्षति । ७. वधकः पशून् हन्ति । ८. मुधाजीवी मुधाभिः सौधं लिम्पति (पोतता है) । ९. रामः कार्यं कर्तुं शक्नोति, शक्नोतु, शक्नुयात्, अशक्नोत्, शक्षयति वा । १०. कृष्णः पितुः कथनं शृणोति, शृणोतु, शृणुयात्, अशृणोत्, श्रोष्यति वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. नाई उस्तरे से मनुष्य के बाल काटता है । २. बड़ई एक खाट और तीन कुर्सियाँ बनाता है । ३. दर्जी सूई से चार वस्त्रों को सीता है । ४. रंगरेज इन सब वस्त्रों को रंगता है । ५. शिकारी बाण से व्याघ्र को मारता है । ६. द्वारपाल राजा के महल के द्वार की रक्षा करता है । ७. कहार घड़े से पानी भरता है । (ह) ८. कसाई पशुओं को मारता है । ९. बौना व्यक्ति हँस रहा है । १०. ठग सज्जन को ठगता है (वञ्चयति) । ११. पेटू अधिक भोजन खाता है । १२. मदारी अपना जादू (इन्द्रजालम्) दिखाता है । १३. पुताई करनेवाला सफेदी से मेरे मकान को पोतता है । १४. मैं पीताम्बर कृष्ण और चतुरानन को सादर सविनय प्रणाम करता हूँ । १५. मैं अपने बड़े भाई, छोटे भाई और पुत्रों के साथ इस नगर में रहता हूँ । १६. सत्यनिष्ठ और धर्मनिष्ठ राम धनुष्पाणि वन में घूमते हैं । (ख) १७. वह कार्य कर सकता है । १८. मैं पढ़ सकता हूँ । १९. वह उठ सकेगा । २०. तू लिख सका । २१. वह सुनता है । २२. मैं सुनूँ । २३. तू सुन । २४. वह सुनेगा । २५. मैंने कुछ नहीं सुना ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. अहं पाठं शक्नोमि । अहं पठितुं शक्नोमि । १३१
२. स उत्थानं शक्नोति । लेखं शक्नोषि । उत्थातुं शक्षयति । लेखितुम् अशक्नोः । १३१

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) शक् और श्रु धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (ग) बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखो ।

५. समास करो :—पीतम् अम्बरं यस्य सः । दश आननानि यस्य सः । बान्धवैः सहितः । सत्ये निष्ठा यस्य सः । पतितं पुष्पं यस्मात् सः । विनयेन सहितम् ।

६. विग्रह बताओ :—चतुराननः, पद्मयोनिः, चतुर्मुखः, दत्तभोजनः । सविनयम्, सादरम्, सानुजः, साग्रजः, धर्मनिष्ठः, ज्ञाननिष्ठः, सत्यव्रतः ।

शब्दकोष १२२५ + २५ = १२५०) अभ्यास ५०

(व्याकरण)

(क) अग्रजः (बड़ा भाई), अनुजः (छोटा भाई), पितामहः (दादा), मातामहः (नाना), प्रपितामहः (परदादा), पितृव्यः (चाचा), मातुलः (मामा), पौत्रः (पोता), प्रपौत्रः (परपोता), श्वशुरः (ससुर), श्यालः (साला), देवरः (देवर)। भगिनी (बहन), स्वसृ (बहन)। १४। (ख) मृ (मरना), नृद् (प्रेरणा देना), उपदिश् (उपदेश देना), आदिश् (आज्ञा देना), संदिश् (संदेश देना), क्षिप् (फेंकना), कृ (फँलाना), उद्गृ (१. उगलना, २. बोलना), निगृ (निगलना), सृज् (बनाना), विसृज् (छोड़ना)। ११। सूचना :—नृद्—सृज्, तुद् के तुल्य।

व्याकरण (मृ, द्वन्द्व समास)

१. मृ (आ०) धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५०)

२. अग्रज आदि के स्त्रीलिंग बोधक शब्द ये होते हैं—कहींपर अन्त में आ लगेगा, कहीं पर 'ई'। अग्रजा (बड़ी बहिन), अनुजा (छोटी बहन), पितामही (दादी), मातामही (नानी), प्रपितामही (परदादी), पितृव्या (चाची), मातुलानी (मामी), पौत्री (पोती), प्रपौत्री (परपोती), श्वश्रू (सास), श्याली (साली)।

नियम १६२—(चार्थे द्वन्द्वः) (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः) जहाँ पर दो या अधिक शब्दों का इस प्रकार समास हो कि उसमें च (और) अर्थ छिपा हुआ हो तो वह 'द्वन्द्व' समास होता है। द्वन्द्व समास में दोनों पदों का अर्थ मुख्य होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर बीच में 'और' अर्थ निकले। द्वन्द्व समास साधारणतया तीन प्रकार का होता है :—१. इतरेतर, २. समाहार, ३. एकशेष। (१) इतरेतर—जहाँ पर बीच में 'और' का अर्थ होता है तथा शब्दों की संख्या के अनुसार अन्त में वचन होता है, अर्थात् दो वस्तुएँ हों तो द्विवचन, बहुत हों तो बहुवचन। प्रत्येक शब्द के बाद विग्रह में च लगता है। जैसे रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)। इसी प्रकार सीतारामौ, उमाशंकरौ, रामलक्ष्मणौ, भीमार्जुनौ। पत्रं च पुष्पं च फलं च—पत्रपुष्पफलानि। (२) समाहार—जहाँ पर कई शब्दों के समाहार (समूह, एकत्रस्थिति) का बोध होता है। समाहार द्वन्द्व में समस्तपद के अन्त में प्रायः नपुंसक लिंग एकवचन होता है। जैसे हस्तौ च पादौ च—हस्तपादम् (हाथ और पैर)। दधि च घृतं च तयोः समाहारः—दधिघृतम् (दही, घी)। इसी प्रकार गोमहिषम्, ब्रीहियवम्, शीतोष्णम्। (३) एकशेष—जहाँ समान आकार वाले पदों में से एक बचा रहे और अर्थ के अनुसार उसमें द्विवचन या बहुवचन हो। जैसे वृक्षश्च वृक्षश्च = वृक्षौ। पितरौ।

अभ्यास ५०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. अद्यत्वे मम गृहेऽहं, ममाग्रजोऽनुजश्च, पितरौ, पिता-महः, पितामही, तिस्रो भगिन्यश्च सन्ति । २. अत्र रामकृष्णयोः चित्रे वर्तते । ३. पत्रपुष्पफलानि उद्याने सन्ति । ४. दधिघृतं प्रतिदिनं भोजनीयम् । ५. शीतोष्णं सदा सोढव्यम् । ६. सर्वदा पितरौ पूजनीयौ । ७. दुष्टः रोगेण म्रियते, म्रियताम्, अम्रियत, म्रियेत, मरिष्यति वा । ८. गुरुः शिष्यं धर्ममुपदिशति, कार्यं कर्तुम् आदिशति च । ९. रामो वचनम् उद्गिरति, भोजनं च निगिरति । १०. ईशः सृष्टिं सृजति, पापानि विसृजति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. राम के माता-पिता, भाई और बहनें यहाँ रहते हैं । २. मेरा बड़ा भाई और छोटा भाई तथा बड़ी बहन और छोटी बहन विद्यालय में पढ़ती हैं । ३. मेरे दादा और दादी वृद्ध हैं । ४. मेरे मामा, मामी, नाना और नानी प्रयाग में रहते हैं । ५. मेरी पत्नी, मेरे साले, साली, स्वसुर और सास काशीमें रहते हैं । ६. मेरे पुत्र, पुत्रियाँ, पौत्र, पौत्रियाँ, प्रपौत्र और प्रपौत्रियाँ तथा जमाता और नाती विद्यालय और विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं । ७. मेरे चाचा और चाची पटना (पाटलि-पुत्र) में रहते हैं । ८. रमा के देवर व्यापार करते हैं । ९. राम-लक्ष्मण आते हैं । १०. सीता-राम हँसते हैं । ११. भीम-अर्जुन युद्ध में जाते हैं । १२. फल-फूल लाओ । १३. दही-घी खावो । १४. गाय-भैंस पालो । १५. धान-जौ बोओ । १६. सर्दी गर्मी सहो । (ख) १७. चोर मरता है । १८. पापी मरा । १९. दुर्जन मरेगा । २०. पिता पुत्रको पढ़ने के लिए प्रेरणा देता है, आदेश देता है और संदेश देता है । २१. गुरु शिष्य को अहिंसा का उपदेश देता है । २२. राम बाण फेंकता है । २३. बालक धूल फैलाता है । २४. बालक भोजन उगलता है । २५. जादूगर पत्थर निगलता है । २६. लेखक पुस्तक बनाता है । २७. वह घर छोड़ता है ।

३. अशुद्ध

१. पितरः, दधिघृतानि, गोमहिषौ ।

२. मरति, अमरत्, मरिष्यते ।

शुद्ध

पितरौ, दधिघृतम्, गोमहिषम् ।

म्रियते, अम्रियत, मरिष्यति । धातुरूप

नियम

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख) मृ धातु के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (ग) द्वन्द्व समास किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखो ।

५. समास करो :—रामश्च कृष्णश्च । हरिश्च हरश्च । भीमश्च अर्जुनश्च । पुष्पाणि च फलानि च । हस्तौ च पादौ च । दधि च घृतं च । माता च पिता च ।

६. विग्रह बताओ :—पितरौ, गोमहिषम्, शीतोष्णम्, रामलक्ष्मणौ ।

शब्दकोष-१२५० + २५ = १२७५) अभ्यास ५१

(व्याकरण)

(क) पाचकः (रसोड्या), मोदकः (लड्डू), अपूपः (पूआ), सूपः (दाल), शाकः (साग) कृशरः (खिचड़ी)। रोटिका (रोटी) शर्करा (शक्कर), सिता (चीनी), सूत्रिका (सेवई)। लप्सिका (हलुआ), शङ्कुली (पूरी)। भक्तम् (भात), पायसम् (खीर), मिष्टान्नम् (मिठाई), पक्वान्नम् (पकवान), नवनीतम् (मक्खन), धृतम् (घी), लवणम् (नमक), तक्रम् (मट्ठा)। २०। (ख) मुच् (छोड़ना), लुप् (नष्ट करना), विद् (प्राप्त करना), लिप् (लीपना), सिच् (सींचना)। ५।

सूचना—मुच्—सिच्, मुच् के तुल्य।

व्याकरण (मुच्, एकशेष, अलुक्, नञ् समास)

१. मुच् धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो (देखो धातु ५१)

नियम १६३—(एकशेष) जब उद्देश्य के रूप में प्रथम मध्यम और उत्तम पुरुष में से दो या तीन एकत्र हो जाते हैं, वहाँ पर क्रिया का रूप, निम्नलिखित रूप से रखा जाएगा। (क) प्रथम पु० + प्रथम पु० = क्रिया प्रथम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। जैसे राम कृष्ण और देव पढ़ते हैं—रामः कृष्णः देवश्च पठन्ति। रामः रमा च पठतः। (ख) प्रथम पु० + मध्यम पु० = क्रिया मध्यम पुरुष होगी। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। वह और तू पढ़ता है—स त्वंच पठथः। तौ त्वंच लिखथ। स यूयं च गच्छथ। अर्थात् प्रथम पु० और मध्यम पु० में मध्यम पु० शेष रहता है। (ग) यदि उत्तम पुरुष साथ में होगा तो उत्तम पुरुष ही शेष रहेगा। वचन कर्ता की सामूहिक संख्या के अनुसार। तू और मैं पढ़ते हैं—त्वम् अहं च पठावः। स त्वम् अहं च पठामः। अहं यूयं च पठामः।

नियम १६४—(नञ् समास) 'नहीं' अर्थ वाले नञ् का जब दूसरे शब्द के साथ समास होता है तो उसे नञ् समास कहते हैं। यदि बाद में व्यञ्जन रहता है तो नञ् का 'अ' रहेगा। यदि कोई स्वर बाद में होगा तो अन् रहेगा। जैसे न ब्राह्मणः—अब्राह्मणः। इसी प्रकार अस्वस्थः अन्वायः, अप्रियः, असुन्दरः। न उपस्थितः—अनुपस्थितः। इसी प्रकार अनुचितः, अनागतः, अनुदारः, अनीश्वरवादी।

नियम १६५—(अनुक् समास) कुछ स्थानों पर बोच को विभक्ति का लोप नहीं होता है : उसे अनुक् समास कहते हैं। जैसे परस्मैपदम्, आत्मनेपदम् युधिष्ठिरः, सरसिजम्, मनसिजः (कामदेव)।

अभ्यास ५१

१. उदाहरण-वाक्य :—१. अहं प्रतिदिनं रोटिकां, भक्तं, सूपं, शाकं, घृतं, दुग्धं दधि च खादामि । २. पर्वदिवसे लप्सिकां सूत्रिकां शष्कुव्यः, पायसं मिष्टान्नं पक्वान्नं नवनीतं च खादामि । ३. संन्यासी गृहं मुञ्चति, मुञ्चतु, अमुञ्चत्, मुञ्चेत्, मोक्षयति, मुञ्चते, मुञ्चताम्, अमुञ्चत, मुञ्चेत, मोक्षयते वा । ४. मद्यपानं बुद्धिं लुम्पति । ५. रामो धनं विन्दति । ६. भृत्यो गृहं लिम्पति । ७. मालाकारः उद्यानं सिञ्चति । ८. स तौ च गच्छन्ति । ९. स त्वं च पठथः । १०. स त्वम् अहं च लिखामः ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. रसोइया प्रतिदिन भात दाल रोटी साग बनाता है (पच्) । २. मैं प्रतिदिन दूध घी दही मट्ठा शक्कर चीनी और मक्खन खाता हूँ । ३. आज मेरे घर लड्डू, पूए, हलुआ, सेवई, खीर, पूरी, मिठाई और पक्वान्न बने हैं (पक्वान्नानि) । ४. दही, खिचड़ी और साग में नमक डालो (क्षिप्) । ५. अनीश्वरवादी न हो, अनुचित कार्य न करो, अनुदार न हो, अप्रिय न कहो, अन्याय न करो, अस्वस्थ न हो । ६. विद्यालय में अनुपस्थित न रहो (भू) । ७. सरोवर में सरसिज हैं । ८. राम और रमा पढ़ते हैं । ९. कृष्ण और तुम लिखते हो । १०. वह तू और मैं हैंसते हैं । ११. वह और तुम दोनों जाते हो । १२. तुम दोनों और हम दोनों विद्यालय जाते हैं । (ख) १३. यति घर छोड़ता है । १४. मैं दुर्गुणों को छोड़ता हूँ । १५. तू अधर्म को छोड़ता है । १६. राम ने राज्य छोड़ा । १७. सुरापान बुद्धि को नष्ट करता है । १८. मैं धन पाता हूँ (विद्) । १९. सेवकमहल को लीपता है । २०. माली वृक्ष को सींचता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

१. कृष्णः त्वं च लिखतः ।

कृष्णः त्वं च लिखथः ।

१६३

२. स त्वमहं च हसथ ।

स त्वमहं च हसामः ।

१६३

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ् में बदलो । (ख)

मुच् घातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) नञ् समास के १० उदाहरण बताओ । (घ) अलुक् समास के ५ उदाहरण बताओ ।

५. वाक्य बनाओ :—प्रथम, मध्यम और उत्तमपुरुष को ईकट्ठे रखते हुए १० वाक्य बनाओ ।

६. रिक्त स्थानों को भरओ :—(कोष्ठगत धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप) १.

स त्वं च (पठ्) । २. स अहं च (लिख्) । ३. त्वमहं च (गम्) । ४. अहं युवां च (हस्) ।

५. मुनिः गृहं (मुच्) । ६. पापं बुद्धिं (लुप्) । ७. भृत्यो वृक्षं (सिच्) ।

शब्दकोष १२७५+२५=१३००) अभ्यास ५२ (व्याकरण)

(क) विद्यावत् (विद्वान्) सानुमत् (पर्वत), भास्वत् (सूर्य), ज्ञानवत् (ज्ञानी) मतिमत् (बुद्धिमान्), गुणवत् (गुणवान्), गरुत्मत् (गरुड), सूदः (रसोइया), आपणः (दूकान, बाजार), तण्डुलः (चावल), गोधूमः (गेहूँ), चणकः (चना), यवः (जौ), माषः (उड़द), मसूरः (मसूर), सर्षपः (सरसों), सक्तुः (सत्तू), अवलेहः (चटनी), पलाण्डुः (प्याज), धान्यम् (धान), सन्धितम् (अचार), लशुनम् (लहसुन) । २२ । (ख) रुध् (रोकना), भिद् (काटना), छिद् (काटना) । ३ ।

सूचना—रुध्—छिद्, रुध् के तुल्य ।

व्याकरण (रुध्, तद्धित, मतुप् प्रत्यय)

१. रुध् धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों में रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५२) नियम १६६—(तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्) युक्त या 'वाला' अर्थ में मतुप् प्रत्यय होता है । मतुर् का 'मत्' शेष रहता है । यदि शब्द के अन्त में या उपधा में अ, आ, याम् होता है तो मत् को वत् हो जाता है । (कुछ स्थानों पर नहीं) । मत् प्रत्ययान्त के रूप पुल्लिङ्ग में भगवत् (शब्द २६) के तुल्य चलेंगे । स्त्रीलिङ्ग में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुं० में जगत् के तुल्य । जैसे धन से युक्त या धनवाला—धनवान् । इसी प्रकार गुणवान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्, धीमान्, श्रीमान्, मतिमान्, बुद्धिमान्, आदि । स्त्रीलिङ्ग में—धनवती, गुणवती, ज्ञानवती, विद्यावती, धीमती, श्रौमती, बुद्धिमती आदि ।

अनुवादार्थ कतिपयनिर्देश

नियम १६७—(क) हिन्दी के 'जो' के लिए संस्कृत में महोदयः, महाभागः या महाशयः शब्द लगाओ । जैसे गांधीजी—गांधीमहोदयः, जवाहरलाल नेहरूमहाभागः, श्री पन्तमहोदयः । (ख) व्यक्तिवाचक, नगर आदि के वाचक शब्द उसी रूप में रहेंगे । व्यक्तिवाचक के अन्त में महोदय, नामकः, आख्यः आदि लगाकर रूप बनाओ । नगरवाची के अन्त में नगर शब्द लगेगा, देशवाची के अन्त में देश शब्द । जैसे कानपुरनगरे, लखनऊनगरे, इंग्लैंडदेशे, अमेरिकादेशे, लन्दननगरे । आक्स-फोर्डविश्वविद्यालये आदि । राममूर्तिनामकः मल्लः । जटोपेकनामकः द्रुततम-धावकः । (ग) उपनामसूचक शब्दों के साथ 'उपाह्वः' शब्द, स्थानवाचक के साथ, 'स्थानम्' शब्द, देशवासी के लिए 'देशीयः', गाड़ी के लिए 'यानम्' आदि लगाकर वाक्य बनाओ । मालवीयोपाह्वः, पन्तोपाह्वः, नालन्दास्थाने, पंचनददेशीयः (पंजाबी), बंगदेशीयः (बंगाली), यूएनयानम् (रेलगाड़ी), मोटरयानम्, मोटर-साइकिलयानम् ।

अभ्यास ५२

१. उदाहरण-वाक्य :—१. भास्वान् सानुमतः शिखरे द्योतते । २. विद्यावन्तो मतिमन्तो ज्ञानवन्तश्च सर्वत्रादरं लभन्ते । ३. सूदः आपणात् तंडुलं गोधूमं चणकान् यवान् भाषान् मसूरान् सर्षपान् च आनयति । ४. दुर्जनः सज्जनस्य मार्गं रुणद्धि, रुणद्धु, अरुणत्, रुन्ध्यात्, रोत्स्यति वा । ५. गान्धिमहोदयाः, नेहरूमहाभागाः, पन्तमहाशयाश्च देशस्य पूज्या जनाः सन्ति । ६. लखनऊनगरे उत्तरप्रदेशस्य धारासभा अस्ति । ७. पंचनददेशीयाः बंगदेशीयाः छात्रा अपि अत्र पठन्ति । ८. नृपः शत्रोः शिरः भिनत्ति छिनत्ति च ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. विद्वान्, मतिमान् और ज्ञानवान् अपने ज्ञान से देश का उपकार करते हैं । २. सूर्य पर्वत पर चमक रहा है । ३. गरुड़ आकाश में उड़ता है । ४. बाजार से चावल, गेहूँ, चना, जौ, उड़द, मसूर, सरसों और धान लाओ । ५. प्याज और लहसुन मत खाओ, यदि खाओ तो कम खाओ । ६. मुझे भोजन के साथ अचार और चटनी अच्छी लगती है । ७. धनवती स्त्रियाँ सुख से रहती हैं । ८. गुणवती और ज्ञानवती स्त्रियाँ अपने बालकों को स्वयं पढ़ाती हैं । ९. गांधीजी महापुरुष थे । १०. पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी भारतवर्ष के प्रधान मंत्री हैं । ११. श्री कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी जी उत्तरप्रदेश के राज्यपाल हैं । १२. कानपुर, लखनऊ, प्रयाग और वाराणसी में जनसंख्या अधिक है । १३. रेलगाड़ी और मोटर बहुत तेज चलती हैं । (ख) १४. वह मार्ग रोकता है । १५. तू मुझे रोकता है । १६. मैं दुष्ट को रोकता हूँ । १७. राम ने रावण को रोका । १८. पिता पुत्र को असत्य भाषण से रोके । १९. योधा शस्त्र से शत्रुओं को काटता है । २०. वह वृक्ष काटता है ।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. रोधति, अरोधत्, रोधेत् ।	रुणद्धि, अरुणत्, रुन्ध्यात् ।	धातुरूप
२. छेदति, भेदति ।	छिनत्ति, भिनत्ति ।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) रुध् धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) मनुप् प्रत्यय लगाकर १० नए शब्द बनाओ और उनका प्रयोग करो ।

५. वाक्य बनाओ :—(इनको अन्त में लगाकर पाँच पाँच वाक्य बनाओ)—
महोदयः, महाभागः, महाशयः, नामकः, आख्यः, नगरे, देशे, उपाह्वः, देशीयः, यानम् ।

शब्दकोष १३०० + २५ = १३२५) अभ्यास ५३ (व्याकरण)

(क) गुणिन् (गुणो), धनिन् (धनी), ज्ञानिन् (ज्ञानी), सुकृतिन् (१. विद्वान्, २. पवित्रात्मा) दन्तिन् (हाथी), ब्रह्मचारिन् (ब्रह्मचारी), गृहिन् (गृहस्थी), संन्यासिन् (संन्यासी), कुशलिन् (सकुशल), दूरदर्शिन् (दूरदर्शी), अत्याचारिन् (अत्याचारी), दुराचारिन् (दुराचारी), शिखरिन् (पर्वत)। गृहस्थः (गृहस्थी) वानप्रस्थः (वानप्रस्थी), धनिकः (धनिक), मायिकः (जादूगर)। १७। (ख) भुज (१. पालन करना २. खाना)। १। (ग) पुनः (फिर), भूयः (फिर) अन्यत्र (ओर जगह), सर्वत्र (सब जगह)। ४। (घ) तृषितः (प्यासा), क्षुधितः (भूखा) दुःखितः (दुःखित)। ३। सूचना—गुणिन्—शिखरिन्, करिन् के तुल्य।

व्याकरण (भुज्, तद्धित, इनि, ठन्, इतच् प्रत्यय)

१. भुज् धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५३)
*नियम १६८—(भुजोऽनवने)—भुज् धातु के दो अर्थ होते हैं—रक्षा करना और भोजन करना। रक्षा करने अर्थ में केवल परस्मैपदो हे। भोजन, उपभोग आदि अर्थों में केवल आत्मनेपद में रूप चलेंगे। राजापृथ्वीं भुनक्ति। रामः भोजनं भुङ्क्ते।

नियम १६९—(अत इनिठनौ) अकारान्त शब्दों से युक्त या 'वाला' अर्थ में शब्द के अन्त में इनि और ठन् (तद्धित) प्रत्यय होते हैं। इनि का इन् शेष रहता है। जैसे गुण > गुणिन् (गुणयुक्त, गुणवाला), धन > धनिन्। इसी प्रकार ज्ञानिन्, दन्तिन् आदि। इन् प्रत्ययान्त के रूप पूर्णलिङ्ग में फरिन् के तुल्य (शब्द ३१) चलेंगे। स्त्रीलिङ्ग में ई लगाकर नदी के तुल्य। ठन् प्रत्यय का 'इक' शेष रहता है। जैसे धन > धनिक,

दण्ड > दण्डिक, माया > मायिकः।

नियम १७०—(तदस्य संजातं०) युक्त अर्थ में कुछ शब्दों से इतच् प्रत्यय होता है। इतच् का 'इत' शेष रहता है। जैसे—तारका > तारकित (तारों से युक्त), क्षुधित (भूखा), पिपासित (प्यासा), कुसुमित, पुष्पित (फूलों से युक्त), दुःखित (दुःखयुक्त), अंकुरित (अंकुरयुक्त)।

सूचना—(निर्देश चिह्न) लेखादि में शुद्ध बोध के लिए कतिपय संकेतों का प्रयोग किया जाता है। उनके नाम तथा निर्देश चिह्न ये हैं :—

- | | | |
|--------------------------|--------------------------|---------------------------|
| १. अल्पविराम , | २. अर्धविराम ; | ३. पूर्णविराम । |
| ४. प्रसंगसमाप्ति चिह्न ॥ | ५. प्रश्नबोधक चिह्न ? | ६. विस्मयादि बोधक चिह्न ! |
| ७. समास (योजक) चिह्न — | ८. व्यवच्छेदक चिह्न — | ९. उद्धरणचिह्न “ ” |
| १०. निर्देशचिह्न :— | ११. कोष्ठचिह्न () [] | १२. धनचिह्न + |
| १३. पर्यायचिह्न = | १४. त्रुटिनिर्देशचिह्न ^ | १५. इतिभवतिचिह्न > |

अभ्यास ५३

१. उदाहरण-वाक्य :—१. गुणिनः धनिनः ज्ञानिनः कुशलिनः दूरदर्शिनश्च सर्वे-
ऽपि अस्मिन् नगरे वसन्ति । २. ब्रह्मचारिणः वानप्रस्थाः संन्यासिनश्च अस्मिन् आश्रमे
सन्ति । ३. गृहिणो गृहे वर्तन्ते । ४. अत्याचारिणां दुराचारिणां सङ्गतिं कदापि न
कुरु । ५. एष जनो दुःखितः तृपितः क्षुधितश्चास्ति । ६. राजा पृथ्वीं भुनक्ति भुनक्तु
अभुनक् भुञ्ज्यात् भोक्ष्यति वा । ७. बालको भोजनं भुङ्क्ते, भुङ्क्ताम् अभुङ्क्त भुञ्जीत
भोक्ष्यते वा । ८. अहं भोजनं भुञ्जे भुञ्जीय वा ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. गुणी धनी और ज्ञानी संसार में सुखी रहते हैं ।
२. ब्रह्मचारी वानप्रस्थ और संन्यासी मुकृती होते हैं । ३. इस गृहस्थ के घर एक दन्ती है ।
४. दूरदर्शी जन शान्ति पाते हैं । ५. अत्याचारी और दुराचारी सब जगह दुःखित होते
हैं । ६. धनिक प्रायः सकुशल रहते हैं । ७. जादूगर जादू (माया) दिखा रहा है । ८.
यह पथिक बहुत प्यासा है । ९. यह अतिथि बहुत भूखा है । १०. बार बार सत्य बोली
और धर्म करो । ११. यहाँ से हटो (अपसृ) और दूसरी जगह जाकर बैठो । १२. यह
वन कुसुमित पुष्पित और सुरभित है । १३. यह वृक्ष अंकुरित हो रहा है । १४. आकाश
तारों से युक्त है । (ख) (भुज् धातु) १५. राजा राज्य की रक्षा करता है । १६.
सेनापति न राष्ट्र की रक्षा की । १७. हम अपने राष्ट्र भारतवर्ष की रक्षा करें । १८.
वह भोजन खाता है । १९. तू फल खाता है । २०. मैं मिठाई खाता हूँ । २१. उसने
हलुआ खाया । २२. वह पकवान खावे ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. राजा राज्यस्य भुनक्ति ।	राजा राज्यं भुनक्ति ।	४
२. भोजति, अभोजत् ।	भुनक्ति, अभुनक् ।	धातुरूप
३. भोजते, भोजसे, अभोजत् ।	भुङ्क्ते, भुङ्क्षे, अभुङ्क्त ।	धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो ।
(ख) भुज् धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) तद्धित इनि, ठन्
और इतच् प्रत्यय लगाकर पाँच पाँच शब्द बनाओ । (घ) निर्देश चिह्नों को उदाहरण
देकर समझाओ ।

५. वाक्य बनाओ :—भुनक्ति, अभुनक्, भुञ्ज्यात्, भुङ्क्ते, भुङ्क्ष्व, भुञ्जीरन् ।
ब्रह्मचारिणः, गृहिणाम्, वानप्रस्थाः, संन्यासिनाम् । पुनः, भूयः, अन्यत्र, सर्वत्र ।

६. रिक्त स्थान भरो :—(लट्, लोट्, लङ्, लृट् लकार)—अहं भोजनं (भुज्) ।
२. त्वं भक्तं (भुज्) । ३. ते मोदकान् (भुज्) । ४. भूपतिः भूमिं (भुज्) । ५. वयं भारत-
वर्षं (भुज्) ।

शब्दकोष १३२५ + २५ = १३५०) अभ्यास ५४

(व्याकरण)

(क) आम्रः (आम), रसालः (आम), दाडिमः (अनार), पनसः (कटहल), जम्बीरः (नीबू), उदुम्बरः (गूलर), अश्वत्थ (पीपल), निम्बः (नीम), पूगः (सुपारी) बिल्वः (बेल), वातादः (बादाम) । द्राक्षा (अंगूर) बदरी (बेर), कदली (केला), कदलीफलम् (केला), नारिकेलफलम् (नारियल) सेवफलम् (सेव), नारंग फलम् (नारंगी, संतरा), आम्रलम् (अमरूद) । १६ । (ख) तन् (फैलाना) । १ । (ग) तूष्णीम् (चुप), अकस्मात् (अचानक), नित्यम् (नित्य), शीघ्रम् (शीघ्र), पश्चात् (बाद में) । ५ ।

सूचना—आम्र—वाताद, वृक्ष अर्थ में रामवत्, फल अर्थ में गृहवत् ।

व्याकरण (तन्, अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय, अण्)

१. तन् धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५४)

सूचना—आम्र आदि शब्द वृक्षवाचक होनेपर पुं० होते हैं । फलवाचक होनेपर नपुं० । अन्त में फलम् लगाकर भी फलवाचक बनाते हैं । जैसे आम्रः (आम का पेड़) आम्रम् या आम्रफलम् (आम) आदि ।

नियम १७१—(तस्यापत्यम्) अपत्य पुत्र या पुत्री दोनों को कहते हैं । अपत्य अर्थ में शब्द के बाद प्रायः अण् (अ) प्रत्यय लगता है । अण् का अशेष रहता है । शब्द के सर्वप्रथम स्वर को वृद्धि होती है, अर्थात् अ को आ, ई को ऐ, उ को औ, ऋ को आर्, अन्तिम उ को ओ होगा । जैसे—ऋषदेव का पुत्र—वामुदेव (कृष्ण) । पाण्डु के पुत्र पाण्डव, कुरु के पुत्र कौरव, पृथा (कुन्ती) के पुत्र पाथ । रघु का पुत्र राघव, पुत्र का पुत्र—पौत्र, शिव का शैव, विष्णु का वैष्णव, इनके रूप राम की तरह चलेंगे । स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदी के तुल्य ।

नियम १७२—(अत इज्) अकारान्त शब्दों से (कुछ शब्दों को छोड़कर) अपत्य अर्थ में अन्त में इज् प्रत्यय होता है । इज् का इ शेष रहता है । शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि । हरि के तुल्य रूप चलेंगे । जैसे दशरथ का पुत्र—दाशरथि (राम) । दक्ष का दाक्षि, सुमित्रा का सौमित्रि (लक्ष्मण), द्रोण का द्रौणि (अश्वत्थामा) ।

नियम १७३—(दित्यदित्या०) कुछ शब्दों से अपत्य अर्थ में अन्त में 'य' प्रत्यय लगता है । शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि । रामवत् रूप चलेंगे । जैसे दिति के पुत्र दैत्य, अदिति के पुत्र आदित्य, प्रजापति > प्राजापत्य, गर्ग > गार्ग्य । वत्स > वात्स्य ।

नियम १७४—(स्त्रीभ्यो ढक्) स्त्रीलिंग शब्दों से अपत्य अर्थ में अन्त में 'एय' लगता है (कुछ शब्दों को छोड़कर) । शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि । जैसे कुन्ति के पुत्र कौन्तेय (युधिष्ठिर आदि), माद्री के पुत्र—माद्रेय (नकुल, सहदेव), राधा का राधेय (कर्ण), द्रौपदी के द्रौपदेय, गंगा का गांगेय, विनता का वैनतेय (गरुड़) ।

अभ्यास ५४

१. उदाहरण-वाक्य :—१. आम्राः दाडिमाः पनसः उदुम्बरा अश्वत्थाः निम्बाः बिल्वाश्च उद्याने सन्ति । २. अहम् आम्राणि दाडिमानि सेवफलानि नारंगफलानि, पनसानि पूगानि, वातादानि, द्राक्षाफलानि, कदलीफलानि च प्रायः भोजनस्य पश्चात् भक्षयामि । ३. तूष्णीं तिष्ठ । ४. सोऽकस्माद् आगतः । ५. दाशरथेः, वासुदेवस्य, पाण्डवानां, कौरवाणां, सौमित्रेः, राधेयस्य च एतानि चित्राणि सन्ति । ६. स वस्त्राणि तनोति. तनोतु, अतनोतु, तनुयात्, तनिष्यति च ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. मेरे गाँव में आम, अनार, कटहल, नीबू, गूलर, पीपल, नीम, सुपारी, बेल, केला, बेर और नारियल के पेड़ हैं । २. भोजन के बाद फल खाओ । ३. वह प्रायः आम, सेव, अनार, संतरा, कटहल, नीबू, बेल, बादाम, अंगूर, केला, नारियल और सुपारी खाता है । ४. ये आम, सेव, अंगूर और केले बहुत मधुर हैं । ५. बेर, गूलर और अमरूद कम खाओ । ६. सेव, बादाम, केला, संतरा स्वास्थ्य लाभ के लिए बहुत उत्तम हैं । ७. यहाँ चुप बैठो । ८. गुरु जी अकस्मात् आ गए । ९. व्यायाम, संध्या, और अध्ययन नित्य करो । १०. मेरी पुस्तक शीघ्र लाओ । ११. भोजन के बाद विद्यालय जाना । १२. महाभारत के युद्ध में वासुदेव, तीनों कुन्ती के पुत्र, दोनों माद्री के पुत्र, राधा के पुत्र कर्ण, द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा तथा द्रौपदी के पुत्र थे । १३. सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण दाशरथि राम के साथ वन में गए । (ख) १४. वह वस्त्र फैलाता है । १५. तू ज्ञान को फैलाता है । १६. मैं धर्म को फैलाता हूँ । १७. वह विद्या को फैलावे । १८. तूने सत्य को फैलाया । १९. वह अपनी विद्या को फैलावेगी । २०. मैं गुणों को फैलाऊँगा ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. कौन्तेयः, माद्री, राधिः, द्रौणः । कौन्तेयाः, माद्रेयो, राधेयः, द्रौणिः । १७२, १७४
२. तनति, तनतु, तनेत् । तनोति, तनोतु, तनुयात् । धातुरूप

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को बहुवचन बनाओ । (ख) तन् धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के पूरे रूप लिखो । (ग) इन शब्दों के पुत्रवाचक शब्द बनाओ—वासुदेव, दशरथ, पाण्डु, कुरु, पुत्र, द्रोण, सुमित्रा, दिति, अदिति, प्रजापति, गर्ग, कुन्ति, पृथा, रघु, राधा, द्रौपदी, गंगा, विनता ।

५. वाक्य बनाओ :—आम्रः, आम्रम्, दाडिमः, दाडिमम्, नारिकेलः, नारिकेल-फलम् । तूष्णीम्, अकस्मात्, नित्यम्, शीघ्रम्, पश्चात् । तनोति, तनोतु, अतनोतु, तनुयात् ।

शब्दकोष १३५० + २५ = १३७५) अभ्यास ५५

(व्याकरण)

(क) कंचुकः (कुर्ता), उत्तरीयः (१. चादर, २. दुपट्टा), कम्बलः (कम्बल), नोशारः (रजाई) पादयामः (पायजामा), तूलः (रुई)। शाटिका (साड़ी), शय्या (विस्तर, खाट), रशना (कमरबंद), उपानत् (जूता), उष्णीषम् (पगड़ी), अंगप्रोक्षणम् (अंगोछा) शिरस्कम् (टोपी), अधोवस्त्रम् (धोती), मुखप्रोक्षणम् (रूमाल), कटिसूत्रम् (करधनी, मेखला), उपधानम् (तकिया), अवगुठनम् (घँघट)। १८।
(ख) क्री (खरीदना), विक्री (बेचना), बन्ध् (बाँधना), मन्थ् (मथना), अश् (खाना), मुष् (चुराना), क्लिश् (दुःख देना)। ७।

सूचना—(क) कंचुक—तूल, रामवत्। (ख) क्री—क्लिश्, क्री के तुल्य।

व्याकरण (कृ (उ०), अन्य तद्धितप्रत्यय, जात, भव, आदि)

१. क्री धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो। (दे० धातु ५६)

नियम १७५—(तत्र जातः, तत्र भवः) उत्पन्न होना या होना अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं। (१) कुछ शब्दों के अन्त में अ प्रत्यय लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे खुध्ने जातः, स्रौधनः (आगरावासी)। मथुरा में उत्पन्न—माथुरः। कान्यकुब्ज में उत्पन्न—कान्यकुब्जः, सिन्धु (१. समुद्र, २. सिन्धु प्रान्त) में होनेवाला—सिन्धव (१. नमक, २. अश्व)। (२) कुछ शब्दों के अन्त में इक लगता है। प्रथम स्वर की वृद्धि। मासे भवः—मासिकः, षाण्मासिकः। वर्ष > वार्षिकः, काल > कालिक, तात्कालिक। प्रातः कालीन, सायंकालीन, आदि 'कालीन' वाले प्रयोग भी प्रचलित हैं, अतः प्रयोग किया जा सकता है, पर व्याकरणानुसार शुद्ध नहीं है। (३) (सायंचिरं०) कुछ शब्दों के अन्त में 'तन' जुड़ता है। जैसे अद्यतनः (आज का), पुरातनः (पुराना), सायंतनः (सायंकालीन), चिरन्तनः (पुराना), इदानींतनः (अब का)।

नियम १७६—(तदधीते तद्वेद) पढ़ने वाला या पढ़ानेवाला या जाननेवाला अर्थ में अ या इक अन्त में लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे वेद पढ़ने वाला या वेदज्ञ—वैदिकः। पुराण > पौराणिकः, तर्क > तार्किकः, न्याय > नैयायिकः। व्याकरण > वैयाकरणः।

नियम १७७—(तेन प्रोक्तम्) पुस्तक-निर्माण अर्थ में रचयिता के नाम के बाद अ या ईय लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे ऋषि-रचित > आर्ष। मनुरचित > मानव, पाणिनि-रचित > पाणिनीय (अष्टाध्यायी), वाल्मीकि-रचित > वाल्मीकीय (रामायण)।

नियम १७८—(तस्येदम्) 'उसका यह' अर्थात् सम्बन्ध अर्थ बताने में अ या इक अन्त में लगता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। जैसे दिन सम्बन्धी > दैनिक, अहन् > आह्निक (दिन का), देव-सम्बन्धी > दैव। शरद्-सम्बन्धी > शारद। लोक-सम्बन्धी > लौकिक, भूत-सम्बन्धी > भौतिक।

अभ्यास ५५

१. उदाहरण-वाक्य :—१. मम समीपे कञ्चुकः, अधोवस्त्रम्, अङ्गप्रोक्षणम्, उत्तरीयः, उपानत् च सन्ति, परन्तु उष्णीषं शिरस्कं च न स्तः । २. सैन्धवम् आनय । (१. घोड़ा लाओ । २. नमक लाओ) । ३. इदानीन्तनाः छात्राः पुरातनछात्रवत् न गुरुभक्ताः सन्ति । ४. पाणिनीयाम् अष्टाध्यायीम् अवश्यं पठ । ५. स वस्त्राणि क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात्, क्रीणीयात्, क्रीष्यति वा । ६. स पुस्तकविक्रेता पुस्तकानि विक्रीणाति । ७. स चौरं बध्नाति, दधि मथ्नाति, भोजनम् अश्नाति, दुर्जनं क्लिश्नाति, कस्यापि धनं च न मुष्णाति ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. तुम अपने वस्त्र कुर्ता, धोती, पायजामा, कम्बल, रजार्ड, पगड़ी, टोपी, अंगोछा, रुमाल और तकिया स्वच्छ रखो । २. कुर्ता और धोती पहनो (धारय) । ३. स्त्री अपनी साड़ी और मेखला पहनती है और घूँघट नीचे करती है । ४. अपना जूता या चप्पल पैर में पहनो । ५. सैन्धव लाओ । ६. छात्रों की प्रतिवर्ष त्रैमासिकी पाष्मासिक और वार्षिक परीक्षा होती है । ७. आजकलके मनुष्यों में सत्य, प्रेम, अहिंसा, और धर्म पुराने लोगों के तुल्य नहीं हैं । ८. वैदिक धर्म सनातन, पुरातन और चिरन्तन है । ९. इस सभा में वैदिक, स्मार्त, पौराणिक, धार्मिक, वैयाकरण, साहित्यिक, नैयायिक, मीमांसक तथा अन्य विद्वान् बैठे हैं । १०. चारों वेद, धर्मशास्त्र, उपनिषद्, वाल्मीकीय रामायण, व्यासरचित महाभारत, गीता, पाणिनीय अष्टाध्यायी अवश्य पढ़ो । ११. दैनिक कार्य प्रतिदिन करो । १२. भौतिक, लौकिक और पारलौकिक सुख चाहो । (ख) १३. वह फल खरीदता है । १४. तू वस्त्र खरीदता है । १५. मैं पुस्तक खरीदता हूँ । १६. वह वस्त्र बेचता है । १७. पुस्तक-विक्रेता पुस्तक बेचता है । १८. राजा पापीको बाँधता है । १९. चोर धन चुराता है और दुःख देता है । २०. हरि समुद्र से अमृत को मथता है ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. क्रयति, विक्रयति, बन्धति ।

क्रीणाति, विक्रीणाति, बध्नाति । धातुरूप

२. समुद्रात् सुधां मन्थति ।

सुधां समुद्रं मथ्नाति ।

२१, ,,

४. अभ्यास :—(क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) श्री धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) उत्पन्न या होना अर्थ में इनके तद्धित शब्द बनाओ—मथुरा, स्रुघ्न, मास, वर्ष, प्रातःकाल, सायंकाल, पुरा, सायम्, इदानीम् ।

५. वाक्य बनाओ :—वैयाकरणः, तार्किकः, साहित्यिकः, आर्षः, शारदः, दैवः, लौकिकः, भौतिकः, दैनिकम्, क्रीणाति, विक्रीणाति, अश्नाति ।

शब्दकोष १३७५ + २५ = १४००) अभ्यास ५६ (व्याकरण)

(क) फेनिलः (साबुन), दर्पणः (शीशा), अलंकारः (आभूषण), हारः (मोती की माला), कर्णपूरः (कनफूल), नूपुरः (पाजब)। मेखला (करधनी), प्रसाधनी (कंधी), बणिका (बेणी), सोभाग्यवती (सधवा, पतियुक्त), विधवा (विधवा)। सिन्दूरम् (सिन्दूर), अंजनम् (काजल), गन्धतैलम् (इत्र), तिलकम् (तिलक), अंगुलीयकम् (अंगूठी), केयूरम् (बाजूबन्द), ग्रंथेयकम् (हंसुली), कुण्डलम् (कान की बाली), कंकणम् (कंकण), कण्ठाभरणम् (कण्ठा), नासाभरणम् (बुलाक)। २२।
(ख) ग्रह् (लेना), संग्रह् (संग्रह करना), अनुग्रह् (अनुग्रह करना)। ३।

सूचना—(क) फेनिल—नूपुर, रामवत्। (ख) ग्रह्—अनुग्रह्, ग्रह् के तुल्य।

व्याकरण (ग्रह्, त्व, ता, ष्यञ्, इमनिच् प्रत्यय)

१. ग्रह् धातु के दोनों पदों में पांचों लकारों के रूप स्मरण करो (देखो धातु ५७)

नियम १७६—(तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः, तत्र तस्येव) तुल्य या सदृश अर्थ को बताने के लिए शब्द के बाद 'वत्' प्रत्यय लगता है। जैसे ब्राह्मण के तुल्य—ब्राह्मणवत्। इसी प्रकार क्षत्रियवत्, वैश्यवत्, शूद्रवत्। रामशब्द के तुल्य > रामवत्, भवति के तुल्य > भवतिवत्।

नियम १८०—(तस्य भावस्त्वतलौ) भाव (हिन्दी 'पन') अर्थ में शब्द के अन्त में त्व और ता लगते हैं। त्व प्रत्ययान्त के रूप नपुंसक लिंग में ही चलेंगे, गृहवत्। ता प्रत्ययान्त के रूप रमा के तुल्य। जैसे लघु > लघुत्व, लघुता (हलका या छोटा-पन), गुरु से गुरुत्व, गुरुता, (भारीपन)। इसी प्रकार ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, शूद्रत्व, विद्वस् > विद्वत्त्वम्, विद्वत्ता। दोनता, हीनता, मूर्खता, खिन्नता, दुष्टता।

नियम १८१—(गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः०) गुणवाचक और ब्राह्मण आदि शब्दों से भाव अर्थ में ष्यञ् अर्थात् य प्रत्यय अन्त में लगता है। शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि होती है, अन्तिम अ का लोप। जैसे शूर > शौर्य (शूरता), सुन्दर > सौन्दर्य, धीर > धैर्य, सुख > सौख्य, कवि > काव्य, ब्राह्मण > ब्राह्मण्य, विदग्ध > वैदग्ध्य, विद्वस् > वैदुष्य।

नियम १८२—कुछ शब्दों के अन्त में ष्यञ् अर्थात् य या अ प्रत्यय स्वार्थ (अर्थात् उसी अर्थ) में होते हैं। जैसे बन्धु > बान्धव (दोनों का अर्थ भाई है)। प्रज्ञ > प्राज्ञ, रक्षस् > राक्षस। करुणा > कारुण्य, चतुर्वर्ण > चातुर्वर्ण्य, सेना > सैन्य, समीप > सामीप्य, त्रिलोक > त्रैलोक्य।

नियम १८३—(पृश्वादिभ्य इमनिच्वा) कुछ शब्दों से भाव अर्थ में शब्द के अन्त में 'इमन्' लगता है। अन्तिम अक्षर का लोप हो जाता है। ऋ को र होता है। जैसे लघु > लघिमा (लघुता), गुरु > गरिमा, महत् > महिमा, मृदु से ऋदिमा, अणु > अणिमा।

अभ्यास ५६

१. उदाहरण-वाक्य :— १. सौभाग्यवती स्त्री हारं नूपुरं कंकणं सिन्दूरं तिलकं कण्ठाभरणं च धारयति । २. फेनिलेन वस्त्राणि प्रक्षालय । ३. मनुष्येषु एकतः (एक ओर) विद्वत्ता, शौर्यं, धैर्यं, सौख्यं, सौन्दर्यं, गुरुत्वं च दृश्यते, अपरतः (दूसरी ओर) दीनता, हीनता, खिन्नता, मूर्खता, भीरुत्वं, कुरुपत्वं च दृश्यते । ४. गुणानां गरिमा, अणोः अणिमा, लघूनां लघिमा, मृदूनां मृदिमा, महतां महिमा च सर्वत्र दृश्यते । ५. ब्राह्मणः धनं गृह्णाति, गृह्णातु, अगृह्णात्, गृह्णीयात्, ग्रहीष्यति वा । ६. धनिकः धनं संगृह्णाति, पुत्रं च अनुगृह्णाति ।

२. संस्कृत बनाओ :— (क) १. वह सुन्दर स्त्री ग्रीवा में मोती की माला, कान में कनफूल, नाक में बुलाक, हाथ में कंकण और बाजूबन्द, भाल पर तिलक, आँख में काजल और पैर में पाजेब धारण किए हुए हैं । २. सौभाग्यवती नारियाँ सभी अलंकारों को धारण करती हैं, विधवा स्त्रियाँ नहीं । ३. वह नारी साबुन से अंगों को धोकर दर्पण में मुँह देखती है और कंधी से वेणीको गुँथती है (बन्ध्) । ४. सिन्दूर सौभाग्य का चिह्न है । ५. स्त्रियाँ मेखला, हँसुली, कुंडल भी पहनती हैं और डत्र लगाती हैं (निक्षिप्) । ६. ब्राह्मणवत् विद्वान् हो, क्षत्रियवत् नीरोग हो, वैश्यवत् धनी हो, शूद्रवत् परिश्रमी हो । ७. संसार में एक ओर दीनता, हीनता, मूर्खता, दुष्टता, रोग, शोक है, दूसरी ओर विद्वत्ता, सौख्य, शान्ति, सौन्दर्य और साधुता है । ८. चातुर्वर्ण्य प्राचीन परम्परा है । ९. त्रैलोक्य में गुणों की गरिमा, प्रेम की प्रियता, अहिंसा की महिमा सदा रही है । (ख) १०. वह धन लेता है । ११. तू पुस्तक लेता है । १२. मैं फल लेता हूँ । १३. मनुष्य धन संग्रह करता है । १४. गुरु शिष्य पर अनुग्रह करता है ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

- | | | |
|-------------------------------------|---|-----|
| १. विद्वानता, महानता, बुद्धिमानता । | विद्वत्ता, महत्ता, बुद्धिमत्ता । | १८० |
| २. शौर्यता, धैर्यता । | शौर्य (शूरता), धैर्य (धीरता) । | १८१ |
| ३. सौन्दर्यता, सामीप्यता । | सौन्दर्य (सुन्दरता), सामीप्य (समीपता) । | १८१ |

४. अभ्यास :— (क) २ (ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) ग्रह्, धातु के दोनों पदों के पाँचों लकारों के रूप लिखो । (ग) त्व ता प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—विद्वस्, महत्, बुद्धिमात्, धीमात्, दीन, हीन । (घ) ष्यञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—शूर, धीर, सुन्दर, ब्राह्मण, कवि, सुख, विद्वस् (ङ) इमनिच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—लघु, गुरु, महत्, मृदु, अणु ।

शब्दकोष १४०० + २५ = १४२५) अभ्यास ५७ (व्याकरण)

(क) आयातः (देशान्तर से आगत), निर्यातः (देश से बाहर गया हुआ), विनिमयः (बदलना), पत्रवाहकः (डाकिया), उत्कोचः (घूस), कुसीदः (सूद), अभियोगः (मुकदमा), वाक्कोजः (बहोज), न्यायाधिशः (जज), न्यायालयः (कोर्ट), दीनारः (अजर्नी), आवणः (दूकान), पणः (पैसा)। वादी (मुद्दी), प्रतिवादी (मुद्दालेह), आणकम् (आना), रूप्यकम् (रुपया), रजतम् (चाँदी), उपनेत्रम् (चश्मा), काष्ठपट्टम् (तख्त)। २०। (ख) ज्ञा (जानना), प्रतिज्ञा (प्रतिज्ञा करना), अवज्ञा (तिरस्कार करना), अनुज्ञा (आज्ञा देना), अभिज्ञा (पहचानना)। ५।

सूचना—(क) आयात—पण, रामवत्। (ख) ज्ञा—अभिज्ञा, ज्ञा के तुल्य।

व्याकरण (ज्ञा, तद्धितप्रत्यय तः, त्र, था, दा, धा, मात्र)

१. ज्ञा धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ५८)। सूचना—प्रति + ज्ञा के रूप आत्मनपद में ही चलते हैं।

नियम १८४—(पञ्चम्यास्तसिन्) पंचमी विभक्ति के स्थान पर 'तः' प्रत्यय होता है। जैसे—कस्मात् > कुतः (कहाँसे)। इसी प्रकार यतः, ततः, इतः, परितः, अभितः, समन्ततः, अतः, अग्रतः, सर्वतः, उभयतः। मत्तः (मुझसे), त्वत्तः (तुझसे) अस्मत्तः (हमसे), युष्मत्तः (तुमसे)।

नियम १८५—(सप्तम्यास्त्रल्) सप्तमी के स्थान पर 'त्र' प्रत्यय होता है। जैसे कस्मिन् > कुत्र। इसी प्रकार अत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, अन्यत्र (दूसरी जगह), बहुत्र (बहुत स्थानों पर)।

नियम १८६—(प्रकारवचनेथाल्) 'प्रकार' अर्थ में सर्वनाम शब्दों से 'था' प्रत्यय होता है। जैसे तेन प्रकारेण—तथा (उस प्रकार से)। इसी प्रकार यथा, सर्वथा, उभयथा (दोनों प्रकार से), अन्यथा (अन्य प्रकार से, नहीं तो)। इत्यम्, कथम् में था की जगह थम् लगता है।

नियम १८७—(सर्वैकान्यैकियत्तदः कालेदा) सर्व आदि शब्दों से समय अर्थ में 'दा' प्रत्यय होता है। जैसे सर्वदा, सदा, एकदा (एक बार), अन्यदा (कभी), कदा, यदा, तदा। इदम् का इदानीम् (अब) रूप होता है।

नियम १८८—(संख्यायाविधार्थेधा) संख्यायावाची शब्दों से प्रकार अर्थ में 'धा' प्रत्यय होता है। जैसे एकधा (एक प्रकार से), द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पंचधा, बहुधा (अनेक बार, प्रायः), शतधा, सहस्रधा।

नियम १८९—(प्रमाणे द्वयसच०) प्रमाण अर्थ में अर्थात् नाप, तोल आदि अर्थ में शब्द से 'मात्र' प्रत्यय होता है। जैसे हाथभर—हस्तमात्रम्, मुट्ठीभर—मुष्टिमात्रम्। कमरतक—कटिमात्रम्, घुटनेतक—जानुमात्रम्।

अभ्यास ५७

१. उदाहरण-वाक्य :—देशस्यौन्नत्यै आयातो निर्यातश्च आवश्यकौ स्तः । २. उत्कोचस्य आदानं प्रदानं च द्वयमपि पापम् अस्ति । ३. इतस्ततो न भ्रम । ४. बहुधा विचार्य कार्यं कर्तव्यम् । ५. अस्मिन् सरसि जानुमात्रं जलमस्ति । ६. स धर्मं जानाति, जानातु, अजानात्, जानीयात्, ज्ञास्यति, जानीते, जानीताम्, अजानीत, जानीत, ज्ञास्यते वा । ७. स प्रतिजानीते यत्सदा सत्यं वक्ष्यति । ८. राजा चोरम् अवजानाति । ९. पिता पुत्रम् अनुजानाति । १०. अहं त्वामभिजानामि ।

२. संस्कृत बनाओ :—(क) १. आयात और निर्यात से देश के व्यापार की उन्नति होती है और वस्तुओं का विनिमय होता है । २. डाकिया पत्र लाया । ३. घूस लेना और देना दोनों ही महापाप है । ४. कोर्ट में जज के सम्मुख वकील तर्क कर रहा है । ५. वादी ने प्रतिवादी पर अभियोग लगाया (कृ) । ६. धनिक निर्धन से धन और सूद दोनों लेता है । ७. एक रुपये में ६४ पैसे, १६ आने, ४ चवन्नी, २ अठन्नी होते हैं । ८. चाँदी, सोना, अशर्फी, रत्न बहुमूल्य वस्तुएँ हैं । ९. वह प्राध्यापक चश्मा पहनते हैं । १०. तख्त यहाँ रखो । ११. इधर उधर (इतस्ततः) न दौड़ो । १२. कहाँ से आते हो ? १३. छात्र मुझसे और तुमसे विद्या पढ़ता है । १४. विद्यालय के दोनों ओर, गाँव के चारों ओर, जल है । १५. सत्य बोलो, नहीं तो पापी होंगे । १६. पाठ को दो बार, तीन बार, चार बार, पाँच बार, दस बार पढ़ो । १७. मुट्ठीभर अन्न है । १८. कमर तक जल है । १९. एक हाथ भर कपड़ा है । (ख) २०. वह राम को जानता है । २१. तू धर्म को जानता है । २२. मैं सत्य को जानता हूँ । २३. वह प्रतिज्ञा करता है कि कभी झूठ न बोलेगा । २४. मूर्ख दीनों का तिरस्कार करता है । २५. गुरु शिष्य को आज्ञा देता है । २६. दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानता है ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

- | | | |
|--|--------------------------------|---------|
| १. विद्यालयस्य उभयतः, ग्रामस्य परितः । | विद्यालयमुभयतः, ग्रामं परितः । | १४, १७ |
| २. जानति, जानतु, अजानत् । | जानाति, जानातु, अजानात् । | धातुरूप |
| ३. स प्रतिजानाति । | स प्रतिजानीते । | धातुरूप |

४. अभ्यास :—(क) २(ख) को लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् में बदलो । (ख) ज्ञा धातु के दोनों पदों में पाँचों लकारों में रूप लिखो । (ग) इन प्रत्ययों को लगाकर पाँच पाँच रूप बनाओ और वाक्यों में प्रयोग करो—तः, त्र, था, दा, धा, मात्र ।

५. वाक्य बनाओ :—जानीहि, प्रतिजानीष्व, अवजानाति, अनुजानीहि । मत्तः, त्वत्तः, अस्मत्तः, युष्मत्तः, उभयतः, सर्वतः, अन्यत्र, सर्वत्र, एकदा, सदा, त्रिधा, बहुधा, शतधा, मुष्टिमात्रम्, कटिमात्रम्, जानुमात्रम् ।

शब्दकोष १४२५ + २५ = १४५०] अभ्यास ५८

(व्याकरण)

(क) ऋतुः (ऋतु), वसन्तः (वसन्त), ग्रीष्मः (गर्मी), वर्षा (वर्षा), शरद् (शरद्), हेमन्तः (हेमन्त), शिशिरः (शिशिर) । ७। (घ) कृश (निर्बल), प्रिय (प्रिय), कटु (कड़वा), लघु (छोटा, हलका), बहु (अधिक), भीरु (डरपोक), मृदु (कोमल), दीर्घ (बड़ा), ह्रस्व (छोटा), महत् (बड़ा), अल्प (छोटा, थोड़ा), प्रशस्य (अच्छा), उदार (दानी), कृपण (कृपण), प्राचीन (पुराना), नूतन (नया), कोमल (कोमल), विशाल (बड़ा) । १८।

व्याकरण (तरप्, तमप् प्रत्यय)

नियम १६०—(द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ) तुलनात्मक विशेषणः—जब दो की तुलना की जाती है और उनमें से एक की विशेषता या न्यूनता बताई जाती है तो विशेषण के आगे तरप् या ईयसुन् प्रत्यय होता है। तरप् का तर और ईयसुन् का ईयस् शेष रहता है। तर प्रत्यय लगाने पर पुलिङ्ग में राम, स्त्रीलिङ्ग में रमा, और नपुं० में गृह के तुल्य रूप चलेंगे। ईयस् लगाने पर पुलिङ्ग में अन्त में ईयान् ईयांसी, ईयांसः, प्रथमा। ईयांसम् ईयांसी ईयांसः द्वितीया में लगेगा। स्त्रीलिङ्ग में अन्त में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुं० में मनस् के तुल्य रूप चलेंगे। जिससे विशेषता दिखाई जाती है उसमें पंचमी होती है (देखो नियम ५४)। जैसे राम श्याम से पटु है—रामः श्यामात् पटुतरः, पटुयान् वा। इसी प्रकार लघु > लघुतरः, लघुयान्। महत् > महत्तरः, महीयान्। विद्वस् > विद्वत्तरः।

नियम १६१—(अतिशायने तमबिष्ठनौ) बहुतों में से एक की विशेषता बताने पर तमप् या इष्ठन् होता है। तमप् का तम और इष्ठन् का इष्ठ शेष रहता है। दोनों के रूप नपुं० में रामवत्, स्त्री० में रमावत्, नपुं० में ज्ञानवत् चलेंगे। जिनसे विशेषता बताई जाती है, उनमें षष्ठी या सप्तमी होगी। (देखो नियम ६४)। जैसे कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है—कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः। छात्राणां छात्रेषु वा रामः पटुतमः पटिष्ठः वा। विद्वस् > विद्वत्तमः।

इस पाठ में दो की तुलना में 'तर' और बहुतों की तुलना में 'तम' प्रत्यय का प्रयोग करें।

अभ्यास ५८

१. उदाहरण-वाक्य :—१. षड् ऋतवः सन्ति, वसन्तः, ग्रीष्मादयः । २. देवदत्तः यज्ञदत्तात् पटुतरः, कृशतरः, लघुतरः, भीरुतरः, मृदुतरः चास्ति । ३. कालिदासः कवीनां कविषु वा बुद्धिमत्तमः, पटुतमः, योग्यतमश्चासीत् । ४. कृष्णः छात्राणां छात्रेषु वा पटुतमः । ५. रमा कमलायाः पटुतरा । ६. श्यामा छात्रासु पटुतमा अस्ति ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. एक वर्ष में ६ ऋतुएँ होती हैं, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर । २. वसन्त ऋतु को ऋतुराज कहते हैं । ३. वसन्त में सभी वृक्ष और लताएँ फलफूल से युक्त होते हैं । ४. ग्रीष्मऋतु में धूप (आतपः) बहुत कठोर होती है । ५. वर्षा ऋतु में वर्षा अधिक होती है । ६. शरद् ऋतु में ठंड (शीतः) प्रारम्भ होती है । ७. हेमन्त ऋतु में ठंड बढ़ती है । ८. शिशिर में हिम (हिमम्) गिरता है, ठंड अत्यधिक होती है । ९. राम शिवदत्त से अधिक चतुर, पटु, कृश, और लघु है । १०. मुझे धनिक से विद्वान् प्रियतर है । ११. धन से विद्या प्रशस्यतर है । १२. विद्या से भी बुद्धि प्रशस्यतर है । १३. हरिश्चन्द्र रामचन्द्र से छोटा है, और देवदत्त रामचन्द्र से बड़ा है । १४. वैदिक धर्म सारे धर्मोंसे प्राचीन है । १५. साम्यवाद सबसे नया वाद (वादः) है । १६. हरिश्चन्द्र सबसे बड़ा दानी है । १७. राजाओं में दुर्योधन सबसे अधिक कृपण है । १८. परमाणु सबसे छोटा होता है । १९. नवग्रहों में सूर्य सबसे बड़ा ग्रह (ग्रहः) है । २०. स्त्री का स्वर मृदुतम होता है । २१. खरगोश सबसे अधिक डरपोक होता है । २२. सरस्वती सबसे अधिक विदुषी (विद्वत्तमा) है । २३. ग्रीष्म ऋतु में दिन सबसे बड़ा होता है और शिशिर में रात्रि सबसे बड़ी होती है । २४. अमृत सबसे मधुर होता है और विष सबसे अधिक कटु होता है ।

३. अशुद्ध वाक्य

शुद्ध वाक्य

नियम

- | | | |
|--------------------------------------|-------------------------------------|----|
| १. रामः शिवदत्तेन अधिकं चतुरतरः । | रामः शिवदत्तात् चतुरतरः । | ५४ |
| २. वैदिकधर्मः सर्वधर्मात् प्राचीनः । | वैदिकधर्मः सर्वधर्मेषु प्राचीनतमः । | ६४ |

४. अभ्यास :—(क) इन शब्दों से तरप् और तमप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—पटु, गुरु, लघु, मृदु, कटु, मधुर, प्रिय, ह्रस्व, दीर्घ, महत्, अल्प, कृपण, उदार, प्राचीन, नवीन, दुष्ट, हीन, नीच ।

५. वाक्य बनाओ :—पटुतरः, लघुतरः, प्रियतरः, दुष्टतरः, महत्तरः, पटुतमः, गुरुतमः, मधुरतमः, कटुतमः, प्राचीनतमः, नवीनतमः ।

शब्दकोष १४५० + २५ = १४७५] अभ्यास ५९

(व्याकरण)

(क) वासरः (दिन), रविवारः (रविवार), सोमवारः (सोमवार), मंगलवारः (मंगलवार), बुधवारः (बुधवार), बृहस्पतिवारः (बृहस्पतिवार), शुकवारः (शुक्रवार), शनिवारः (शनिवार) । मासः (महीना), चंद्रः (चंद्र), वंशाखः (वंशाख), ज्येष्ठः (ज्येष्ठ), आषाढः (आषाढ़), श्रावणः (श्रावण), भाद्रपदः (भाद्रपद), आश्विनः (आश्विन), कार्तिकः (कार्तिक), मार्गशीर्षः (मार्गशीर्ष), पौषः (पूष), माघः (माघ), फाल्गुनः (फाल्गुन) । २१ । (घ) बाढ (अच्छा), युवन् (छोटा), उरु (बड़ा), स्थूल (मोटा) । ४ ।

व्याकरण (तद्धित ईयस्, इष्ठ प्रत्यय)

नियम १६२—(अजादी गुणवचनादेव, टेः) ईयस् और इष्ठ के विषय में दो बातें स्मरण रखें । (१) ईयस् और इष्ठ गुणवाचक शब्दों के ही साथ लगते हैं, सब प्रकार के शब्दों के साथ नहीं । तर, तम सब स्थानों पर लगते हैं । (२) ईयस् और इष्ठ लगाने पर शब्द के अन्तिम स्वर का लोप हो जाएगा, यदि अन्त में व्यञ्जन है तो उस व्यञ्जन और उसके पहले के स्वर, दोनों का लोप होगा । जैसे पटु, लघु आदि में उ हटेगा, महत् में अत् हटेगा । पटु > पटीयान्, पटिष्ठः । लघु > लघीयान्, लघिष्ठः । महत् > महीयान्, महिष्ठः ।

नियम १६३—(स्थूलद्वर०, प्रियस्थिर०) निम्नलिखित शब्दों से ईयस् और इष्ठ प्रत्यय करने पर ये रूप होते हैं । ठीक स्मरण कर लें । कोष्ठगतशब्द शेष रहता है । सभी शब्दों के तर और तम वाले भी रूप बनेंगे ।

प्रशस्य (श्र)	श्रेयान्	श्रेष्ठः	गुरु (गर्)	गरीयान्	गरिष्ठः
बृद्ध, प्रशस्य (ज्य)	ज्यायान्	ज्येष्ठः	दीर्घ (द्राघ्)	द्राघीयान्	द्राघिष्ठः
अन्तिक (नेद्)	नेदीयान्	नेदिष्ठः	बहु (भू)	भूयान्	भूयिष्ठः
बाढ (साध)	साधोयान्	साधिष्ठः	युवन् (कन्)	कनीयान्	कनिष्ठः
स्थूल (स्थू)	स्थवीयान्	स्थविष्ठः	पटु (पट्)	पटीयान्	पटिष्ठः
द्वर (द्व)	दवीयान्	दविष्ठः	लघु (लघ्)	लघीयान्	लघिष्ठः
प्रिय (प्र)	प्रेयान्	प्रेष्ठः	महत् (मह्)	महीयान्	महिष्ठः
स्थिर (स्थ)	स्थेयान्	स्थेष्ठः	मृदु (मृद्)	मृदीयान्	मृदिष्ठः
उरु (वर्)	वरीयान्	वरिष्ठः	बलिन् (बल्)	बलीयान्	बलिष्ठः

इस पाठ में दो की तुलना में 'ईयस्' और बहुतों की तुलना में 'इष्ठ' का प्रयोग करें ।

अभ्यास ५९

१. उदाहरण-वाक्य :—१. सप्ताहे सप्तदिनानि भवन्ति (रविवारः सोमवारादयः) । २. एकस्मिन् वर्षे द्वादश मासाः भवन्ति, चैत्रः वैशाखादयः । ३. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी । ४. श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । ५. रामो लक्ष्मणात् ज्यायान् आसीत्, शत्रुघ्नश्च भरतात् कनीयान् आसीत् । ६. पांडवानां युधिष्ठिरो ज्येष्ठः सहदेवश्च कनिष्ठो भ्राता बभूव ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. एक सप्ताह में सात दिन होते हैं, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार । २. एक वर्ष में बारह मास होते हैं, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन । ३. विद्या धन से बड़ी है (गुरु) । ४. मेरा घर तुम्हारे घर से दूर है (दूर) । ५. भीम अर्जुन से स्थूल है । ६. अर्जुन भीम से धनुर्विद्या में चतुर है (पटु) । ७. अहिंसा हिंसा से प्रशस्यतर है । ८. यह मार्ग उस मार्ग से लम्बा है (दीर्घ) । ९. कृष्ण मेरा बड़ा भाई है और राम छोटा । १०. मनोरमा मेरी प्रेयसी है । ११. सीताका शरीर फूल से भी कोमल था (मृदु) । १२. वेद सारे धर्मग्रन्थों से श्रेष्ठ हैं । १३. कालिदास कवियों में श्रेष्ठ है । १४. कौरवों में दुर्योधन सबसे बड़ा भाई था । १५. पांडवों में सहदेव सबसे छोटा भाई था । १६. सारी पुस्तकों में गीता मुझे प्रिय है (प्रिय) । १७. ईश्वर सबसे अधिक समीप (अन्तिक), सबसे अधिक दूर, सबसे उत्तम (बाढ), सबसे स्थूल, सबसे लघु, सबसे महान्, सबसे बड़ा (गुरु), सबसे विशाल (उरु), सबसे स्थिर, सबसे बड़ा (वृद्ध), सबसे प्रिय, सबसे बलवान् (बलिन्) और सबसे अधिक (बहु) कोमल हैं (मृदु) ।

३. अशुद्ध	शुद्ध	नियम
१. ज्येयान्, द्वरीयान्, प्रियेयान् ।	ज्यायान्, दवीयान्, प्रेयान् ।	१९३
२. बहीयान्, बहिष्ठः, गुरिष्ठः ।	भूयान्, भूयिष्ठः, गरिष्ठः ।	१९३
३. जेष्ठः, कनेष्ठः, वरेष्ठः ।	ज्येष्ठः, कनिष्ठः, वरिष्ठः ।	१९३

४. अभ्यास :—(क) इन शब्दों से ईयस् और इष्ठ लगाकर रूप बनाओ :—प्रिय, स्थिर, उरु, गुरु, वृद्ध, दीर्घ, युवन्, अन्तिक, बाढ, स्थूल, प्रशस्य, पटु, लघु, मृदु, महत्, बहु ।

५. वाक्य बनाओ :—श्रेयान्, श्रेष्ठः, प्रेयान्, प्रेयसी, प्रेष्ठः, ज्यायान्, ज्येष्ठः, कनीयान्, कनिष्ठः, भूयांसः, भूयिष्ठम्, गरिष्ठः, वरिष्ठः ।

शब्दकोष १४७५ + २५ = १५००) अभ्यास ६०

(व्याकरण)

(क) अजा (बकरी), कोकिला (कोयल), मूषिका (चुहिया), प्रिया (प्रिय स्त्री, स्त्री)। प्रेयसी (स्त्री), बुद्धिमती (बुद्धिमती), तपस्विनी (तपस्विनी), मानिनी (मानवाली), तरुणी (युवती), किशोरी (कम आयु की कन्या), ब्राह्मणी (ब्राह्मणी), क्षत्रिया (क्षत्रिय स्त्री), वंश्या (वंश्य स्त्री), शूद्रा (शूद्र स्त्री), युवतिः (युवती), मृगी (हिरनी), सिंही (शेरनी), सर्पिणी (सर्पिन), माजरी (बिल्ली), इन्द्राणी (इन्द्र की स्त्री), भवानी (दुर्गा), आचार्या (प्रसिद्ध स्त्री), आचार्यानी (आचार्य की स्त्री), राज्ञी (रानी), श्रीमती (ऐश्वर्ययुक्त स्त्री)। २५।

व्याकरण (स्त्रीप्रत्यय)

नियम १६४—(अजाद्यतष्टाप्) शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने में साधारणतया अन्त में 'आ' या 'ई' लगता है। कुछ मुख्य नियम यहाँ दिए जाते हैं :—शब्द के अन्त में अ हो तो साधारणतया अन्त में टाप् अर्थात् 'आ' जुड़ जाता है। जैसे बाल—बाला, प्रथम—प्रथमा, द्वितीय—द्वितीया, कृपण—कृपणा, दीन—दीना, अज—अजा, कोकिल—कोकिला, क्षत्रिय—क्षत्रिया, वंश्य—वंश्या, शूद्र—शूद्रा।

नियम १६५—(प्रत्ययस्थात्कात्०) अन्त में अक हो तो उसे 'इका' हो जाता है।

जैसे बालक—बालिका, पाचिका, गायिका, साधिका, अध्यापिका, मूषिका।

नियम १६६—(उभितश्च) जिन प्रत्ययों में से उ या ऋ का लोप होता है, उनमें अन्त में डोप् अर्थात् ई लगगा। जैसे मतुप्, शतृ, वतवतु, ईयसुन्, प्रत्यय वाले शब्द। यथा श्रामत् > श्रामतो। इसी प्रकार बुद्धिमती, विद्यावती। गच्छत् > गच्छन्ती। इसी प्रकार पठन्तो, लिखन्ती, हसन्ती। गतवत् > गतवती। इसी प्रकार पठितवती, उक्तवती। श्रेयस् > श्रेयसी। इसी प्रकार गरीयसी, प्रेयसी, ज्यायसी, भूयसी।

नियम १६७—(ऋन्नेभ्यो डोप्) शब्द के अन्त में ऋ या न् होगा तो डोप् अर्थात् ई लगेगा। जैसे कर्त् > कर्त्री। इसी प्रकार हर्त्री, धर्त्री, भर्त्री, कवयित्री, विधात्री। दण्डन् > दण्डिनी। इसी प्रकार तपस्विनी, मानिनी, मनोहारिणी, कामिनी।

नियम १६८—(षिद्गौरादिभ्यश्च) गौर आदि शब्दों के अन्त में ई लगता है। गौर—गौरी। नर्तक—नर्तकी। मातामह—मातामही। पितामह—पितामही। इसी प्रकार कुमारी, किशोरी, तरुणी, सुन्दरी।

नियम १६९—(जातेरस्त्रो०, पुंयोगो०) जातिवाचक शब्दों से तथा स्त्री (पत्नी) अर्थ कहने में ई लगता है। जैसे ब्राह्मण की स्त्री—ब्राह्मणी। इसी प्रकार शूद्रा, गोपी आदि। मृग—मृगी। इसी प्रकार हरिणी, सिंही, व्याघ्री, हँसी, माजरी।

नियम २००—(इन्द्रवरुण०) इन शब्दों के स्त्रीलिंग में ये रूप होते हैं—इन्द्र—इन्द्राणी, भव—भवानी, रुद्र—रुद्राणी, मातुल—मातुलानी, उपाध्याय—उपाध्यायानी, आचार्य—आचार्यानी, आचार्या। पति—पत्नी, युवन्—युवति, इवशूर—इवशू, राजन्—राज्ञी, विद्वस्—विदुषी।

अभ्यास ६०

१. उदाहरण-वाक्य :—१. अस्यां नगर्यां ब्राह्मण्यः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्च नायौ वसन्ति । २. अस्मिन् उद्याने मनोहारिण्यः कुमार्यः तरुण्यः सुन्दर्यो राज्ञ्यः युवतयः ससुखं भ्रमन्ति । ३. गुरुकुलस्य आचार्या बालिकाः पाठयति, आचार्यानी आचार्यं सेवते ।

२. संस्कृत बनाओ :—१. महात्मा गांधी बकरी का दूध पीते थे । २. सरोजिनी नायडू भारत की कोकिला थी । ३. कोयल मधुर स्वर से गाती है । ४. बिल्ली चूहों और चुहियों को खाती है । ५. इस कक्षा में मनोरमा सर्वप्रथम है, मुशीला द्वितीय और शान्ति तृतीय है । ६. ब्राह्मण ब्राह्मणी से, क्षत्रिय क्षत्रिया से, वैश्य वैश्य स्त्री से, शूद्र शूद्र स्त्री से विवाह करते हैं । ७. बालिका हँसती है, गायिका गाती है, अध्यापिका पढ़ाती है । ८. वे बालिकाएँ पढ़ रही हैं, हँस रही हैं, लिख रही हैं और जल पी रही हैं । ९. छोटी बहन, प्रेयसी स्त्री, श्रेयसी सिद्धि, गुरुतर क्रिया । १०. वह बालिका पढ़ चुकी है, लिख चुकी है, खा चुकी है । ११. यह मानिनी मनोहारिणी कामिनी अब दण्डिनी तपस्विनी हो गई है । १२. प्रकृति जगत् की कर्त्री घर्त्री और हर्त्री है । १३. कवयित्री कविता करती है (रच्) । १४. मेरी माता, पत्नी, बहिन, मामी, दादी, नानी आजकल यहाँपर ही हैं । १५. सुन्दर कुमारी किशोरी तरुणी स्त्रियों का सौन्दर्य किसके मन को नहीं हरता । १६. वन में मृग मृगी के साथ, सिंह सिंही के साथ, व्याघ्र व्याघ्री के साथ घूमते हैं । १७. इन्द्राणी, भवानी, आचार्यानी और आचार्य सदा पूज्य हैं । १८. विदुषी स्त्री रानी और गुरुपत्नी (उपाध्यायानी) के साथ आ रही है । १९. गोपियाँ कृष्ण के साथ खेल रही हैं । २०. हँसती हुई कुमारी ने सामने आती हुई नववधू को देखा ।

३. अशुद्ध

शुद्ध

नियम

१. अजी, बालका, मूषका, श्रीमता । अजा, बालिका, मूषिका, श्रीमती । १९४-१९६

२. मृगा, इन्द्रा, रुद्रा, भवा ।

मृगी, इन्द्राणी, रुद्राणी, भवानी । १९९-२००

३. पतिनी, श्वसुरी, विद्वानी ।

पत्नी, श्वश्रूः, विदुषी ।

२००

४. अभ्यास :—इन शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाओ :—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अज, मृग, हंस, कोकिल, मूषक, तपस्विन्, मानिन्, मनोहारिन्, कुमार, किशोर, सुन्दर, इन्द्र, आचार्य, भव, रुद्र, पति, युवन्, श्वशुर, राजन्, विद्वस् ।

५. वाक्य बनाओ :—ब्राह्मणी, पत्नी, तरुणी, सुन्दरी, आचार्या, आचार्यानी, विदुषी, श्वश्रूः, युवतिः, बुद्धिमती, गायिका, कनीयसी ।

व्याकरणा

आवश्यक—निर्देश

१. जिन शब्दों और धातुओं के तुल्य अन्य शब्दों और धातुओं के रूप चलते हैं, उनके रूपों के सामने उनका संक्षिप्तरूप दिया गया है। संक्षिप्तरूप का भाव यह है कि उस प्रकार के सभी शब्दों या धातुओं के अन्त में वह अंश रहेगा। अतः उस प्रकार से चलने वाले सभी शब्दों और धातुओं के अन्त में संक्षिप्तरूप लगाकर रूप बनावें। संक्षिप्तरूपों को शुद्ध स्मरण कर लें।

२. शब्दों और धातुओं के रूप के साथ अभ्यासों की संख्याएँ दी गई हैं। उसका भाव यह है कि उस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में हुआ है और उस प्रकार से चलने वाले शब्द या धातु भी उसी अभ्यास में दिए हुए हैं। संक्षिप्तरूप लगाकर उन शब्दों या धातुओं के रूप चलाइए।

३. संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का उपयोग किया गया है :—

(क) शब्दरूपों में प्रथमा आदि के लिए उनके प्रथम अक्षर रक्खे गए हैं, जैसे प्र० = प्रथमा, द्वि० = द्वितीया, तृ० = तृतीया, च० = चतुर्थी, पं० = पंचमी, ष० = षष्ठी, स० = सप्तमी, सं० = संबोधन।

(ख) पुं० = पुल्लिङ्ग, स्त्री० = स्त्रीलिङ्ग, नपुं० = नपुंसक लिङ्ग। एक० = एकवचन, द्वि० = द्विवचन, बहु० = बहुवचन। प्रत्येक शब्द या धातु के रूप में ऊपर से नीचे की ओर प्रथम पंक्ति एकवचन की है, दूसरी द्विवचन की और तीसरी बहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन में ही चलते हैं, उनमें उसी वचन के रूप हैं।

(ग) धातुरूपों में प्र०पु० = प्रथम पुरुष (अन्यपुरुष), म०पु० = मध्यमपुरुष, उ०पु० = उत्तमपुरुष। प० = परस्मैपद, आ० = आत्मनेपद, उ० = उभयपद।

४. सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता, अतः उनके रूप संबोधन में नहीं होते।

५. संक्षिप्तरूपों में न को ण होता जाता है, यदि वह र् या ष के बाद होता है। यदि र् या ष के बाद और न के पहले अट् (स्वर. ह य व र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न, बीच में हों तो भी न को ण हो जाएगा। संक्षिप्तरूपों में न ही रक्खा गया है, वही सर्वसाधारण है, जैसे, राम का तृतीया एक० में एन, ष० बहु० में आनाम्। (देखो नियम १६)।

(१) शब्दरूप-संग्रह

(१) राम (राम) अकारान्त पुलिङ्ग शब्द (१) राम (संक्षिप्तरूप), (देखो अभ्यास १५)

रामः	रामौ	रामाः	प्र०	अः	औ	आः	प्र०
रामम्	"	रामान्	द्वि०	अम्	"	आन्	द्वि०
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः	तृ०
रामाय	"	रामेभ्यः	च०	आय	"	एभ्यः	च०
रामात्	"	"	प०	आत्	"	"	प०
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्	ष०
रामे	"	रामेषु	स०	ए	"	एषु	स०
हे राम !	हे रामौ	हे रामाः	सं०	अ	औ	आः	सं०

(२) हरि (विष्णु), इकारान्त पुं० शब्द (२) हरि (संक्षिप्तरूप) (देखो अभ्यास ८)

हरिः	हरी	हरयः	प्र०	इः	ई	अयः	प्र०
हरिम्	"	हरीन्	द्वि०	इम्	"	ईन्	द्वि०
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः	तृ०
हरये	"	हरिभ्यः	च०	अये	"	इभ्यः	च०
हरेः	"	"	पं०	एः	"	"	पं०
हरेः	हर्योः	हरीणाम्	ष०	"	योः	ईनाम्	ष०
हरौ	"	हरिषु	स०	औ	"	इषु	स०
हे हरे !	हे हरी !	हे हरयः !	सं०	ए	ई	अयः	सं०

(३) सखि (मित्र) इकारान्त पुं० शब्द

सूचना—

सखा	सखायौ	सखायः	प्र०
सखायम्	"	सखीन्	द्वि०
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृ०
सख्ये	"	सखिभ्यः	च०
सख्युः	"	"	पं०
"	सख्योः	सखीनाम्	ष०
सख्यौ	"	सखिषु	स०
हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः	सं०

सखि शब्द के तुल्य और कोई शब्द नहीं चलता है। (देखो अभ्यास २५)

(४) गुरु (गुरु) उकारान्त पु० शब्द

गुरुः	गुरु	गुरवः	प्र०
गुरुम्	„	गुरून्	द्वि०
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०
गुरवे	„	गुरुभ्यः	च०
गुरोः	„	„	पं०
„	गुरोः	गुरुणाम्	ष०
गुरौ	„	गुरुषु	स०
हे गुरो	हे गुरु	हे गुरवः	सं०

(४) गुरु (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ९)

उः	ऊ	अवः	प्र०
उम्	„	ऊन्	द्वि०
उना	उभ्याम्	उभिः	तृ०
अवे	„	उभ्यः	च०
ओः	„	„	पं०
„	वोः	ऊनाम्	ष०
औ	„	उपु	स०
ओ	ऊ	अवः	सं०

(५) कर्तृ (करनेवाला) ऋकारान्त पुं०

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०
कर्तारम्	„	कर्तृन्	द्वि०
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०
कर्त्रे	„	कर्तृभ्यः	च०
कर्तुः	„	„	पं०
„	कर्त्रोः	कर्तृणाम्	ष०
कर्तरि	„	कर्तृषु	स०
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०

(५) कर्तृ (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० २६)

आ	आरौ	आरः	प्र०
आरम्	„	ऋन्	द्वि०
रा	ऋभ्याम्	ऋभिः	तृ०
रे	„	ऋभ्यः	च०
उः	„	„	पं०
„	रोः	ऋणाम्	ष०
अरि	„	ऋषु	स०
अः	आरौ	आरः	सं०

(६) पितृ (पिता) ऋकारान्त पुं०

पिता	पितरौ	पितरः	प्र०
पितरम्	„	पितृन्	द्वि०
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०
पित्रे	„	पितृभ्यः	च०
पितुः	„	„	पं०
„	पित्रोः	पितृणाम्	ष०
पितरि	„	पितृषु	स०
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०

(६) पितृ (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० २७)

आ	अरौ	अरः	प्र०
अरम्	„	ऋन्	द्वि०

शेष कर्तृवत् (देखो शब्द ५) ।

(७) गो (गाय या बैल) ओकारान्त पुं०, स्त्री. सूचना—

गौ:	गावौ	गावः	प्र०	साधारणतया (यो शब्द को छोड़कर)
गाम्	"	गा:	द्वि०	अन्य कोई शब्द गो शब्द के तुल्य
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०	नहीं चलता । (देखो अभ्यास २८)
गवे	"	गोभ्यः	च०	
गो:	"	"	पं०	
"	गवो:	गवाम्	ष०	
गवि	"	गोषु	स०	
हे गौ:	हे गावौ	हे गावः	सं०	

(८) भूभृत् (राजा, पर्वत) तकारान्त पुं० (८) भूभृत् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३०)

भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्र०	त्	तौ	तः	प्र०
भूभृतम्	"	"	द्वि०	तम्	"	"	द्वि०
भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः	तृ०
भूभृते	"	भूभृद्भ्यः	च०	ते	"	द्भ्यः	च०
भूभृतः	"	"	पं०	तः	"	ताम्	पं०
"	भूभृतोः	भूभृताम्	ष०	"	तोः	ताम्	ष०
भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु	स०	ति	"	त्सु	स०
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सं०	त्	तौ	तः	सं०

(९) भगवत् (भगवान्) तकारान्त पुं० (९) भगवत् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० २९)

भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः	प्र०	आन्	अन्तौ	अन्तः	प्र०
भगवन्तम्	"	भगवतः	द्वि०	अन्तम्	"	अतः	द्वि०
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः	तृ०
भगवते	"	भगवद्भ्यः	च०	ते	"	द्भ्यः	च०
भगवतः	"	"	पं०	तः	"	"	पं०
"	भगवतोः	भगवताम्	ष०	"	तोः	ताम्	ष०
भगवति	"	भगवत्सु	स०	ति	"	त्सु	स०
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः	सं०	अन्	अन्तौ	अन्तः	सं०

सूचना—शतृप्रत्ययान्त पठत् आदि के प्र० एक०

में आन् के स्थान पर अन् लगेगा, शेष पूर्ववत् ।

(१०) करिन् (हाथी) अन्नन्त पुं०

करी	करिणौ	करिणः
करिणम्	"	करिणः
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
करिणे	"	करिभ्यः
करिणः	"	"
"	करिणोः	करिणाम्
करिणि	"	करिषु
हे करिन्	हे करिणी	हे करिणः

(१०) करिन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३१)

प्र०	ई	इनौ	इनः	प्र०
द्वि०	इनम्	"	"	द्वि०
तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः	तृ०
च०	इने	"	इभ्यः	च०
पं०	इनः	"	"	पं०
ष०	"	इनोः	इनाम्	ष०
स०	इनि	"	इषु	स०
सं०	इन्	इनौ	इनः	सं०

(११) आत्मन् (आत्मा) अन्नन्त पुं०

आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
आत्मानम्	"	आत्मनः
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
आत्मने	"	आत्मभ्यः
आत्मनः	"	"
"	आत्मनोः	आत्मनाम्
आत्मनि	"	आत्मसु
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

(११) आत्मन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३२)

प्र०	आ	आनौ	आनः	प्र०
द्वि०	आनम्	"	अनः	द्वि०
तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः	तृ०
च०	अने	"	अभ्यः	च०
पं०	अनः	"	"	पं०
ष०	"	अनोः	अनाम्	ष०
स०	अनि	"	असु	स०
सं०	अन्	आनौ	आनः	सं०

(१२) राजन् (राजा) अन्नन्त पुं०

राजा	राजानौ	राजानः
राजानम्	"	राजः
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
राज्ञे	"	राजभ्यः
राज्ञः	"	"
"	राज्ञोः	राज्ञाम्
राज्ञि, राजनि	"	राजसु
हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

(१२) राजन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३३)

(सूचना—अन् भाग के स्थान पर) (देखो

नियम १६, ७५)

प्र०	आ	आनौ	आनः	प्र०
द्वि०	आनम्	"	नः	द्वि०
तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः	तृ०
च०	ने	"	अभ्यः	च०
पं०	नः	"	"	पं०
ष०	"	नोः	नाम्	ष०
स०	नि, अनि	"	असु	स०
सं०	अन्	आनौ	आनः	सं०

(१३) रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्री. (१३) रमा (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३,७)

रमा	रमे	रमाः	प्र०	आ	ए	आः	प्र०
रमाम्	"	"	द्वि०	आम्	"	"	द्वि०
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः	तृ०
रमायै	"	रमाभ्यः	च०	आयै	"	आभ्यः	च०
रमायाः	"	"	पं०	आयाः	"	"	पं०
"	रमयोः	रमाणाम्	ष०	"	अयोः	आनाम्	ष०
रमायाम्	"	रमासु	स०	आयाम्	"	आसु	स०
हे रमे	हे रमे	हे रमाः	सं०	ए	ए	आः	सं०

(१४) मति (बुद्धि) इकारान्त स्त्री० (१४) मति (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३४)

मतिः	मती	मतयः	प्र०	इः	ई	अयः	प्र०
मतिम्	"	मतीः	द्वि०	इम्	"	ईः	द्वि०
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृ०	या	इभ्याम्	इभिः	तृ०
मत्यै, मतये	"	मतिभ्यः	च०	यै, अये	"	इभ्यः	च०
मत्याः, मतेः	"	"	पं०	याः, एः	"	"	पं०
" "	मत्योः	मतीनाम्	ष०	" "	योः	ईनाम्	ष०
मत्याम्, मतौ	"	मतिषु	स०	याम्, औ	"	इषु	स०
हे मते	हे मती	हे मतयः	सं०	ए	ई	अयः	सं०

(१५) नदी (नदी) ईकारान्त स्त्री० (१५) नदी (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३५)

नदी	नद्यौ	नद्यः	प्र०	ई	यौ	यः	प्र०
नदीम्	"	नदीः	द्वि०	ईम्	"	ईः	द्वि०
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः	तृ०	या	ईभ्याम्	ईभिः	तृ०
नद्यै	"	नदीभ्यः	च०	यै	"	ईभ्यः	च०
नद्याः	"	"	पं०	याः	"	"	पं०
"	नद्योः	नदीनाम्	ष०	"	योः	ईनाम्	ष०
नद्याम्	"	नदीषु	स०	याम्	"	ईषु	स०
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः	सं०	इ	यौ	यः	सं०

(१६) धेनु (गाय) उकारान्त स्त्री० (१६) धेनु (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३६)

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०	उः	ऊ	अवः	प्र०
धेनुम्	"	धेनूः	द्वि०	उम्	"	ऊः	द्वि०
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०	वा	उभ्याम्	उभिः	तृ०
धेन्वै, धेनवे	"	धेनुभ्यः	च०	वै, अवे	"	उभ्यः	च०
धेन्वाः, धेनोः	"	"	पं०	वाः, ओः	"	"	पं०
" "	धेन्वोः	धेनुनाम्	ष०	" "	वोः	ऊनाम्	ष०
धेन्वाम्, धेनौ	"	धेनुषु	स०	वाम्, औ	"	उषु	स०
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः	सं०	ओ	ऊ	अवः	सं०

(१७) वधू (बहू) ऊकारान्त स्त्री० (१७) वधू (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३७)

वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	ऊः	वौ	वः	प्र०
वधूम्	"	वधूः	द्वि०	ऊम्	"	ऊः	द्वि०
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	वा	ऊभ्याम्	ऊभिः	तृ०
वध्वै	"	वधूभ्यः	च०	वै	"	ऊभ्यः	च०
वध्वाः	"	"	पं०	वाः	"	"	पं०
"	वध्वोः	वधूनाम्	ष०	"	वोः	ऊनाम्	ष०
वध्वाम्	"	वधूषु	स०	वाम्	"	ऊषु	स०
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०	उ	वौ	वः	सं०

(१८) वाच् (वाणी) चकारान्त स्त्री० (१८) वाच् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३८)

वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	प्र०	क्, ग्	चौ	चः	प्र०
वाचम्	"	"	द्वि०	चम्	"	"	द्वि०
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०	चा	ग्भ्याम्	ग्भिः	तृ०
वाचे	"	वाग्भ्यः	च०	चे	"	ग्भ्यः	च०
वाचः	"	"	पं०	चः	"	"	पं०
"	वाचोः	वाचाम्	ष०	"	चोः	चाम्	ष०
वाचि	"	वाक्षु	स०	चि	"	क्षु	स०
हे वाक्, -ग्	हे वाचौ	हे वाचः	सं०	क्, ग्	चौ	चः	सं०

(१९) सरित् (नदी) तकारान्त स्त्री० (१९) सरित् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ३९)

सरित्	सरितौ	सरितः	प्र०	त्	तौ	तः	प्र०
सरितम्	"	"	द्वि०	तम्	"	"	द्वि०
सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः	तृ०	ता	द्भ्याम्	द्भिः	तृ०
सरिने	"	सरिद्भ्यः	च०	ते	"	द्भ्यः	च०
सरितः	"	"	पं०	तः	"	"	पं०
"	सरितोः	सरिताम्	ष०	"	तोः	ताम्	ष०
सरिति	"	सरित्सु	स०	ति	"	त्सु	स०
हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः	सं०	त्	तौ	तः	सं०

(२०) गृह (घर) अकारान्त नपुं० (२०) गृह (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. २, ६)

गृहम्	गृहे	गृहाणि	प्र०	अम्	ए	आनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः	तृ०
गृहाय	"	गृहेभ्यः	च०	आय	"	एभ्यः	च०
गृहात्	"	"	पं०	आत्	"	"	पं०
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्	ष०
गृहे	"	गृहेषु	स०	ए	"	एषु	स०
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि	सं०	अ	ए	आनि	सं०

(२१) वारि (जल) इकारान्त नपुं० (२१) वारि (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ४०)

वारि	वारिणी	वारीणि	प्र०	इ	इनी	ईनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः	तृ०
वारिणे	"	वारिभ्यः	च०	इने	"	इभ्यः	च०
वारिणः	"	"	पं०	इनः	"	"	पं०
"	वारिणोः	वारीणाम्	ष०	"	इनोः	ईनाम्	ष०
वारिणि	वारिणोः	वारिषु	स०	इनि	"	इषु	स०
हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि	सं०

(२२) दधि (दही) इकारान्त नपुं० (२२) दधि (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४१)

दधि	दधिनी	दधीनि	प्र०	इ	इनी	ईनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृ०	ना	इभ्याम्	इभिः	तृ०
दध्ने	"	दधिभ्यः	च०	ने	"	इभ्यः	च०
दध्नः	"	"	पं०	नः	"	"	पं०
"	दध्नोः	दध्नाम्	ष०	"	नोः	नाम्	ष०
दध्नि, दधनि	"	दधिषु	स०	नि, अनि	"	इषु	स०
हे दधि, -धे	दधिनी	दधीनि	सं०	इ, ए	इनी	ईनि	सं०

(२३) मधु (शहद) उकारान्त नपुं० (२३) मधु (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४२)

मधु	मधुनी	मधूनि	प्र०	उ	उनी	ऊनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः	तृ०
मधुने	"	मधुभ्यः	च०	उने	"	उभ्यः	च०
मधुनः	"	"	पं०	उनः	"	"	पं०
"	मधुनोः	मधूनाम्	ष०	"	उनोः	ऊनाम्	ष०
मधुनि	"	मधुषु	स०	उनि	"	उषु	स०
हे मधु, -धो	हे मधुनी	हे मधूनि	सं०	उ, ओ	उनी	ऊनि	सं०

(२४) पयस् (दूध, जल) असन्त नपुं० (२४) पयस् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ४३)

पयः	पयसी	पयांसि	प्र०	अः	असी	आंसि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः	तृ०
पयसे	"	पयोभ्यः	च०	असे	"	ओभ्यः	च०
पयसः	"	"	पं०	असः	"	"	पं०
"	पयसोः	पयसाम्	ष०	"	असोः	असाम्	ष०
पयसि	"	पयस्सु, पयःसु	स०	असि	"	अःसु	स०
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि	सं०	अः	असी	आंसि	सं०

(२५) शर्मन् (मुख्य) अन्नन्त नपुं० (२५) शर्मन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ४४)

शर्म	शर्मणी	शर्माणि	प्र०	अ	अनी	आनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः	तृ०	अना	अभ्याम्	अभिः	तृ०
शर्मणे	"	शर्मभ्यः	च०	अने	"	अभ्यः	च०
शर्मणः	"	"	पं०	अनः	"	"	पं०
"	शर्मणोः	शर्मणाम्	ष०	"	अनोः	अनाम्	ष०
शर्मणि	"	शर्मसु	स०	अनि	"	असु	स०
हे शर्म, शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि	सं०	अ, अन्	अनी	आनि	सं०

(२६) जगत् (संसार) तकारान्त नपुं० (२६) जगत् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ६५)

जगत्	जगती	जगन्ति	प्र०	अत्	अती	अन्ति	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः	तृ०	अता	अद्भ्याम्	अद्भिः	तृ०
जगते	"	जगद्भ्यः	च०	अते	"	अद्भ्यः	च०
जगतः	"	"	पं०	अतः	"	"	पं०
"	जगतोः	जगताम्	ष०	"	अतोः	अताम्	ष०
जगति	"	जगत्सु	स०	अति	"	अत्सु	स०
हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति	सं०	अत्	अती	अन्ति	सं०

(२७) नामन् (नाम) अन्नन्त नपुं० (२७) नामन् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ४६)

नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि	प्र०	अ	नी, अनी	आनि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०	ना	अभ्याम्	अभिः	तृ०
नाम्ने	"	नामभ्यः	च०	ने	"	अभ्यः	च०
नाम्नः	"	"	पं०	नः	"	"	पं०
"	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०	"	नोः	नाम्	ष०
नाम्नि, नामनि	"	नामसु	स०	नि, अनि	"	असु	स०
हे नाम, नामन्	हे नाम्नी, नामनी	हे नामानि	सं०	अ, अन्	नी, अनी	आनि	सं०

(२८) (क) मनस् (मन) असन्त नपुं० (२८) (क) मनस् (संक्षिप्तरूप) (देखो

अ० ४७)

मनः	मनसी	मनांसि	प्र०	अः	असी	आंसि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः	तृ०	असा	ओभ्याम्	ओभिः	तृ०
मनसे	"	मनोभ्यः	च०	असे	"	ओभ्यः	च०
मनसः	"	"	पं०	असः	"	"	पं०
"	मनसोः	मनसाम्	ष०	"	असोः	असाम्	ष०
मनसि	"	मनःसु	स०	असि	"	अःसु	स०
हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि	सं०	अः	असी	आंसि	सं०

(२८) (ख) हविष् (हृदि) इषन्त नपुं० (२८) (ख) हविष् (संक्षिप्तरूप) (देखो

अ० ४७)

हविः	हविषी	हवीषि	प्र०	इः	इषी	ईषि	प्र०
"	"	"	द्वि०	"	"	"	द्वि०
हविषा	हविभ्याम्	हविभिः	तृ०	इषा	इभ्याम्	इभिः	तृ०
हविषे	"	हविभ्यः	च०	इषे	"	इभ्यः	च०
हविषः	"	"	पं०	इषः	"	"	पं०
"	हविषोः	हविषाम्	ष०	"	इषोः	इषाम्	ष०
हविषि	"	हविषु	स०	इषि	"	इषु	स०
हे हविः	हे हविषी	हे हवीषि	सं०	इः	इषी	ईषि	सं०

(२९) (क) सर्व (सब) सर्वनाम पुं० (२९) (क) सर्व (संक्षिप्तरूप) देखो अ० १०)

सर्वः	सर्वौ	सर्वे	प्र०	अः	औ	ए	प्र०
सर्वम्	"	सर्वान्	द्वि०	अम्	"	आन्	द्वि०
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः	तृ०
सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः	च०	अस्मै	"	एभ्यः	च०
सर्वस्मात्	"	"	पं०	अस्मात्	"	"	पं०
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	ष०	अस्य	अयोः	एषाम्	ष०
सर्वस्मिन्	"	सर्वेष	स०	अस्मिन्	"	एषु	स०

(२९) (ख) सर्व (नपु०)	(२९) (ख) सर्व (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. ११)
सर्वम् सर्वं सर्वाणि प्र० अ ए आनि प्र०	
" " " द्वि० " " " द्वि०	
सर्वेण सर्वाभ्याम् सर्वैः तृ० एन आभ्याम् ऐः तृ०	
शेष पुलिग के तुल्य (देखो २९, क)	शेष पुलिग के तुल्य (देखो २९, क) ।

(२९) (ग) सर्व (स्त्रीलिङ्ग)			(२९) (ग) सर्व (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० १०)				
सर्वा	सर्वे	सर्वाः	प्र०	आ	ए	आः	प्र०
सर्वाम्	„	„	द्वि०	आम्	„	„	द्वि०
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	तृ०	अया	आभ्याम्	आभिः	तृ०
सर्वस्यै	„	सर्वाभ्यः	च०	अस्यै	„	आभ्यः	व०
सर्वस्याः	„	„	पं०	अस्याः	„	„	पं०
„	सर्वयोः	सर्वासाम्	ष०	„	अयोः	आसाम्	ष०
सर्वस्याम्	„	सर्वासु	स०	अस्याम्	„	आसु	स०

(३०) पूर्व (प्रथम, पूर्व) देखो (अ. १०-१२) (३१) तत् (बह) (देखो अ. १०-१२)
 सूचना—पूर्व के तीनों लिङ्गों में रूप सर्व (क) पुलिग—सः तौ ते प्र०
 के तुल्य चलेंगे । देखो उपर्युक्त २९, क, ख, शेष सर्व (पुलिङ्ग) के तुल्य ।
 ग । (संक्षिप्तरूप लगाओ) (ख) नपु०—तत् ते तानि प्र०

(३२) एतत् (यह) (देखो अ. १०-१२) शेष सर्व (नपु०) के तुल्य ।
 (क) पुलिङ्ग—एषः एतौ एते प्र० (ग) स्त्री०—सा ते ताः प्र०
 शेष सर्व (पुलिङ्ग) या तत् के तुल्य । शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।
 (ख) नपु० एतत् एते एतानि प्र० सूचना—तीनों लिङ्गों में नपु० एक० को
 छोड़कर सर्वत्र तत् का 'त' ही शेष रहता
 " " " द्वि० है, उसीके रूप चलेंगे ।
 शेष सर्व या तत् (नपु०) के तुल्य ।

(ग) स्त्री० एषा एते एताः प्र०
 शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।

(३३) यत् (त्रो) (देखो अ० १०-१२) (३४) किम् (कौन) (देखो अ० १०-१२)

(क) पुलिग—

(क) पुं०—कः कौ के प्र०

यः यौ ये प्र०

शेष सर्व (पुं०) के तुल्य ।

शेष सर्व (पुं०) के तुल्य ।

(ख) नपुं०—किम् के कानि प्र०

” ” ” द्वि०

(ख) नपुं०—यत् ये यानि प्र०

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य ।

शेष सर्व (नपुं०) के तुल्य ।

(ग) स्त्री०—या ये याः प्र०

(ग) स्त्री०—का के काः प्र०

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।

शेष सर्व (स्त्री०) के तुल्य ।

सूचना—शेष स्थानों पर 'य' के रूप होंगे ।

सूचना—शेष स्थानों पर 'क' के रूप चलेंगे

(३५) युष्मद् (तू) (देखो अ० १६)

(३६) अस्मद् (मैं) (देखो अ० १७)

त्वम् युवाम् यूयम् प्र०

अहम् आवाम् वयम् प्र०

त्वाम् युवाम् युष्मान् द्वि०

{ माम् आवाम् अस्मान् द्वि०

त्वा वाम् वः } द्वि०

{ मा नौ नः

त्वया युवाभ्याम् युष्माभिः तृ०

मया आवाभ्याम् अस्माभिः तृ०

तुभ्यम् युवाभ्याम् युष्मभ्यम् च०

{ मह्यम् आवाभ्याम् अस्मभ्यम् च०

ते वाम् वः } च०

{ मे नौ नः

त्वत् युवाभ्याम् युष्मत् पं०

मत् आवाभ्याम् अस्मत् पं०

तव युवयोः युष्माकम् पं०

{ मम आवयोः अस्माकम् पं०

ते वाम् वः } पं०

{ मे नौ नः

त्वयि युवयोः युष्मासु स०

मयि आवयोः अस्मासु स०

(३७) (क) इदम् (यह) (पुं०)

(३७) (ख) इदम् (यह) नपुं० (देखो

(देखो अ० १३)

अ० १४) ।

अयम् इमौ इमे प्र०

इदम् इमे इमानि प्र०

इमम् ” इमान् द्वि०

” ” ” द्वि०

अनेन आभ्याम् एभिः तृ०

शेष पुलिग के तुल्य

अस्मै ” एभ्यः च०

(देखो ३७ क) ।

अस्मात् ” पं०

अस्य अनयोः एषाम् ष०

अस्मिन् ” एषु स०

(३७) (ग) इदम् (स्त्री०) (देखो अ. १५) (३८) (क) अदस् (वह) पुं० (देखो अ० १३)

इयम्	इमे	इमाः	प्र०	असौ	अमू	अमी	प्र०
इमाम्	"	"	द्वि०	अमुम्	"	अमून्	द्वि०
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृ०
अस्यै	"	आभ्यः	च०	अमुष्मै	"	अमीभ्यः	च०
अस्याः	"	"	पं०	अमुष्मात्	"	"	पं०
"	अनयोः	आसाम्	ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	ष०
अस्याम्	"	आसु	स०	अमुष्मिन्	"	अमीषु	स०

(३८) (ख) अदस् नपुं० (देखो अ. १४) (३८) (ग) अदस् स्त्री. (देखो अ. १५)

अदः	अमू	अमूनि	प्र०	असौ	अमू	अमूः	प्र०
"	"	"	द्वि०	अमूम्	"	"	द्वि०
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमीभिः	तृ०
अमुष्मै	"	अमीभ्यः	च०	अमुष्यै	"	अमूभ्यः	च०
अमुष्मात्	"	"	पं०	अमुष्याः	"	"	पं०
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	ष०	"	अमुयोः	अमूषाम्	ष०
अमुष्मिन्	"	अमीषु	स०	अमुष्याम्	"	अमूषु	स०

(३९) एक (एक) (देखो अ० १८)

पुंलिङ्ग	नपुंसक	स्त्रीलिङ्ग
एकः	एकम्	एका
एकम्	"	एकाम्
एकेन	एकेन	एकया
एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
एकस्य	एकस्य	"
एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

केवल एकवचन में रूप चलते हैं।

(४०) द्वि० (दो) (देखो अ० १९)

पुंलिङ्ग	नपुं०, स्त्रीलिङ्ग
द्वौ	द्वे प्र०
"	" द्वि०
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम् तृ०
"	" च०
"	" पं०
द्वयोः	द्वयोः ष०
"	" स०

सूचना—केवल द्विवचन में रूप चलेंगे।

(४१) त्रि (तीन) (देखो अ० २०) (४२) चतुर् (चार) (देखो अ० २१)

पुं०	नपुं०	स्त्री०	पुं०	नपुं०	स्त्री०
त्रयः	त्रीणि	तिस्त्रः	प्र०	चत्वारः	चत्वारि चतस्रः प्र०
त्रीन्	"	"	द्वि०	चतुरः	" " द्वि०
त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः	तृ०	चतुर्भिः	चतुर्भिः चतसृभिः तृ०
त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	च०	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः चतसृभ्यः च०
"	"	"	पं०	"	" " पं०
त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	ष०	चतुर्णाम्	चतुर्णाम् चतसृणाम् ष०
त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु	स०	चतुर्षु	चतुर्षु चतसृषु स०

सूचना—३ से १८ तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचनमें ही चलते हैं।

(४३) पञ्चन् (पाँच) (४४) षष् (छः) (४५) सप्तन् (सात) (४६) अष्टन् (आठ)

पञ्च	षट्	प्र०	सप्त	अष्ट, अष्टौ	प्र०
"	"	द्वि०	"	" "	द्वि०
पञ्चभिः	षड्भिः	तृ०	सप्तभिः	अष्टभिः, अष्टाभिः	तृ०
पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	च०	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	च०
"	"	पं०	"	" "	पं०
पञ्चानाम्	षण्णाम्	ष०	सप्तानाम्	अष्टानाम्	ष०
पञ्चसु	षट्सु	स०	सप्तसु	अष्टसु, अष्टासु	स०

(४७) नवन् (नौ) (४८) दशन् (दश) (४९) कति (कितने) (५०) उभ (दोनों)

		पुं०	नपुं०	स्त्री०
नव	दश	प्र०	कति	उभौ उभे प्र०
"	"	द्वि०	"	" " द्वि०
नवभिः	दशभिः	तृ०	कतिभिः	उभाभ्याम् उभाभ्याम् तृ०
नवभ्यः	दशभ्यः	च०	कतिभ्यः	" " च०
"	"	पं०	"	" " पं०
नवानाम्	दशानाम्	ष०	कतीनाम्	उभयोः उभयोः ष०
नवसु	दशसु	स०	कतिषु	" " स०

सूचना—पञ्चन् से दशन् तक के लिए देखो अभ्यास २२।

(२) संख्याएँ

१ एकः, एकम्, एका	२९ नवविंशतिः	५३ त्रिपञ्चाशत्
२ द्वौ, द्वे, द्वे	एकोनविंशत्	त्रयःपञ्चाशत्
३ त्रयः, त्रीणि, तिस्रः	३० त्रिशत्	५४ चतुःपञ्चाशत्
४ चत्वारः, चत्वारि,	३१ एकत्रिंशत्	५५ पञ्चपञ्चाशत्
चतस्रः	३२ द्वात्रिंशत्	५६ षट्पञ्चाशत्
५ पञ्च	३३ त्रयस्त्रिंशत्	५७ सप्तपञ्चाशत्
६ षट्	३४ चतुस्त्रिंशत्	५८ अष्टापञ्चाशत्
७ सप्त	३५ पञ्चत्रिंशत्	अष्टपञ्चाशत्
८ अष्ट, अष्टौ	३६ षट्त्रिंशत्	५९ नवपञ्चाशत्
९ नव	३७ सप्तत्रिंशत्	एकोनषष्टिः
१० दश	३८ अष्टात्रिंशत्	६० षष्टिः
११ एकादश	३९ नवत्रिंशत्	६१ एकषष्टिः
१२ द्वादश	एकोनचत्वारिंशत्	६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
१३ त्रयोदश	४० चत्वारिंशत्	६३ त्रिषष्टिः
१४ चतुर्दश	४१ एकचत्वारिंशत्	त्रयःषष्टिः
१५ पञ्चदश	४२ द्विचत्वारिंशत्	६४ चतुःषष्टिः
१६ षोडश	द्वाचत्वारिंशत्	६५ पञ्चषष्टिः
१७ सप्तदश	४३ त्रिचत्वारिंशत्	६६ षट्षष्टिः
१८ अष्टादश	त्रयश्चत्वारिंशत्	६७ सप्तषष्टिः
१९ नवदश	४४ चतुश्चत्वारिंशत्	६८ अष्टषष्टिः
एकोनविंशतिः	४५ पञ्चचत्वारिंशत्	अष्टाषष्टिः
२० विंशतिः	४६ षट्चत्वारिंशत्	६९ नवषष्टिः
२१ एकविंशतिः	४७ सप्तचत्वारिंशत्	एकोनसप्ततिः
२२ द्वाविंशतिः	४८ अष्टचत्वारिंशत्	७० सप्ततिः
२३ त्रयोविंशतिः	अष्टाचत्वारिंशत्	७१ एकसप्ततिः
२४ चतुर्विंशतिः	४९ नवचत्वारिंशत्	७२ द्विसप्ततिः
२५ पञ्चविंशतिः	एकोनपञ्चाशत्	द्वासप्ततिः
२६ षड्विंशतिः	५० पञ्चाशत्	७३ त्रिसप्ततिः
२७ सप्तविंशतिः	५१ एकपञ्चाशत्	त्रयःसप्ततिः
२८ अष्टाविंशतिः	५२ द्विपञ्चाशत्	७४ चतुःसप्ततिः
	द्वापञ्चाशत्	७५ पञ्चसप्ततिः

७६ षट्सप्ततिः	८५ पञ्चाशीतिः	त्रयोनवतिः
७७ सप्तसप्ततिः	८६ षडशीतिः	९४ चतुर्नवतिः
७८ अष्टसप्ततिः	८७ सप्ताशीतिः	९५ पञ्चनवतिः
अष्टासप्ततिः	८८ अष्टाशीतिः	९६ षण्णवतिः
७९ नवसप्ततिः	८९ नवाशीतिः	९७ सप्तनवतिः
एकोनाशीतिः	एकोननवतिः	९८ अष्टनवतिः
८० अशीतिः	९० नवतिः	अष्टानवतिः
८१ एकाशीतिः	९१ एकनवतिः	९९ नवनवतिः
८२ द्व्यशीतिः	९२ द्विनवतिः	एकोनशतम्
८३ त्र्यशीतिः	द्वानवतिः	१०० शतम् ।
८४ चतुरशीतिः	९३ त्रिनवतिः	

१ हजार—सहस्रम् । १० हजार—अयुतम् । १ लाख—लक्षम् । १० लाख—नियुतम्, प्रयुतम् । १ करोड़—कोटिः । १० करोड़—दशकोटिः । १ अरब—अर्बुदम् । १० अरब—दशार्बुदम् । १ खरब—खर्वम् । १० खरब—दशखर्वम् । १ नील—नीलम् । १० नील—दश नीलम् । १ पद्म—पद्मम् । १० पद्म—दशपद्मम् । १ शंख—शंखम् । १० शंख—दशशंखम् । १ महाशंख—महाशंखम् ।

सूचना—१. (क) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या शब्द बनावें । जैसे, १०१ एकाधिकं शतम् । १०२ द्व्यधिकं शतम् आदि । (ख) २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक पहले रखकर बाद में 'शती' रखें, या शत पहले रखकर द्वयम्, त्रयम्, आदि रखें, जैसे २००, द्विशती, शतद्वयम् । ३०० त्रिशती, शतत्रयम्, ४०० चतुःशती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी, सतसई) आदि ।

२. त्रि (३) से लेकर १८ (अष्टादशन्) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं । दशन् से अष्टादशन् तक दशन् के तुल्य ।

३. एकोनविंशति से नवविंशति तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं । इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं । इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिसके अन्त में ये हों उनके रूप मति के तुल्य चलेंगे । तकारान्त त्रिशत्, चत्वारिंशत् के रूप सरित् के तुल्य (शब्द सं० १९) चलेंगे ।

४. शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसक हैं । गृहवत् एक० में रूप चलेंगे । कोटि के मतिवत् ।

५. संख्येय शब्द (प्रथम, द्वितीय, आदि) बनाने के लिए अभ्यास २३ का व्याकरण देखो ।

(३) धातुरूप-संग्रह

आवश्यक निर्देश

संस्कृत में सारी धातुओं को १० विभागों में बाँटा गया है। उन्हें 'गण' कहते हैं, अतः १० गण हैं। धातु और तिङ् (ति, तः आदि) प्रत्यय के बीच में होने वाले अ, उ, नु आदि (जिनको विकरण कहते हैं) के अन्तर के आधार पर ये गण बनाए गए हैं। ये विकरण लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ही होते हैं लृट् में नहीं, यह स्मरण रखें। प्रत्येक गण में परस्मैपद में स्यति या इष्यति वाले रूप बनते हैं और आत्मनेपद में स्यते या इष्यते वाले। प्रत्येक गणमें तीनों प्रकार की धातुएँ होती हैं, परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। प्रत्येक गण की विशेषताएँ प्रत्येक गण के रूप के साथ आगे दी गई हैं। इनका उल्लेख अभ्यास २१ से ३० के व्याकरण में भी है। शब्दरूप के तुल्य धातुओं में भी संक्षिप्तरूप दिए गए हैं। उस गण की उस पद की धातुओं के अन्त में वही संक्षिप्तरूप रहेगा। अतः संक्षिप्तरूप स्मरण कर लें और उस गण की धातुओं के अन्त में उन्हें लगाकर रूप बनावें। जो धातुएँ उस प्रकार चलती हैं उनके पूरे रूप न देकर केवल प्रारम्भिक रूप दे दिए गए हैं। उनके शेषरूप निर्दिष्ट धातु के तुल्य ही चलेंगे। लृट् में स्यति, स्यते लगेंगे या इष्यति, इष्यते इसका भी निर्देश कर दिया गया है। पाठ्य में निर्धारित धातुओं के अतिरिक्त जिन धातुओं का इस पुस्तक में प्रयोग हुआ है, उनके रूप चुरादिगण की धातुओं के बाद दिए गए हैं।

भ्वादिगण

दस गणों में भ्वादिगण सबसे मुख्य है। सबसे अधिक धातुएँ इसी गण में हैं। भ्वादिगण की विशेषताएँ ये हैं (देखो अभ्यास २०) :—

(१) धातु और प्रत्यय के बीच में 'अ' विकरण लगता है, इसलिए अति, अतः आदि धातु के अन्त में लगेंगे। मूलप्रत्यय ति, तः आदि ही हैं।

(२) धातु के अन्तिम स्वर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ को तथा अन्तिम अक्षर से पूर्व इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर्, गुण हो जाता है। अन्त में गुण के ए को अय् और ओ को अव् हो जाता है। जैसे भू > भवति, जि > जयति, शुच् > शोचति, > नी नयति, ह् > हरति आदि।

(१) भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना) लट् (वर्तमान) (१) भू (संक्षिप्तरूप) (देखो अ. १, ५)

भवति	भवतः	भवन्ति	प्र०पु०	अति	अतः	अन्ति	प्र०पु०
भवसि	भवथः	भवथ	म०पु०	असि	अथः	अथ	म०पु०
भवामि	भवावः	भवामः	उ०पु०	आमि	आवः	आमः	उ०पु०

लोट् (आज्ञा) अर्थ

लोट् (सं. रूप) (देखो अ० ६)

भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र०पु०	अतु	अताम्	अन्तु	प्र०पु०
भव	भवतम्	भवत	म०पु०	अ	अतम्	अत	म०पु०
भवानि	भवाव	भवाम	उ०पु०	आनि	आव	आम	उ०पु०

लङ् (भूतकाल, अनद्यतन)

लङ् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० ८)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र०पु०	अत्	अताम्	अन्	प्र०पु०
अभवः	अभवतम्	अभवत	म०पु०	अः	अतम्	अत	म०पु०
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ०पु०	अम्	आव	आम	उ०पु०

सूचना—लङ् लकार भूतकाल में होता है
आजका भूतकाल होगा तो लुङ् होगा ।

सूचना—धातु के पहले अ लगेगा, धातु
का प्रथम अक्षर स्वर हो तो 'आ' होगा ।

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

विधिलिङ् (सं. रूप) (देखो अ० ९)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र०पु०	एत्	एताम्	एयुः	प्र०पु०
भवेः	भवेतम्	भवेत	म०पु०	एः	एतम्	एत	म०पु०
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ०पु०	एयम्	एव	एम	उ०पु०

लृट् (भविष्यत्)

लृट् (सं. रूप) (देखो अ० ७)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०पु०	(इ)स्यति	(इ)स्यतः	(इ)स्यन्ति	प्र०पु०
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०पु०	(इ)स्यसि	(इ)स्यथः	(इ)स्यथ	म०पु०
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०पु०	(इ)स्यामि	(इ)स्यावः	(इ)स्यामः	उ०पु०

सूचना—कुछ धातुओं में स्यति वाले रूप
तथा कुछ में इष्यति वाले रूप लगते हैं ।

सूचना—भ्वादिगण (१) की परस्मैपदी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में भू धातु के
तुल्य चलते हैं । उपर्युक्त संक्षिप्तरूप अन्त में लगेंगे ।

(२) हस् (हँसना) (देखो अ० १, ५-९) (३) पठ् (पढ़ना) (देखो अ० १, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे । जैसे

लट्	हसति	हसतः	हसन्ति	लट्	पठति	पठतः	पठन्ति
लोट्	हसतु	हसताम्	हसन्तु	लोट्	पठतु	पठताम्	पठन्तु
लङ्	अहसत्	अहसताम्	अहसन्	लङ्	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
विधिलिङ्	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः	विधिलिङ्	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
लृट्	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति	लृट्	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति

(४) रक्ष् (रक्षा करना) (देखो अ. २, ५-९) (५) वद् (बोलना) (देखो अ० २, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे । जैसे—

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट्	रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति	लट्	वदति	वदतः	वदन्ति
लोट्	रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु	लोट्	वदतु	वदताम्	वदन्तु
लङ्	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्	लङ्	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
विधिलिङ्	रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः	विधिलिङ्	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
लृट्	रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति	लृट्	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति

६. पच् (पकाना) (देखो अ० २, ५-९) ७. नम् (झुकना, प्रणाम करना) (देखो अ. २)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे । आत्मनेपद—

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

में सेव् के तुल्य । (उभयपदी धातु है)

लट्	पचति	पचतः	पचन्ति	लट्	नमति	नमतः	नमन्ति
लोट्	पचतु	पचताम्	पचन्तु	लोट्	नमतु	नमताम्	नमन्तु
लङ्	अपचत्	अपचताम्	अपचन्	लङ्	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
विधिलिङ्	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः	विधिलिङ्	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
लृट्	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति	लृट्	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति

८. गम् (जाना) (देखो अ० १, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। गम् को गच्छ, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में होता है।

लट्	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
लोट्	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
लङ्	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
विधिलिङ्	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
लृट्	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति

९. दृश् (देखना) (देखो अ० ३, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। दृश् को पश्य, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में होता है।

लट्	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
लोट्	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
लङ्	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
विधिलिङ्	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
लृट्	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति

१०. सद् (बैठना) (देखो अ० ३, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। सद् को सीद् लट्, लोट् लङ्, विधिलिङ् में।

लट्	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
लोट्	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
लङ्	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
विधिलिङ्	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
लृट्	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति

११. स्था (रुकना) (देखो अ० ३, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। स्था को तिष्ठ, लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में।

लट्	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
लोट्	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
लङ्	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
विधिलिङ्	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
लृट्	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति

१२. स्मृ (स्मरण करना) (देखो अ. ३, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
लोट्	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
लङ्	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
विधिलिङ्	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
लृट्	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति

१३. पा (पीना) (देखो अ. ३, ५-९)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे। पा को पिब लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में।

लट्	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
लोट्	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
लङ्	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
विधिलिङ्	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
लृट्	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति

१४. जि (जीतना) (देखो अ. ३, ५-९)

सूचना—भू धातु के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्	जयति	जयतः	जयन्ति
लोट्	जयतु	जयताम्	जयन्तु

लङ्	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
विधिलिङ्	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
लट्	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति

(१) आत्मनेपदी धातुएँ

१५. सेव् (सेवा करना) लट् (वर्तमान) १५. सेव् (संक्षिप्तरूप) (देखो अ० १६)

सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र०	अते	एते	अन्ते	प्र०
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म०	असे	एथे	अध्वे	म०
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ०	ए	आवहे	आमहे	उ०

लोट् (आज्ञा अर्थ)

लोट् (सं. रूप) (देखो अ० १७)

सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्	प्र.
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्	म.
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०	ऐ	आवहै	आमहै	उ.

लङ् (भूतकाल, अनद्यतन)

लङ् (सं० रूप) (देखो अ० १९)

असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र०	अत	एताम्	अन्त	प्र.
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्	म.
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ०	ए	आवहि	आमहि	उ.

सूचना—धातु से पहले 'अ' लगेगा । धातु का प्रथम अक्षर स्वर होतो 'आ' लगेगा ।

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)

विधिलिङ् (सं० रूप) (देखो अ० २०)

सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०	एत	एयाताम्	एरन्	प्र.
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्	म.
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०	एय	एवहि	एमहि	उ.

लृट् (भविष्यत्)

लृट् (सं. रूप) (देखो अ० १८)

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र०	(इ) स्यते	(इ) स्येते	(इ) स्यन्ते	प्र.
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म०	(इ) स्यसे	(इ) स्येथे	(इ) स्यध्वे	म.
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ०	(इ) स्ये	(इ) स्यावहे	(इ) स्यामहे	उ.

सूचना—कुछ धातुओं में इष्यते वाला

रूप तथा कुछमें स्यते वाला रूप लगता है ।

सूचना—भ्वादिगण (१) की आत्मनेपदी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में सेव् धातु के तुल्य चलते हैं । उपर्युक्त संक्षिप्तरूप अन्त में लगेंगे ।

१६. लभ् (पाना) (देखो अ० १६-२०)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे । जैसे,
 लट् लभते लभेते लभन्ते
 लोट् लभताम् लभेताम् लभन्ताम्
 लङ् अलभत अलभेताम् अलभन्त
 वि० लिङ् लभेत लभेयाताम् लभेरन्
 लृट् लप्स्यते लप्स्येते लप्स्यन्ते

१७. वृध् (बढ़ना) (देखो अ० १६-२०)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।
 लट् वर्धते वर्धेते वर्धन्ते
 लोट् वर्धताम् वर्धेताम् वर्धन्ताम्
 लङ् अवर्धत अवर्धेताम् अवर्धन्त
 वि० लिङ् वर्धेत वर्धेयाताम् वर्धेरन्
 लृट् वर्धिष्यते वर्धिष्येते वर्धिष्यन्ते

१८. मुद् (प्रसन्न होना) (देखो अ० १६-२०)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।
 लट् मोदते मोदेते मोदन्ते
 लोट् मोदताम् मोदेताम् मोदन्ताम्
 लङ् अमोदत अमोदेताम् अमोदन्त
 वि० लिङ् मोदेत मोदेयाताम् मोदेरन्
 लृट् मोदिष्यते मोदिष्येते मोदिष्यन्ते

१९. सह् (सहना) (देखो अ० १६-२०)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।
 लट् सहते सहेते सहन्ते
 लोट् सहताम् सहेताम् सहन्ताम्
 लङ् असहत असहेताम् असहन्त
 वि० लिङ् सहेत सहेयाताम् सहेरन्
 लृट् सहिष्यते सहिष्येते सहिष्यन्ते

२०. याच् (माँगना) (देखो अ० १६-२०)

सूचना—सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।
 लट् याचते याचेते याचन्ते
 लोट् याचताम् याचेताम् याचन्ताम्
 लङ् अयाचत अयाचेताम् अयाचन्त
 वि० लिङ् याचेत याचेयाताम् याचेरन्
 लृट् याचिष्यते याचिष्येते याचिष्यन्ते

२१. नी (ले जाना) (देखो अ० २१)

सूचना—नी और ह् धातु उभयपदी हैं ।
 इनके रूप परस्मैपद में भू के तुल्य और
 आत्मनेपद में सेव् के तुल्य चलेंगे ।
 दोनों पदों के केवल प्र० पु० एकवचन
 के रूप दिए जाते हैं । (प० = परस्मैपद
 आ० = आत्मनेपद) ।

२२. ह् (चुराना, ले जाना) (देखो अ. २१)

सूचना—भू, और सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।
 लट् प० हरति आ० हरते
 लोट् प० हरतु आ० हरताम्
 लङ् प० अहरत् आ० अहरत
 वि० लिङ् प० हरेत् आ० हरेत
 लृट् प० हरिष्यति आ० हरिष्यते

लट् प० नयति आ० नयते
 लोट् प० नयतु आ० नयताम्
 लङ् प० अनयत् आ० अनयत
 वि० लिङ् प० नयेत् आ० नयंत
 लृट् प० नेष्यति आ० नेष्यते

(२) अदादिगण ।

मूचना—अदादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में कोई विकरण नहीं लगता है । धातु के अन्त में केवल ति, तः आदि लगते हैं । उपर्युक्त लकारों में धातु को एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं ।

परस्मैपदी धातुएँ

२३. अद् (खाना) (देखो अ० २३)

२४. अस् (होना) (देखो अ० ४, २४)

लट्

मूचना—अस् को लट् में भू हो जाता है

अत्ति	अत्तः	अदन्ति	प्र०	अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र०
अत्ति	अत्थः	अत्थ	म०	असि	स्थः	स्थ	म०
अद्यि	अद्वः	अद्यः	उ०	अस्मि	स्वः	स्मः	उ०

लोट्

लोट्

अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु	प्र०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु	प्र०
अद्वि	अत्तम्	अत्त	म०	एधि	स्तम्	स्त	म०
अदानि	अदाव	अदाम	उ०	असानि	असाव	असाम	उ०

लङ्

लङ्

आदत्	आत्ताम्	आदन्	प्र०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र०
आदः	आत्तम्	आत्त	म०	आसीः	आस्तम्	आस्त	म०
आदम्	आद्व	आद्य	उ०	आसम्	आस्व	आस्म	उ०

विधिलिङ्

विधिलिङ्

अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः	प्र०	स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्र०
अद्याः	अद्यातम्	अद्यात	म०	स्याः	स्यातम्	स्यात	म०
अद्याम्	अद्याव	अद्याम	उ०	स्याम्	स्याव	स्याम	उ०

लृट्

लृट्

अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति	प्र०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०
अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ	म०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०
अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः	उ०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०

२५. ब्रू (कहना) (देखो अ० २५)

२६. रुद् (रोना) (देखो अ० २६)

सचना—लृट् में ब्रू को वच् हो जाता है ।

लृट्			लृट्		
ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति	प्र०	रोदिति	रुदितः रुदन्ति प्र०
आह	आहतुः	आहुः			
ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ	म०	रोदिषि	रुदिथः रुदिथ म०
आत्थ	आह्युः				
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	उ०	रोदिमि	रुदिवः रुदिमः उ०

लोट्			लोट्		
ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	प्र०	रोदितु	रुदिताम् रुदन्तु प्र०
ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	म०	रुदिहि	रुदितम् रुदित म०
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ०	रोदानि	रोदाव रोदाम उ०

लङ्			लङ्		
अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	प्र०	अरोदीत्	} अरुदिताम् अरुदन् प्र०
				अरोदत्	
अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	म०	अरोदीः	} अरुदितम् अरुदित म०
				अरोदः	
अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	उ०	अरोदम्	अरुदिव अरुदिम उ०

विधिलिङ्			विधिलिङ्		
ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	प्र०	रुद्यात्	रुद्याताम् रुद्युः प्र०
ब्रूयाः	ब्रूयाताम्	ब्रूयात	म०	रुद्याः	रुद्याताम् रुद्यात म०
ब्रूयाम	ब्रूयाव	ब्रूयाम	उ०	रुद्याम्	रुद्याव रुद्याम उ०

लृट्			लृट्		
वक्ष्यात	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	प्र०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः रोदिष्यन्ति प्र०
वक्ष्यांस	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	म०	रोदिष्यमि	रोदिष्यथः रोदिष्यथ म०
वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः	उ०	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः रोदिष्यामः उ०

२७. दुह् (दुहना) (देखो अ० २७)

२८. स्वप् (सौना) (देखो अ० २८)

लट्			लृट्			
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	प्र०	स्वपिति	स्वपितः स्वपन्ति	प्र०
घोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	म०	स्वपिषि	स्वपिथः स्वपिथ	म०
दोह्यि	दुह्यः	दुह्यः	उ०	स्वपिमि	स्वपिवः स्वपिमः	उ०

लोट्			लोट्			
दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	प्र०	स्वपितु	स्वपिताम् स्वपन्तु	प्र०
दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	म०	स्वपिहि	स्वपितम् स्वपित	म०
दोहामि	दोहाव	दोहाम	उ०	स्वपानि	स्वपाव स्वपाम	उ०

लङ्			लङ्			
अधोक्-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्	प्र०	अस्वपीत् अस्वपत् }	अस्वपिताम् अस्वपन्	प्र०
अधोक्-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध	म०	अस्वपीः अस्वपः }	अस्वपितम् अस्वपित	म०
अदोहम्	अदुह्य	अदुह्य	उ०	अस्वपम्	अस्वपिव अस्वपिम	उ०

विधिलिङ्			विधिलिङ्				
दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	प्र०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः	प्र०
दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	म०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात	म०
दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	उ०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम	उ०

लृट्			लृट्			
धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति	प्र०	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः स्वप्स्यन्ति	प्र०
धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथः	म०	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः स्वप्स्यथ	म०
धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः	उ०	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः स्वप्स्यामः	उ०

२९. हन् (मारना) (देखो अ० २९)

३०. इ (जाना) (देखो अ० ३०)

लट्

हन्ति	हतः	घ्नन्ति
हंसि	हथः	हथ
हन्मि	हन्वः	हन्मः

प्र०	एति	इतः	यन्ति	प्र०
म०	एषि	इथः	इथ	म०
उ०	एमि	इवः	इमः	उ०

लोट्

हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
जहि	हतम्	हत
हतानि	हनाव	हनाम

प्र०	एतु	इताम्	यन्तु	प्र०
म०	इहि	इतम्	इत	म०
उ०	अयानि	अयाव	अयाम	उ०

लङ्

अहन्	अहताम्	अघ्नन्
अहन्	अहतम्	अहत
अहतम्	अहन्व	अहन्म

प्र०	ऐत्	ऐताम्	आयन्	प्र०
म०	ऐः	ऐतम्	ऐत	म०
उ०	आयम्	ऐव	ऐम	उ०

विधिलिङ्

हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
हन्याम्	हन्याव	हन्याम

प्र०	इयात्	इयाताम्	इयुः	प्र०
म०	इयाः	इयातम्	इयात	म०
उ०	इयाम्	इयाव	इयाम	उ०

लृट्

हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

प्र०	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति	प्र०
म०	एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ	म०
उ०	एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः	उ०

अदादिगणो-आत्मनेपदी धातुएँ

३१. आस् (बैठना) (देखो अ० ३६)

३२. शी (सोना) (देखो अ० ३७)

लट्

लट्

आस्ते	आसाते	आसते	प्र०	शेते	शयाते	शेरते	प्र०
आस्से	आसाथे	आध्वे	म०	शेषे	शयाथे	शेध्वे	म०
आसे	आस्वहे	आस्महे	उ०	शये	शेवहे	शेमहे	उ०

लोट्

लोट्

आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्	प्र०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	प्र०
आस्व	आसाथाम्	आध्वम्	म०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	म०
आसं	आसावहं	आसामहं	उ०	शयै	शयावहं	शयामहं	उ०

लङ्

लङ्

आस्त	आसाताम्	आसत	प्र०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत	प्र०
आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्	म०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्	म०
आसि	आस्वहि	आस्महि	उ०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि	उ०

विधिलिङ्

विधिलिङ्

आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्	प्र०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्	प्र०
आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्	म०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्	म०
आसीय	आसीवहि	आसीमहि	उ०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि	उ०

लृट्

लृट्

आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते	प्र०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते	प्र०
आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे	म०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे	म०
आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे	उ०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे	उ०

(३) जुहोत्यादिगण

सूचना—जुहोत्यादिगण में भी अदादि० के तुल्य धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में कोई विकरण नहीं लगता। उक्त लकारों में धातु को द्वित्व होता है अर्थात् धातु को दो बार पढ़ा जाता है और द्वित्व के प्रथम भाग में कुछ परिवर्तन भी होता है। उक्त लकारों में धातु को एक० में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।

परस्मैपदी धातुएँ

३३. हु (हवन करना) (देखो अ० ३८) ३४. भी (डरना) (देखो अ० ३९)

लट्			लट्				
जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	प्र०	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति	प्र०
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	म०	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ	म०
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	उ०	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः	उ०

लोट्			लोट्				
जूहोतु	जूहुताम्	जूह्वतु	प्र०	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु	प्र०
जूहुषि	जूहुतम्	जूहुत	म०	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत	म०
जूह्वानि	जूह्वाव	जूह्वाम	उ०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम	उ०

लङ्			लङ्				
अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुह्वः	प्र०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभ्युः	प्र०
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	म०	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत	म०
अजुवहम्	अजुहुव	अजुहुम	उ०	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम	उ०

विधिलिङ्			विधिलिङ्				
जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः	प्र०	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः	प्र०
जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात	म०	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात	म०
जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम	उ०	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम	उ०

लृट्			लृट्				
होप्यति	होप्यतः	होप्यन्ति	प्र०	भोप्यति	भोप्यतः	भोप्यन्ति	प्र०
होप्यसि	होप्यथः	होप्यथ	म०	भोप्यसि	भोप्यथः	भोप्यथ	म०
होप्यामि	होप्यावः	होप्यामः	उ०	भोप्यामि	भोप्यावः	भोप्यामः	उ०

३५. दा (देना) (देखो अ० ४०)

सूचना—दा धातु उभयपद है । यहाँ पर परस्मैपदी के ही रूप लिखे हैं ।

लट्

ददाति	दत्तः	ददति	प्र०
ददासि	दत्थः	दत्थ	म०
ददामि	दद्वः	दद्वः	उ०

लोट्

ददातु	दत्ताम्	ददतु	प्र०
देहि	दत्त	दत्त	म०
ददानि	ददाव	ददाम	उ०

लङ्

अददात्	अदत्ताम्	अददुः	प्र०
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	म०
अददाम्	अदद्व	अदद्व	उ०

विधिलिङ्

दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	प्र०
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	म०
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	उ०

लृट्

दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	प्र०
दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	म०
दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	उ०

३६. धा (धारण करना) (देखो अ० ४०)

सूचना—धा धातु उभयपद है । यहाँ पर परस्मैपदी के ही रूप लिखे हैं ।

लट्

दधाति	धत्तः	दधति	प्र०
दधासि	धत्थः	धत्थ	म०
दधामि	दध्वः	दध्वः	उ०

लोट्

दधातु	धत्ताम्	दधतु	प्र०
धेहि	धत्तम्	धत्त	म०
दधानि	दधाव	दधाम	उ०

लङ्

अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र०
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म०
अदधाम्	अदध्व	अदध्व	उ०

विधिलिङ्

दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र०
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म०
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ०

लृट्

धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	प्र०
धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ	म०
धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः	उ०

(४) दिवादिगण

सूचना—दिवादिगण की धातुओं में धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट्, लङ्, विधि-
लिट् में 'य' विकरण लगता है। धातु को गुण नहीं होता। इस गण की धातुओं
के रूप चलाने का साधारण उपाय यह है कि धातु के साथ 'य' लगाकर परस्मैपद
में भू धातु के तुल्य रूप चलेंगे और आत्मनेपद में सेव् धातु के तुल्य। दोनों धातुओं
में निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही अन्त में लगेंगे।

३७. दिव् (चमकना आदि) (देखो अ. ४१) ३८. नृत् (नाचना) (देखो अ. ४२)

सूचना—दिव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्				लट्			
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	प्र०
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	म०
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः	उ०

लोट्			लोट्				
दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु	प्र०
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत	म०
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम	उ०

लङ्				लङ्			
अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	प्र०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्	प्र०
अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत	म०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत	म०
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	उ०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम	उ०

विधिलिट्			विधिलिट्				
दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	प्र०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः	प्र०
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	म०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत	म०
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम	उ०

लृट्			लृट्				
देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति	प्र०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति	प्र०
देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ	म०	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ	म०
देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः	उ०	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः	उ०

सूचना—नत्स्यति आदि भी रूप बनते हैं।

३९. नश् (नष्ट होना) (देखो अ० ४३)

सूचना—दिक् के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट्

नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	प्र०
नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	म०
नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः	उ०

४०. भ्रम् (घूमना) (देखो अ० ४४)

सूचना—दिक् धातु के तुल्य रूप चलेंगे ।

यह धातु

भ्वादिगणी भी है, तब इसके रूप भू धातु के तुल्य चलेंगे जैसे भ्रमति, भ्रमनु, अभ्रमत्, भ्रमेत् भ्रमिष्यति ।

लोट्

नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु	प्र०
नश्य	नश्यतम्	नश्यत	म०
नश्यानि	नश्याव	नश्याम	उ०

लट्

भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति	प्र०
भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ	म०
भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः	उ०

लङ्

अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	प्र०
अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	म०
अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम	उ०

लोट्

भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु	प्र०
भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत	म०
भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम	उ०

विधिलिङ्

नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	प्र०
नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	म०
नश्येयम्	नश्येव	नश्येम	उ०

लङ्

अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्	प्र०
अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत	म०
अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम	उ०

लृट्

नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति	प्र०
नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ	म०
नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः	उ०

विधिलिङ्

भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः	प्र०
भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत	म०
भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम	उ०

या

नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति	प्र०
नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ	म०
नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः	उ०

लृट्

भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति	प्र०
भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ	म०
भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः	उ०

आत्मनेपदी धातुएँ

४१. युध् (लड़ना) (देखो अ० ४५)

४२. जन् (उत्पन्न होना) (देखो अ. ४६)

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्,

में जन् को जा हो जाता है ।

लट्			लट्		
युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते	प्र०	जायते	जायेते
युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे	म०	जायसे	जायेथे
युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे	उ०	जाये	जायावहे
				जायामहे	उ०

लोट्			लोट्		
युध्यता	युध्येताम्	युध्यन्ताम्	प्र०	जायताम्	जायेताम्
युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्	म०	जायस्व	जायेथाम्
युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै	उ०	जायै	जायावहै
				जायामहै	उ०

लङ्			लङ्		
अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त	प्र०	अजायत	अजायेताम्
अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्	म०	अजायथाः	अजायेथाम्
अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि	उ०	अजाये	अजायावहि
				अजायामहि	उ०

विधिलिङ्			विधिलिङ्		
युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्	प्र०	जायेत	जायेयाताम्
युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्	म०	जायेथाः	जायेयाथाम्
युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि	उ०	जायेय	जायेवहि
				जायेमहि	उ०

लृट्			लृट्		
योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते	प्र०	जनिष्यते	जनिष्येते
योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे	म०	जनिष्यसे	जनिष्येथे
योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे	उ०	जनिष्ये	जनिष्यावहे
				जनिष्यामहे	उ०

(५) स्वादिगण

सूचना—स्वादिगणी धातुओं में धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट् लङ्, विधिलिङ् में 'नु' लगता है । धातु को गुण नहीं होता है ।

उभयपदी धातु

४३. सु (स्नान करना या कराना, रस निकालना (देखो अ० ४७)

आत्मनेपद

परस्मैपद, लट्			लट्		
सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	प्र०	सुनुते	सुन्वाते सुन्वते प्र०
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	म०	सुनुषे	सुन्वाथे सुनुध्वे म०
सुनोमि	सुनुवः }	सुनुमः }	उ०	सुनुवे	सुन्वहे } सुन्महे } उ०
	सुन्वः }	सुन्मः }		सुनुवहे }	सुनुमहे }

लोट्			लोट्		
सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	प्र०	सुनुताम्	सुन्वाताम् सुन्वताम् प्र०
सुनु	सुनुतम्	सुनुत	म०	सुनुष्व	सुन्वाथाम् सुनुध्वम् म०
सुनवानि	सुनुवाव	सुनुवाम	उ०	सुनुवै	सुनुवावहै सुनुवामहै उ०

लङ्			लङ्		
असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	प्र०	असुनुत	असुन्वाताम् असुन्वत प्र०
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	म०	असुनुथाः	असुन्वाथाम् असुनुध्वम् म०
असुनवम्	असुनुव	असुनुम	उ०	असुन्वि	असुनुवहि } असुनुमहि } उ०
					असुन्वहि }

विधिलिङ्			विधिलिङ्		
सुनयात्	सुनुयाताम्	सुनुयः	प्र०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम् सुन्वीरत् प्र०
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	म०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम् म०
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	उ०	सुन्वीय	सुन्वीवहि सुन्वीमहि उ०

लृट्			लृट्		
सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	प्र०	सोष्यते	सोष्येते सोष्यन्ते प्र०
सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ	म०	सोष्यसे	सोष्येथे सोष्यध्वे म०
सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः	उ०	सोष्ये	सोष्यावहे सोष्यामहे उ०

परस्मैपदी धातुएँ

४४. आप् (पाना) (देखो अ० ४८)

४५. शक् (सकना) (देखो अ० ४९)

लट्

आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	प्र०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	प्र०
आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	म०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	म०
आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	उ०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः	उ०

लट्

लोट्

आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	प्र०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	प्र०
आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत	म०
आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम	उ०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम	उ०

लोट्

लङ्

आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	प्र०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्	प्र०
आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत	म०
आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम	उ०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम	उ०

लङ्

विधिलिङ्

आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	प्र०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः	प्र०
आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	म०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात	म०
आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	उ०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम	उ०

विधिलिङ्

लृट्

आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	प्र०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति	प्र०
आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ	म०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ	म०
आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः	उ०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः	उ०

लृट्

(६) तुदादिगण

सूचना—भ्वादिगण की धातुओं के तुल्य तुदादिगण की धातुओं में भी लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में 'अ' लगता है । अन्तर केवल यह है कि भ्वादि० में गुण होता है, तुदादि में नहीं । परस्मैपद में भू के तुल्य और आत्मनेपद में सेव् के तुल्य रूप चलेंगे । संक्षिप्त रूप के लिए देखो धातु सं० १ और १५ के संक्षिप्त रूप ।

प०—परस्मैपदी । आ०—आत्मनेपदी । उ०—उभयपदी ।

४६. तुब् (प) (दुःख देना) (देखो अ० ५) ४७. इष् (प०) (चाहना) (देखो अ. ५)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में इष् को इच्छ हो जाता है ।

लट् तुदति तुदतः तुदन्ति
लोट् तुदतु तुदताम् तुदन्तु
लङ् अनुदत् अनुदताम् अनुदन्
वि०लिङ् तुदेत् तुदेताम् तुदेयुः
लृट् तोत्स्यति तोत्स्यतः तोत्स्यन्ति

४८. स्पृश् (प०) (छूना) (देखो अ० ५)

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट् इच्छति इच्छतः इच्छन्ति
लोट् इच्छतु इच्छताम् इच्छन्तु
लङ् ऐच्छत् ऐच्छताम् ऐच्छन्
वि०लिङ् इच्छेत् इच्छेताम् इच्छेयुः
लृट् एषिष्यति एषिष्यतः एषिष्यन्ति

४९. प्रच्छ (प०) (पूछना) देखो अ० ५

सूचना—भू के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट् आदि में पृच्छ हो जाता है ।

लट् स्पृशति स्पृशतः स्पृशन्ति
लोट् स्पृशतु स्पृशताम् स्पृशन्तु
लङ् अस्पृशत् अस्पृशताम् अस्पृशन्
वि०लिङ् स्पृशेत् स्पृशेताम् स्पृशेयुः
लृट् स्पृक्ष्यति स्पृक्ष्यतः स्पृक्ष्यन्ति
या स्पृक्ष्यति स्पृक्ष्यतः स्पृक्ष्यन्ति

५०. मृ (आ.) (मरना) (देखो अ० ५०)

सूचना—लृट् में भू तथा अन्यत्र सेव् के तुल्य रूप चलेंगे ।

लट् पृच्छति पृच्छतः पृच्छन्ति
लोट् पृच्छतु पृच्छताम् पृच्छन्तु
लङ् अपृच्छत् अपृच्छताम् अपृच्छन्
वि०लिङ् पृच्छेत् पृच्छेताम् पृच्छेयुः
लृट् प्रक्ष्यति प्रक्ष्यतः प्रक्ष्यन्ति

५१. मुच् (उ.) (छोड़ना) (देखो अ० ५१)

सूचना—परस्मैपद में भू के तुल्य और आत्मनेपद में सेव् के तुल्य रूप चलेंगे

लट् म्रियते म्रियेते म्रियन्ते
लोट् म्रियताम् म्रियेताम् म्रियन्ताम्
लङ् अम्रियत् अम्रियेताम् अम्रियन्त
वि०लिङ् म्रियेत् म्रियेयाताम् म्रियेरन्
लट् मरिष्यति मरिष्यतः मरिष्यन्ति

लट् प० मुञ्चति आ० मुञ्चते
लोट् प० मुञ्चतु आ० मुञ्चताम्
लङ् प० अमुञ्चत् आ० अमुञ्चत
वि०लिङ् प० मुञ्चेत् आ० मुञ्चेत
लृट् प० मोक्ष्यति आ० मोक्ष्यते

(७) रुधादिगण

सूचना—रुधादिगणी धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में धातु के प्रथम स्वर के बाद न विकरण लगता है। वह कभी न् हो जाता है।

उभयपदी धातुएँ

५२. रुध् (ढकना, रोकना) (देखो अ० ५२)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्			
रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति	प्र०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते	प्र०
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्द्ध	म०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे	म०
रुणधिम	रुन्ध्वः	रुन्धमः	उ०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्धमहे	उ०

लोट्				लोट्			
रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु	प्र०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्	प्र०
रुन्द्धि	रुन्धम्	रुन्द्ध	म०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्	म०
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उ०	रुणधै	रुणधावहे	रुणधामहे	उ०

लङ्			लङ्				
अरुणत्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्	प्र०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत	प्र०
अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्द्ध	म०	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्	म०
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्धम	उ०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्धमहि	उ०

विधिलिङ्				विधिलिङ्			
रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	प्र०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्	प्र०
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	म०	रुन्धीयाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्	म०
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उ०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि	उ०

लृट्			लृट्				
रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	प्र०	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते	प्र०
रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ	म०	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे	म०
रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः	उ०	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे	उ०

५३. भुज् (पालनकरना, भोजनकरना)

सूचना—भुज् धातु पालन करने अर्थ में परस्मैपदी होती है और भोजन करना, उभोग करना अर्थ में आत्मनेपदी ही होती है ।

५३. भुज् (पालन करना) (देखो अ० ५३) ५३. भुज् (भोजन करना)

परस्मैपद—लट्

आत्मनेपद—लट्

भुनक्ति	भुङ्कतः	भुञ्जन्ति	प्र०	भुङ्कते	भुञ्जाते	भुञ्जते	प्र०
भुनक्षि	भुङ्कथः	भुङ्कथ	म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्गध्वे	म०
भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे	उ०

लोट्

लोट्

भुनक्तु	भुङ्कताम्	भुञ्जन्तु	प्र०	भुङ्कताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्	प्र०
भुङ्गिध	भुङ्कतम्	भुङ्कत	म०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्गध्वम्	म०
भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ०	भुनजे	भुनजावहे	भुनजामहे	उ०

लङ्

लङ्

अभुनक्	अभुङ्कताम्	अभुञ्जन्	प्र०	अभुङ्कत	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत	प्र०
अभुनक्	अभुङ्कतम्	अभुङ्कत	म०	अभुङ्कथाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्गध्वम्	म०
अभनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि	उ०

विधिलिङ्

विधिलिङ्

भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः	प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्	प्र०
भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात	म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्	म०
भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम	उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि	उ०

लृट्

लृट्

भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति	प्र०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते	प्र०
भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ	म०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे	म०
भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः	उ०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे	उ०

(८) तनादिगण

सूचना—तनादिगणी धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में ' नु ' विकरण जोड़ा जाता है ।

उभयपदी धातुएं

५४. तन् (फंलाना) (देखो अ० ५४)

परस्मैपद—लट्

तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र०
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म०
तनोमि	तनुवः }	तनुमः }	उ०
	तन्वः }	तन्मः }	

आत्मनेपद—लट्

तन्वाते	तन्वते	प्र०
तन्वाथे	तनुध्वे	म०
तनुवहे }	तनुमहे }	उ०
तन्वहे }	तन्महे }	

लोट्

तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र०
तनु	तनुतम्	तनुत	म०
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ०

लोट्

तन्वाताम्	तन्वताम्	प्र०
तन्वाथाम्	तनुध्वम्	म०
तनवावहे	तनवामहे	उ०

लङ्

अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र०
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म०
अतनवम्	अतनुव }	अतनुम }	उ०
	अतन्व }	अतन्म }	

लङ्

अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत	प्र०
अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्	म०
अतन्वि	अतनुवहि }	अतनुमहि }	उ०
	अतन्विहि }	अतन्महि }	

विधिलिङ्

तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र०
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	म०
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उ०

विधिलिङ्

तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्	प्र०
तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्	म०
तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि	उ०

लृट्

तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	प्र०
तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	म०
तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	उ०

लृट्

तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते	प्र०
तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे	म०
तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे	उ०

५५. कृ (करन्) (देखो अ० २२)

परस्मैपद—लट्

आत्मनेपद—लट्

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र०	कुरुते	कुर्वति	कुर्वते	प्र०
करोपि	कुरुथः	कुरुथ	म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	म०
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे	उ०

लोट्

लोट्

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	प्र०
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	म०
करवाणि	करवाव	करवाम	उ०	करवै	करवावहे	करवामहे	उ०

लङ्

लङ्

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	प्र०
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	म०
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि	उ०

विधिलिङ्

विधिलिङ्

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	प्र०
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	म०
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि	उ०

लृट्

लृट्

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	प्र०
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	म०
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे	उ०

(९) क्र्यादिगण

सूचना—क्र्यादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में 'ना' विकरण लगता है। वह कभी नी या न् हो जाता है। धातु को गुण नहीं होता। परस्मैपद लोट् म० पु० एक० में व्यंजनान्त धातुओं में 'हि' के स्थान पर 'आन' लगता है।

उभयपदी धातुएँ

५६. क्री (मोल लेना) (देखो अ० ५५)

परस्मैपद—लट्

क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

प्र०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते	प्र०
म०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे	म०
उ०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे	उ०

लोट्

क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

प्र०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्	प्र०
म०	क्रीणीध्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्	म०
उ०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै	उ०

लङ्

अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

प्र०	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत	प्र०
म०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्	म०
उ०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि	उ०

विधिलिङ्

क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

प्र०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्	प्र०
म०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्	म०
उ०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि	उ०

लृट्

क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

प्र०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्येन्ते	प्र०
म०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे	म०
उ०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे	उ०

५७. ग्रह्, (पकड़ना) (देखो अ० ५६)

सूचना—ग्रह्, धातु को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में 'गृह्' हो जाता है ।

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ग्रह्, को गृह्, हो जाता है ।

परस्मैपद—लट्

गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लोट्

गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ्

अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ्

गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट्

ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद—लट्

प्र०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते	प्र०
म०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे	म०
उ०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे	उ०

लोट्

प्र०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्	प्र०
म०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्	म०
उ०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै	उ०

लङ्

प्र०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णन्	प्र०
म०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्	म०
उ०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि	उ०

विधिलिङ्

प्र०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्	प्र०
म०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्	म०
उ०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि	उ०

लृट्

प्र०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते	प्र०
म०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे	म०
उ०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे	उ०

५८. ज्ञा (जानना) (देखो अ० ५७)

सूचना—ज्ञा धातु को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्

में 'जा' हो जाता है ।

परस्मैपद—लट्

आत्मनेपद—लट्

जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र०	जानीते	जानाते	जानते	प्र०
जानासि	जानीथः	जानीथ	म०	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे	म०
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ०	जाने	जानीवहे	जानीमहे	उ०

लोट्

लोट्

जानातु	जानीताम्	जानन्तु	प्र०	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्	प्र०
जानीहि	जानीतम्	जानीत	म०	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्	म०
जानानि	जानाव	जानाम	उ०	जाने	जानावहे	जानामहे	उ०

लङ्

लङ्

अजानात्	अजानीतम्	अजानन्	प्र०	अजानीत	अजानाताम्	अजानत	प्र०
अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	म०	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्	म०
अजानाम्	अजानीव	अजानीम	उ०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि	उ०

विधिलिङ्

विधिलिङ्

जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	प्र०	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्	प्र०
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	म०	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्	म०
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	उ०	जानीय	जानीवहि	जानीमहि	उ०

लृट्

लृट्

ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	प्र०	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते	प्र०
ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	म०	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे	म०
ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः	उ०	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे	उ०

(१०) चुरादिगण

सूचना—चुरादिगण की धातुओं में पाँचों लकारों में धातु के वाद 'अय' लगता है । धातु के अन्त में इ, उ, ऋ हो तो उनको क्रमशः ऐ, औ, आर् वृद्धि होती है । उपधा में अ, इ, उ, ऋ हो तो उनको आ, ए, ओ, अर् होता है । कथ्, गण्, रच् आदि कुछ धातुओं में अ को आ नहीं होता । लृट् में इष्यति या इष्यते लगेगा । चुरादिगणी धातुओं के अन्त में अय लगाकर परस्मैपद में भू के तुल्य और आत्मनेपद में सेव् के तुल्य रूप चलेंगे । यहाँ पर केवल प्र० पु० एक० का रूप दिया गया है ।

उभयपदी धातुएँ

५९. चुर (चुराना) (देखो अ० ३१-३३)

लट्—प० चोरयति, आ० चोरयते
लोट्—प० चोरयतु, आ० चोरयताम्
लङ्—प० अचोरयत् आ० अचोरयत
वि०लङ्—प० चोरयेत्, आ० चोरयेत
लृट्—प० चोरयिष्यति, आ० चोरयिष्यते

६०. चिन्त् (सोचना) ।

लट्—प० चिन्तयति, आ० चिन्तयते
लोट्—प० चिन्तयतु, आ० चिन्तयताम्
लङ्—प० अचिन्तयत्, आ० अचिन्तयत
वि०लङ्—प० चिन्तयेत् आ० चिन्तयेत
लृट्—प० चिन्तयिष्यति, आ० चिन्तयिष्यते

६१. कथ् (कहना)

लट्—प० कथयति, आ० कथयते
लोट्—प० कथयतु, आ० कथयताम्
लङ्—प० अकथयत्, आ० अकथयत
वि०लङ्—प० कथयेत्, आ० कथयेत
लृट्—प० कथयिष्यति, आ० कथयिष्यते

६२. भक्ष् (खाना)

लट्—प० भक्षयति, आ० भक्षयते
लोट्—प० भक्षयतु, आ० भक्षयताम्
लङ्—प० अभक्षयत्, आ० अभक्षयत
वि०लङ्—प० भक्षयेत्, आ० भक्षयेत
लृट्—प० भक्षयिष्यति, आ० भक्षयिष्यते
(देखो अभ्यास ३१—३३) ।

४. संक्षिप्त धातुकोष

आवश्यक-निर्देश

(पुस्तक में प्रयुक्त धातुओं के रूप, अकारादिक्रमसे)

१. इस पुस्तक में जिन धातुओं का प्रयोग हुआ है, उनके संक्षिप्त रूप यहाँ पर दिए गए हैं। पाठ्य में निर्धारित ५ लकारों के ही रूप दिए गए हैं। प्रत्येक लकार का प्रथम रूप अर्थात् प्रथम पुरुष एकवचन का रूप दिया गया है। जो धातु जिस गण की है, उस धातु के रूप उस गण की धातुओं के तुल्य चलेंगे। धातुरूप-संग्रह में उनके संक्षिप्त रूपों का निर्देश किया जा चुका है। जो उभयपदी धातुएँ परस्मैपद में ही अधिक प्रचलित हैं, उनके परस्मैपद के ही रूप दिए गए हैं।

२. प्रत्येक धातु के रूप इस क्रम से दिए गए हैं :—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट्। अन्त में कर्मवाच्य या भाववाच्य का प्र० पु० एक० का रूप दिया गया है।

३. प्रत्येक धातु के बाद कोष्ठ में निर्देश कर दिया गया है कि वह किस गण की है, तथा किस पद में उसके रूप चलते हैं। अन्त में कोष्ठ में संख्याएँ दी हैं, वे इस बात का निर्देश करती हैं कि उस धातु का उस अभ्यास में प्रयोग हुआ है। सभी धातुएँ अकारादिक्रम से दी गई हैं।

४. संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग किया गया है :—प० = परस्मैपदी। आ० = आत्मनेपदी। उ० = उभयपदी। १ = भ्वादिगण। २ = अदादिगण। ३ = जुहोत्यादिगण। ४ = दिवादिगण। ५ = स्वादिगण। ६ = तुदादिगण। ७ = रुधादिगण। ८ = तनादिगण। ९ = कृयादिगण। १० = चुरादिगण। ११ = कण्ड्वादिगण।

५. धातु के साथ उपसर्ग हो तो लङ् में शुद्ध धातु से पहले अ या आ लगावें। उपसर्ग से पूर्व नहीं।

अद् (२ प०, खाना) अत्ति, अत्तु, आदत्, अद्यात्, अत्स्यति। अद्यते। (२३)
 अय् (१ आ०, जाना) अयते, अयताम्, आयत, अयेत, अयिष्यते। अय्यते। (१८)
 अर्चन् (१ प०, पूजना) अर्चति, अर्चतु, आर्चत्, अर्चेत्, अर्चिष्यति। अर्च्यते। (१४)
 अश् (१ प०, खाना) अश्नाति, अश्नातु, आश्नात्, अश्नीयात्, अशिष्यति। अश्यते (५५)
 अस् (२ प०, होना) अस्ति, अस्तु, आसीत्, स्यात्, भविष्यति। भूयते (४)
 अस् (४ प०, फेंकना) अस्यति, अस्यतु, आस्यत्, अस्येत्, असिष्यति। अस्यते। (१७, ४१)
 असूय (११ प०, द्रोह०) असूयति, असूयतु, आसूयत्, असूयेत्, असूयिष्यति। असूयते (११)
 आप् (५ प०, पाना) आप्नोति, आप्नोतु, आप्नोत्, आप्नूयात्, आप्स्यति। आप्यते।
 (२८, ४८)

आस् (२ आ०, बैठना) आस्ते, आस्ताम्, आस्त, आसीत, असिष्यते । आस्यते (२८, ३६)
इ (अधि +, २ आ०, पढ़ना) अधीते, अधीताम्, अध्येत, अधीयीत, अध्येष्यते । अधीयते ।
(१२)

इ (२ प०, जाना) एति, एतु, ऐत्, इयात्, एष्यति । ईयते । (३०)

इप् (६ प०, चाहना) इच्छति, इच्छतु, ऐच्छत्, इच्छेत्, एषिष्यति । इष्यते । (५)

ईक्ष् (१ आ०, देखना) ईक्षते, ईक्षताम्, ऐक्षत, ईक्षेत, ईक्षिष्यते । ईक्ष्यते । (१६)

ईर् (१० उ०, प्रेरणा०) ईरयति, ईरयतु, ऐरयत्, ईरयेत्, ईरयिष्यति । ईर्यते । (३१)

ईर्ष्य् (१ प०, ईर्ष्या०) ईर्ष्यति, ईर्ष्यतु, ऐर्ष्यत्, ईर्ष्येत्, ईर्ष्यिष्यति । ईर्ष्यते । (११)

ईह् (१ आ०, चाहना) ईहते, ईहताम्, ऐहत, ईहेत्, ईहिष्यते । ईह्यते । (१६)

कथ् (१० उ०, कहना) प०—कथयति, कथयतु, अकथयत्, कथयेत्, कथयिष्यति ।

आ०—कथयते, कथयताम्, अकथयत, कथयेत, कथयिष्यते । कथ्यते । (४)

कम्प् (१ आ०, कांपना) कम्पते, कम्पताम्, अकम्पत, कम्पेत, कम्पिष्यते । कम्प्यते । (१६)

कुप् (४ प०, क्रोध०) कुप्यति, कुप्यतु, अकुप्यत्, कुप्येत्, कोपिष्यति । कुप्यते । (११)

कुद् (१ आ०, कूदना) कूदंते, कूदंताम्, अकूदंत, कूदंत, कूदिष्यते । कूद्यंते । (१६)

कृ (८ उ०, करना) प०—करोति, करोतु, अकरोत्, कुर्यात्, करिष्यति ।

आ०—कुरुते, कुरुताम्, अकुरुत, कुर्वीत, करिष्यते । क्रियते । (४, २२)

कृप् (१ आ०, समर्थ होना) कल्पते, कल्पताम्, अकल्पत, कल्पेत, कल्पिष्यते । कल्प्यते ।

(१८)

कृष् (१ प०, खींचना) कर्षति, कर्षतु, अकर्षत्, कर्षेत्, कर्ष्यति । कृष्यते । (७)

कृ (६ प०, बखेरना) किरति, किरतु, अकिरत्, किरेत्, करिष्यति । कीर्यते । (५०)

कृत् (१० उ०, नाम लेना) कीर्तयति, कीर्तयतु, अकीर्तयत्, कीर्तयेत्, कीर्तयिष्यति ।

कीर्त्यते । (३३)

क्रन्द् (१ प०, रोना) क्रन्दति, क्रन्दतु, अक्रन्दत्, क्रन्देत्, क्रन्दिष्यति । क्रन्द्यते । (११)

क्रम् (१ प०, चलना) क्रामति, क्रामतु, अक्रामत्, क्रामेत्, क्रमिष्यति । क्रम्यते । (२९)

क्री (९ उ०, खरीदना) प०—क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात्, क्रीणीयात्, क्रेष्यति ।

आ०—क्रीणीते, क्रीणीताम्, अक्रीणीत, क्रीणीत, क्रेष्यते । क्रीयते । (५५)

क्रीड् (१ प०, खेलना) क्रीडति, क्रीडतु, अक्रीडत्, क्रीडेत्, क्रीडिष्यति । क्रीड्यते । (६)

क्रुव् (४ प०, क्रुद्ध होना) क्रुध्यति, क्रुध्यतु, अक्रुध्यत्, क्रुध्येत्, क्रोत्स्यति । क्रुध्यते । (११)

कलम् (४ प०, थकना) कलाम्यति, कलाम्यतु, अकलाम्यत्, कलाम्येत्, कलमिष्यति ।

कलम्यते । (४४)

किल्श् (४ आ०, खिन्न होना) किल्श्यते, किल्श्यताम्, अकिल्श्यत, किल्श्येत, क्लेशिष्यते ।

किल्श्यते । (४५)

किल्श् (९ प०, दुःख देना) किल्शनाति, किल्शनातु, अकिल्शनात्, किल्शनीयात्,

क्लेशिष्यति । किल्श्यते । (५५)

क्षम् (१ आ०, क्षमा करना) क्षमते, क्षमताम्, अक्षमत, क्षमेत्, क्षमिष्यते । क्षम्यते । (११)
क्षल् (१० उ०, धोना) प०—क्षालयति, क्षालयतु, अक्षालयत्, क्षालयेत्, क्षालयिष्यति ।

आ०—क्षालयते, क्षालयताम्, अक्षालयत्, क्षालयेत्, क्षालयिष्यते । क्षाल्यते । (३१)
क्षिप् (६ उ०, फेंकना) क्षिपति, क्षिपतु, अक्षिपत्, क्षिमेत्, क्षेप्स्यति । क्षिप्यते ।
(१७, ५०)

क्षुम् (१ आ०, क्षुब्ध होना) क्षोभते, क्षोभताम्, अक्षोभत्, क्षोभेत्, क्षोभिष्यते । क्षुभ्यते । (२८)
खण्ड् (१० उ० खंडन करना) खण्डयति, खण्डयतु, अखण्डयत्, खण्डयेत्, खण्डयिष्यति ।
खण्ड्यते । (३२)

खन् (१ उ०, खोदना) खनति, खनतु, अखनत्, खनेत्, खनिष्यति । खन्यते । (१४)
खाद् (१ प०, खाना) खादति, खादतु, अखादत्, खादेत्, खादिष्यति । खाद्यते । (६)
गण् (१० उ०, गिनना) गणयति, गणयतु, अगणयत्, गणयेत्, गणयिष्यति । गण्यते । (३१)

गम् (१ प०, जाना) गच्छति, गच्छतु, अगच्छत्, गच्छेत्, गमिष्यति । गम्यते । (१)
गर्ज् (१ प०, गरजना) गर्जति, गर्जतु, अगर्जत्, गर्जेत्, गर्जिष्यति । गर्ज्यते । (१५)
गह् (१० उ०, निन्दा करना) गहयति, गहयतु, अगहयत्, गहयेत्, गहयिष्यति ।
गह्यते । (३३)

गवेष् (१० उ०, खोजना) गवेषयति, गवेषयतु, अगवेषयत्, गवेषयेत्, गवेषयिष्यति ।
गवेष्यते । (३३)

गाह् (१ आ०, घुसना) गाहते, गाहताम्, अगाहत, गाहेत्, गाहिष्यते । गाह्यते । (११)
गुप् (१ आ०, निन्दा करना) जुगुप्सते, जुगुप्सताम्, अजुगुप्सत्, जुगुप्सेत्, जुगुप्सिष्यते ।
जुगुप्स्यते । (१३)

गृ (६ प०, निगलना) गिरति, गिरतु, अगिरत्, गिरेत्, गरिष्यति । गीर्यते । (२७, ५०)
गं (१ प०, गाना) गायति, गायतु, अगायत्, गायेत्, गास्यति । गीयते । (८)

ग्रस् (१ आ०, खाना) ग्रसते, ग्रसताम्, अग्रसत्, ग्रसेत्, ग्रसिष्यते । ग्रस्यते । (२३)
ग्रह् (१ उ०, पकड़ना) प०—गृह्णाति, गृह्णातु, अगृह्णात्, गृह्णीयात्, ग्रहीष्यति ।

आ०—गृह्णीते, गृह्णीताम्, अगृह्णीत्, गृह्णीत, ग्रहीष्यते । गृह्यते । (२७, ५६)
घट् (१ आ०, लगना) घटते, घटताम्, अघटत्, घटेत्, घटिष्यते । घट्यते । (२९)

घुप् (१० उ०, घोषित करना) घोषयति, घोषयतु, अघोषयत्, घोषयेत्, घोषयिष्यति ।
घोष्यते । (३२)

घ्रा (१ प०, सूंघना) जिघ्रति, जिघ्रतु, अजिघ्रत्, जिघ्रेत्, घ्रास्यति । घ्रायते । (३)
चर् (१ प०, चलना) चरति, चरतु, अचरत्, चरेत्, चरिष्यति । चर्यते । (८)

चल् (१ प०, चलना) चलति, चलतु, अचलत्, चलेत्, चलिष्यति । चत्यते । (६)
चि (५ उ०, चुनना) चिनोति, चिनोतु, अचिनोत्, चिनुयात्, चेप्यति । चीयते । (७)

चिन्त् (१० उ०, सोचना) प०—चिन्तयति, चिन्तयतु, अचिन्तयत्, चिन्तयेत्, चिन्तयिष्यति ।
आ०—चिन्तयते, चिन्तयताम्, अचिन्तयत्, चिन्तयेत्, चिन्तयिष्यते । चिन्त्यते । (४)

चुर् (१० उ०, चुराना) प०—चोरयति, चोरयतु, अचोरयत्, चोरयेत्, चोरयिष्यति ।
आ०—चोरयते, चोरयताम्, अचोरयत्, चोरयेत्, चोरयिष्यते । चोर्यते । (४) ।

चेष्ट् (१ आ०, चेष्टा करना) चेष्टते, चेष्टताम्, अचेष्टत, चेष्टेत, चेष्टिष्यते । चेष्ट-
यते । (१८) ।

छिद् (७ उ०, काटना) छिनत्ति, छिनत्तु, अच्छिनन्, छिन्द्यात्, छेत्स्यति । छिद्यते । (५२)
जन् (४ आ०, पैदा होना) जायते, जायताम्, अजायत, जायेत, जनिष्यते । जायते ।
(१३, २९, ४६)

जप् (१ प०, जपना) जपति, जपतु, अजपत्, जपेत्, जपिष्यति । जप्यते । (१८)

जि (१ प०, जीतना) जयति, जयतु, अजयत्, जयेत्, जेप्यति । जीयते । (३)

जीव् (१ प०, जीना) जीवति, जीवतु, अजीवत्, जीवेत्, जीविष्यति । जीव्यते । (१४)

जृ (४ प०, वृद्ध होना) जीर्यति, जीर्यतु, अजीर्यत्, जीर्येत्, जरिष्यति । जीर्यते । (२७)

ज्ञा (९ उ०, जानना) प०-जानाति, जानातु, अजानात्, जानीयात्, ज्ञास्यति ।

आ०-जानीते, जानीताम्, अजानीत, जानीत, ज्ञास्यते । ज्ञायते । (५७)

ज्वल् (१ प०, जलना) ज्वलति, ज्वलतु, अज्वलत्, ज्वलेत्, ज्वलिष्यति । ज्वल्यते । (८)

डी (४ आ०, उड़ना) डीयते, डीयताम्, अडीयत, डीयेत, डयिष्यते । डीयते । (४५)

तड् (१० उ०, पीटना) ताडयति, ताडयतु, अताडयत्, ताडयेत्, ताडयिष्यति । ताड्-
यते । (३२)

तन् (८ उ०, फैलाना) प०-तनोति, तनोतु, अतनोत्, तनूयात्, तनिष्यति ।

आ०-तनुते, तनुताम्, अतनुत, तन्वीत, तनिष्यते, । तायते-तन्यते । (५४)

तप् (१ प०, तपना) तपति, तपतु, अतपत्, तपेत्, तप्स्यति । तप्यते । (८)

तर्क् (१० उ०, सोचना) तर्कयति, तर्कयतु, अतर्कयत्, तर्कयेत्, तर्कयिष्यति । तर्कयते । (३३)

तर्ज् (१० उ०, डौटना) तर्जयति-ते, तर्जयतु, अतर्जयत्, तर्जयेत्, तर्जयिष्यति ।
तर्ज्यते । (३३)

तुद् (६ उ०, दुःख देना) तुदति-ते, तुदतु, अतुदत्, तुदेत्, तोत्स्यति । तुद्यते । (५)

तुल् (१० उ०, तोलना) तोलयति, तोलयतु, अतोलयत्, तोलयेत्, तोलयिष्यति ।
तोल्यते । (३२)

तुष् (४ प०, तुष्ट होना) तुष्यति, तुष्यतु, अतुष्यत्, तुष्येत्, तोक्ष्यति । तुष्यते । (४२)

तृप् (४ प०, तृप्त होना) तृप्यति, तृप्यतु, अतृप्यत्, तृप्येत्, तर्पिष्यति । तृप्यते । (४२)

तृप् (१० उ०, तृप्त करना) तर्पयति-ते, तर्पयतु, अतर्पयत्, तर्पयेत्, तर्पयिष्यति ।
तर्प्यते । (३२)

तृ (१ प०, तैरना) तरति, तरतु, अतरत्, तरेत्, तरिष्यति । तीर्यते । (१०, १४)

त्यज् (१ प०, छोड़ना) त्यजति, त्यजतु, अत्यजत्, त्यजेत्, त्यज्यति । त्यज्यते । (७)

त्रप् (१ आ०, लजाना) त्रपते, त्रपताम्, अत्रपत, त्रपेत, त्रपिष्यते । त्रप्यते । (१८)

त्रै (१ आ०, बचाना) त्रायते, त्रायताम्, अत्रायत, त्रायेत, त्रास्यते । त्रायते । (१२)

त्वर् (१ आ०, जल्दी करना) त्वरते, त्वरताम्, अत्वरत, त्वरेत, त्वरिष्यते । त्वर्यते । (२४)

दण्ड् (१० उ०, दंड देना) दण्डयति-ते, दण्डयतु, अदण्डयत्, दण्डयेत्, दण्डयिष्यति ।
दण्ड्यते । (७)

दम् (४ प०, दमन करना) दाम्यति, दाम्यतु, अदाम्यत्, दाम्येत्, दमिष्यति । दम्यते ।
(२९, ४४)

दह् (१ प०, जलाना) दहति, दहतु, अदहत्, दहेत्, धक्ष्यति । दह्यते । (८)

दा (३ उ०, देना) प०—ददाति, ददातु, अददात्, दद्यात्, दास्यति ।

आ०—दत्ते, दत्ताम्, अदत्त, ददीत, दास्यते । दीयते । (१०, ४०)

दिक् (४ प०, जुआ खेलना) दीव्यति, दीव्यतु, अदीव्यत्, दीव्येत्, देविष्यति । दीव्यते
(४१)

दिश् (६ उ०, देना, कहना) दिशति-ते, दिशतु, अदिशतु, दिशेत्, देश्यति । दिश्यते ।
(११, ५०)

दीक्ष् (१. आ०, दीक्षा देना) दीक्षते, दीक्षताम्, अदीक्षत, दीक्षेत, दीक्षिष्यते । दीक्ष्यते ।
(१९)

दीप् (४ आ०, चमकना) दीप्यते, दीप्यताम्, अदीप्यत, दीप्येत, दीपिष्यते । दीप्यते । (४५)

दुह् (२ उ०, दुहना) दोग्धि, दोग्धु, अधोक्, दुह्यात्, धोक्ष्यति । दुह्यते । (७, २७)

दृ (६ आ०, आदर करना) आ +, आद्रियते, आद्रियताम्, आद्रियत, आद्रियेत,
आदरिष्यते । आद्रियते (१७)

दृश् (१ प०, देखना) पश्यति, पश्यतु, अपश्यत्, पश्येत्, द्रक्ष्यति । दृश्यते । (३)

द्युत् (१ आ०, चमकना) द्योतते, द्योतताम्, अद्योतत, द्योतेत, द्योतिष्यते । द्युत्यते । (१८)

द्रुह् (४ प०, द्रोह करना) द्रुहति, द्रुहतु, अद्रुहत्, द्रुह्येत्, द्रोहिष्यति । द्रुह्यते । (११)

धा (३ उ०, धारण करना) प०—दधाति, दधातु, अदधात्, दध्यात्, धास्यति ।

आ०—धत्ते, धत्ताम्, अधत्त, दधीत, धास्यते । धीयते । (२७, ४०)

धाव् (१ उ०, दौड़ना) धावति-ते, धावतु, अधावत्, धावेत्, धाविष्यति । धाव्यते । (६)

धृ (१० उ०, पहनना, रखना) धारयति, धाययतु, अधारयत्, धारयेत्, धारयिष्यति ।
धार्यते । (११)

ध्यै (१ प०, ध्यान करना) ध्यायति, ध्यायतु, अध्यायत्, ध्यायेत्, ध्यास्यति । ध्यायते ।
(१४)

ध्वंस् (१ आ०, नष्ट होना) ध्वंसते, ध्वंसताम्, अध्वंसत, ध्वंसेत, ध्वंसिष्यते । ध्वंस्यते ।
(१९)

नम् (१ प०, झुकना) नमति, नमतु, अनमत्, नमेत्, नंस्यति । नम्यते । (२)

नश् (४ प०, नष्ट होना) नश्यति, नश्यतु, अनश्यत्, नश्येत्, नशिष्यति । नश्यते । (४३)

निन्द् (१ प०, निन्दा करना) निन्दति, निन्दतु, अनिन्दत्, निन्देत्, निन्दिष्यति ।
निन्द्यते । (१४)

नी (१ उ०, ले जाना) प०—नयति, नयतु, अनयत्, नयेत्, नेष्यति ।

आ०—नयते, नयताम्, अनयत, नयेत, नेष्यते । नीयते । (७, १२, २१)

नुद् (६ उ०, प्रेरणा देना) नूदति-ते, नुदतु, अनुदत्, नुदेत्, नोत्स्यति । नुद्यते । (५०)

नृत् (४ प०, नाचना) नृत्यति, नृत्यतु, अनृत्यत्, नृत्येत्, नर्तिष्यति । नृत्यते । (४२)

पच् (१ उ०, पकाना) पचति-ते, पचतु, अपचत्, पचेत्, पक्ष्यति । पच्यते । (२)
 पठ् (१ प०, पढ़ना) पठति, पठतु, अपठत्, पठेत्, पठिष्यति । पठ्यते । (१)
 पत् (१ प०, गिरना) पतति, पततु, अपतत्, पतेत्, पतिष्यति । पत्यते । (२)
 पद् (४ आ०, जाना) पद्यते, पद्यताम्, अपद्यत्, पद्येत्, पत्स्यते । पद्यते । (४६)
 पा (१ प०, पीना) पिबति, पिबतु, अपिबत्, पिबेत्, पास्यति । पीयते । (३)
 पा (२ पा०, रक्षा करना) पाति, पातु, अपात्, पायात्, पास्यति । पायते । (२९)
 पाल् (१० उ०, रक्षा करना) पालयति-ते, पालयतु, अपालयत्, पालयेत्, पालयिष्यति ।
 पाल्यते । (३१)

पीड् (१० उ०, दुःख देना) पीडयति-ते, पीडयतु, अपीडयत्, पीडयेत्, पीडयिष्यति ।
 पीडयते । (३१)

पुष् (४ प०, पुष्ट करना) पुष्यति, पुष्यतु, अपुष्यत्, पुष्येत्, पोक्ष्यति । पुष्यते । (३२, ४२)
 पृ (१० उ०, पालना) पारयति-ते, पारयतु, अपारयत्, पारयेत्, पारयिष्यति । पुर्यते ।
 (२७)

प्रच्छ् (६, प०, पूछना) पृच्छति, पृच्छतु, अपृच्छत्, पृच्छेत्, प्रक्ष्यति । पृच्छ्यते । (५)
 प्रथ् (१ आ०, फैलना) प्रथते, प्रथताम्, अप्रथत्, प्रथेत्, प्रथिष्यते । प्रथ्यते । (२४)
 प्र+ईर् (१० उ०, प्रेरणा देना) प्रेरयति, प्रेरयतु, प्रैरयत्, प्रेरयेत्, प्रेरयिष्यति । प्रैर्यते ।
 (३१) [(२७, ५५)

बन्ध् (९ प०, बांधना) बध्नाति, बध्नातु, अबध्नात्, बध्नीयात्, भन्त्स्यति । बध्यते ।
 बाध् (१ आ०, पीडा देना) बाधते, बाधताम्, अबाधत्, बाधेत्, बाधिष्यते । बाध्यते । (२३)
 बुध् (४ आ०, जानना) बृध्यते, बृध्यताम्, अबुध्यत्, बृध्येत्, भोत्स्यते । बृध्यते । (२९)
 ब्रू (२ उ०, बोलना) ब्रवीति, ब्रवीतु, अब्रवीत्, ब्रूयात्, वक्ष्यति । उच्यते । (७, २५)
 भक्ष् (१० उ०, खाना) प०-भक्षयति, भक्षयतु, अभक्षयत्, भक्षयेत्, भक्षयिष्यति ।

आ०-भक्षयते, भक्षयताम्, अभक्षयत, भक्षयेत्, भक्षयिष्यते । भक्ष्यते । (४)

भज् (१ उ०, सेवाकरना) भजति-ते, भजतु, अभजत्, भजेत्, भक्ष्यति । भज्यते । (११, २७)

भा (२ प०, चमकना) भाति, भातु, अभात्, भायात्, भास्यति । भायते । (२९)

भाष् (१ आ०, बोलना) भाषते, भाषताम्, अभाषत्, भाषेत्, भाषिष्यते । भाष्यते । (१६)

भास् (१ आ०, चमकना) भासते, भासताम्, अभासत्, भासेत्, भासिष्यते । भास्यते । (१९)

भिक्ष् (१ आ०, मांगना) भिक्षते, भिक्षताम्, अभिक्षत्, भिक्षेत्, भिक्षिष्यते । भिक्ष्यते । (१६)

भिद् (७ उ०, तोड़ना) भिनत्ति, भिनत्तु, अभनत्, भिन्द्यात्, भेत्स्यति । भिद्यते । (५२)

भी (३ प०, डरना) बिभेति, बिभेत्, बिभिभेत्, बिभीयात्, भेष्यति । भीयते । (१२)

भुज् (७ उ०, पालना) प०-भुनक्ति, भुनक्तु, अभुनक्, भुज्यात्, भोक्ष्यति ।

(७ आ०, खाना) आ०-भुङ्क्ते, भुङ्क्ताम्, अभुङ्क्त्, भुंजीत्, भोक्ष्यते । भुज्यते
 (२८, ५३)

भू (१ प०, होना), भवति, भवतु, अभवत्, भवेत्, भविष्यति । भूयते । (१)

भृ (१ उ०, पालनकरना) भरति-ते, भरतु, अभरत्, भरेत्, भरिष्यति । भ्रियते । (१५)

भ्रम् (१ प०, घूमना) भ्रमति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत्, भ्रमिष्यति । भ्रम्यते । (७)
 भ्रम् (४ प०, घूमना) भ्राम्यति, भ्राम्यतु, अभ्राम्यत्, भ्राम्येत्, भ्रमिष्यति । भ्रम्यते । (४४)
 भ्रंश् (१ आ०, गिरना) भ्रंशते, भ्रंशताम्, अभ्रंशत, भ्रंशेत्, भ्रंशिष्यते । भ्रंश्यते । (२४)
 भ्राज् (१ आ०, चमकना) भ्राजते, भ्राजताम्, अभ्राजत, भ्राजेत्, भ्राजिष्यते । भ्राज्यते ।
 (२४)

मण्ड् (१० उ०, मंडन करना) मण्डयति, मण्डयतु, अमण्डयत्, मण्डयेत्, मण्डयिष्यति ।
 मण्ड्यते । (३२)

मथ् (१ प०, मथना), मथति, मथतु, अमथत्, मथेत्, मथिष्यति । मथ्यते । (७)
 मद् (४ प०, खुश होना) माद्यति, माद्यतु, अमाद्यत्, माद्येत्, मदिष्यति । मद्यते । (१३)
 मन् (४ आ०, मानना), मन्यते, मन्यताम्, अमन्यत, मन्येत्, मंस्यते । मन्यते । (४६)
 मन्त्र् (१० आ०, मंत्रणा करना) मन्त्रयते, मन्त्रयताम्, अमन्त्रयत, मन्त्रयेत्, मन्त्रयि-
 ष्यते । मन्त्र्यते । (परस्मै०) मन्त्रयति, मन्त्रयतु, अमन्त्रयत्, मन्त्रयेत्, मन्त्र-
 यिष्यति । (३३)

मन्थ् (१ प०, मथना) मथ्नाति, मथ्नातु, अमथ्नात्, मथ्नीयात्, मन्थिष्यति । मथ्यते ।
 (२७, ५५)

मा (२ प०, नापना), माति, मातु, अमात्, मायात्, मास्यति । मीयते । (२७)

मुच् (६ उ०, छोड़ना) प०—मुञ्चति, मुञ्चतु, अमुञ्चत्, मुञ्चेत्, मोक्षयति ।

आ०—मुञ्चते, मुञ्चताम्, अमुञ्चत, मुञ्चेत्, मोक्ष्यते । मुच्यते । (१७, ५१)

मुद् (१ आ०, खुश होना) मोदते, मोदताम्, अमोदत, मोदेत्, मोदिष्यते । मुद्यते । (१६)

मुष् (१ प०, चुराना) मुष्णाति, मुष्णातु, अमुष्णात्, मुष्णीयात्, मोषिष्यति । मुष्यते ।
 (७, ५५)

मुह् (४ प०, मुग्ध होना) मुह्यति, मुह्यतु, अमुह्यत्, मुह्येत्, मोहिष्यति । मुह्यते । (४३)

मूच्छ् (१ प०, मूर्छित होना) मूच्छंति, मूच्छंतु, अमूच्छंत्, मूच्छेत्, मूच्छिष्यति ।
 मूच्छंयते । (१५)

मृ (६ आ०, मरना) म्रियते, म्रियताम्, अम्रियत, म्रियेत्, मरिष्यति । म्रियते । (५०)

म्ल् (१ प०, मुरझाना) म्लायति, म्लायतु, अम्लायत्, म्लायेत्, म्लास्यति । म्लायते ।
 (३१)

यज् (१ उ०, यज्ञ करना) यजति-ते, यजतु, अयजत्, यजेत्, यक्षयति । इज्यते । (२७)

यत् (१ आ०, यत्न करना) यतते, यतताम्, अयतत, यतेत्, यतिष्यते । यत्यते । (१६)

या (२ प०, जाना) याति, यातु, अयात्, यायात्, यास्यति । यायते । (२९)

याच् (१ उ०, मांगना) प०—याचति, याचतु, अयाचत्, याचेत्, याचिष्यति ।

आ०—याचते, याचताम्, अयाचत, याचेत्, याचिष्यते । याच्यते । (७)

यापि (या + णिच्, प०, विताना) यापयति, यापयतु, अयापयत्, यापयेत्, यापयिष्यति ।
 याप्यते । (२९)

युज् (१० उ०, लगाना) योजयति, योजयतु, अयोजयत्, योजयेत्, योजयिष्यति ।
योज्यते । (३१)

युध् (४ आ०, लड़ना) युध्यते, युध्यताम्, अयुध्यत, युध्येत्, योत्स्यते । युध्यते । (४५)
रक्ष् (१ प०, रक्षा करना) रक्षति, रक्षतु, अरक्षत्, रक्षेत्, रक्षिष्यति । रक्ष्यते । (२)
रच् (१० उ०, बनाना) रचयति-ते, रचयतु, अरचयत्, रचयेत्, रचयिष्यति । रच्यते ।
(३१)

रज्ज् (४ उ०, खुश होना) रज्यति-ते, रज्यतु, अरज्यत्, रज्येत्, रक्ष्यति । रज्यते । (४२)
रम् (१ आ०, रमना) रमते, रमताम्, अरमत, रमेत्, रंस्यते । रम्यते । (१६)
(वि + रम्, पर०) विरमति, विरमतु, व्यरमत्, विरमेत्, विरंस्यति । (१३)

राज् (१ उ०, चमकना) प०-राजति, राजतु, अराजत्, राजेत्, राजिष्यति ।
आ०-राजते, राजताम्, अराजत, राजेत, राजिष्यते । राज्यते । (२३)

रच् (१ आ०, अच्छा लगना) रोचते, रोचताम्, अरोचत, रोचेत्, रोचिष्यते । रच्यते ।
(११)

रुद् (२ प०, रोना) रोदिति, रोदितु, अरोदीत्, रुद्यात्, रोदिष्यति । रुद्यते । (२६)
रुध् (७ उ०, रोकना) प०-रुणद्धि, रुणद्धु, अरुणत्, रुन्ध्यात्, रोत्स्यति ।
आ०-रुन्धे, रुन्धाम्, अरुन्ध, रुन्धीत, रोत्स्यते । रुध्यते । (७, ५२)

रुह् (१ प०, उगना) रोहति, रोहतु, अरोहत्, रोहेत्, रोक्ष्यति । रुह्यते । (७)
लंघ् (१ आ०, लांघना) लंघते, लंघताम्, अलंघत, लंघेत्, लंघिष्यते । लंघ्यते । (२३)

लप् (१ प०, बोलना) लपति, लपतु, अलपत्, लपेत्, लपिष्यति । लप्यते । (१४)

लभ् (१ आ०, पाना) लभते, लभताम्, अलभत, लभेत्, लप्स्यते । लभ्यते । (१६)

लम्ब् (१ आ०, लटकना) लम्बते, लम्बताम्, अलम्बत, लम्बेत्, लम्बिष्यते । लम्ब्यते ।
(१९)

लष् (१ उ०, चाहना) लषति-ते, लषतु, अलषत्, लषेत्, लषिष्यति । लष्यते । (१४)

लिख् (६ प०, लिखना) लिखति, लिखतु, अलिखत्, लिखेत्, लेखिष्यति । लिख्यते । (१)

लिप् (६ उ०, लीपना) लिम्पति-ते, लिम्पतु, अलिम्पत्, लिम्पेत्, लेप्स्यति । लिप्यते । (५१)

ली (४ आ०, लीन होना) लीयते, लीयताम्, अलीयत, लीयेत्, लेप्यते । लीयते । (१३)

लुप् (६ उ०, नष्टकरना) लुम्पति-ते, लुम्पतु, अलुम्पत्, लुम्पेत्, लोपिष्यति । लुप्यते । (५१)

लुभ् (४ प०, लोभ करना) लुभ्यति, लुभ्यतु, अलुभ्यत्, लुभ्येत्, लोभिष्यति । लुभ्यते ।
(४४) [लोक्यते । (३२)

लोक् (१० उ०, देखना) लोकयति-ते, लोकयतु, अलोकयत्, लोकयेत्, लोकयिष्यति ।

लोच् (१० उ०, देखना) लोचयति-ते, लोचयतु, अलोचयत्, लोचयेत्, लोचयिष्यति ।
लोच्यते । (३२)

वद् (१ प०, बोलना) वदति, वदतु, अवदत्, वदेत्, वदिष्यति । उच्यते । (२)

वन्द् (१ आ०, प्रणाम करना) वन्दते, वन्दताम्, अवन्दत, वन्देत्, वन्दिष्यते । वन्द्यते ।
(१६)

- वप् (१ उ०, बोना) वपति-ते, वपतु, अवपत्, वपेत्, वप्स्यति । उप्यते । (२७, ४९)
 वस् (१ प०, रहना) वसति, वसतु, अवसत्, वसेत्, वत्स्यति । उप्यते । (७)
 वह् (१ उ०, ढोना) वहति-ते, वहतु, अवहत्, वहेत्, वक्ष्यति । उह्यते । (७)
 वा (२ प०, हवा चलना) वाति, वातु, अवात्, वायात्, वास्यति । वायते । (२९)
 विद् (२ प०, जानना) वेत्ति, वेत्तु, अवेत्, विद्यात्, वेदिष्यति । विद्यते । (२९)
 विद् (४ आ०, होना) विद्यते, विद्यताम्, अविद्यत, विद्येत, वेत्स्यते । विद्यते । (४६)
 विद् (६ उ०, पाना) विन्दति-ते, विन्दतु, अविन्दत्, विन्देत्, वेदिष्यति । विद्यते । (५१)
 विद् (१० आ०, कहना) वेदयते, वेदयताम्, अवेदयत्, वेदयेत्, वेदयिष्यते । वेद्यते । (११)
 विश् (६ प०, घुसना) विशति, विशतु, अविशत्, विशेत्, वेक्ष्यति । विश्यते । (२८)
 वृ (५ उ०, चुनना) वृणोति, वृणोतु, अवृणोत्, वृणूयात्, वरिष्यति । व्रियते । (२७)
 वर्त् (१ आ०, होना) वर्तते, वर्तताम्, अवर्तत, वर्तत, वर्तिष्यते । वृत्यते । (१६)
 वृष् (१ आ०, बढना) वर्धते, वर्धताम्, अवर्धत्, वर्धेत्, वर्धिष्यते । वृध्यते । (१६)
 वृष् (१ प०, बरसना) वर्षति, वर्षतु, अवर्षत्, वर्षेत्, वर्षिष्यति । वृष्यते । (८)
 वे (१ उ०, बुनना) वयति-ते, वयत्, अवयत्, वयेत्, वास्यति । ऊयते । (१५)
 वेप् (१ आ०, कांपना) वेपते, वेपताम्, अवेपत्, वेपेत्, वेपिष्यते । वेप्यते । (१८)
 व्यय् (१ आ०, दुःखित होना) व्यथते, व्यथताम्, अव्यथत्, व्यथेत्, व्यथिष्यते । व्यथ्यते । (१९)
 व्यघ् (४ प०, बेधना) विध्यति, विध्यतु, अविध्यत्, विध्येत्, व्यत्स्यति । विध्यते । (४२)
 शक् (५ प०, सकना) शक्नोति, शक्नोतु, अशक्नोत्, शक्नुयात्, शक्ष्यति । शक्यते । (४९)
 शंक् (१ आ०, शंका करना) शंकते, शंकताम्, अशंकत्, शंकेत्, शंकिष्यते । शंक्यते । (१९)
 शप् (१ उ०, शाप देना) शपति-ते, शपतु, अशपत्, शपेत्, शप्स्यति । शप्यते । (२७)
 शम् (४ प०, शान्त होना) शाम्यति, शाम्यतु, अशाम्यत्, शाम्येत्, शमिष्यते । शम्यते । (२९, ४४)
 शास् (२ प०, शिक्षा देना) शास्ति, शास्तु, अशात्, शिष्यात्, शासिष्यति । शिष्यते । (७)
 शिक्ष् (१ आ०, सीखना) शिक्षते, शिक्षताम्, अशिक्षत्, शिक्षेत, शिक्षिष्यते । शिक्ष्यते । (१६)
 शी (२ आ०, सोना) शेते, शेताम्, अशेत, शयीत्, शयिष्यते । शय्यते । (६, ३७)
 शुच् (१ प०, शोक करना) शोचति, शोचतु, अशोचत्, शोचेत्, शोचिष्यति । शुच्यते । (१४)
 शुष् (४ प०, शुद्ध होना) शुध्यति, शुध्यतु, अशुध्यत्, शुध्येत्, शोत्स्यति । शुध्यते । (४२)
 शुभ् (१ आ०, अच्छा लगना) शोभते, शोभताम्, अशोभत्, शोभेत्, शोभिष्यते । शुभ्यते । (१६)
 शुष् (४ प०, सूखना) शुष्यति, शुष्यतु, अशुष्यत्, शुष्येत्, शोक्ष्यति । शुष्यते । (४२)
 शृ (९ प०, नष्ट होना) शृणाति, शृणातु, अशृणात्, शृणीयात्, शरिष्यति । शीर्यते । (२७)
 श्रि (१ उ०, आश्रय लेना) श्रयति-ते, श्रयतु, अश्रयत्, श्रयेत्, श्रयिष्यति । श्रीयते । (१५)

श्रु (१ प०, मुनना) शृणोति, शृणोतु, अशृणोत्, शृणुयात्, श्रोष्यति । श्रूयते । (२८, ४९)
शिल्प् (४ प०, आलिंगन करना) शिल्पयति, शिल्पयतु, अशिल्पयत्, शिल्पयेत्,
श्लेषिष्यति । शिल्प्यते । (३१, ४२) [श्वस्यते । (१७)

श्वस् (२ प०, सांस लेना), श्वसिति, श्वसितु, अश्वसीत्, श्वस्यात्, श्वसिष्यति ।
सद् (१ प०, बैठना) सीदति, सीदतु, असीदत्, सीदेत्, सत्स्यति । सद्यते । (३)
सह् (१ आ०, सहना), सहते, सहताम्, असहत, सहेत, सहिष्यते । सह्यते । (१६)
सान्त्व् (१० उ०, धैर्य बंधाना) सान्त्वयति, सान्त्वयतु, असान्त्वयत्, सान्त्वयेत्, सान्त्व-
यिष्यति । सान्त्व्यते । (३२) [(५१)

सिच् (६ उ०, सींचना) सिंचति-ते, सिंचतु, असिंचत्, सिंचेत्, सेक्ष्यति । सिच्यते ।
सिव् (४ प०, सीना) सीव्यति, सीव्यतु, असीव्यत्, सीव्येत्, सेविष्यति । सीव्यते । (४१)
सु (५ उ०, निचोड़ना) प०—मुनोति, मुनोतु, अमुनोत्, मुनुयात्, सोष्यति ।
आ०—मुनुते, मुनुताम्, अमुनुत, मुन्वीत, सोष्यते । सूयते । (४७)

सृ (१ प०, चलना) सरति, सरतु, असरत्, सरेत्, सरिष्यति । स्रियते । (१५)
सृज् (६ प०, बनाना) सृजति, सृजतु, असृजत्, सृजेत्, स्रक्ष्यति । सृज्यते । (५०)
सेव् (१ आ०, सेवा करना) सेवते, सेवताम्, असेवत, सेवेत, सेविष्यते । सेव्यते । (१६)
सो (४ प०, नष्ट होना) स्यति, स्यतु, अस्यत्, स्येत्, सास्यति । सीयते । (२७)
स्तु (२ उ०, स्तुति करना) स्तौति, स्तौतु, अस्तौत्, स्तुयात्, स्तोष्यति । स्तूयते । (२७)
स्था (१ प०, रुकना) तिष्ठति, तिष्ठतु, अतिष्ठत्, तिष्ठेत्, स्थास्यति । स्थीयते । (३, ६)
स्ना (२ प०, नहाना) स्नाति, स्नातु, अस्नात्, स्नायात्, स्नास्यति । स्नायते । (२९)
स्निह् (४ प०, स्नेह करना) स्निह्यति, स्निह्यतु, अस्निह्यत्, स्निह्येत्, स्नेहिष्यति ।
स्निह्यते । (१७)

स्पन्द् (१ आ०, हिलना) स्पन्दते, स्पन्दताम्, अस्पन्दत, स्पन्देत, स्पन्दिष्यते । स्पन्द्यते ।
(२४) [(१८)

स्पर्ध् (१ आ०, स्पर्धा करना) स्पर्धते, स्पर्धताम्, अस्पर्धत, स्पर्धेत, स्पर्धिष्यते । स्पर्ध्यते ।
स्पृश् (६ प०, छूना) स्पृशति, स्पृशतु, अस्पृशत्, स्पृशेत्, स्पृक्ष्यति । स्पृश्यते । (५)
स्पृह् (१० उ०, चाहना) स्पृहयति, स्पृहयतु, अस्पृहयत्, स्पृहयेत्, स्पृहयिष्यति ।
स्पृह्यते । (११)

स्मृ (१ प०, सोचना) स्मरति, स्मरतु, अस्मरत्, स्मरेत्, स्मरिष्यति । स्मर्यते । (३)
स्रस् (१ आ०, गिरना) स्रंसते, स्रंसताम्, अस्रंसत, स्रंसेत, स्रंसिष्यते । स्रस्यते । (१९)
स्वद् (१० उ०, स्वाद लेना) आ +, आस्वादयति, आस्वादयतु, आस्वादयत्, आस्वाद-
येत्, आस्वादयिष्यति । आस्वादयते । (३३)

स्वप् (२ प०, सोना) स्वपिति, स्वपितु, अस्वपत्, स्वप्यात्, स्वप्स्यति । सुप्यते । (२८)
 हन् (२ प०, मारना) हन्ति, हन्तु, अहन्, हन्यात्, हनिष्यति । हन्यते । (२९)
 हस् (१ प०, हँसना) हसति, हसतु, अहसत्, हसेत्, हसिष्यति । हस्यते । (१)
 हा (३ प०, छोड़ना) जहाति, जहातु, अजहात्, जह्यात्, हास्यति । हीयते । (२७)
 हु (३ प०, यज्ञ करना) जुहोति, जुहोतु, अजुहोत्, जुहुयात्, होष्यति । हूयते । (२७)
 हृ (१ उ०, ले जाना, चुराना) प०—हरति, हरतु, अहरत्, हरेत्, हरिष्यति ।

आ०—हरते, हरताम्, अहरत, हरेत्, हरिष्यते । ह्रियते । (७, २१)
 हृष् (४ प०, खुश होना) हृष्यति, हृष्यतु, अहृष्यत्, हृष्येत्, हृषिष्यति । हृष्यते । (४४)
 ह्वे (१ उ०, बुलाना) आ +, आ ह्वयति, आ ह्वयतु, आ ह्वयत्, आ ह्वयेत्, आ ह्वयिष्यति ।
 आह्वयते । (१४)

(१) अकर्मक धातुएँ

लज्जासत्तास्थितिजागरणं, वृद्धिक्षयभयजीवतिमरणम् ।

शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्था, धातव एतेऽकर्मक उक्ताः ।

इन अर्थों वाली धातुएँ अकर्मक (कर्म-रहित) होती हैं :—लज्जा, होना, रुकना या बैठना, जागना, बढ़ना, घटना, डरना, जीना, मरना, सोना, खेलना, चाहना, चमकना ।

(२) अनिट् धातुएँ (जिनमें बीच में इ नहीं लगता)

ऊ ऋदन्त औ' शी थ्रि डी को छोड़कर एकाच् सब ।

शक् पच् वच् मुच् सिच् प्रच्छ् त्यज् भज्, भुज् यज् सृज् मस्रज् युज् ॥

अद् पद्य खिद् छिद् विद्य तुद् नुद्, भिद् सद कृष् क्षुष् बुध् ।

बन्ध् युध् रुध् साध् व्यध् शुध्, सिध् मन्य हन् क्षिप् आप् तप् ॥ १ ॥

तृप्य दृप् लिप् लुप् वप स्वप्, शप् सृप् रभ् लभ् गम् ।

नम् यम् रम् कृश् दंश् दिश् द्श्, मृश् विश स्पृश् पुष्य दुप ॥

कृष्, तुष्, द्विष् शिल्प् शुष्य शिष् वस्, दह् दिह् लिह् औ' रुह वह् ।

धातु ये सब अनिट् हैं, परिगणन इनका है यह ॥ २ ॥

सूचना—अन्त्याक्षरों के क्रम से ये धातुएँ पद्यबद्ध हैं । दिवादिगणी धातुओं में, इस प्रकार की अन्य धातुओं से अन्तर के लिए, अन्त में य लगा है । पहले क् अन्तवाली शक् धातु, बाद में च् अन्तवाली, इसी प्रकार क्रमशः धातुएँ हैं । अजन्त धातुओं में ऊकारान्त और दीर्घ ऋकारान्त तथा शी थ्रि डी धातु सेट् हैं, शेष अनिट् हैं, जैसे चि, जि, कृ, हृ, धृ, भृ, आदि । केवल विशेष प्रचलित धातुओं का ही संग्रह है । अप्रचलित ३० धातुओं का संग्रह नहीं है ।

५. प्रत्यय-विचार

(१) क्त (२) क्तवतु प्रत्यय (देखो अभ्यास ३१, ३२, ३३)

सूचना—क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते हैं। क्त का त और क्तवतु का तवत् शेष रहता है। क्त कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता है, क्तवतु कर्तृवाच्य में। धातु को गुण, वृद्धि नहीं होती है। संप्रसारण होता है। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ३१-३३। क्त प्रत्ययान्त के रूप पुलिग में रामवत्, स्त्रीलिग में आ लगाकर रमावत् और नपुसक लिग में गृहवत् चलेंगे। यहाँ केवल पुलिग के रूप दिए गए हैं। क्त प्रत्ययान्त का क्तवतु प्रत्ययान्त रूप बनाने का सरल प्रकार यह है कि क्त प्रत्ययान्त के बाद में 'वत्' और जोड़ दो। अभ्यास ३३ में दिए नियमानुसार तीनों लिगों में रूप चलाओ। प्रत्यय-विचार में आगे सर्वत्र धातुएँ अन्तिम अक्षर के अकारादि क्रम से दी गई हैं।

घ्रा	घ्रातः) घ्राणः)	प्र + हि क्री	प्रहितः क्रीतः	वे आ द्वे	उतः आहूतः	याच् रच्	याचितः रचितः
ज्ञा	ज्ञातः	उत् + डी	उड्डीनः	गै	गीतः	रुच्	रुचितः
दा	दत्तः	नी	नीतः	त्रै	त्रातः	वच्	उक्तः
धा	हितः	भी	भीतः	ध्यै	ध्यातः	शुच्	शुचितः
ध्मा	ध्मातः	शी	शयितः	दो	दितः	सिच्	सिक्तः
पा	पीतः	श्रु	श्रुतः	सो	मितः	प्रच्छ्	पृष्टः
मा	मितः	स्तु	स्तुतः	शक्	शक्तः	मूच्छ्	मूर्च्छितः
या	यातः	भू	भतः	शक्	शक्तः	गर्ज्	गर्जितः
वा	वातः	भू	भतः	शक्	शक्तः	त्यज्	त्यक्तः
स्था	स्थितः	कृ	कृतः	ईक्ष्	ईक्षितः	पूज्	पूजितः
स्ना	स्नातः	धृ	धृतः	भक्ष्	भक्षितः	भज्	भक्तः
हा (३५०) हीनः		भृ	भृतः	रक्ष्	रक्षितः	भञ्ज्	भग्नः
अधि + इ अधीतः		हृ	हृतः	शिक्ष्	शिक्षितः	भुज्	भुक्तः
इ	इतः	कृ	कीर्णः	लिख्	लिखितः	मृज्	मृष्टः
क्षि	क्षीणः	गृ	गीर्णः	अर्च्	अर्चितः	यज्	इष्टः
चि	चितः	जू	जीर्णः	पच्	पक्वः	युज्	युक्तः
जि	जितः	पृ	पूरणः	मुच्	मुक्तः	रञ्ज्	रक्तः
श्रि	श्रितः	शृ	शीर्णः				

(३) शतृ प्रत्यय (देखो अभ्यास ३४)

सूचना—परस्मैपदी धातुओं को लट् के स्थान पर शतृ होता है। शतृ का अत् शेष रहता है। पुलिग में पठत् के तुल्य, स्त्रीलिग में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुंसक लिग में जगत् के तुल्य रूप चलेंगे। यहाँ पर केवल पुलिग के रूप दिए हैं। रूप बनाने के नियमों के लिए देखो अभ्यास ३४। धातुएँ अन्त्याक्षरानुसार दी गई हैं।

घ्रा	जिघ्रन्	भक्ष्	भक्षयन्	भिद्	भिन्दन्	पाल्	पालयन्
पा(१)	पिबन्	रक्ष्	रक्षन्	रुद्	रुन्दन्	मिल्	मिलन्
स्था	तिष्ठन्	लिख्	लिखन्	वद्	वदन्	जीव्	जीवन्
इ	यन्	अर्च्	अर्चन्	सद्	सीदन्	दिव्	दीव्यन्
चि	चिन्वन्	रच्	रचयन्	क्रुध्	क्रुध्यन्	धाव्	धावन्
जि	जयन्	सिच्	सिचन्	बन्ध्	बध्नन्	सिव्	सीव्यन्
श्रि	श्रयन्	प्रच्छ्	पृच्छन्	व्यध्	विध्यन्	दिश्	दिशन्
श्रु	शृण्वन्	गर्ज्	गर्जन्	खन्	खनन्	दृश्	पश्यन्
स्तु	स्तुवन्	त्यज्	त्यजन्	हन्	हनन्	नश्	नश्यन्
हु	जुह्वन्	पूज्	पूजयन्	आप्	आप्नुवन्	विश्	विशन्
भू	भवन्	भज्	भजन्	कुप्	कुप्यन्	स्पृश्	स्पृशन्
धृ	धरन्	सृज्	सृजन्	क्षिप्	क्षिपन्	इष्	इच्छन्
भृ	भरन्	पठ्	पठन्	जप्	जपन्	कृष्	कर्षन्
सृ	सरन्	क्रीड्	क्रीडन्	तप्	तपन्	तुष्	तुष्यन्
स्मृ	स्मरन्	दण्ड्	दण्डयन्	सृप्	सर्पन्	लष्	लषन्
कृ	किरन्	गण्	गणयन्	स्वप्	स्वपन्	वृष्	वर्षन्
गृ	गिरन्	नृत्	नृत्यन्	क्रम्	क्राम्यन्	अस्	सन्
तृ	तरन्	पत्	पतन्	क्षम्	क्षाम्यन्	वस्	वसन्
आह्वे	आह्वयन्	अद्	अदन्	गम्	गच्छन्	हस्	हसन्
गै	गायन्	क्रुद्	क्रुदन्	नम्	नमन्	दह्	दहन्
ध्यै	ध्यायन्	खाद्	खादन्	भ्रम्	भ्राम्यन्	दुह्	दुहन्
शक्	शक्नुवन्	छिद्	छिन्दन्	चर्	चरन्	आरुह्	आरोहन्
		तुद्	तुदन्	प्रेर्	प्रेरयन्	लिह्	लिहन्
		निन्द्	निन्दन्	चल्	चलन्	वह्	वहन्
				ज्वल्	ज्वलन्		

(४) शानच् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३५)

सूचना—आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् होता है। उभयपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शतृ और शानच् दोनों होते हैं। शानच् का आन शेष रहता है। शानच् प्रत्ययान्त के रूप पु० में रामवत्, स्त्री० में आ लगाकर रमावत् और नपुं० में गृहवत् चलेंगे। यहाँ पर पुलिग के ही रूप दिए हैं।

आत्मनेपदी धातुएँ

उभयपदी धातुएँ

अधि + इ अधीयानः	बाध्	बाधमानः	ज्ञा	जानन्	जानानः
उड्डी उड्डयमानः	युध्	युध्यमानः	दा	ददत्	ददानः
शी शयानः	वृध्	वर्धमानः	धा	दधत्	दधानः
मृ म्रियमाणः	जन्	जायमानः	क्री	क्रीणन्	क्रीणानः
त्रं त्रायमाणः	मन्	मन्यमानः	नी	नयन्	नयमानः
शक् शंकमानः	कम्प्	कम्पमानः	सु	सुन्वन्	सुन्वानः
ईक्ष् ईक्षमाणः	आलम्ब्	आलम्बमानः	ब्रू	ब्रुवन्	ब्रुवाणः
भिक्ष् भिक्षमाणः	आरम्भ्	आरम्भमाणः	कृ	कुर्वन्	कुर्वाणः
गिक्ष् शिक्षमाणः	लभ्	लभमानः	हृ	हरन्	हरमाणः
याच् याचमानः	शुभ्	शोभमानः	पच्	पचन्	पचमानः
रुच् रोचमानः	पलाय्	पलायमानः	मुच्	मुञ्चन्	मुञ्चमानः
शुच् शोचमानः	दय्	दयमानः	भुज्	भुञ्जन्	भुञ्जानः
विराज् विराजमानः	त्वर्	त्वरमाणः	यज्	यजन्	यजमानः
चेष्ट् चेष्टमानः	सेव्	सेवमानः	चिन्त्	चिन्तयन्	चिन्तयमानः
द्युत् द्योतमानः	आस्	आसीनः	कथ्	कथयन्	कथयमानः
यत् यतमानः	ग्रस्	ग्रसमानः	रुध्	रुन्धन्	रुन्धानः
वृत् वर्तमानः	ध्वंस्	ध्वंसमानः	तन्	तन्वन्	तन्वानः
प्रथ् प्रथमानः	भास्	भासमानः	चुर्	चोरयन्	चोरयमाणः
व्यथ् व्यथमानः	ईह्	ईहमानः	ग्रह्	गृह्णन्	गृह्णानः
कूर्द् कूर्दमानः	गाह्	गाहमानः	वह्	वहन्	वहमानः
संपद् संपद्यमानः	सह्	सहमानः			
मुद् मोदमानः					
वन्द् वन्दमानः					

(५) तुमुन् (६) तव्यत् (७) तृच् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३६, ३९, ४२)

सूचना—(क) तुमुन् प्रत्यय 'को' 'के लिए' अर्थ में होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। तुमुन् प्रत्ययान्त अव्यय होता है, अतः रूप नहीं चलते। धातु को गुण होता है। विशेष नियमों के लिए देखो अभ्यास ३६। (ख) तव्यत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो। तव्यत् प्रत्यय 'चाहिए' अर्थ में होता है। तव्यत् का तव्य शेष रहता है। पुं० में तव्य प्रत्ययान्त के रूप रामवत्, स्त्री० में आ लगाकर रमावत्, नपुं० में गृहवत् चलेंगे। विशेष नियमों के लिए देखो अभ्यास ३९। (ग) तृच् प्रत्यय कर्ता या 'वाला' अर्थ में होता है। तृच् का तृ शेष रहता है। तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तृ लगा दो। तृच् प्रत्ययान्त के रूप पु० में कर्तृ के तुल्य, स्त्री० में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुं० में कर्तृ नपुं० के तुल्य चलेंगे। तृच् प्रत्यय के विशेष नियमों के लिए देखो अभ्यास ४२। उदाहरणार्थ—तुम्, तव्य, तृ लगाकर इन धातुओं के ये रूप होंगे। कृ—कर्तुम्, कर्तव्य, कर्तृ। हृ—हर्तुम्, हर्तव्य, हर्तृ। लिख्—लेखितुम्, लेखितव्य, लेखितृ। तव्य और तृच् में तुम् के तुल्य ही सन्धि के कार्य होंगे।

घ्रा	घ्रातुम्	चि	चेतुम्	ब्रू	वक्तुम्	तृ	नरितुम्
ज्ञा	ज्ञातुम्	जि	जेतुम्	भू	भवितुम्	वे	वातुम्
दा	दातुम्	श्रि	श्रयितुम्	कृ	कर्तुम्	आ ह्वे	आ ह्वातुम्
धा	धातुम्	क्री	क्रेतुम्	धृ	धर्तुम्	ग	गातुम्
पा	पातुम्	डी	डयितुम्	भृ	भर्तुम्	त्रै	त्रातुम्
मा	मातुम्	नी	नेतुम्	मृ	मर्तुम्	ध्वै	ध्यातुम्
या	यातुम्	भी	भेतुम्	वृ	वारयितुम्	शक्	शक्तुम्
स्था	स्थातुम्	शी	शयितुम्	सृ	सर्तुम्	ईक्ष्	ईक्षितुम्
स्ता	स्तातुम्	श्रु	श्रोतुम्	स्मृ	स्मर्तुम्	दीक्ष्	दीक्षितुम्
हा	हातुम्	सु	सोतुम्	हृ	हर्तुम्	भक्ष्	भक्षयितुम्
अधि + इ अध्येतुम्	स्तु	स्तु	स्तोतुम्	कृ	करितुम्	रक्ष्	रक्षितुम्
इ एतुम्	हु	हु	होतुम्	गृ	गरितुम्	शिक्ष्	शिक्षितुम्

लिख्	लेखितुम्	अद्	अत्तुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्	जीव्	जीवितुम्
अच्	अचितुम्	कूद्	कूदितुम्	जप्	जपितुम्	धाव्	धावितुम्
पच्	पक्तुम्	क्रन्द्	क्रन्दितुम्	तप्	तप्तुम्	सिव्	सेवितुम्
मुच्	मोक्तुम्	खाद्	खादितुम्	तृप्	तर्पितुम्	सेव्	सेवितुम्
याच्	याचितुम्	छिद्	छेत्तुम्	आलप्	आलपितुम्	दंश्	दंष्टुम्
रच्	रचयितुम्	निन्द्	निन्दितुम्	वप्	वप्तुम्	दिश्	देष्टुम्
रुच्	रोचितुम्	पद्	पत्तुम्	शप्	शप्तुम्	नश्	नष्टुम्
वच्	वक्तुम्	भिद्	भेत्तुम्	सृप्	सृप्तुम्	विश्	वेष्टुम्
शुच्	शोचितुम्	मुद्	मोदितुम्	स्वप्	स्वप्तुम्	स्पृश्	स्पृष्टुम्
सिच्	सेक्तुम्	रुद्	रोदितुम्	लम्ब्	लम्बितुम्	इष्	एषितुम्
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	वद्	वदितुम्	आरम्भ्	आरम्भितुम्	कृष्	कृष्टुम्
गर्ज्	गर्जितुम्	वन्द्	वन्दितुम्	लभ्	लब्धुम्	पृष्	पोषितुम्
त्यज्	त्यक्तुम्	विद्	वेत्तुम्	लुभ्	लोभितुम्	भाप्	भाषितुम्
पूज्	पूजयितुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्	शुम्	शोभितुम्	लप्	लपितुम्
भज्	भक्तुम्	बन्ध्	बद्धुम्	कम्	कमितुम्	वृष्	वर्षितुम्
भुज्	भोक्तुम्	बाध्	बाधितुम्	क्रम्	क्रमितुम्	श्लिष्	श्लेष्टुम्
यज्	यष्टुम्	बुध्	बोद्धुम्	क्षम्	क्षमितुम्	हृष्	हर्षितुम्
युज्	योक्तुम्	युध्	योद्धुम्	गम्	गन्तुम्	अस्	भवितुम्
राज्	राजितुम्	रुध्	रोद्धुम्	नम्	नन्तुम्	आस्	आसितुम्
सृज्	सृष्टुम्	वृध्	वर्धितुम्	अम्	अमितुम्	ग्रस्	ग्रसितुम्
चेष्ट्	चेष्टितुम्	सिध्	सेद्धुम्	यम्	यन्तुम्	ध्वस्	ध्वंसितुम्
पठ्	पठितुम्	स्पर्ध्	स्पर्धितुम्	रम्	रन्तुम्	वस्	वस्तुम्
क्रीड्	क्रीडितुम्	खन्	खनितुम्	शम्	शमितुम्	हृष्	हसितुम्
गण्	गणयितुम्	जन्	जनितुम्	पलाय्	पलायितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्
चिन्त्	चिन्तयितुम्	मन्	मन्तुम्	चर्	चरितुम्	दह्	दग्धुम्
द्युत्	द्योतितुम्	हन्	हन्तुम्	चुर्	चोरयितुम्	दुह्	दोग्धुम्
नृत्	नर्तितुम्	आप्	आप्तुम्	प्रेर्	प्रेरयितुम्	द्रुह्	द्रोग्धुम्
पत्	पतितुम्	कम्प्	कम्पितुम्	चल्	चलितुम्	आरूह्	आरोहुम्
यत्	यतितुम्	कुप्	कोपितुम्	ज्वल्	ज्वलितुम्	लिह्	लेढुम्
वृत्	वर्तितुम्	कृप्	कल्पितुम्	पाल्	पालयितुम्	वह्	वोढुम्
कथ्	कथयितुम्			मिल्	मेलितुम्	सह्	सोढुम्

(८) क्त्वा (९) ल्यप् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३७, ३८)

सूचना—‘कर’ या ‘करके’ अर्थ में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते हैं। क्त्वा का त्वा और ल्यप् का य शेष रहता है। धातु से पहले उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा होगा। यदि उपसर्ग पहले होगा तो ल्यप् होगा। दोनों प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनका रूप नहीं चलता। दोनों प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमों के लिए देखो अभ्यास ३७ और ३८। जिन उपसर्गों के साथ ल्यप् वाला रूप अधिक प्रचलित है, वही यहाँ दिए गए हैं।

घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय	ब्रू	उक्त्वा	प्रोच्य
ज्ञा	ज्ञात्वा	विज्ञाय	भू	भूत्वा	संभूय
दा	दत्त्वा	आदाय	कृ	कृत्वा	उपकृत्य
धा	हित्वा	विधाय	आद्	—	आदृत्य
पा	पीत्वा	निपाय	धृ	धृत्वा	आधृत्य
मा	मिन्वा	प्रमाय	भृ	भृत्वा	संभृत्य
या	यात्वा	प्रयाय	निवृ	—	निवृत्य
स्था	स्थित्वा	प्रस्थाय	स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
स्ना	स्नात्वा	प्रस्नाय	हृ	हृत्वा	प्रहृत्य
हा	हित्वा	विहाय	कृ	कीर्त्वा	प्रकीर्य
इ	इत्वा	प्रेत्य	गृ	गीर्त्वा	उद्गीर्य
अधि + इ	—	अधीत्य	तृ	तीर्त्वा	उत्तीर्य
चि	चित्वा	संचित्य	पृ	पृर्त्वा	आपूर्य
जि	जित्वा	विजित्य	ह्वा	हृत्वा	आहूय
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य	गै	गीत्वा	प्रगाय
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय	ध्यै	ध्यात्वा	संध्याय
उड्डी	—	उड्डीय	ईक्ष्	ईक्षित्वा	निरीक्ष्य
नी	नीत्वा	आनीय	भक्ष्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य
ली	लीत्वा	निलीय	रक्ष्	रक्षित्वा	संरक्ष्य
शी	शयित्वा	संशय्य	लिख्	लिखित्वा	आलिख्य
श्रु	श्रुत्वा	संश्रुत्य	अच्	अचित्वा	समर्च्य
स्तु	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य	पच्	पक्त्वा	संपच्य

मुच्	मुक्त्वा	विमुच्य	वन्द	वन्दित्वा	अभिवन्द्य
याच्	याचित्वा	अनुयाच्य	विद् (२५०)	विदित्वा	संविद्य
रच्	रचयित्वा	विरचय्य	विद् (१०)	वेदयित्वा	निवेद्य
सिच्	सिक्त्वा	अभिषिच्य	सद्	सत्त्वा	निपद्य
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य	क्रुध्	क्रुध्वा	संक्रुध्य
त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य	बन्ध्	बद्ध्वा	आबध्य
पूज्	पूजयित्वा	संपूज्य	बुध्	बुद्ध्वा	प्रबुध्य
भज्	भक्त्वा	विभज्य	युध्	युद्ध्वा	प्रयुध्य
भुज्	भुक्त्वा	उपभुज्य	रुध्	रुद्ध्वा	विरुध्य
यज्	इष्ट्वा	समिज्य	व्यध्	विद्ध्वा	आविध्य
युज्	युक्त्वा	प्रयुज्य	साध्	साद्ध्वा	प्रसाध्य
सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य	सिध्	सिद्ध्वा	निषिध्य
पठ्	पठित्वा	संपठ्य	खन्	खनित्वा)	उत्खन्य
क्रीड्	क्रीडित्वा	प्रक्रीड्य	खात्वा)	उत्खाय	
गण्	गणयित्वा	विगणय्य	जन्	जनित्वा	संजाय
चिन्त्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य	तन्	तनित्वा	वितत्य
नृत्	नर्तित्वा	प्रनृत्य	मन्	मत्वा	अनुमत्य
पत्	पतित्वा	निपत्य	हन्	हत्वा	निहत्य
वृत्	वर्तित्वा	निवृत्य	आप्	आप्त्वा	प्राप्य
कूर्द	कूर्दित्वा	प्रकूर्द्य	क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य
क्रन्द	क्रन्दित्वा	आक्रन्द्य	जप्	जपित्वा	संजप्य
खाद्	खादित्वा	संखाद्य	तप्	तप्त्वा	संतप्य
छिद्	छित्त्वा	उच्छिद्य	दीप्	दीपित्वा	संदीप्य
नुद्	नुत्त्वा	प्रणुद्य	लप्	लपित्वा	विलप्य
पद्	पत्त्वा	संपद्य	वप्	उप्त्वा	समुप्य
भिद्	भित्त्वा	प्रभिद्य	शप्	शप्त्वा	अभिशप्य
वद्	उदित्वा	अनूद्य	स्वप्	मुप्त्वा	संषुप्य
			लम्ब्	लम्बित्वा	आलम्ब्य
			क्षुम्	क्षुभित्वा	प्रक्षुभ्य

रभ्	रब्ध्वा	आरभ्य
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य
लुभ्	लुब्ध्वा	प्रलुभ्य
कम्	कमित्वा	संकाम्य
क्रम्	क्रमित्वा) क्रान्त्वा)	संक्रम्य
क्षम्	क्षमित्वा	संक्षम्य
गम्	गत्वा	{ आगम्य आगत्य
नम्	नत्वा	प्रणम्य
भ्रम्	भ्रमित्वा) भ्रान्त्वा)	संभ्रम्य
यम्	यत्वा	संयम्य
रम्	रत्वा	विरम्य
शम्	शान्त्वा	निशम्य
पलाय्	—	पलाय्य
चर्	चरित्वा	आचर्य
चुर्	चोरयित्वा	संचोर्य
चल्	चलित्वा	प्रचल्य
ज्वल्	ज्वलित्वा	प्रज्वल्य
पाल्	पालयित्वा	संपाल्य
मिल्	मिलित्वा	संमिल्य
जीव्	जीवित्वा	संजीव्य
दिव्	देवित्वा	संदीव्य
धाव्	धावित्वा	प्रधाव्य
सिव्	सेवित्वा	संसीव्य
सेव्	सेवित्वा	निषेव्य
दंश्	दष्ट्वा	संदश्य
दिश्	दिष्ट्वा	उपदिश्य
दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य

नश्	नष्ट्वा	विनश्य
भ्रंश्	भ्रष्ट्वा	प्रभ्रश्य
विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
स्पृश्	स्पृष्ट्वा	संस्पृश्य
इप्	इष्ट्वा	समिष्य
कृप्	कृष्ट्वा	आकृष्य
तुप्	तुष्ट्वा	संतुष्य
पुप्	पुष्ट्वा	संपुष्य
भाप्	भाषित्वा	संभाष्य
लप्	लषित्वा	अभिलष्य
वृष्	वर्षित्वा	प्रवृष्य
शुष्	शुष्ट्वा	परिशुष्य
शिल्प्	शिल्पित्वा	आशिल्प्य
हृप्	हृषित्वा	प्रहृष्य
अस्	भूत्वा	संभूय
आस्	आसित्वा	उपास्य
ग्रस्	ग्रसित्वा	संग्रस्य
वस्	उषित्वा	उपोष्य
शास्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य
श्वस्	श्वसित्वा	विश्वस्य
हस्	हसित्वा	विहस्य
ग्रह्	गृहीत्वा	संगृह्य
दह्	दग्ध्वा	संदह्य
दुह्	दुग्ध्वा	संदुह्य
मुह्	मुग्ध्वा	संमुह्य
रुह्	रूढ्वा	आरूढ्य
लिह्	लीढ्वा	आलिह्य
वह्	ऊढ्वा	प्रोढ्य
सह्	सहित्वा	संसह्य
स्निह्	स्निग्ध्वा	उपस्निह्य

१०. ल्युट् ११. अनीयर् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३९, ४३)

सूचना—ल्युट् प्रत्यय भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से लगता है। ल्युट् का 'अन' शेष रहता है। धातु को गुण होता है। ल्युट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक लिंग होता है। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ४३। 'चाहिए' अर्थ में अनीयर् प्रत्यय होता है। अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है। अनीयर् प्रत्यय वाला रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि ल्युट् के अन के स्थान पर अनीय लगा दो। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास ३९। जैसे कृ का करण, करणीय। दा—दान, दानीय। पठ्—पठन, पठनीय।

ज्ञा	ज्ञानम्	ब्रू	वचनम्	पच्	पचनम्	नृत्	नर्तनम्
दा	दानम्	भू	भवनम्	मुच्	मोचनम्	पत्	पतनम्
विधा	विधानम्	कृ	करणम्	याच्	याचनम्	यत्	यतनम्
पा	पानम्	धृ	धरणम्	सिच्	सेचनम्	वृत्	वर्तनम्
मा	मानम्	भृ	भरणम्	गर्ज्	गर्जनम्	कथ्	कथनम्
या	यानम्	मृ	मरणम्	त्यज्	त्यजनम्	ग्रन्थ्	ग्रन्थनम्
स्था	स्थानम्	स्मृ	स्मरणम्	पूज्	पूजनम्	मन्थ्	मन्थनम्
स्ना	स्नानम्	हृ	हरणम्	भज्	भजनम्	अद्	अदनम्
अधि + इ	अध्ययनम्	निगृ	निगरणम्	भंज्	भंजनम्	कूर्द्	कूर्दनम्
चि	चयनम्	तृ	तरणम्	भुज्	भोजनम्	क्रन्द्	क्रन्दनम्
जि	जयनम्	आ ह्वे	आ ह्वानम्	यज्	यजनम्	खाद्	खादनम्
श्रि	श्रयणम्	गै	गानम्	युज्	योजनम्	छिद्	छेदनम्
क्री	क्रयणम्	त्रै	त्राणम्	रंज्	रंजनम्	नन्द्	नन्दनम्
उड्डी	उड्डयनम्	ध्यै	ध्यानम्	सृज्	सर्जनम्	निन्द्	निन्दनम्
नी	नयनम्	ईक्ष्	ईक्षणम्	चेष्ट्	चेष्टनम्	नुद्	नोदनम्
शी	शयनम्	भक्ष्	भक्षणम्	पठ्	पठनम्	भिद्	भेदनम्
श्रु	श्रवणम्	रक्ष्	रक्षणम्	क्रीड्	क्रीडनम्	मद्	मदनम्
मु	सवनम्	शिक्ष्	शिक्षणम्	दण्ड्	दण्डनम्	मुद्	मोदनम्
स्तु	स्तवनम्	लिख्	लेखनम्	गण्	गणनम्	रुद्	रोदनम्
हु	हवनम्	अर्च	अर्चनम्	चिन्त्	चिन्तनम्	वद्	वदनम्

वन्द्	वन्दनम्	सृप्	सर्पणम्	सेव्	सेवनम्	शास्	शासनम्
निविद्	निवेदनम्	स्वप्	स्वपनम्	प्रकाश्	प्रकाशनम्	विश्वस्	विश्वसनम्
सद्	सदनम्	लम्ब्	लम्बनम्	क्लिश्	क्लेशनम्	संस्	संसनम्
बन्ध्	बन्धनम्	आरम्	आरभणम्	दंश्	दंशनम्	प्रहस्	प्रहसनम्
बाध्	बाधनम्	लभ्	लभनम्	संदिश्	संदेशनम्	गाह्	गाहनम्
बुध्	बोधनम्	लुभ्	लोभनम्	दृश्	दर्शनम्	ग्रह्	ग्रहणम्
युध्	योधनम्	शुभ्	शोभनम्	वित्तिश्	वित्तिशनम्	दह्	दहनम्
रुध्	रोधनम्	आक्रम्	आक्रमणम्	भ्रंश्	भ्रंशनम्	दुह्	दोहनम्
वृध्	वर्धनम्	गम्	गमनम्	प्रविश्	प्रवेशनम्	मुह्	मोहनम्
साध्	साधनम्	दम्	दमनम्	स्पृश्	स्पर्शनम्	आरुह्	आरोहणम्
निषिध्	निषेधनम्	नम्	नमनम्	प्रेष्	प्रेषणम्	लिह्	लेहनम्
खन्	खननम्	भ्रम्	भ्रमणम्	अन्विष्	अन्वेषणम्	वह्	वहनम्
जन्	जननम्	नियम्	नियमनम्	कृष्	कर्षणम्	सह्	सहनम्
मन्	मननम्	रम्	रमणम्	तुष्	तोषणम्	स्निह्	स्नेहनम्
हन्	हननम्	शम्	शमनम्	पुष्	पोषणम्		
प्राप्	प्रापणम्	पलाय्	पलायनम्	भाप्	भाषणम्		
कम्प्	कम्पनम्	आचर्	आचरणम्	मुष्	मोषणम्		
कृप्	कल्पनम्	चुर्	चोरणम्	वृष्	वर्षणम्		
जप्	जपनम्	प्रेर्	प्रेरणम्	शुष्	शोषणम्		
तप्	तपनम्	चल्	चलनम्	हृष्	हर्षणम्		
तृप्	तर्पणम्	ज्वल्	ज्वलनम्	अस् (२)	भवनम्		
दीप्	दीपनम्	पाल्	पालनम्	अस् (४)	असनम्		
विल्प्	विलपनम्	संमिल्	संमेलनम्	आस्	आसनम्		
वप्	वपनम्	जीव्	जीवनम्	विकस्	विकसनम्		
वेप्	वेपनम्	दिव्	देवनम्	ग्रस्	ग्रसनम्		
शप्	शपनम्	धाव्	धावनम्	ध्वंस्	ध्वंसनम्		
				निवस्	निवसनम्		

१२. घञ् (देखो अभ्यास ४१)

सूचना—(१) भाव अर्थ में घञ् प्रत्यय होता है। घञ् का 'अ' शेष रहता है। घञन्त शब्द पुलिग होता है। घञ् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के नियमों के लिए देखो अभ्यास ४१। घञ् प्रत्ययान्त शब्द उपसर्गों के साथ बहुत प्रचलित है। स्वयं उपसर्ग लगाकर अन्य रूप बनावें।

दा	दायः	यज्	यागः	कुप्	कोपः	नश्	नाशः
घा	घायः	युज्	योगः	वि + कृप्	विकल्पः	प्र + विश्	प्रवेशः
अधि + इ	अध्यायः	रञ्ज्	रागः	आ + क्षिप्	आक्षेपः	स्पृश्	स्पर्शः
नि + इ	न्यायः	वि + सृज्	विसर्गः	जप्	जापः	प्र + कृष्	प्रकर्षः
चि	कायः	पठ्	पाठः	तप्	तापः	सं + तुष्	सन्तोषः
श्रि	श्रायः	पत्	पातः	वि + लप्	विलापः	पुप्	पोषः
श्रु	श्रावः	पत्	पातः	शप्	शापः	अभिलप्	अभिलाषः
प्रस्तु	प्रस्तावः	आ + वृत्	आवर्तः	सृप्	सर्पः	वृप्	वर्षः
प्रभू	प्रभावः	छिद्	छेदः	स्वप्	स्वापः	शुष्	शोषः
प्र + कृ	प्रकारः	उत् + पद्	उत्पादः	क्षुभ्	क्षोभः	श्लिष्	श्लेपः
आ + धृ	आधारः	भिद्	भेदः	लभ्	लाभः	हृप्	हर्षः
सं + भृ	संभारः	आ + मुद्	आमोदः	लुभ्	लोभः	अस्	भावः
प्र + सृ	प्रसारः	वद्	वादः	कम्	कामः	वि + कम्	विकामः
प्रहृ	प्रहारः	विद्	वेदः	आ + गम्	आगमः	ग्रस्	ग्रासः
अव + तृ	अवतारः	प्र + सद्	प्रसादः	प्र + नम्	प्रणामः	नि + वस्	निवासः
लिख्	लेखः	क्रुध्	क्रोधः	सं + यम्	संयमः	वि + श्वस्	विश्ववासः
पच्	पाकः	रम्	रामः	हस्	हासः		
शुच्	शोकः	शम्	शमः	ग्रह्	ग्राहः		
सिच्	सेकः	आ + चर्	आचारः	दह्	दाहः		
त्यज्	त्यागः	चुर्	चोरः	दुह्	दोहः		
भज्	भागः	चल्	चालः	द्रुह्	द्रोहः		
भुज्	भोगः	मिल्	मेलः	मुह्	मोहः		
मृज्	मार्गः	नि + सिध्	निषेधः	आ + रुह्	आरोहः		
		सं + तन्	सन्तानः	दिव्	देवः	अव + लिह्	अवलेहः
		सं + मन्	संमानः	प्र + काश्	प्रकाशः	वि + वह्	विवाहः
		आ + हन्	आघातः	उप + दिश्	उपदेशः	उत् + सह्	उत्साहः
				आ + दृश्	आदर्शः	स्निह्	स्नेहः

१३. ण्वल् प्रत्यय (देखो अभ्यास ४३)

सूचना—कर्ता या 'वाला' अर्थ में ण्वल् प्रत्यय होता है। ण्वल् के स्थान पर 'अक' शेष रहता है। धातु को गुण या वृद्धि होगी। कर्ता के अनुसार तीनों लिंग होते हैं। विशेष नियम के लिए देखो अभ्यास ४३।

प्र + दा प्रदायकः	लिख्	लेखकः	भिद्	भेदकः	दृश्	दर्शकः
वि + धा विधायकः	पच्	पाचकः	उत् + मद् उन्मादकः		नश्	नाशकः
पा पायकः	मुच्	मोचकः	मुद्	मोदकः	प्र + विश्	प्रवेशकः
अध्यापि अध्यापकः	याच्	याचकः	नि + विद् निवेदकः		कृप्	कर्षकः
नी नायकः	रुच्	रोचकः	बाध्	बाधकः	पुष्	पोषकः
श्रु श्रावकः	सिच्	सेचकः	बुध्	बोधकः	वृष्	वर्षकः
प्र + स्तु प्रस्तावकः	पूज्	पूजकः	रुध्	रोधकः	शुष्	शोषकः
वृ वाचकः	वि + भज् विभाजकः		वृध्	वर्धकः	हृष्	हर्षकः
भू भावकः	भुज्	भोजकः	साध्	साधकः	उपास्	उपासकः
कृ कारकः	यज्	याजकः	नि + सिध् निषेधकः		वि + कस्	विकासकः
धृ धारकः	सं + युज् संयोजकः		जन्	जनकः	शास्	शासकः
मृ मारकः	रंज्	रंजकः	हन्	घातकः	ग्रह्	ग्राहकः
नि + वृ निवारकः	पठ्	पाठकः	प्र + क्षिप् प्रक्षेपकः		दह्	दाहकः
प्र + सृ प्रसारकः	क्रीड्	क्रीडकः	सं + तप् संतापकः		द्रुह्	द्रोहकः
स्मृ स्मारकः	गण्	गणकः	दीप्	दीपकः	मुह्	मोहकः
स + ह् संहारकः	चिन्त्	चिन्तकः	गम्	गमकः	वह्	वाहकः
तृ तारकः	द्युत्	द्योतकः	यम्	यमकः		
गं गायकः	नृत्	नर्तकः	प्र + चर् प्रचारकः			
परि + ईक्ष् परीक्षकः	पत्	पातकः	प्रेर्	प्रेरकः		
भक्ष् भक्षकः	खाद्	खादकः	सं + चल् संचालकः			
रक्ष् रक्षकः	छिद्	छेदकः	पाल्	पालकः		
शिक्ष् शिक्षकः	निन्द्	निन्दकः	धाव्	धावकः		
	उत् + पद् उत्पादकः		सेव्	सेवकः		
			प्र + काश् प्रकाशकः			
			उप + दिश् उपदेशकः			

१४. कितन् १५. यत् प्रत्यय (देखो अभ्यास ४५, ४०)

सूचना—(१) भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातु से कितन् प्रत्यय होता है। कितन् का 'ति' शेष रहता है। 'ति' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। विशेष नियमों के लिए देखो अभ्यास ४५। (२) 'चाहिँ' अर्थ में अजन्त धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् का 'य' शेष रहता है। तीनों लिङ्गों में रूप चलते हैं। विशेष नियमों के लिए देखो अभ्यास ४०।

कितन् प्रत्यय

पा	पीति:	मुच्	मुक्ति:
मा	मिति:	भज्	भक्ति:
स्था	स्थिति:	भुज्	भुक्ति:
नी	नीति:	यज्	इष्टि:
प्री	प्रीति:	युज्	युक्ति:
भी	भीति:	आ + संज्	आसक्ति:
श्रु	श्रुति:	सृज्	सृष्टि:
स्तु	स्तुति:	कृत्	कीर्ति:
आ + हु	आहुति:	वृत्	वृत्ति:
ब्रू	उक्ति:	सं + पद्	संपत्ति:
भू	भूति:	आ + सद्	आसत्ति:
कृ	कृति:	ऋध्	ऋद्धि:
धृ	धृति:	बुध्	बुद्धि:
सं + सू	संसृति:	वृध्	वृद्धि:
स्मृ	स्मृति:	शुध्	शुद्धि:
सं + हृ	संहृति:	सिध्	सिद्धि:
पृ	पूति:	जन्	जाति:
गं	गीति:	मन्	मति:
शक्	शक्ति:	प्र + आप्	प्राप्ति:
पच्	पक्ति:	तृप्	तृप्ति:
		दीप्	दीप्ति:

यत् प्रत्यय

स्वप्	सुप्ति:	ज्ञा	ज्ञेयम्
उपलभ्	उपलब्धि:	दा	देयम्
कम्	कान्ति:	वि + धा	विधेयम्
क्रम्	क्रान्ति:	पा	पेयम्
क्षम्	क्षान्ति:	उप + मा	उपमेयम्
गम्	गति:	स्था	स्थेयम्
नम्	नति:	हा	हेयम्
भ्रम्	भ्रान्ति:	आधि + इ	अध्येयम्
यम्	यति:	क्षि	क्षेयम्
रम्	रति:	चि	चेयम्
शम्	शान्ति:	जि	जेयम्
वि + श्रम्	विश्रान्ति:	क्री	क्रेयम्
दृश्	दृष्टि:	नी	नेयम्
वि + नश्	विनष्टि:	श्रु	श्रव्यम्
तुष्	तुष्टि:	सु	सव्यम्
पुष्	पुष्टि:	हु	हव्यम्
वृष्	वृष्टि:	भू	भव्यम्
रुह्	रुद्धि:		

६. सन्धि-विचार

(क) स्वर-सन्धि (१) यण् सन्धि (देखो अभ्यास १०)

(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र्, लृ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे—

(१) प्रति + एकः = प्रत्येकः पठति + अत्र = पठत्यत्र इति + अत्र = इत्यत्र इति + आह = इत्याह यदि + अपि = यद्यपि नदी + औ = नद्यां सुधी + उपास्यः = सुधु- पास्यः	(२) पठतु + एकः = पठत्वैकः अनु + अयः = अन्वयः मधु + अरिः = मध्वरिः गुरु + आज्ञा = गुरुज्ञा पठतु + अत्र = पठत्वत्र वधु + औ = वध्वां	(३) पितृ + आ = पित्रा मातृ + ए = मात्रे धातृ + अंशः = धात्रंशः कर्तृ + आ = कर्त्रा कर्तृ = ई = कर्त्री (४) लृ + आकृतिः = लाकृतिः
--	--	---

(२) अयादिसन्धि (देखो अभ्यास ११)

(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (ए या ओ के बाद अ होगा तो नहीं)। जैसे—

(१) हरे + ए = हरये कवे + ए = कवये ने + अनम् = नयनम् शे + अनम् = शयनम् जे + अः = जयः संचे + अः = संचयः	(२) भो + अति = भवति पो + अनः = पवनः गुरो + ए = गुरवे भानो + ए = भानवे भो + अनम् = भवनम् श्रो + अणम् = श्रवणम्	(३) नै + अकः = नायकः गौ + अकः = गायकः गौ + अति = गायति (४) द्रो + एतां = द्रवतां पां + अकः = पावकः भां + अकः = भावकः
--	--	---

(३) गुणसन्धि (देखो अभ्यास १२)

(आद्गुणः) (१) अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को 'ए' होगा। (२) अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों को 'ओ' होगा। (३) अ या आ के बाद ऋ या ॠ हो तो दोनों को 'अर्' होगा। (४) अ या आ के बाद लृ होगा तो दोनों को 'अल्' होगा। जैसे—

(१) महा + ईशः = महेशः गण + ईशः = गणेशः रमा + ईशः = रमेशः तथा + इति = तथेति न + इदम् = नेदम्	(२) पर + उपकारः = परोपकारः महा + उत्सवः = महोत्सवः हित + उपदेशः = हितोपदेशः गंगा + उदकम् = गंगोदकम् पश्य + उपरि = पश्योपरि	(३) महा + ऋषिः = महर्षिः राज + ऋषिः = राजर्षिः ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः (४) तव + लृकारः = तवल्कारः
---	--	---

(४) (वृद्धिसन्धि)

(देखो अभ्यास १३)

(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ हो तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा। जैसे—

(१) अत्र + एकः = अत्रैकः	(२) तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलौदनम्।
पश्य + एतम् = पश्यैतम्	जल + ओषः = जलौषः।
सा + एषा = सैषा	महा + ओषधिः = महौषधिः।
राज + ऐश्वर्यम् = राजैश्वर्यम्	देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्।

(५) पूर्वरूपसन्धि

(देखो अभ्यास १४)

(एङः पदान्तादति) पद (अर्थात् सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो उसको पूर्वरूप (अर्थात् ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। (अ हटा है, इस बात के सूचनार्थऽ (अवग्रह चिह्न) लगा दिया जाता है। जैसे—

(१) हरे + अव = हरेऽव	(२) विष्णो + अव = विष्णोऽव
लोके + अस्मिन् = लोकेऽस्मिन्	रामो + अधुना = रामोऽधुना
विद्यालये + अस्मिन् = विद्यालयेऽस्मिन्	लोको + अयम् = लोकोऽयम्

(६) सवर्णदीर्घसन्धि

(देखो अभ्यास १५)

(अकः सवर्णे दीर्घः) अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ + अ या आ = आ। (२) इ या ई + इ या ई = ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। (४) ऋ या ॠ + ऋ या ॠ = ॠ।

(१) हिम + आलयः = हिमालयः	(२) गिरि + ईशः = गिरीशः	(३) गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः
विद्या + आलयः = विद्यालयः	श्री + ईशः = श्रीशः	भानु + उदयः = भानूदयः
तथा + अपि = तथापि	इति + इदम् = इतीदम्	लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः
शिष्ट + आचारः = शिष्टाचारः	पठति + इदम् = पठतीदम्	(४) होतृ + ऋकारः = होतृकारः

(ख) हल्सन्धि

(७) श्चुत्वसन्धि

(देखो अभ्यास १६)

(स्तोः श्चुना श्चुः) स या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स और तवर्ग को क्रमशः श् और चवर्ग हो जाता है। जैसे

रामस् + च = रामश्च	तत् + च = तच्च	सद् + जनः = सज्जनः
कस् + चित्र = कश्चित्र	सत् + चित्र = सच्चित्र	उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः
दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः	सत् + चरित्रः = सच्चरित्रः	याच् + ना = याच्या
हरिस् + शेते = हरिश्शेते	उच् + चारणम् = उच्चारणम्	शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिज्जय

(८) ष्टुत्वसन्धि

(देखो अभ्यास १७)

(ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग के पहले या बाद में ष या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग हो जाता है। जैसे,

इष + तः = इष्टः	रामस् + पठः = रामषठः	विष + नुः = विष्णुः
पेष् + ता = पेष्टा	उइ + डीनः = उड्डीनः	कृष् + नः = कृष्णः
दुष् + तः = दुष्टः	तट् + टीका = तट्टीका	उष् + त्रः = उष्ट्रः

(९) जश्त्वसन्धि (१)

(देखो अभ्यास १८)

(झलां जशोऽन्ते) झलों (वर्ग के १, २, ३, ४ और ऊष्म) को जश् (३ अर्थात् अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होते हैं, झल् पद के अन्तिम अक्षर हों तो। (पद अर्थात् सुबन्त या तिङन्त)। जैसे,

सुप् + अन्तः = सुवन्तः	चिद् + आनन्दः = चिदानन्दः	पट् + एव = पडैव
अच् + अन्तः = अजन्तः	दिक् + अम्बरः = दिग्गम्बरः	षट् + आननः = षटाननः
जगत् + ईशः = जगदीशः	उद् + देश्यम् = उद्देश्यम्	दिक् + गजः = दिग्गजः

(१०) जश्त्वसन्धि (२)

(देखो अभ्यास १९)

(झलां जश् झशि) झलों (वर्ग के १, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३, अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होते हैं, बाद में झश् (वर्ग के ३, ४) हों तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है, पहला नियम (९) पद के अन्त में)।

बुध् + धिः = बुद्धिः	दध् + धः = दध्धः	शुध् + धः = शुद्धः
सिध् + धिः = सिद्धिः	दुध् + धम् = दुध्धम्	वृध् + धिः = वृद्धिः
क्षुध् + धः = क्षुब्धः	लध् + धः = लब्धः	शुध् + धिः = शुद्धिः

(११) चत्वं सन्धि

(देखो अभ्यास २०)

(खरि च) झलों (१, २, ३, ४, ऊष्म) को चर् (१, उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) होते हैं, बाद में खर् (१, २, श, ष, स) हों तो। जैसे,

सद् + कारः = सत्कारः	तद् + परः = तत्परः	सद् + पुत्रः = सत्पुत्रः
उत् + पत्रः = उत्पन्नः	उद् + साहः = उत्साहः	तज् + छिवः = तच्छिवः

(१२) अनुस्वारसन्धि

(देखो अभ्यास ९)

(मोऽनुस्वारः) पदान्त म् के बाद कोई हल् (व्यंजन) हो तो म् को अनुस्वार (°) हो जाता है, बाद में स्वर हो तो नहीं। जैसे,

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे	कम् + चिद् = कंचिद्	सत्यम् + वद = सत्यं वद
गुरुम् + नमति = गुरुं नमति	कार्यम् + कुरु = कार्यं कुरु	धर्मम् + चर = धर्मं चर

(ग) विसर्गसन्धि (१३) विसर्गसन्धि (देखो अभ्यास २१)

(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग के बाद खर् (वर्ग के १, २, श, ष, स) हो तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग बाद में हो तो श्चुत्वसन्धि भी)। जैसे,

हरिः + त्रायते = हरिस्त्रायते ।

बालः + चलति = बालश्चलति ।

रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति ।

रामः + शेते = रामश्शेते ।

कः + चित् = कश्चित् ।

जनाः + तिष्ठन्ति = जनास्तिष्ठन्ति ।

निः + चलः = निश्चलः ।

रामः + च = रामश्च ।

(१४, १५) उत्त्व सन्धि (१) (देखो अभ्यास २२)

(१४) (ससजुषोः) पद के अन्तिम स् को रु (ः) होता है। सजुष् शब्द के ष को भी रु होता है। (सूचना—इस रु का साधारणतया विसर्ग : ही बचता है। इसी रु को सन्धिनियम १५, १६ और १७ से उ या य होता है। जहाँ उ या य नहीं होगा, वहाँ पर या तो विसर्ग बचेगा या र् बचेगा।)

(१५) (अतो रोरप्लुतादप्लुते) ह्रस्व अ के बाद रु (ः या र्) को उ हो जाता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो। (सूचना—इस उ को पूर्ववर्ती अ के साथ संधि—नियम ३ से गुणसंधि करके ओ हो जाता है और बाद के अ को संधि नियम ५ से पूर्वरूप संधि होती है। अतएव अः + अ = ओऽ होता है। जैसे,

रामः + अस्ति = रामोऽस्ति ।

रामः + अवदत् = रामोऽवदत् ।

कः + अपि = कोऽपि ।

नृपः + अगच्छत् = नृपोऽगच्छत् ।

सः + अपि = सोऽपि ।

देवः + अधुना = देवोऽधुना ।

सः + अपठत् = सोऽपठत् ।

कः + अयम् = कोऽयम् ।

सूचना—स्मरण रखें कि रामः, कः आदि में सब स्थानों पर स् का ही संधिनियम १४ के अनुसार विसर्ग (ः) दीखता है। यह विसर्ग मूलरूप में सु (स्) है, उसीको रु (र् या ः) होता है। जहाँ पर उ या य नहीं होगा, वहाँ पर र् शेष रहता है। अतः संधि नियम १४ से अ आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद विसर्ग का 'र्' शेष रहता है, बाद में कोई स्वर या व्यंजन (३, ४, ५) हो तो। जैसे,

हरिः + अवदत् = हरिरवदत् ।

लक्ष्मीः + इयम् = लक्ष्मीरियम् ।

गुरुः + अस्ति = गुरुरस्ति ।

वधूः + एषा = वधूरेषा ।

शिशुः + आगच्छत् = शिशुरागच्छत् ।

गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम् ।

पितुः + इच्छा + पितुरिच्छा ।

हरेः + द्रव्यम् = हरेर्द्रव्यम् ।

(१६) उत्त्व संधि (देखो अभ्यास २३)

(हशि च) ह्रस्व अ के बाद रु (र या :) को उ हो जाता है, बाद में हश् (वर्ग के ३, ४, ५, ह, य, व, र, ल) हो तो । (सूचना—संधिनियम १५ बाद में अ हो तब लगता है, यह बाद में हश् हो तो । उ करने के बाद संधिनियम १५ के अनुसार गुण और पूर्वरूप होगा । अतः अः + हश् = ओ + हश् होगा, अर्थात् अः को ओ) जैसे—

रामः + वन्द्यः = रामो वन्द्यः ।

कृष्णः + वदति = कृष्णो वदति ।

बालः + लिखति = बालो लिखति ।

रामः + जयति = रामो जयति ।

देवः + गच्छति = देवो गच्छति ।

बालः + हसति = बालो हसति ।

नृपः + रक्षति = नृपो रक्षति ।

शिष्यः + यजति = शिष्यो यजति ।

(१७) यत्वसन्धि (देखो अभ्यास २४)

(भोभगोअघो अपूर्वस्य योऽशि) भोः, भगोः, अघोः शब्द और अ या आ के बाद रु (र या :) को य् होता है, बाद में अश् (स्वर, ह, य, व, र, ल, वर्ग के ३, ४, ५) हो तो । (सूचना—१. हलि सर्वेषाम्, २. लोपः शाकल्यस्य । य् के बाद यदि कोई व्यंजन होगा तो य् का लोप अवश्य होगा । य् के बाद यदि कोई स्वर होगा तो य् का लोप ऐच्छिक है । यदि लोप करेंगे तो कोई दीर्घ, गुण, वृद्धि आदि संधि-कार्य नहीं होगा । अर्थात् आः + अश् = आ + अश् ।) जैसे,

देवाः + गच्छन्ति = देवा गच्छन्ति ।

नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति ।

देवाः + इह = देवा इह, देवायिह ।

कन्याः + इच्छन्ति = कन्या इच्छन्ति ।

रामः + इच्छति = राम इच्छति ।

शिष्याः + एते = शिष्या एते ।

छात्राः + लिखन्ति = छात्रा लिखन्ति ।

पुत्रः + आगच्छति = पुत्र आगच्छति ।

(१८) सुलोपसन्धि (देखो अभ्यास २५)

(एतत्तदोः सुलोपोऽङ्कोरनञ्समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप होता है, बाद में कोई हल् (व्यंजन) हो तो । (सकः, एषकः, असः, अनेषः के विसर्ग का लोप नहीं होगा ।) सूचना—सः, एषः के बाद अ होगा तो संधि नियम १५ से 'ओऽ' होगा । अन्य स्वर बाद में होंगे तो संधिनियम १७ से विसर्ग का लोप) ।

(१) सः + पठति = स पठति ।

सः + लिखति = स लिखति ।

एषः + वदति = एष वदति ।

एषः + गच्छति = एष गच्छति ।

(२) सः + अयम् = सोऽयम् ।

सः + आगतः = स आगतः ।

सः + इच्छति = स इच्छति ।

एषः + अपि = एषोऽपि ।

७. पत्रादिलेखनप्रकार

आवश्यक-निर्देश

पत्रों के लेखन में निम्नलिखित बातों का अवश्य ध्यान रखें :—

१. पत्र-लेखन बहुत सरल और स्पष्ट भाषा में होना चाहिए। इसमें प्रायः वार्तालाप में व्यवहृत भाषा का ही रूप अपनाया जाता है, जिससे पत्र का भाव सरलता से हृदयगम हो सके।

२. पत्रों में अनावश्यक विशेषणों का परित्याग करना चाहिए। पाण्डित्य-प्रदर्शन का प्रयत्न पत्र में अनुचित है, यह निबन्ध आदि का विषय है।

३. जिस उद्देश्य से पत्र लिखा गया है, उसका स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए।

४. पत्र यथासंभव संक्षिप्त होना चाहिए। उसमें आवश्यक बातों का ही उल्लेख करना चाहिए। अनावश्यक बातों का उल्लेख और विस्तार उचित नहीं है।

५. साधारणतया पत्रों को ४ श्रेणी में बाँट सकते हैं। तदनुसार ही उनका लेखन होता है। (क) अति परिचित व्यक्तियों को। (ख) सामान्यतया परिचित व्यक्तियों को। (ग) अपरिचित व्यक्तियों को। (घ) केवल व्यावहारिक पत्र।

(क) १. पिता, पुत्र, माता, मित्र, पत्नी, पति आदि के लिए ऐसे पत्र होते हैं। इनमें प्रारम्भ में ऊपर दाहिनी ओर स्व-स्थान नाम तथा तिथि या दिनांक देना चाहिए। २. उसके नीचे अपने से बड़े को प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते आदि। समान आयु वालों को नमस्ते, छोटों को स्वस्ति, आशीर्वाद आदि। ३. पत्र के अन्त में बड़ों के लिए 'भवदाज्ञा-कारी' 'भवत्कृपाकांक्षी' आदि, समान आयु वालों को 'भवदीयः' 'भावत्कः' आदि, छोटों को 'शुभाकांक्षी' 'शुभचिन्तकः' आदि लिखना चाहिए। ४. पत्र का पता लिखने में पहली पंक्ति में व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए, उसके नीचे उपाधि आदि। दूसरी पंक्ति में ग्राम-नाम आदि, तीसरी पंक्ति में पोस्ट आफिस (डाकखाना) का नाम, चौथी पंक्ति में जिले का नाम। यदि दूसरे प्रान्त या देश के लिए हो तो अन्त में प्रान्त या देश का नाम।

(ख) सामान्य परिचित में संबोधन में व्यक्ति का नाम-निर्देश करें। शेष पूर्व-वत्।

(ग) अपरिचितों को संबोधन में 'श्रीमन्' 'महोदय' आदि लिखें। अन्त में 'भवदीयः'। शेष पूर्ववत्।

(घ) केवल व्यावहारिक पत्रों में (१) प्रारम्भ में अधिकारी, व्यक्ति या कम्पनी आदि का नाम एवं कार्यालय संबन्धी पता लिखें। (२) तदनन्तर संबोधन में 'श्रीमन्' या 'महोदय'। (३) प्रणाम, नमस्ते आदि न लिखें। (४) अन्त में 'भवदीय'।

(५) केवल कार्य संबन्धी बात लिखें। पारिवारिक या वैयक्तिक नहीं।

(१) पिता को पत्र ।

प्रयागतः

तिथिः चैत्र शुक्ला ९, २००९ वि०

श्रीमतो मान्यस्य पितृवर्यस्य पादपद्मे ! सादरं प्रणतिः ।

अत्र शं तत्रास्तु । मया भवदीयं कृपापत्रं प्राप्तम् । अखिलं च वृत्तान्तं ज्ञातम् । अद्यत्वे मम वार्षिकी परीक्षा भवति । अहम् अध्ययने सम्यक्तया दत्तचित्तोऽस्मि । साम्प्रतं यावत् परीक्षायाः प्रश्नपत्राणि साधु लिखितानि सन्ति । आशासे परीक्षाया-मवश्यं सफलो भविष्यामि । परीक्षानन्तरं शीघ्रमेव गृहं प्रति प्रस्थास्यामि । पूज्याया मातुश्चरणयोः मम प्रणतिः कथनीया ।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः—

देवदत्तः ।

(२) मित्र को पत्र ।

गुरुकुल-महाविद्यालय-ज्वालापुरतः

दिनांकः १८-१०-५२ ईसवीयः

प्रियमित्र शिवकुमार ! सप्रेम नमस्ते ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । भवत्पत्रं समासाद्य मम चेतोऽतीव हर्षमनुभवति । अद्य दीपमालिकायाः पर्व दिद्यते । सर्वेऽपि छात्रा अद्य प्रसन्नचेतसो दीपमालिकामहोत्सव-सम्पादनसंलग्नाः सन्ति । एतत् ज्ञात्वा सर्वेऽपि प्रसन्नाः सन्ति, यद् भवान् वी० ए० परीक्षायामुत्तीर्णः । सर्वे छात्राः, अध्यापकाश्च साधुवादान् वितरन्ति । शेषमन्यत् कुशलम् । सद्य एव पत्रोत्तरः प्रेषणीयः ।

भवद्बन्धुः—

रामदत्तः ।

(३) विश्वविद्यालय के एक छात्र को

काशी-विश्वविद्यालयतः,

दिनाङ्कः १०-७-५२

श्रीयुत सन्तोषकुमार ! नमस्ते ।

अत्र शं तत्रास्तु । अहमद्यैव गृहात् समायातोऽस्मि । एतत्तु भवतो ज्ञातमेवास्ति यत् ममानुजः विज्ञानविषयमङ्गीकृत्य इन्टर० परीक्षायामुत्तीर्णः । स दुर्भाग्यवशात् तृतीय श्रेण्यामुत्तीर्णः, अतएव तस्य प्रवेशो नात्र आशास्यते । भवतो महती कृपा भविष्यति यदि भवान् स्वीये प्रयागविश्वविद्यालये तस्य वी०, एस्० सी० कक्षायां प्रवेशार्थं प्रयतिष्यते । भवतो गृहे सर्वेऽपि कुशलिनः सन्ति । पत्रं सद्य एव प्रणयम् ।

भावत्कः—विनयकुमारः ।

(४) अवकाश के लिए आचार्य को प्रार्थनापत्र

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयः,
सेंट एंड्रयूज कालेज, गोरखपुर ।

मान्यवर !

अहमद्य दिनद्वयाद् अतीव रुग्णोऽस्मि । विद्यालयमागतुं न शक्नोमि । अतो दिवसद्वयस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः ।

भवतमाज्ञाकारी शिष्यः—

प्रेमनाथः (इन्टर. प्रथमवर्षस्थः)

(५) पुस्तक के लिए प्रकाशक को पत्र

श्री प्रबन्धकमहोदयः,
नया किताबघर, गोरखपुर ।

श्रीमन् !

मया भवत्प्रकाशितं 'रचनानुवादकौमुदी' नाम पुस्तकं दृष्टम् । कृपया पञ्चपुस्तकानि अधोनिर्दिष्टस्थाने बी० पी० पी० द्वारा शीघ्रमेव प्रेषणीयानि ।

दिनांकः—१-११-५२ ई० भवदीयः—रूपनारायणशास्त्री, प्रकाशन-विभागः,
हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयागः ।

(६) निमन्त्रणपत्रम्

श्रीमन्महोदय !

एतद् विदित्वा भवन्तो नूनं हर्षं प्राप्स्यन्ति यत् परेशस्य महत्याऽनुकम्पया मम ज्येष्ठाया दुहितुः कुमार्या विमलादेव्याः शुभापाणिग्रहणसंस्कारः काशीवास्तव्यस्य श्रीमतः निखिलचन्द्रशर्मणो ज्येष्ठपुत्रेण सुरेशचन्द्रशर्मणा सह २०-११-५२ दिनांके रात्रौ १० वादने सम्पत्स्यन्ते । भवन्तः सपरिवारं निर्दिष्टसमये समागत्यास्मान् अनुग्रहीष्यन्ति ।

६००, मुट्ठीगंज,

प्रयागः ।

दिनांकः—१०-११-५२

भवद्दर्शनाभिलाषी—

दीनबन्धुः शर्मा

(स्वीकृति-सूचनयाऽनुग्राह्यः ।)

(७) परिषद् की सूचना

श्रीमन्तो मान्याः !

सविनयमेतद् निवेद्यते यद् आस्माकीनाया विद्यालयीयसंस्कृतपरिषदः साप्ताहिक-मधिवेशनम् आगामिनि शुक्रवासरे (दिनांकः २४-१०-५२ ई०) सायंकाले चतुर्वादने विद्यालयस्य महाकक्षे (हॉल) भविष्यति । सर्वेषामपि छात्राणाम् अध्यापकानां च उपस्थितिः सविनयं सादरं प्रार्थ्यते ।

निवेदकः—

दिनांकः—२०-१०-५२

गणेशदत्तपाण्डेयः (मन्त्री)

(८) (क) प्रस्ताव (ख) अनुमोदन (ग) सम न

(क) (१) आदरणीयाः सभासदः । प्रियाः विद्यार्थिवन्धवश्च !

अद्य सौभाग्यमेतद् अस्माकं यद्..... (गुरुकुलमहाविद्यालय-ज्वालापुरस्य आचार्यवर्याः श्रीमन्तो हरिदत्तशास्त्रिणः, सप्ततीर्थाः, व्याकरणवेदन्ताचार्याः, एम० ए० आदि विविधोपाधिविभूषिताः) अत्र समायताः सन्ति । अतोऽहं प्रस्तावं करोमि यत् श्रीमन्तो मान्या विद्वद्वरेण्या आचार्यवर्याः अद्यतनाया अस्याः सभायाः सभापतिपद-मलङ्कुर्वन्तु इति । आशासे एतेषां सभापतित्वे सभायाः सर्वमपि कार्यं सुचारुरूपेण सम्पत्स्यते इति । आशासे अन्येऽपि अस्य प्रस्तावस्य अनुमोदनं समर्थनं च कार्श्यन्ति ।

(क) (२) मान्याः सभासदः !

अहमेतस्याः सभाया मन्त्रिपदार्थं (सभापतिपदार्थम्, उपसभापतिपदार्थम्, कोषाध्यक्षपदार्थम्) श्रीमतः.....नाम प्रस्तवीमि ।

(ख) अहमेतस्य प्रस्तावस्य हृदयेन अनुमोदनं करोमि ।

(ग) अहमेतस्य प्रस्तावस्य हार्दिकं समर्थनं करोमि ।

(९) व्याख्यान

श्रीमन्तः परमसंमाननीयाः सभापतिमहोदयाः ! आदरणीयाः सभासदश्च !

अद्य अहं भवतां पुरस्तात्.....(विद्या, अहिंसा, सत्य-परोपकार-) विषयमङ्गी-कृत्य किञ्चिद् वक्तुमिच्छामि । संस्कृतभाषाभाषणस्य अनभ्यासवशाद् याः काश्चन त्रुटयो भवेयुः, ता भवद्भिः क्षन्तव्याः । (तदनन्तरं व्याख्यानस्य प्रारम्भः ।)

८. निबन्ध-माला

आवश्यक-निर्देश

१. किसी विषय पर अपने विचारों और भावों को सुन्दर, मुगठित, सुबोध एवं क्रमबद्ध भाषा में लिखने को निबन्ध कहते हैं। निबन्ध के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है:—१. निबन्ध की सामग्री। २. निबन्ध की शैली।

निबन्ध की सामग्री एकत्र करने के ३ साधन हैं—१. निरीक्षण अर्थात् प्रकृति को स्वयं देखना और ज्ञान एकत्र करना। २. अध्ययन अर्थात् पुस्तकों आदि से उस विषय का ज्ञान प्राप्त करना। ३. मनन अर्थात् स्वयं उस विषय पर विचार करना।

२. निबन्ध-लेखन में इन बातों का सदा ध्यान रखें:—१. प्रस्तावना या आरम्भ—प्रारम्भ में विषय का निर्देश, उसका लक्षण आदि रखें। २. विवेचन—बीच में विषय का विस्तृत विवेचन करें। उस वस्तु के लाभ, हानि, गुण, अवगुण, उपयोगिता, अनुपयोगिता आदि का विस्तृत विचार करें। अपने कथन की पुष्टि में सूक्ति, पद्य या श्लोक उद्धरणरूप में दे सकते हैं। ३. उपसंहार—अन्त में अपने कथन का सारांश संक्षेप दें। प्रस्तावना और उपसंहार एक या दो संदर्भ (पैराग्राफ) में ही हों। अधिक स्थान विवेचन में दें।

३. निबन्ध की शैली के विषय में इन बातों का ध्यान रखें:—१. भाषा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो। २. भाषा प्रारम्भ से अन्त तक एक-सी हो। ३. भाषा में प्रवाह हो। स्वाभाविकता हो। ४. उपयुक्त और असंदिग्ध शब्दों का प्रयोग करें। ५. भाषा सरल, सरस, सुबोध और आकर्षक हो। ६. लोकोक्ति एवं अलंकारों को भी स्थान दें। ७. अनावश्यक विस्तार, पुनरुक्ति, पाण्डित्य-प्रदर्शन तथा क्लिष्टता का त्याग करें।

४. निबन्ध के मुख्यतया तीन भेद हैं:—

१. **वर्णनात्मक निबन्ध**—इनमें पशु, पक्षी, नदी, ग्राम, नगर, पर्वत, समुद्र, ऋतु-वर्णन, यात्रा, पर्व, रेल, तार, विमान आदि का स्पष्ट एवं विस्तृत वर्णन होता है।

२. **विवरणात्मक निबन्ध**—इनमें घटित घटनाओं, युद्धों, प्राचीन कथाओं, ऐतिहासिक वर्णनों, जीवन-चरित्रों आदि का संग्रह होता है।

३. **विचारात्मक निबन्ध**—इनमें आध्यात्मिक, मनोविज्ञान-संबन्धी, सामाजिक, राजनीतिक तथा अमूर्त विषयों चिन्ता, क्रोध, अहिंसा, सत्य, परोपकार आदि का संग्रह होता है। इन निबन्धों में इन विषयों के गुण, दोष, लाभ, हानि आदि का विचार होता है।

उदाहरण के लिए २० निबन्ध अतिप्रसिद्ध विषयों पर सरल संस्कृत में दिए जाते हैं।

